गृहस्थ-गीता

नटराज युवा संघ

gitized by Madhuban Trust, De

pin Kumar Col. Deoband. In Pu

गृहस्थ गीता

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

आतिथ्य ही घर का वैभव है
प्रेम ही घर की प्रतिष्ठा है
व्यवस्था ही घर की शोभा है
समाधान ही घर का सुख है
सदाचार ही घर का सुवास है
ऐसे घर में प्रभु का वास है
ऋण हो, ऐसा खर्च मत करो
पाप हो, ऐसा कमाई मत करो
क्लेश हो, ऐसा मत बोलो
चिन्तामय जीवन मत जीओ
रोग हो, ऐसा मत खाओ
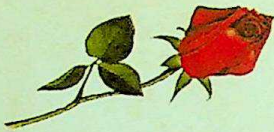
कहानी घर घर की

आज छोटा भाई बडे. भाई से राम बनने की अपेक्षा करता है, किन्तु स्वयं भरत बनने को तैयार नहीं। इसी तरह बडा भाई छोटे भाई से अपेक्षा करता है कि वह भरत बने लेकिन स्वयं राम बनने को तैयार नहीं। सास बहू से अपेक्षा करती है कि वह उसको माँ समझे, लेकिन स्वयं बहू को बेटी मानने को तैयार नहीं। बहू चाहती है कि सास मुझको बेटी की तरह माने, लेकिन स्वयं सास को माँ जैसा आदर नहीं देती। पति पत्नी से अपेक्षा करता है कि वह सीता या सावित्री बने पर स्वयं राम बनने को तैयार नहीं। यह परस्पर विरोधाभास ही समस्त परिवार-कलह का मूल कारण है।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

॥ ॐ श्री परमात्मने नमः ॥

तन-मन-धन सब कुछ है तेरा,
प्रभु सब कुछ है तेरा।
तेरा तुझको अर्पण,
प्रभु का प्रभु को अर्पण।
क्या लागे मेरा ?

अतः तेरी पुस्तक तुझे ही
क्षमा याचना सहित समर्पित।

कैलाश चन्द्र अग्रवाल
नटराज युवा संघ

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

卐 श्री कृष्ण गोविन्द हरे मुरारे हे नाथ नारायण वासुदेव 卐

(गृहस्थ - संजीवनी - बूटी)

॥ वसुधैव कुटुम्बकम्॥ सर्वे भवन्तु सुखिनः ॥ सर्वे सन्तुः निरामया॥

यदा यदा हि धर्मस्य
ग्लानिर्भवति भारत
अभ्युतथानमधर्मस्य
तदात्मानं सृजाम्यहम्
परित्राणाय साधूनां
विनाशाय च दुष्कृताम्
धर्म संस्थापनार्थाय
संभवामि युगे युगे
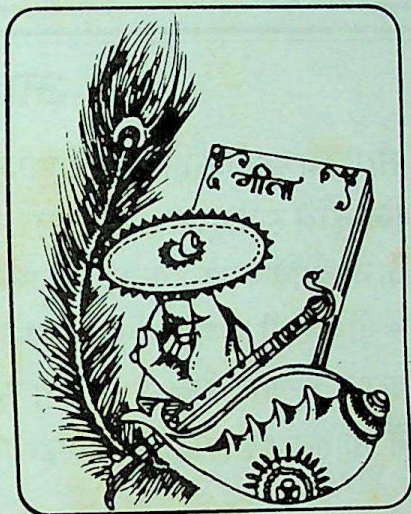
संकलनकर्ता एवं सम्पादक : कैलाश चन्द्र अग्रवाल (अध्यक्ष)

प्रकाशक एवं वितरक : नटराज युवा संघ
(पंजीकृत संख्या एस/५२३६८)

पंजीकृत कार्यालय : २/१ए, भूपेन्द्र बोस एवेन्यू
(श्यामबाजार)
कलकत्ता-७०० ००४
दूरभाष : ५३०-२५५३
मूल्य : सप्रेम पठन-पाठन

एकादश संस्करण जनवरी २००२

नई सदी विशेषांक

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

-: संस्करण :-

प्रथम से पंचम (१९८६ से १९९७ तक)	-	३७,००० प्रतियां
षष्टम से दशम (१९९८ से २००१ तक)	-	१,०५,००० प्रतियां
एकादश (नईसदी विशेषांक पुनरावृत्ति-२००२)	-	१०,००० प्रतियां

आभार

संघ उन सभी महानुभावों एवं संस्थाओं का हार्दिक आभारी है जिन्होंने इस पुस्तक के प्रकाशन एवं पूर्वजों की स्मृति में, बच्चों के जन्मदिन पर, विवाह की वर्षगांठ पर, विवाहोपलक्ष पर, होली - दीपावली व नववर्ष पर अपने प्रियजनों में निःशुल्क वितरण कर तन-मन-धन से अपना सहयोग प्रदान किया है। भविष्य में भी हम इसी प्रकार के सहयोग की आकांक्षा रखते हैं।

आपका-

नटराज युवा संघ

नेत्र दान - महादान

अगर हम मर कर भी दूसरे की आँख की रोशनी बन सकते हैं तो इससे बढ़ कर उपकार अथवा पुण्य और क्या होगा?

☎ : (033) 230-3674

Computer Laser Typesetting by :

HIMAN COMPUPRINT

2, Rupchand Roy Street, Suite No. 311, 3rd Floor, Kolkata-7

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi
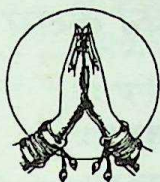
॥ नव-सदी अभिनंदन ॥

– डॉ० रामशिरोमणि पाण्डेय

नव-सदी राष्ट्र के आँचल में, खुशियों की कलियाँ भर लाए,
हर भारतवासी का जीवन, प्रतिपल मंगलमय कर जाए ।
जन-जीवन में उल्लास, परस्पर सब में भाईचारा हो,
सारी दुनिया का भाल-मुकुट, यह भारतवर्ष हमारा हो ।
सब नर हों राम-कृष्ण जैसे, नारी सावित्री-सीता हो,
हर चरित बने रामायण सा, हर वाणी भगवत् गीता हो ।
हर बालक ध्रुव-प्रह्लाद बने, हर मन में देश प्रेम जागे,
भर-भर अभिनंदन बाँहों में, हम बढ़ते ही जाएँ आगे ।
प्रतिदिन फागुन सा रंग भरे, रातों में नित दीवाली हो,
प्रति व्यक्ति सुखी-सम्पन्न रहे, ना कोई झोली खाली हो ।
नव-सदी सभी को धन्य करे, हर्षित भारत का भाग्य रहे,
हो शस्य-श्यामला धरा और, जन-मन पूरित अनुराग रहे ।
हर दृष्टि भरी हो आशा से, हर मन में हो विश्वास भरा,
सब हाथों के कौशल से विकसित, हो भारत की वसुन्धरा ।
हर खेत यहाँ सोना उगले, हर ओर प्रगति का गान रहे,
हर हाथ यहाँ कुछ कर्म करे, सब अधरों पर मुस्कान रहे ।
हर तरूवर कल्पवृक्ष-सा हो, हर कानन हो नंदनवन-सा,
जन-जीवन सुखी निरामय हो, हर उपवन फूले मधुबन-सा ।
नूतन-संवत्सर जन-जन में, नित देश प्रेम का राग भरे,
संघर्षों का अवसान करे, जन-जीवन में अनुराग भरे ।
हर नगर-गाँव में स्वर्ग बसे, उत्थान हमारा नारा हो,
सारी दुनिया का भाल-मुकुट, यह भारतवर्ष हमारा हो ।

साभार – राष्ट्रीय एटलस संगठन, सॉल्टलेक

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

सम्पादक की कलम से

दो शब्द अपनों से

गुल खिलते हैं गुलशन में बहार बनकर।
नई सदी - नव वर्ष मुबारक हो मोतियों का हार बनकर।।

सर्वप्रथम मैं अपनी एवं संघ की ओर से आपको नई सदी के नव वर्ष पर हार्दिक शुभकामनायें देता हूँ। यह नई सदी आपके जीवन में खुशियों की सौगात लेकर आवे - यही हमारी परम पिता परमेश्वर से प्रार्थना है।

कड़े परिश्रम के बाद एक किसान अपने खेत में खड़ी लहलहाती फसल देखकर जितना प्रसन्न होता है, कुछ वैसी ही प्रसन्नता की अनुभूति मुझे भी ''गृहस्थ-गीता'' का यह दशम् संस्करण नई सदी विशेषांक के रूप में प्रकाशित करते हुए हो रही है। इतने अल्प समय में किसी पुस्तक के दस संस्करण प्रकाशित होकर लाखों की संख्या में वितरण होना- इसकी उपयोगिता पर मुहर लगा देता है। इतना सब आपके सहयोग, प्रेम एवं प्रेरणा से ही संभव हो सका है।

जिस प्रकार साहित्य समाज का दर्पण होता है, उसी प्रकार किसी भी संस्था के प्रकाशन में ही उसका प्रतिबिम्ब झलकता है। स्वस्थ, गृहस्थोपयोगी एवं चरित्र सुधारक साहित्य प्रकाशित करना ही संघ की अपनी परम्परा रही है। मैंने अपनी ओर से भगीरथ प्रयत्न किया है कि यह पुस्तक प्रत्येक परिवार के लिए अधिकतम उपयोगी हो, जिससे कि इसका ''गृहस्थ-गीता'' नाम सार्थक हो सके। मेरे मतानुसार मनुष्य अपने परिवार में किस तरह एक सद्गृहस्थ की तरह रहे-यही उसके लिए गीता है। उसका हर आँसू रामायण है और हर कर्म गीता है। साथ ही पश्चिमी सभ्यता की चकाचौंध से गुमराह हुई नई पीढ़ी का कायाकल्प करना एवं भारतीय मूल्यों का अहसास कराना भी इस पुस्तक का मुख्य उद्देश्य है। इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु सीमित साधनों के बावजूद इस संस्करण में बहुत सी नवीन पाठ्य सामग्री जैसे - फास्ट फूड, यह कैसा मनोरंजन है, दुर्गा कवच, गाय हमारी माँ, गोमूत्र के औषधीय गुण एवं कुछ नये शिक्षाप्रद भजन, दोहे, देशभक्ति गीत, उद्धरण, शेर आदि का समावेश किया गया है जिससे कि पाठक लाभान्वित हो सकें। प्रयास करना हमारा काम है - फल देना नीली छतरी वाले के हाथ में है।

तात्विक दृष्टि से तो हम सब निमित्त मात्र हैं। सर्वप्रेरक और सर्वनियंता एक श्री भगवान ही हैं।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

लोग समझते मैं लिखता हूँ, लिखता कोई और है,
दुनिया जिसके चरण चूमती, जो सबका सिरमौर है।
हर पत्ते हर फूल-शिरा में, जिसका व्यापक दौर है,
लोग समझते मैं लिखता, लिखता कोई और है ।।

मैं संघ के सदस्य **श्री विनोद जी अग्रवाल** का विशेष आभारी हूँ, जिनके सत्प्रयत्नों से संघ को प्रधानमन्त्री जी का शुभकामना सन्देश प्राप्त हुआ। जिन ज्ञात-अज्ञात, सहृदय रचनाकारों की सत्सामग्री एवं संत महापुरूषों की अमर वाणी इस पुस्तक में संगृहित है, उन सबका मैं आभारी हूँ। **श्री हिमांशु जी सोनी** का मैं विशेष आभारी हूँ, जिन्होंने इस संस्करण को सजाने-सँवारने में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। नई साज-सज्जा के साथ यह विशेषांक पूर्णतया नवीन रूप में पाठकों के समक्ष प्रस्तुत है, जिसकी उपयोगिता का फैसला भी पाठकों की अदालत को ही करना है। इस संस्करण के बारे में अपने दो शब्द लिखकर कृपया हमारा मार्गदर्शन एवं उत्साहवर्द्धन करें।

अंत में **'सीय-राममय सब जग जानी, करउँ प्रनाम जोरि जुग पानी।'**

त्रुटियों के लिये क्षमाप्रार्थी एवं सुझावों के लिये अभ्यार्थी,

सधन्यवाद।

'पंचवटी', डी.बी. ३९, साल्ट लेक
(प्रथम सेक्टर - द्वितीय एवन्यू), कलकत्ता-६४
दूरभाष : ३३७-२३८२, ३३४-३४३७
मोबाईल : ९८३०० ४९८६८

आपका—
कै. च. अग्रवाल
(कैलाश चन्द्र अग्रवाल)

❁❁❁❁❁❁❁

☞ **वह पुस्तक किस काम की, जिसकी माँग न होय।**
वन में नाचा मोर है, देख सकै न कोय।।

☞ ***अच्छी पुस्तकें मन के लिए साबुन का कार्य करती हैं।***

☞ ***कुछ पुस्तकें चखने मात्र को होती हैं, कुछ निगल डालने योग्य और कुछ ही ऐसी होती हैं, जिन्हें चबाया और पचाया जा सके।*** — बेकन

☞ ***मैं नरक में भी उत्तम पुस्तकों का स्वागत करूँगा, क्योंकि इनमें वह शक्ति है कि जहाँ ये होंगी, वहाँ आप ही स्वर्ग बन जायेगा।*** — लोकमान्य तिलक

☞ **बुरी पुस्तकें पढ़ना जहर पीने के समान है।** — टालस्टाय

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

विषय-सूची

क्रमांक	विषय	पृष्ठ संख्या
	प्रथम सोपान	
१.	मंगलाचरण	१
२.	त्वमेव माता च पिता त्वमेव	२
३.	प्रभु-विनय	३
४.	सविनय दो शब्द	४
५.	गृहस्थ गीता	११
६.	गृहस्थ के लिए महामंत्र, एक महात्मा का प्रसाद	१२
७.	कुछ घर-गृहस्थी की बातें	१६
८.	माँ	२१
९.	शिक्षाप्रद पत्र सन्तान के लिये	२४
१०.	कुछ शिक्षाप्रद प्रश्नोत्तर	२५
११.	सज्जनता का काढ़ा	२९
१२.	पूजा के बारह फूल एवं ज्ञान निर्झर	३०
१३.	गृहलक्ष्मी बनाम दरिद्रा	३१
१४.	नारी विद्वानों के विचार	३३
१५.	नारी के आभूषण	३४
१६.	दहेज : खतरनाक हैवान	३५
१७.	दहेज बनाम कफन	३६
१८.	कम से कम इंसान बनो	३७
१९.	शराब : आधुनिक जहर	३८
२०.	यह कैसा मनोरंजन है ?	३९
२१.	संसार के सात सुख, सरल और कठिन, योग्यता	४२
२२.	ज्ञान की बातें, अनमोल वचन	४३
२३.	क्रोध : अशान्ति का मूल	४४
२४.	धन से क्या खरीद सकते हैं ?	४६
२५.	जीवन दर्पण	४७
२६.	अर्थ से मिली अर्थहीनता	४८

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

द्वितीय सोपान

तृतीय सोपान

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

चतुर्थ सोपान

पंचम सोपान

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

卐 नटराज युवा संघ : एक नजर 卐

-: संरक्षक परिषद :-

श्री पुष्करलाल जी केडिया

श्री राधेश्याम जी भगत — श्री मामराज जी अग्रवाल

श्री द्वारका प्रसाद जी डाबड़ीवाल — श्री गनेश प्रसाद जी अग्रवाल

श्री गौरीशंकर जी कायाँ — श्री साँवरमल जी भीमसरिया

श्री विष्णुकुमार जी गुप्ता — श्री केदारनाथ जी रानासरिया

श्री रविन्द्र जी अग्रवाल

-: वर्तमान कार्यकारिणी :-

अध्यक्ष	:	श्री कैलाश चन्द्र अग्रवाल
उपाध्यक्ष	:	श्री परमेश्वर लाल अग्रवाल
सचिव	:	श्री श्यामलाल रूस्तगी
संयुक्त सचिव	:	श्री सुभाष कुमार बंसल
" "	:	श्री मोहनलाल अग्रवाल
" "	:	श्री मूलचन्द चौधरी
कोषाध्यक्ष	:	श्री सत्यनारायण अग्रवाल
संयुक्त कोषाध्यक्ष	:	श्री मूलचन्द चौधरी
जनसम्पर्क अधिकारी	:	श्री नरसिंह कुमार मोदी
संयुक्त जनसम्पर्क अधिकारी	:	श्री अशोक कुमार बजाज
" "	:	श्री अशोक कुमार शर्मा

-: अन्य सदस्य :-

सर्वश्री नरेन्द्र कुमार रस्तोगी, संजय अग्रवाल, प्रेमशंकर अग्रवाल, सुरेश शर्मा, वेंकट केजरीवाल, मामराज अग्रवाल, राजेन्द्र अग्रवाल, दिनेश कुमार अग्रवाल

कानूनी सलाहकार
श्री किशनलाल अग्रवाल

लेखा परीक्षक
रूस्तगी एण्ड एसोशियेट्स

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi
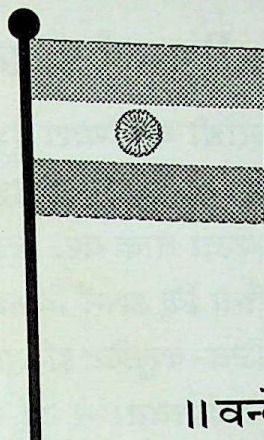
।। झंडा ऊंचा रहे हमारा ।।

।। राष्ट्रगीत ।।

जन-गण-मन अधिनायक जय हे,
भारत भाग्य विधाता।
पंजाब, सिंधु, गुजरात, मराठा
द्रविड़, उत्कल बंग।
विन्ध्य हिमाचल यमुना गंगा,
उच्छल जलधितरंग।
तव शुभ नामे जागे,
तव शुभ आशीष मांगे,
गाहे तव जय गाथा।
जन-गण मंगलदायक जय हे
भारत भाग्य विधाता।
जय हे, जय हे, जय हे,
जय जय जय जय हे।।

।। वन्देमातरम् ।।

सुजलां सुफलां मलयज शीतलां
शस्यश्यामलां मातरम्
शुभ्र ज्योत्स्ना-पुलकित यामिनीम्
फुल्लकुसुमित द्रुमदलशोभिनीम,
सुहासिनीं सुमधुर भाषिणीम्
सुखदां वरदां मातरम्।।
त्वं हिं दुर्गा दशप्रहरणधारिणी
कमला कमल-दल-विहारिणी
वाणी विद्यादायिनी नमामि त्वां
नमामि कमलां अमलां अतुलाम्
सुजलां सुफलां मातरम्
वन्दे मातरम्
श्यामलां सरलां सुस्मितां भूषिताम्
धरणी भरणीम् मातरम्

"आतंकवाद के विरुद्ध लड़ाई – इसमें हर भारतवासी है सिपाही"

आइये हम सब हिन्दुस्तानी, आतंकवाद को मिटाने का संकल्प लें।

– सम्पादक

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

हमें अंत में सही मार्ग अपनाना होगा ?

बुद्ध और गांधी का प्यारा देश हमारा !
शांति-अहिंसा का न्यारा परिवेश हमारा !!
आदर्शों को रखा ताक पर, रक्त बहाया !
रक्त बहा इतना कि उसमें विश्व नहाया !!
हुआ रक्तरंजित- कलुषित इतिहास हमारा !
मानवता को दानवता ने यों दे मारा !!
विध्वंसक है रूप, नहीं निर्माण सुहाता !
कैसी यह विनाशलीला कुछ समझ न आता !!
राजनीति हो गयी कलंकित आज हमारी !
मर्यादा हो गयी नष्ट सारी-की-सारी !!
समय पतन का आता, बुद्धि भ्रष्ट हो जाती !
अपनी करनी ही अपने को है खा जाती !!
नष्ट न होवे उचितानुचित विवेक हमारा !
चूक गये तो नहीं चलेगा कोई चारा !!
मन कलुषित, आतंकवाद से विश्व घिरा है !
कभी न ऐसा घिरा कि जैसा आज घिरा है !!
रक्तपात से कभी समस्याएं न सुलझतीं !
होती जातीं जटिल और फिर और उलझतीं !!
सदाचार से ही संभव कल्याण हमारा !
चेत जायं हम तो निश्चित उद्धार हमारा !!
हमें अंत में सही मार्ग अपनाना होगा !
लौट बुद्ध- गांधी के पथ पर आना होगा !!

साभार - डॉ. गौरी शंकर गुप्त

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

M-1916/PStoPM/2000

अजय बिसारिया
प्रधान मंत्री के निजी सचिव
दूरभाष : 3018939
फैक्स : 3016857

प्रधान मंत्री कार्यालय
नई दिल्ली-110 011
PRIME MINISTER'S OFFICE
NEW DELHI -110 011

21 नवम्बर, 2000

प्रिय श्री अग्रवाल,

प्रधान मंत्री जी को सम्बोधित आपके दिनांक 2 नवम्बर, 2000 के पत्र के लिए धन्यवाद जिसके साथ आपने ''गृहस्थ-गीता'' नामक पुस्तक की एक प्रति भेजी है।

निस्संदेह, पुस्तक उपयोगी है। 'स्वास्थ्य चर्चा' में तुलसी के महत्व पर डाले गये प्रकाश से पाठकगण अवश्य लाभान्वित होंगे। प्रधान मंत्री जी लेखक के प्रयास की सराहना करते हुए लेखन क्षेत्र में उनकी उत्तरोत्तर प्रगति के लिए अपनी हार्दिक शुभकामनाएं देते हैं।

शुभकामनाओं सहित,

आपका

अजय बिसारिया

(अजय बिसारिया)

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

जनमत

जब जग में अनाचार और पाप का बोलबाला हो, प्राचीन धार्मिक परम्परायें गौण हो रही हों, परिवार की परस्परानुकूलता भंग होने से सुख-शान्ति आकाश-कुसुम से दुर्लभ हो गये हों, धर्म पर आधारित पुस्तकें बहुत प्रासंगिक हो जाती हैं। ये पुस्तकें दिग्भ्रमितों को ज्ञान ज्योति दिखा सच्चे मार्ग पर उन्मुख करती हैं। ऐसा ही सत्प्रयास किया है 'नटराज युवा संघ' ने ज्ञान का भंडार 'गृहस्थ-गीता' निकाल कर। इस सुन्दर साज सज्जा वाली पुस्तक की विशेषता यह है कि इसमें गृहस्थ जीवन व परिवार से सम्बन्धित गीता, रामायण व दूसरे धर्म ग्रन्थों तथा पुस्तकों से उद्धरण दिये गये हैं। यह पुस्तक हर गृहस्थ के जीवन में मार्ग दर्शक का काम कर सकती है। अगर वह इसका सम्यक अध्ययन कर तद्नुसार जीवनयापन करे तो उसका जीवन सार्थक सुखद हो सकता है।

पुस्तक में जीवनोपयोगी उपदेशों, लेखों के अतिरिक्त गृहस्थों के काम आने वाली बातें, स्वास्थ्य सम्बन्धी सुझाव, संतों की वाणी, विभिन्न देवी-देवताओं की वन्दना, आरती आदि संकलित हैं। घर-बाधाओं से घिरे गृहस्थों के लिये यह संजीवनी की तरह है। एक तरह से गागर में सागर भरने का प्रयास है यह पुस्तक। उल्लेखनीय बात यह है कि इसको पाठकों में मुफ्त बांटा जा रहा है। पुस्तक की छपाई सुस्पष्ट तथा आवरण सुन्दर है। यह पुस्तक हर गृहस्थ के लिये उपयोगी है। **–जनसत्ता**

मनुष्य के ऊपर जब विपत्तियों का पहाड़ टूटता है तो उसे परम पिता की याद आती है, मगर जब तक उसे रोजी रोटी कायदे से मयस्सर होती रहती है तब तक उससे प्रभु का स्मरण ही नहीं होता। मूल रूप से संसार में अशान्ति का यही एकमात्र कारण है। चित्त की चंचलता ही सारे दुःखों की जननी है ओर चित्त तभी शान्त रहता है जब मन से प्रभु की आराधना की जाय। पूजा पाठ व्रत मन को नियन्त्रित करने के मात्र साधन हैं, ये सब दिखावटी कर्म हैं। लेखक का विचार है कि आज के युग की सबसे बड़ी जरूरत है आत्म विश्लेषण की। हमारे अन्दर जो नैतिक पतन हो रहा है उसे रोकने के लिये आवश्यक है कि हम बाह्याडम्बरों का परित्याग कर सच्चे मन से अपने को ईश्वर में लीन करें। 'गृहस्थ-गीता' इसी मूल सन्देश को जन-जन में प्रचारित एवं प्रसारित करती है। पुस्तक के चार अध्यायों में विभिन्न प्रकार की धार्मिक चर्चायें समाहित हैं तथा जगह-जगह ज्ञानवर्धक कहानियों का भी संकलन है। पुस्तक की छपाई साफ सुथरी एवं कवर आकर्षक है। अशुद्धियाँ नगण्य हैं तथा मेकअप, गेटअप मनोहारी है। पुस्तक की कोई कीमत नहीं रखी गई है, इसलिये यह हर भक्तिभाव रखने वाले के लिये पठनीय है। **–दैनिक सन्मार्ग**

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi
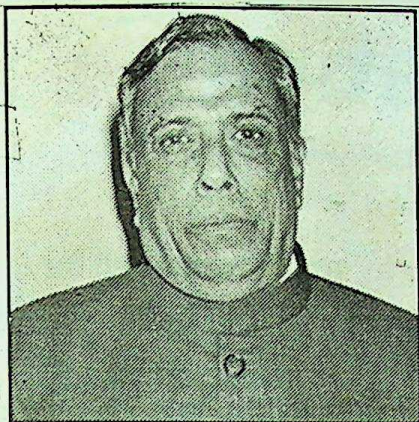
सुप्रसिद्ध समाज सेवी

श्री मामराज जी अगरवाला

भगवान कृष्ण को कर्मयोगी कहा गया है। मनुष्य का कर्म ही प्रधान है। गीता अपने भक्त को यही स्मरण कराती है कि भय से भागना भीरूता है और उसका डट कर मुकाबला करना वीरता। गीता के छठें अध्याय में कहा गया है कि "अपने द्वारा ही अपना उद्धार करो"। इस उपदेश द्वारा भगवान ने जीव को यह आश्वासन दिया है कि "तू यह मत समझ कि प्रारब्ध बुरा है, इसलिये तेरी उन्नति होगी कि नहीं। तेरा उत्थान - पतन प्रारब्ध के अधीन नहीं, तेरे ही हाथ में है। साधना कर और अपने को अवनति के गड्ढे से निकालकर उन्नति के शिखर पर ले जा।" मनुष्य अपने स्वभाव तथा कर्मों में जितना अधिक सुधार कर लेता है, वह उतना ही उन्नत हो जाता है। दूसरे शब्दों में स्वभाव एवं कर्मों का सुधार ही उन्नति अथवा उत्थान है और विपरीत, उनमें बिगाड़-दोषों की वृद्धि ही अवनति अथवा पतन है।

मेरे मतानुसार श्री कैलाशजी द्वारा सम्पादित एवं नटराज युवा संघ द्वारा प्रकाशित ''गृहस्थ-गीता'' का कोई भी व्यक्ति अगर लगन से पठन एवं मनन करे तो निश्चय ही उन्नति के उच्च शिखर पर पहुँच सकता है। उसका मार्ग निर्देशन करने में यह पुस्तक पूर्णतया सक्षम है। इसी सद्भावना के साथ-

आपका-

मामराज अगरवाला

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi
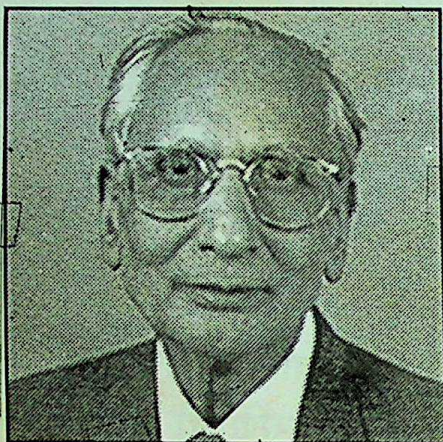
सुप्रसिद्ध समाज सेवी एवं
अध्यक्ष मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी
श्री गौरीशंकर कायाँ

गीता में भगवान श्री कृष्ण ने कहा है कि एक सच्चा संन्यासी वह है, जो गृहस्थ में रहता हुआ कुटिल, कुमति, कृतघ्न कुटुम्बियों के क्रूर कर्म-चक्रवात में भी हिमाचलवत् अचल खड़ा रहे, कामना, कामिनी, कांचन के करालानल में फँसा हुआ भी प्रहलाद के सदृश स्वयं को आँच न लगने दे; मद, मोह, मात्सर्य के महामकरों से समावृत होने पर ध्रुव धैर्य धारण किये रहे; विषय, वासना, विलास के दलदल में वास होने पर भी कमल के समान अप्रभावित रहे। अर्थात् वानप्रस्थी ही नहीं गृहस्थी भी, समान रूप से संन्यासी बनने के अधिकारी हैं।

"गृहस्थ-गीता" में भी हर आयु के मनुष्य को सन्मार्ग पर लाने के लिये एवं सही दिशा प्रदान करने हेतु सफल प्रयास किया गया है। सम्पादक ने गृहस्थों के लिये इसमें गागर में सागर भर दिया है। पुस्तक की प्रशंसा करना भी सूरज को दीपक दिखलाने के समान है। मेरी मनोकामना है कि **नटराज युवा संघ** अपने इस सत्प्रयास में निरन्तर प्रगति करता रहे।

आपका-
गौरीशंकर कायाँ
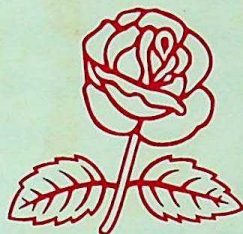
CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

।। मंगलाचरण ।।

ब्रह्म प्रणाम प्रणाम गुरू, पुनि प्रणाम सब संत।
करत मंगलाचार शुभ, नाशत विघ्न अनन्त ।।
मात भवानी दाहिने, सन्मुख होय गणेश।
पांच देव रक्षा करें, ब्रह्मा विष्णु महेश ।।

ॐ गजाननं भूतगणाधि सेवितं, कपित्थ जम्बू फल चारू भक्षणम्।
उमा सुतं शोक विनाशकारकं, नमामि विघ्नेश्वर पादपंकजम्।।
मंगलम् भगवान विष्णु, मंगलम् गरूड़ध्वजः।
मंगलम् पुण्डरीकाक्षः, मंगलायतनो हरिः।।
सशंख चक्रं सकिरीट कुण्डलं, सपीतवस्त्रं सरसीरूहेक्षणम्।
सहारवक्षस्थल कौस्तुभश्रियं, नमामि विष्णुं शिरसा चतुर्भुजम्।।
लोकाभिरामं रणरंगधीरं, राजीव नेत्रं रघुवंशनाथम्।
कारण्यरूपं करूणाकरंतं श्री रामचन्द्रं शरणम् प्रपद्ये।।
मनोजवं मारूततुल्यवेगं, जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम्।
वातात्मजं वानरयूथमुख्यं, श्री रामदूतं शरणम् प्रपद्ये।।
सर्वमंगलमंगल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तुते ते।।

वसुदेव सुतं देवं कंस चाणूर मर्दनम्।
देवकी परमानन्दं कृष्णं वन्दे जगद्गुरूम्।
मूकं करोति वाचालं पंगु लंघयते गिरिम्।
यत्कृपातमहंवन्दे परमानन्द माधवम्।
सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःख भाग्भवेत।।
ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णमुदच्यते।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमिवावशिष्यते।।
ॐ शान्तिः ! शान्तिः !! शान्तिः !!!

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

॥ ॐ श्री परमात्मने नमः ॥

त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धुश्च, सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्वं मम देवदेव ॥

देवाधिदेव परमेश्वर ! आप ही माता और आप ही पिता हैं, आप ही बन्धु और आप ही सखा हैं। आप ही विद्या और आप ही धन हैं। अधिक क्या कहूँ मेरे सब कुछ आप ही हैं।

॥त्वमेव माता च पिता त्वमेव ॥

तुम्ही हो माता पिता तुम्हीं हो,
तुम्ही हो बन्धु सखा तुम्हीं हो ।। तुम्ही...
तुम्ही हो साथी तुम्हीं सहारे,
ना कोई अपना बिना तुम्हारे।
तुम्ही हो नैया, तुम्ही खिवैया,
तुम्ही हो बन्धु सखा तुम्ही हो ।। तुम्ही...
जो खिल सके ना वो फूल हम हैं,
तुम्हारे चरणों की धूल हम हैं।
दया की दृष्टि सदा ही रखना,
तुम्ही हो बन्धु सखा तुम्ही हो ।। तुम्ही...

"GOD" शब्द का वैदिक विश्लेषण

G = Generator = *अर्थात् सृष्टि रचयिता 'ब्रह्मा'*
O = Operator = *अर्थात् पालनहार 'विष्णु'*
D = Destroyer = *अर्थात् संहारकर्ता 'महेश'*

इस तरह उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट है कि अंग्रेजी के **GOD** *शब्द में भी हमारी तीनों उच्चशक्तियों का समावेश है।*

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

॥ प्रभु विनय ॥

दोहा – सब कुछ दीन्हा आपने, भेंट करूँ क्या नाथ?
नमस्कार की भेंट लो, जोड़ूँ दोनो हाथ ॥
हाथ जोड़ विनती करूँ, धरूँ चरण में शीश।
ज्ञान भक्ति मोहे दीजिये, परम पिता जगदीश ॥

तू दयालू, दीन हौं, तू दानी, हौं भिखारी।
हौं प्रसिद्ध पातकी, तू पाप पुंजहारी।।१।।
नाथ तू अनाथ को, अनाथ कौन मोसो ?
मो समान आरत नहीं, आरतिहर तोसो।।२।।
ब्रह्म तू, हौं जीव हौं, तू ठाकुर हौं चेरो।
तात, मात, गुरू, सखा, तू सब विधि हितु मेरो।।३।।
तोहि मोहि नाते अनेक, मानिये जो भावै।
ज्यों त्यों "तुलसी" कृपालु ! चरन सरन पावै।।४।।

अर्थात – हे नाथ ! तू दीनों पर दया करने वाला है, तो मैं दीन हूँ। तू अतुलदानी है तो मैं भिखारी हूँ। मैं प्रसिद्ध पापी हूँ तू पाप पुंजों का नाश करने वाला है। तू अनाथों का नाथ है, तो मुझ जैसा अनाथ भी और कौन है ? मेरे समान कोई दुःखी नहीं है और तेरे समान कोई दुःखों को हरने वाला नहीं है। तू ब्रह्म है, मैं जीव हूँ, तू स्वामी है, मैं सेवक हूँ। अधिक क्या, मेरा तो माता, पिता, गुरू, मित्र और सब प्रकार से हितकारी तू है। मेरे तेरे अनेक नाते हैं, नाता तुझे जो अच्छा लगे वही मान ले। परन्तु बात यह है कि हे कृपालु ! किसी भी तरह यह "तुलसीदास" तेरे चरणों की शरण पा जावे।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

॥ सविनय दो शब्द ॥

आजकल सर्वत्र अशान्ति का साम्राज्य है। प्रत्येक प्राणी अशान्त एवं परेशान है। क्या आप बतला सकते हैं कि आज का मानव सबसे ज्यादा किससे परेशान है ? अगर मैं यह कहूँ कि आज का प्राणी सबसे ज्यादा अपने आप से परेशान है, तो शायद कोई अतिशयोक्ति न होगी। हर एक प्राणी मानसिक तनाव से ग्रस्त है, जिसे अंग्रजी में Mental Tension कहते हैं। हमारा समाज धर्म प्रधान न होकर अर्थ प्रधान हो गया है। हम सब धनोपार्जन के पीछे पागल हैं। धनोपार्जन करना बुरी बात नहीं, पहले के लोग भी धनोपार्जन करते थे, पर उसके पीछे उनका एक उद्देश्य होता था और वह था धर्म व भाईचारे की भावना। वे ईमानदारी से कमाये धन का सदुपयोग भौतिक सुखों की अपेक्षा धर्म व दीन दुखियों की मदद करके शान्ति प्राप्त करते थे। पर आज का मानव भौतिक सुखों के पीछे दीवाना हो रहा है। धन से भौतिक सुखों का महल तो खड़ा किया जा सकता है, मानसिक शान्ति नहीं खरीदी जा सकती। अगर धन में ही इतनी शक्ति होती कि वह शान्ति को अपनी दासी बना सके तो दुनिया का कोई भी धनी व्यक्ति अशान्त नहीं होता। जबकि सत्य तो यह है कि आज जो व्यक्ति ज्यादा धनी है वही ज्यादा दुखी और परेशान है। मेरे विचार से वातानुकुलित प्रासादों में निवास करने वाले व्यक्ति की तुलना में एक झोपड़ी में रहने वाला गरीब मजदूर ज्यादा सुखी है, क्योंकि वह मानसिक तनाव से मुक्त है और दिन भर कड़ी मेहनत करने के बावजूद रात में चैन की नींद सोता है।

इस परेशानी एवं मानसिक तनाव का मुख्य कारण यह है कि हम अपनी प्राचीन परम्पराओं को भूल गये हैं या यों कहिये कि हम अपने आप को भूल गये हैं। हमारी पूर्वी सभ्यता के मुख्य आधार "जीओ और जीने दो" (Live and Let Live) को भूलकर पश्चिमी सभ्यता के सिद्धान्त "खाओ, पीओ और मौज उड़ावो" (Eat, Drink and Be Merry) के पीछे चल पड़े हैं। यही अशान्ति का मुख्य कारण है। जिस प्राचीन भारत में दूध और दही की नदियां बहती थी, आज वहां शराब के सागर लहराते नजर आते हैं। कितने दुःख की बात है कि अशान्ति से ग्रस्त पश्चिम वाले तो राम और कृष्ण

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

की पावन जन्मभूमि भारत में आते हैं और एक हम हैं कि गंगा-यमुना-गोदावरी की मिट्टी में पैदा होकर भी पश्चिमी सभ्यता का अनुकरण करते हैं। आज हमारे पास वीडियो और सिनेमा देखने के लिए समय है, लेकिन प्रभु का स्मरण करने के लिए समय नहीं है।

जब हमारे ऊपर कोई विपत्ति आती है तब हमें प्रभु याद आते हैं। तब हम भगवान की शरण खोजते हैं एवं प्रार्थना करते हैं कि हे प्रभु ! अब तुम ही बचाओ। यहां पर भी हम अपनी धूर्तता से बाज नहीं आते। उस परमपिता परमेश्वर को भी सरकारी कार्यालय समझते हुए रिश्वत देना चाहते हैं कि हे प्रभु! हमारा यह काम कर दो तो हम इतने का प्रसाद चढ़ायेंगे। लेकिन क्यों न हम पहले ही ऐसे कर्म करें कि दुःख आवे ही नहीं। कहा भी गया है-

दुःख में सुमिरन सब करे, सुख में करे न कोय।
जो सुख में सुमिरन करे तो दुःख काहे को होय।।

उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट है कि अगर हमें मानसिक शान्ति चाहिये तो हमें सबसे पहले अपने मन में शान्ति लानी होगी। हमें अपने मानसिक विकारों को हटाना होगा। काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार ही मुख्य पाँच मानसिक विकार हैं, जो कि मन को चंचल बनाते हैं और इस चंचलता के कारण ही मनुष्यात्मा अशान्त हो जाती है। मन बड़ा चंचल होता है। विकारों में फंसकर मन की चंचलता अधिकाधिक होती जाती है। मन पर नियंत्रण किये बगैर हम अपने विकारों को नहीं भगा सकते। लेकिन इस पर नियंत्रण करना भी बहुत कठिन है। यहाँ तक कि अर्जुन जैसे व्यक्ति का भी मन सदा अशान्त रहता था। अर्जुन ने गीता में स्वयं कहा है-

चंचल हि मनः कृष्ण प्रमाथि बलवद्दृढ़म्।
तस्याहं निग्रहं मन्ये वायोरिव सुदुष्करम्।।

अर्थात् "मन चंचल, प्रमाथि, बलवान और दृढ़ है। हे कृष्ण इसको संयम में करना वायु को वश करने से कहीं अधिक कठिन है।" लेकिन जिसने मन पर विजय प्राप्त कर ली उसने भगवान को प्राप्त कर लिया। जैसा कि गीता में लिखा है-

"जितात्मनः प्रशान्तस्य परमात्मा समाहितः"

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

अतः स्पष्ट है कि मानसिक शान्ति के लिये मन की शुद्धि आवश्यक है और अगर हमें मन को शुद्ध करना है तो इसे भगवान में लीन करना होगा। जैसे सोना बगैर तपे शुद्ध नहीं होता वैसे ही मन की कड़ाही को भी भगवत् स्मरण की आँच देनी पड़ेगी। मन के चारों तरफ प्रभु स्मरण की ऐसी लक्ष्मण रेखा खींचनी पड़ेगी कि कोई भी विकार रूपी रावण भीतर न घुस सके। इसके लिये हमें अपने आपको प्रभुमय बना लेना पड़ेगा। इसमें हम जितना ज्यादा समय देंगें उतना ही आनन्द आयेगा। जैसे समुद्र के जल में तल तक जाने पर ही मोती की आशा की जा सकती है, उसी तरह हमें भी प्रभु-सागर में गहराई तक गोता लगाना होगा। केवल ऊपर ही ऊपर हाथ पाँव मारने से कुछ नहीं होगा। प्रभु-सागर में तल तक डुबकी लगाने पर ही शान्ति रूपी मोती पाया जा सकता है।

आदमी जब शरीर से अशान्त यानि बीमार पड़ता है तो डाक्टरों और वैद्यों के हाथों इलाज कराता है, बीमारी तो चली जाती है पर अन्य अनेक बीमारियों से घिर जाता है। नतीजा नित्य डाक्टरों व वैद्यों के हाथों लुटता रहता है, ठीक उसी प्रकार मानसिक अशान्ति, चंचलता के निवारणार्थ आजकल मनुष्य पण्डितों और पण्डों के हाथों लुटते हैं, पर शान्ति नहीं मिलती। जब तक अपने मन की चंचलता दूर नहीं होगी तब तक शान्ति नहीं मिल सकती। बहुत से लोग मन्दिर में जाते हैं, लम्बा टीका लगाते हैं, माला जपते हैं और तीर्थव्रत करते हैं, परन्तु उनका मन सदा चंचल रहता है। उन्हें शान्ति नहीं मिलती, क्योंकि कहा गया है-

माला तो कर में फिरे, जीभ फिरे मुख माहिं।
मनवा तो चहुं दिशि फिरे, यह तो सुमिरन नाहिं॥

बिना श्रद्धा, आस्था एवं दृढ़ विश्वास के पूजा-पाठ और व्रत वगैरह भी मन को नियंत्रण करने में असफल हो जाते हैं। सिर मुंडा लेने से या कमण्डल हाथ में लेने से ही कोई संन्यासी नहीं बन जाता। धूनी रमाने से आत्मा पवित्र नहीं होती। प्रदर्शन तो प्रदर्शन ही है। साधुता का ढोंग कर दूसरों को तो धोखा दिया जा सकता है, पर अपने आप को नहीं। प्रेम की लगन हृदय में लगनी चाहिये। आत्मा के अन्दर परमात्मा की अनुभूति होनी चाहिये। वाल्मीकि डाकू थे, हत्यारे थे। पाप करते हुए वे सदा पापी रहे। लेकिन जब राम नाम से उनका

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

नाता जुड़ गया वे डाकू से महात्मा बन गये। वे भगवान में रम गये। उनका हृदय मन्दिर भगवान का निवास स्थान बन गया। भगवत् भक्ति के आनन्द की लहरें उनके हृदय सागर में हिलोरें मारने लगी। उन्हें तीर्थों की खाक छानने की आवश्यकता नहीं पड़ी। इसीलिये तो कहा गया है- **''मन चंगा तो कठौती में गंगा।''** अतः मन को प्रभु में लीन करके परम सुख का आनन्द महसूस करने पर चारों तरफ शान्ति ही शान्ति नजर आयेगी। ऊँ शान्ति - ऊँ शान्ति -ऊँ शान्ति।

अब सवाल यह उठता है कि बहुत से नास्तिक प्राणी परमात्मा की सत्ता में ही विश्वास नहीं करते। उनका कहना है कि भगवान का कोई अस्तित्व ही नहीं है। वे इसे तर्क द्वारा साबित करने को कहते हैं। इसके जबाब में मैं एक अंग्रेजी के बहुत बड़े विद्वान द्वारा लिखा उद्धरण पेश करता हूँ -

"It is LOGIC that cannot prove ALMIGHTY, but it does not mean that there is no existence of that Supreme Authority". अर्थात् "यह तर्कशास्त्र की कमजोरी है कि वह सर्वशक्तिमान को प्रमाणित नहीं कर सकता, लेकिन इसका यह मतलब नहीं कि उस उच्च सत्ता का कोई अस्तित्व ही नहीं है।" दूसरे शब्दों में आप कह सकते हैं कि तर्कशास्त्र में इतनी सामर्थ्य नहीं है कि वह भगवान को प्रमाणित कर सके। फिर भी यह कहना चाहूंगा कि इस मानव शरीर के अन्दर न जाने कितनी ही दुर्गन्ध युक्त चीजें यथा मल, मूत्र, मांस, मज्जा हैं पर उसकी दुर्गन्ध हमें नहीं मिलती, पर यदि वही चीजें शरीर से बाहर निकलती हैं तो दुर्गन्ध आती है, क्यों ? वह क्या है, किसकी रचना है यह, सोचें ? उन नासमझ प्राणियों से पूछना चाहूंगा कि क्या वे अपना सिर दर्द या पेट दर्द दिखला सकते हैं ? शायद नहीं। तब जब वे अपने शरीर के भीतर के दर्द को नहीं दिखला सकते तो भगवान को देखने की आशा क्यों कर करते हैं ? जैसे वे दर्द को महसूस करते हैं वैसे ही अगर वे विश्वास रखेंगे और उनका ध्यान करेंगे तो निश्चय ही भगवान को महसूस करेंगे। उनसे मेरा नम्र निवेदन है कि घर के अन्दर शुद्ध हवा प्राप्त करने के लिये जिस प्रकार खिड़की, दरवाजे खोलने की आवश्यकता है उसी प्रकार भगवान को देखने एवं महसूस करने के लिये पहले अपने मन को विकारमुक्त बनावें। अपने अन्तःकरण को विशुद्ध बनाने पर उनके ज्ञानचक्षु स्वतः खुल

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

जायेंगे एवं भगवान स्वयं ही नजर आवेंगे। गीता में श्रीकृष्ण ने अर्जुन से कहा है-

''दिव्यं ददामि ते चक्षुः पश्य मे योगमैश्वरम्

अर्थात् "हे अर्जुन लो मैं तुम्हें दिव्य नेत्र देता हूं, इनसे मेरे ईश्वरीय स्वरूप को देखो।" तब जब अर्जुन जैसे पुरूष को भी भगवान के रूप को देखने के लिये दिव्य नेत्र की जरूरत पड़ी तो आप अपने को इस योग्य बनावें कि आपके मन पर पड़ी मैल की चादर साफ हो जाय और आत्मा के दिव्य नेत्र खुल जायं, जिससे भगवान स्वयंमेव ही नजर आवेंगे। कवि शिरोमणि तुलसीदास ने भी कहा है-

तुलसी या संसार में, मिलिये सबसे धाय।
ना जाने किस रूप में, नारायण मिल जाय।।

यह केवल तुलसी का इतिहास नहीं है, किन्तु हम सब जिस भगवान के लिये मन्दिर, मस्जिद, गुरूद्वारों और चर्चों की खाक छानते हैं वह भगवान अगणित बार हमारे जीवन में नाना रूप धर कर हमारे आगे पीछे घूमता है, लेकिन दुर्भाग्यवश दिव्य नेत्र के अभाव में हम उसे पहचान नहीं पाते, उल्टा उसे वृद्ध, रोगी या भिखमंगा जानकर नाक - भौं सिकोड़कर अपमानित कर बैठते हैं। मानव धर्म ही सर्वोपरि है। **नर सेवा ही नारायण सेवा है- "Service to man is service to God".** नर सेवा ही नारायण प्राप्ति का निष्कण्टक मार्ग है। नर के रूप में उचित कर्म करना ही हमारा परम कर्तव्य है, यही धर्म है। यहां पर कर्म के अनुसार ही कर्ता को फल मिलता है। जो जैसा करता है वो वैसा ही भरता है। स्वर्ग - नर्क सब यहीं पर है। मनुष्य को अपने कर्मो का फल यहीं भोगना पड़ता है। तुलसीदास जी ने भी रामायण में लिखा है- **''कर्म प्रधान विश्व करि राखा, जो जस करिय सो तस फल चाखा।''** अतः क्यों न हम भी अपने आपको सत्कर्मो में लगावें। यही हमारा धर्म भी है।

धर्म क्या है ? धर्म की व्याख्या करना इतना आसान नहीं है। सारे ग्रन्थ भरे पड़े हैं इसकी परिभाषा से पर फिर भी वह कम ही हैं। फिर भी संक्षेप में उसका सार है-स्वयं सुख से जीने की तथा औरों को सुख से जीने देने की कला का नाम ही धर्म है। अपने लिये तो सभी जीते हैं। दूसरों के लिये जीना

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ही सच्चा जीना है। जो दूसरों के लिये जीता और मरता है, उसका जीवन धन्य है। उसका हर आँसू रामायण है और हर कर्म गीता है। हमारे सत्कर्म और दुष्कर्म केवल हमें ही सुखी - दुखी नहीं बनाते, बल्कि हमारे परिवार-जनों, संगी - साथियों एवं समाज को भी प्रभावित करते हैं, क्योंकि **मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है** (Man is a social animal)। इसलिये इसके कार्यकलापों का प्रभाव समाज पर पड़ना नितान्त स्वाभाविक है। **अतः स्पष्ट है कि धर्म एक आदर्श जीवन शैली है, सुख से रहने की पावन पद्धति है, शान्ति प्राप्त करने का सुगम पथ है, अनुशासन में रहने की शिक्षा है एवं सर्वोपरि जन – कल्याणकारी आचार संहिता है।**

एक बार किसी ने एक महात्मा से पूछा कि कहा गया है कि पिछले कर्मो का फल इस जन्म में पृथ्वी पर भोगना पड़ता है तथा इस जन्म के कर्मों का फल ब्याज सहित अगले जन्म में भोगना पड़ता है, सो कैसे सम्भव है ? तब महात्मा ने कहा कि जिस प्रकार हम बैंकों में सावधि जमा (Fixed Deposit) में रूपया जमा करते हैं तथा जब उसकी अवधि पूरी हो जाती है तो ब्याज सहित मूल हमें वापस मिलता है ठीक उसी प्रकार हम जो भी कर्म करते हैं वह हमारे खाते में जमा होता जाता है तथा अवधि पूरी हो जाने पर ब्याज सहित हमें भोगने को मिल जाता है। अतः हमें ऐसे कार्य करने चाहिये जिससे किसी भी प्रकार किसी भी जीव को कष्ट नहीं पहुंचे।

मानवी मूल्य और नैतिकता के लिये आज हमारे समाज में कोई स्थान नहीं है। चारों ओर कष्ट और पीड़ा की प्रधानता है, अधिकता है। सुख और शान्ति के लिये धर्म का आचरण आवश्यक है। सन्तों, कवियों ने अपनी वाणी के माध्यम से आदर्श और नैतिकता को लोगों के सामने रखा है। आज परस्पर का आचरण और व्यवहार ही सुख और शान्ति का कारण बन सकता है। व्यक्ति और समाज के लिये आज आदर्शों की आवश्यकता है। आदर्श विहीन व्यक्ति समाज के लिये कोढ़ है। राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त ने भी केवल यह लिखकर कि **"हम क्या थे, क्या हैं और क्या होंगे अभी"** पूरे समाज का नंगा चित्र हमारे सामने प्रस्तुत कर दिया है। आज की सबसे बड़ी आवश्यकता यह है कि हम अपने आप को पहचानें। हमारे में जो नैतिक पतन हो रहा है, उसको रोकें। इसी उद्देश्य से यह लेख लिखा गया है। आशा

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि आप इसकी उपयोगिता को स्वीकार कर इसका आदर करेंगे। अगर किसी भी भाई का इस लेख से जरा सा भी कल्याण हुआ तो मैं अपने आपको धन्य समझूंगा।

विनयकर्ताः

कैलाश चन्द्र अग्रवाल

॥ बड़ा महत्व है ॥

जीवन में आज का, स्त्री में लाज का,
सुर में साज का, राज्य में ताज का,
बड़ा महत्व है।

पूजा में नाल का, स्त्री में चाल का,
सिर में बाल का, खाने में दाल का,
बड़ा महत्व है।

सृष्टि में आकाश का, जीवन में विकास का,
सूर्य में प्रकाश का, दोस्ती में विश्वास का,
बड़ा महत्व है।

कुल में आन का, क्षत्रिय में शान का,
स्त्रियों में मान का, चबाने में पान का,
बड़ा महत्व है।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

॥ गृहस्थ-गीता ॥

यह घर हमारा नहीं प्रभु का प्रेम मन्दिर है – इस भावना से इसमें रहो। तुम्हारा घर ठाकुरजी का मन्दिर बन जाय, इस तरह जीवन व्यतीत करो। जहाँ गरीब का सम्मान है और नीति का धन है – वह घर बैकुण्ठ के समान है। मनुष्य घर का मालिक नहीं, प्रभु का मुनीम है।

प्रभु को प्राप्त करने के लिये घर नहीं आसक्ति छोड़ने की जरूरत है। पति-पत्नी का सम्बन्ध भोग के लिये नहीं, त्याग के लिये है। दम्पत्ति को नाविक और नाव की तरह संसार सागर पार करना चाहिये।

गृहस्थाश्रम ही सबसे बड़ा आश्रम है। पूरा परिवार एक साथ बैठकर प्रभु- प्रार्थना करे – यही गृहस्थाश्रम का परमानन्द है।

"आतिथ्य" ही घर का वैभव है।
"प्रेम" ही घर की प्रतिष्ठा है।
"व्यवस्था" ही घर की शोभा है।
"समाधान" ही घर का सुख है।
"सदाचार" ही घर का सुवास है।
"ऐसे घर में" सदा प्रभु का वास है।
"ऋण हो" ऐसा खर्च मत करो।
"पाप हो" ऐसा कमाई मत करो।
"क्लेश हो" ऐसा मत बोलो।
"चिंता हो" ऐसा जीवन मत जीओ।
"रोग हो" ऐसा मत खाओ।

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

॥ गृहस्थ के लिये महामन्त्र ॥

योगी बनो, पर रोगी नहीं। स्वस्थ बनो, पर मोटे नहीं। बलवान बनो, पर दुष्ट नहीं। खरे बनो, पर खारे नहीं। धीर बनो, पर सुस्त नहीं। सरल बनो, पर मूर्ख नहीं। सावधान बनो, पर वहमी नहीं। उत्साही बनो, पर जल्दबाज नहीं। न्यायी बनो, पर निर्दयी नहीं। चंगे बनो, पर दुर्बल नहीं। दृढ़ बनो, पर हठी नहीं। प्रेमी बनो, पर पागल नहीं। समालोचक बनो, पर निन्दक नहीं। नम्र बनो, पर चापलूस नहीं। स्पष्ट बनो, पर उद्दण्ड नहीं। चतुर बनो, पर कुटिल नहीं।

॥ एक महात्मा का प्रसाद ॥

यदि आप लोग शीघ्र परम शान्ति चाहते हैं तो निम्नलिखित शिक्षा ग्रहण करें। वास्तव में परम शान्ति परमपद परमगति परमधाम आत्मा परमात्मा राम निज स्वरूप होने से आपके पास अति समीप हैं। इतना समीप हैं जितना आपका मन भी आपके समीप नहीं है, अर्थात् आपके रोम रोम में व्याप्त है, किसी अन्य स्थान पर नहीं बैठा हुआ है।

(१) सकल संसार में नारायण राम की भावना करें। किसी भी प्राणी को मन, वाणी, शरीर द्वारा दुःख न दें, बल्कि सम्भव हो तो सुख ही देना चाहिये। इस संसार में एक ही पुण्य है, एक ही धर्म है और एक ही अधर्म है और वह है :-

अष्टावश पुराणेषु व्यासस्य वचनद्वयम्।
परोपकारः पुण्याय पापाय परपीडनम्॥

भावार्थ– भगवान व्यास जी का कहना है कि दूसरे को सुख देने के समान तो कोई पुण्य नहीं है और दुःख देने के समान पाप नहीं है।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

परहित सरिस धर्म नहीं भाई,
पर पीरा सम नहिं अधमाई।
नर शरीर धरिजे पर पीरा,
करहिं ते सहहिं महा भवभीरा।।

भावार्थ– दूसरे को सुख देने के समान धर्म नहीं है और दुःख देने के समान अधर्म नहीं है।

(२) कोई आपको दुःख दे तो उस पर क्रोध नहीं करना चाहिये, बल्कि समझना चाहिये कि मेरे अपने किये हुए कर्म ही मुझे दुःख दे रहे हैं। दूसरा कोई किसी को दुःख नहीं देता है।

बोले लखन मधुर मृदुबानी,
ज्ञान विराग भगति रससानी।
काहु न कोउ सुख दुख करदाती,
निज कृत कर्म भोग सब भ्राता।।

भावार्थ– जब निषादराज ने भगवान राम को वन में कष्ट पाते हुए देखा तो वे माता कैकेयी को बुरा भला कहने लगे। ऐसे अवसर पर श्री लक्ष्मण जी ने ज्ञान वैराग्य एवं भक्ति से सनी हुई यह बात कही कि हे भाई ! माता कैकेयी का कोई दोष नहीं है, यह तो मेरे अपने पूर्वकृत कर्मो का ही दोष है।

सुखस्य दुःखस्य न कोऽपिदाता, परो ददातीति कुबुद्धिरेषा।
अहुकरोमिति वृथाभिमानः, स्वकर्म सूत्रैर्ग्रथितोहिलोकः।।

भावार्थ– सुख और दुःख कोई दूसरा नहीं देता है। यह तो जीवों के अपने अच्छे बुरे कर्मो का फल ही सुख दुख के रूप में प्राप्त होता है। मुझे दूसरा सुख–दुख देता है, ऐसा सोचने वाला खोटी बुद्धि वाला है, एवं इसीलिये दुःखी होता है। अतः सुख–दुःख के लिये किसी को दोष नहीं देना चाहिये।

(३) किसी के द्वारा कटु वचन बोलने पर अथवा क्रोधित होने पर बदले में अपने को उस पर क्रोध न करके उसे क्षमा ही करना चाहिये। इससे बढ़कर कोई अन्य पुण्य कार्य नहीं है।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

(४) छल, कपट, चोरी आदि का व्यवहार कभी न करें और झूठ कभी न बोलें।

(५) सदा बड़ों की आज्ञा का पालन करें।

(६) कभी किसी की निन्दा (चुगली) न करें।

(७) न तो अपने घर परिवार वालों की निन्दा किसी से करें और न दूसरों की निन्दा सुनें। किसी प्रकार की निन्दा करने वाले आपके हितकारी नहीं है।

(८) बिना प्रयोजन के कहीं आना-जाना, कुछ देखना-सुनना, बोलना-चालना आदि कार्य न करें।

(९) सदा प्रेमपूर्वक मीठी वाणी में ही बोलें।

(१०) संसार को मिथ्या (झूठ) जानकर इसके लिये हर्ष - शोक नहीं करना चाहिये।

(११) जो कुछ भगवान दें, उसी पर सन्तोष करना चाहिये एवं भगवान को उसके लिये धन्यवाद देना चाहिये।

(१२) सांसारिक सभी काम निष्काम भाव से करें। सकाम भाव से न करें, सकाम भाव से काम करने से जन्म - मरण के चक्र से छुटकारा नहीं मिल सकता।

(१३) अपने पारिवारिक कामों को भी निष्काम भाव से ही करें, मान - बड़ाई - प्रतिष्ठा की इच्छा से कभी न करें। घरेलू कामों में मितव्ययिता (कम खर्ची) बरतनी चाहिये। फिजूल - खर्ची अशान्ति देने वाली तथा विनाश करने वाली होती है।

(१४) स्त्रियों को चाहिये कि वे सदा अपने पतिव्रत धर्म पर दृढ़ रहें। कभी किसी परपुरूष पर कुदृष्टि नहीं डालनी चाहिये। सदा अपने मन को वश में रखना चाहिये।

(१५) सास को चाहिये कि अपनी पुत्रवधुओं को पुत्री से भी अधिक प्रेम करें एवं बहुओं को चाहिये कि सास को अपनी माता से बढ़ कर मानें। ननदों को अपनी भौजाइयों से प्रेम का बर्ताव करना चाहिये न कि बैर विरोध का।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

(१६) परस्पर गोतनियों (देवरानी - जेठानी) को बड़े प्रेम से रहना चाहिये। झूठ नाशवान पदार्थों के लिये लड़ाई-झगड़ा नहीं करना चाहिये। अपनी - अपनी लड़कियों को दहेज कम - ज्यादा देने के लिये विवाद न करते हुये जो कुछ घर के मुखिया करें उसी में सन्तोष करना चाहिये।

(१७) हर समय भगवान से यही प्रार्थना करनी चाहिये कि हे भगवान! हमें सुमति दो तथा कुमति दूर करके हमें अपने चरणों की प्रीति का वरदान दो।

(१८) दोनों समय भगवान की आरती उतार कर ही भोजन करना चाहिये। बिना आरती उतारे अन्न - जल ग्रहण नहीं करना चाहिये।

(१९) सभी विवेकी समाज के बन्धुओं को चाहिये कि कोई पुत्रवधू या अन्य स्त्री कभी विधवा हो जाय और वह अपने धर्म पर स्थिर रहे तो सास, ससुर को उसे मन, वाणी, शरीर से किसी प्रकार का कष्ट नहीं देना चाहिये, अपितु उसे भगवान स्वरूप या तपस्विनी जानकर सुख देना चाहिये। यदि इस प्रकार हम लोग नहीं करते और उसे कष्ट देते हैं तो वह भगवान को कष्ट देने के समान ही होता है और कष्ट देने वाले के सभी किये हुए धर्म-कर्म निष्फल हो जाते हैं। इसलिये हम सबों को सभी शुभ कर्मों में उसे निरादर की जगह उचित स्थान देना चाहिये।

यदि परम शान्ति चाहते हैं तो आज से नाशवान और महान् दुःख रूपी संसार सुखों की इच्छा भूल कर भी नहीं करनी चाहिये। यदि करोगे तो स्वप्न में भी शान्ति नहीं प्राप्त होगी। सांसारिक सुखों की इच्छा करना उल्टा दुःखों को बुलाना है।

अगर उपरोक्त उपदेशों को सभी भाई-बहन अपने व्यवहार में लायेंगे तो सांसारिक जीवन श्रेष्ठ एवं शान्तिमय होने के साथ - साथ परलौकिक कल्याण का साधन अवश्य बन जायगा। ऊँ शान्तिः ! शान्तिः ! शान्तिः !

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

॥ कुछ घर-गृहस्थी की बातें ॥

संयुक्त परिवार– संयुक्त परिवार में रहने का एक अलग ही आनन्द है। एकाकी जीवन भी भला कोई जीवन है? जब तक परिवार संयुक्त रहता है, परिवार का हर सदस्य एक अनुशासन में रहता है। उसको कोई भी गलत कार्य करने के पहले बहुत सोचना समझना पड़ता है, क्योंकि उस पर परिवार की मर्यादा का अंकुश रहता है। यह अंकुश हटने के बाद वह बगैर लगाम के घोड़े की तरह हो जाता है। लेकिन संयुक्त परिवार में अगर सुखी रहना है तो **'लेने'** की प्रवृत्ति का परित्याग कर **'देने'** की प्रवृत्ति रखनी पड़ेगी। परिवार के हर सदस्य का नैतिक कर्तव्य है कि वे एक दूसरे की भावनाओं का आदर कर आपस में तालमेल रख कर चलें। ऐसा कोई कार्य न करें जिससे कि दूसरे की भावनाओं को ठेस पहुँचे। किसी भी विषय को कृपया अपनी व्यक्तिगत प्रतिष्ठा का प्रश्न न बनावें। गम खाकर और त्याग करके ही संयुक्त परिवार चलाया जा सकता है। इसमें भी सबसे अहम भूमिका परिवार प्रधान की होती है। हमें शंकर भगवान के परिवार से शिक्षा लेनी चाहिये। उनके परिवार के सदस्य हैं – पत्नी उमा (पार्वती), पुत्र गणेश और कार्तिकेय। सदस्यों के वाहन है – नन्दी (बैल), सिंह, चुहा और मयूर (मोर)। शंकर भगवान के गले में सर्पों की माला रहती है। इनके जितने वाहन हैं – सब एक दूसरे के जन्मजात शत्रु हैं। फिर भी शंकर भगवान परिवार के मुखिया की हैसियत से उनको एकता के सूत्र में बाँधे रहते हैं। विभन्न प्रवृत्तियों वाले भी एक साथ प्रेम से रहते हैं। इसी तरह संयुक्त परिवार में भी विभिन्न प्रवृत्तियों वाले भी एक साथ प्रेम से रहते है। इसी तरह संयुक्त परिवार में भी विभिन्न स्वभाव के सदस्यों का होना स्वाभाविक है। लेकिन उनमें सामंजस्य एवं एकता बनाये रखने में परिवार प्रमुख को मुख्य भूमिका निभानी पड़ती है। उसको भगवान की तरह समदर्शी होना पड़ता है। विभिन्नता में एकता रखना ही तो हमारा भारतीय आदर्श रहा है। इसीलिये कहा गया है – "India offers unity in diversity." शंकर भगवान के परिवार के वाहन ऐसे जीव हैं, जिनमें सोचने समझने की क्षमता नहीं है। इसके उपरान्त भी वे एक साथ प्रेम पूर्वक रहते हैं। फिर भला हम मनुष्य योनि में पैदा होकर भी एक साथ प्रेमपूर्वक क्यों नहीं रह सकते ? **आज छोटा भाई बड़े भाई से राम बनने की अपेक्षा करता**

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

है, किन्तु स्वयं भरत बनने को तैयार नहीं। इसी तरह बड़ा भाई छोटे भाई से अपेक्षा करता है कि वह भरत बने लेकिन स्वयं राम बनने को तैयार नहीं। सास बहू से अपेक्षा करती है कि वह उसको माँ समझे, लेकिन स्वयं बहू को बेटी मानने को तैयार नहीं। बहू चाहती है कि सास मुझको बेटी की तरह माने, लेकिन स्वयं सास को माँ जैसा आदर नहीं देती। पति पत्नी से अपेक्षा करता है हक वह सीता या सावित्री बने पर स्वयं राम बनने को तैयार नहीं। यह परस्पर विरोधाभास ही समस्त परिवार - कलह का मूल कारण होता है। थोड़ी सी स्वार्थ भावना का त्याग कर एक दूसरे की भावनाओं का आदर करने मात्र से ही बहुत से संयुक्त परिवारर टूटने से बच सकते है।

पति-पत्नी का सम्बन्ध– पति - पत्नी जीवन रथ के दो पहिये हैं। गृहस्थी की गाड़ी सुचारू रूप से चलाने हेतु दोनों पहियों का ठीक–ठाक रहना बहुत जरूरी है। वे एक दूसरे के पूरक हैं। पति–पत्नी को आपस के सम्बन्धों को सहज एवं सुलभ बनाने के लिये एक दूसरे की भावनाओं को समुचित आदर देना जरूरी है। यदि पति–पत्नी अग्नि को साक्षी मानकर विवाह के समय की गई अपनी प्रतिज्ञाओं को याद रखें एवं उनका पालन करें तो जीवन में आनन्द ही आनन्द होगा।

पति के कर्तव्य :–

(क) उस माँ की ममता को याद रखना जिसने पाल पोस कर अपने कलेजे के टुकड़े को तुम्हारे हवाले किया है। वह अपने प्रियजनों को छोड़कर तुम्हारी शरणागत है।

(ख) पति को पत्नी के सामने कभी भी उसके पीहर वालों की बुराई नहीं करनी चाहिये। यह स्त्री स्वभाव है कि वह सब कुछ सहन कर सकती है, लेकिन अपने माँ - बाप, भाई - बहन की बुराई नहीं सहन कर सकती। क्या पति अपने परिवार वालों की बुराई सुन सकता है? यदि नहीं तो पत्नी से ही कैसे अपेक्षा करे कि वह अपने सामने अपने परिवार वालों की बुराई सुन सके। वैसे विवाह के बाद पत्नी अपने पति की बुराई भी नहीं सुन सकती।

(ग) पति अगर पत्नी की किसी आवश्यकता को पूरी नहीं कर सकता तो पत्नी को अपनी मजबूरी एवं कारण प्रेम पूर्वक मीठे शब्दों द्वारा

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

समझाना चाहिये।

(घ) पति को कभी भी अपने पुरूष होने का झूठा अभिमान नहीं करना चाहिये। स्त्री के साथ सब समय सहयोग की भावना रखनी चाहिये एवं उसे अर्धांगिनी का दर्जा देकर सम्मान देना चाहिये।

पत्नी के कर्तव्य :-

पति की तरह ही पत्नी के भी कुछ कर्तव्य होते हैं, जिनका पालन कर गृहस्थाश्रम का पूर्ण आनन्द लिया जा सकता है। किसी ने ठीक ही कहा है - ईंट और गारे से मकान बनाये जा सकते हैं, घर नहीं। मकान को घर बनाने में गृहिणी का ही पूरा हाथ होता है। वैसे भी इतिहास साक्षी है कि बहुत से महापुरूषों जैसे तुलसीदास, कालीदास, शिवाजी आदि के उत्थान-पतन में स्त्री की ही मुख्य भूमिका रही है। मधुर भाषी स्त्री घर को स्वर्ग बना सकती है तो कर्कशा व जिद्दी स्त्री घर को नर्क बना देती है। पत्नी को निम्न बातों का ध्यान रखना चाहिये :-

(क) पति के माता - पिता एवं परिवार के अन्य सदस्यों का आदर करे तथा उनकी सुख-सुविधा का हमेशा ध्यान रखे।

(ख) कभी भी अपने पीहर में ससुराल वालों की निंदा या बुराई न करे।

(ग) कभी भी पति पर कटु, तीखे एवं व्यंग्यात्मक शब्दों का प्रयोग न करे। सब समय ध्यान रहे कि तलवार का घाव भर जाता है, बात का नहीं।

(घ) पति के सामने कभी भी ऐसी मांग न करे जो पति की सामर्थ्य के बाहर हो।

(ङ) कभी भी झूठी शान-शौकत के चक्कर में पैसे का अपव्यय न करे। पति से सलाह मशविरा करके ही संतुलित एवं आय के अनुसार ही व्यय की व्यवस्था करे। पति के साथ रिश्ते को पैसे का आधार नहीं बनाकर सहयोग की भावना से गृहस्थी चलानी चाहिये।

सर्वोपरि पति-पत्नी में एक दूसरे के प्रति दृढ़ निष्ठा एवं विश्वास भी होना चाहिये। दोनों का चरित्र संदेह से ऊपर होना चाहिये। कभी-कभी छोटी-छोटी बातें भी वैवाहिक जीवन में आग लगा देती हैं, हरे-भरे गृहस्थ जीवन को वीरान बना देती हैं। आपसी सामंजस्य, एक दूसरे को समझना,

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

किसी के बहकावे में न आना बल्कि अपनी बुद्धि से काम लेना ही वैवाहिक जीवन को सुन्दर, प्रेममय व महान् बनाता है।

सन्तान के कर्तव्य :–

मातृ देवो भवः! पितृ देवो भवः!
आचार्य देवो भवः! अतिथि देवो भवः!

माता-पिता, गुरू और अतिथि – संसार में ये चार प्रत्यक्ष देव हैं। इनकी सेवा करनी चाहिये। इनमें भी माता का स्थान पहला, पिता का दूसरा, गुरू का तीसरा और अतिथि का चौथा है। माता – पिता में परमात्मा प्रत्यक्ष स्वरूप है। माता साक्षात् लक्ष्मी होती है तो पिता नारायण। जिनको माता-पिता में भगवद्भाव नहीं होते उनको मन्दिर या मूर्ति में भी कभी भगवान के दर्शन नहीं होते।

माता-पिता में भी माँ का दर्जा अधिक ऊँचा है। शास्त्रों में भी माँ का दर्जा पिता से सौ गुणा अधिक ऊँचा बताया गया है। पिता तो धन-सम्पत्ति आदि से पुत्र का पालन-पोषण करता है, पर माँ अपना शरीर देकर पुत्र का पालन-पोषण करती है। बच्चे को गर्भ में नौ माह तक धारण करती है, जन्म देते समय प्रसव पीड़ा सहती है, अपना दूध पिलाती है एवं अपनी ममता की छाँव में उसका पालन – पोषण करती है। ऐसी ममतामयी जननी का ऋण पुत्र नहीं चुका सकता। ऐसे ही पिता बिना कहे ही पुत्र का भरण-पोषण का पूरा प्रबन्ध करता है, विद्याध्ययन करवाकर योग्य बनाता है, उसकी जीविका का प्रबन्ध करता है एवं विवाह कराता है। ऐसे पिता से भी उऋण होना बहुत कठिन है। रामायण में कहा गया है – **"बड़े भाग मानुष तन पावा"**। इस शरीर के मिलने में प्रारब्ध (कर्म) और भगवत्कृपा तो निमित्त कारण हैं और माता-पिता उपादान कारण हैं। उनके कारण ही हम इस संसार में आते हैं। इसलिये जीते जी उनकी आज्ञा का पालन करना, उनकी सेवा करना, उनको प्रसन्न रखकर उनका आशीर्वाद लेना और मरने के बाद उनके मोक्ष हेतु पिण्ड दान, श्राद्ध-तर्पण करना आदि पुत्र का विशेष कर्तव्य है। माता-पिता की दुआ में दवा से भी हजार गुणा ज्यादा शक्ति होती है।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

पुराणों में उल्लेख मिलता है कि जब देवताओं में यह होड़ लगी कि सबसे बड़ा कौन? जो सबसे बड़ा होगा वही प्रथम पूज्य होगा। तब सर्वसम्मति से यह निर्णय लिया गया कि जो तीनों लोकों का तीन चक्कर लगा कर सबसे पहले आ जायेगा वही प्रथम पूज्य होगा। सभी देवता अपने-अपने वाहनों पर चढ़ कर दौड़ पड़े तब गणेश जी बड़े चक्कर में पड़े कि मेरा वाहन चूहा सबसे छोटा इस पर चढ़कर मैं कैसे सबसे पहले पहुंच सकता हूं। अतः उन्होंने समाधिस्थ पिता शंकर के बगल में माँ पार्वती को बैठा दिया तथा स्वयं अपने वाहन पर चढ़ कर दोनों की तीन बार परिक्रमा पूरी हो गई और वे प्रथम पूज्य घोषित हुए। आज भी वे बुद्धि के देवता के रूप में सर्वत्र प्रथम पूज्य हैं।

माँ –बाप के खातिर दुःख सहना, फर्ज है-अहसान नहीं।
कर्ज है इनका तेरे सिर पर, भिक्षा या कोई दान नहीं।

''नये दौर की नई कहानी''

इस नये दौर ने माँ - बाप का हक छीन लिया,
अपने बच्चों को नसीहत भी नहीं कर सकते।
– अब्बास दाना

हम ऐसी कुल किताबें काबिले - जब्तो समझते हैं,
कि जिनको पढ़के लड़के बाप को खब्ती समझते हैं।

खुद कमाना और खुद खाना है - 'प्रकृति'
दूसरों से छीनना और खाना है - 'विकृति'
स्वयं कमाना और दूसरों को खिलाना है - 'संस्कृति'

मूल्यों के अन्वेषण की शाश्वत परम्परा का ही नाम है -
भारतीय संस्कृति

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

॥ माँ ॥

माँ के प्यार का न है कोई जबाब।
न ही उसकी कोई कीमत और न है हिसाब॥
माँ की ही वो गोद है जहाँ मानवता पले।
अगर जन्नत है कहीं तो उसके आँचल के तले॥

जिस तरह **माता** अपने बेटे के लिये हरेक चीज कुर्बान कर देती है, उसी प्रकार बेटे को चाहिये कि उसके लिये सब कुछ अर्पण कर दे। लेकिन अफसोस कि सांसारिक बादशाहों और अमीरों में इसकी बहुत कम मिसालें मिलती हैं।

शाहजहां बादशाह की तरह और लोगों ने अपने लिये, अपनी औलाद या चहेती पत्नी के लिये तो बहुत सी यादगारें कायम की लेकिन खास **माता** के लिये यादगार कायम करने वाले बहुत कम हैं।

वृहद् धर्म पुराण में महर्षि वेद व्यास ने **माता** की महिमा इस प्रकार बयान की है–

१. पुत्र के लिये **माता** का स्थान पिता से भी बढ़कर होता है, क्योंकि वह उसे गर्भ में धारण कर चुकी है और **माता** के द्वारा ही उसका पालन-पोषण हुआ है। तीनों लोकों में **माता** के समान दूसरा कोई गुरू नहीं है।

२. गंगा के समान कोई तीर्थ नहीं, विष्णु के समान कोई पूजनीय नहीं और **माता** के समान कोई गुरू नहीं।

३. एकादशी के समान कोई व्रत नहीं, उपवास के समान कोई तपस्या नहीं और **माता** के समान कोई गुरू नहीं।

४. भार्या (धर्मपत्नी) के समान कोई मित्र नहीं। पुत्र के समान कोई प्यारा नहीं, बहन के समान कोई माननीय (सम्माननीय) नहीं और **माँ** के समान कोई गुरू नहीं।

५. दामाद के समान कोई दान लेने का योग्य पात्र नहीं। कन्यादान के समान कोई दान नहीं। भाई के समान कोई बन्धु नहीं और **माता** के

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

समान कोई गुरू नहीं।

६. देश वही श्रेष्ठ है, जो गंगा के किनारे हो। पत्तों में तुलसी का पत्ता सबसे श्रेष्ठ है। वर्णो में ब्राह्मण वर्ण सबसे श्रेष्ठ है और गुरूजनों में **माता** ही सबसे श्रेष्ठ है।

७. पुरूष पत्नी का आसरा लेकर आप ही पुत्र रूप में जन्म लेता है। इस दृष्टिकोण से अपने पूर्वज पिता का भी आसरा **माता** होती है, इसलिये वही सबसे श्रेष्ठ है।

८. धर्मशील पुत्र **माता** और पिता दोनों को एक साथ देखने पर पहले **माता** को प्रणाम करके उसके बाद पिता रूपी गुरू को नमस्कार करता है।

माता के इक्कीस नाम ये हैं :–

१. धरती २. जननी ३. दया हृदया ४. शिवा ५. त्रिभुवन श्रेष्ठा ६. देवी ७. निर्दोषा ८. सर्वदुखहरा ६. परम अराधनीया १०. दया ११. क्षमा १२. धृती १३. स्वाहा १४. स्वधा १५. गौरी १६. पद्मा १७. पूज्या १८. जया १६. शान्ति २०. मातृ २१. दुखहंत्री।

जो पुरूष इन नामों को सुनता है और सुनाता है, वह सब दुःखों से मुक्त हो जाता है। बड़े से बड़े दुःखों से पीड़ित होने पर भी भगवती माता का दर्शन करके जो आनन्द मनुष्य को मिलता है, उसे जबान से बयान करना सम्भव नहीं।

माँ का एहसान बच्चों पर है, उसको ध्यान करते हुए श्री बोधराज जफर ने फरमाया है–

"जिस व्यक्ति के सिर पर **माँ**-बाप का साया है, उनको भगवान की भक्ति की भी कोई जरूरत नहीं, क्योंकि आनन्द-स्वरूप माँ-बाप बोलते-चालते और जीते-जागते भगवान के रूप में इनके घर में मौजूद हैं।" वैसे तो इन्सान माँ-बाप के एहसानों का बदला सात जन्म में भी नहीं उतार सकता, क्योंकि माँ-बाप ने ही बच्चों को संसार की हर आँधी, तूफान और गर्द-गुबार से बचाकर उसका पालन-पोषण किया, बड़ा किया, शिक्षा दिलाई और बच्चे के जवानी में कदम रखते ही उसका विवाह किया।

अपने खून पसीने की कमाई को निःसंकोच पानी की तरह बहा दिया

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

और बच्चे की प्रसन्नता को दृष्टिगत रखते हुए बच्चे के भविष्य का हर हालत और हर कीमत पर ध्यान रखा। बुजुर्गों ने सच ही कहा है, **''सोने की सिल गले, आदम का बच्चा पले।''**

"परन्तु **माँ** का चरित्र तो और भी सुन्दर और महत्व रखता है जिसने पूरे नौ मास बच्चे को अपने पेट में रख कर और सख्त से सख्त तकलीफ सहन करके और कई सैकड़ों परहेज करके जिन्दगी और मृत्यु के मध्य लटक कर उसे जनम दिया और सख्त सर्दी की रातों में बच्चे के पेशाब से तर बिस्तर को बदल-बदल कर स्वयं पेशाब से तर बिस्तर पर सोना और बच्चे को खुश्क बिस्तर पर सुलाना और ढ़ाई तीन वर्ष तक मल - मूत्र से उसको साफ करना क्या महत्व नहीं रखता हैं ?

''वह चेहरा क्या था, सूरज था? खुदा था या पैगम्बर था?
वह चेहरा जिससे बढ़कर खूबसूरत कोई चेहरा हो ही नहीं सकता,
कि वह एक माँ का चेहरा था।
जो अपने दिल के ख्वाबों, प्यार की किरणों से रोशन था।''

बाप का खामोश रहना ही बजा -
अब तो बेटा बोलता है बाप के सामने।

-डा. के. के. ऋषि

अपनी औलाद से ताजीम की उम्मीद ना रख-,
अपने माँ - बाप से जब तुने बगावत की है।

-मुईन शादाब

क्या बिगाड़ेंगे हादसे उसका
जिसने माँ बाप की दुआ ली है।

-निजहत निगार

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

।। शिक्षाप्रद पत्र-सन्तान के लिये ।।

दोहा– संसार सागर है अगर, तो माता पिता भी नाव है।
जिसने करी सेवा, तो उसका बेड़ा पार है।।
जिन्होंने दुखाई आत्मा, वे डूबते मझधार हैं।
माता - पिता परमात्मा, मिलते न बारम्बार हैं।।

तुम भूलना सब कुछ मगर, माँ - बाप को मत भूलना।
कर्जा बहुत माँ - बाप का, सिर पर चढ़ा मत भूलना।। टेर।।
मुखड़ा तुम्हारा देखने, पूजे थे बहु - देवी देवता।
जन्मे तो सब हर्षित हुये, इस बात को मत भूलना।। १।।
थाली बजा खुशियाँ मना, एकत्र सबको कर लिया।
घर - घर फिर लड्डू बँटाये, स्नेह यह मत भूलना।। २।।
बचपन में जब रोगी हुआ, कड़वी दवा माँ खावती।
टोना किया नजरें उतारी, वह घड़ी मत भूलना।। ३।।
माता के कपड़े कीमती, मल - मूत्र से मैले किये।
धो - पौंछ कर छाती लगाया, प्यार वह मत भूलना।। ४।।
सरदी की ठण्डी रात में, बिस्तर सभी गीले किये।
तब साफ कर सूखे सुलाया, वह घड़ी मत भूलना।। ५।।
गोदी बिठा कर ग्रास अपना, तोड़ कर मुख में दिया।
तूं उगल वापस थूक भरता, वह समय मत भूलना।। ६।।
माँ ने सिखाया बैठना तो, तूं लुढ़क गिर जावता।
फिर बोलना चलना सिखाया, वह समय मत भूलना।। ७।।
अब तो बड़ी बातें बनाता, देन यह माँ - बाप की।
तुम छेद मत करना कलेजे, युग - युगों मत भूलना।। ८।।
कमाया धन बहुत, माँ - बाप को सुख न दिया।
धिक्कार है ऐसी कमाई, बात यह मत भूलना।। ९।।
धन से सभी वस्तु मिले, माता - पिता मिलते नहीं।
नित शीश चरणों में झुकावो, वचन यह मत भूलना।। १०।।
थी मात कैकेयी पिता दशरथ, वचन प्रभू टाला नहीं।
लंका विजय कर आ गये, श्री राम को मत भूलना।। ११।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

॥ कुछ शिक्षाप्रद प्रश्नोत्तर ॥

प्रश्न— जल से पतला कौन है, कौन भूमि से भारी ?
कौन अग्नि से तेज है, कौन काजल से कारी ?

उत्तर— जल से पतला ज्ञान है, और पाप भूमि से भारी।
क्रोध अगनि से तेज है, और कलंक काजल से कारी।

प्रश्न— वह क्या है जिसे इंसान मर जाने पर छोड़ जाता है ?

उत्तर— अपने भले-बुरे कर्म।

प्रश्न— मनुष्य मरने के बाद अगर भले-बुरे कर्म छोड़ जाता है, तो साथ क्या लेकर जाता है?

उत्तर— कुछ नहीं। मनुष्य मुट्ठी बाँधे आता है और हाथ पसारे जाता है।

सिकन्दर जब चला दुनिया से, उसके हाथ खाली थे,
फकत खाली नहीं, रहम-ओ-करम के भी सवाली थे।।

प्रश्न— लोग भगवान से अधिक दौलत पर विश्वास क्यों करते है ?

उत्तर— क्योंकि लोग दौलत को तो देखते हैं, भगवान को नहीं।

प्रश्न— इंसान और शैतान में क्या फर्क है ?

उत्तर— इंसान के मरने के बाद लोग उसे प्रेम और श्रद्धा से याद करते हैं, जबकि शैतान के मरने के बाद लोग उसे घृणा से याद करते हैं।

प्रश्न— भगवान के न्याय और न्यायाधीश के न्याय में क्या फर्क है ?

उत्तर— न्यायाधीश के न्याय में भूल हो सकती है क्योंकि वह सिर्फ सबूतों पर टिकी होती है जो झूठे भी हो सकते हैं, जबकि भगवान के न्याय में किसी सबूत की आवश्यकता ही नहीं पड़ती।

प्रश्न— मनुष्य कब बनता है और कब बिगड़ता है ?

उत्तर— मनुष्य सत्संग से बनता है और कुसंग से बिगड़ता है।

प्रश्न— आदमी कब हैवान बन जाता है ?

उत्तर— जब वह इंसानियत को भूल जाता है या उस पर शैतानियत हावी हो जाती है।

प्रश्न— सच्चा दोस्त कौन है ?

उत्तर— जो विपत्ति में साथ दे और सब समय नेक सलाह दे।

प्रश्न– जिसका दुनिया में कोई नहीं होता उसका कौन होता है ?
उत्तर– उसकी खुद की हिम्मत और उसका भगवान।

प्रश्न– माँ को अक्सर 'तुम' और पिता को 'आप' कहकर क्यों सम्बोधित किया जाता है ?
उत्तर– क्योंकि माँ का स्वभाव कोमल एवं ममत्व से भरा होता है, तथा बच्चा ज्यादा समय माँ के साथ ही गुजारता हैं, तथा पिता का स्वभाव रोबीला होता है और वह ज्यादा समय बाहर गुजारता है।

प्रश्न– जिन्दगी मौत की अमानत है, तो मौत किसकी अमानत है ?
उत्तर– क्षमा करें। जिन्दगी और मौत दोनों स्वाभाविक प्रक्रियायें हैं, कोई किसी की अमानत नहीं।

प्रश्न– वह क्या है, जिसके सामने इंसान की एक नहीं चलती ?
उत्तर– उसका नाम है मुकद्दर (भाग्य)।

प्रश्न– वह कौन सी दौलत है, जो बाँटने से खत्म नहीं होती ?
उत्तर– वह है ज्ञान की दौलत।

प्रश्न– जिन्दगी एक सफर है तो मौत क्या है ?
उत्तर– सफर का आखिरी पड़ाव (अंतिम विश्रामगृह)।

प्रश्न– यदि दुनिया में इन्सानियत न होती तो क्या होता ?
उत्तर– दुनिया का संतुलन बिगड़ जाता और चारों तरफ शैतान ही शैतान नजर आते।

प्रश्न– वे कौन हैं, जिनका पैसा कभी नहीं लेना चाहिये ?
उत्तर– भिखारी, अपाहिज, बेसहारा, मक्खीचूस, नेत्रहीन और बेईमानी करने वाले का।

प्रश्न– झूठ कब तक जिन्दा रहता है ?
उत्तर– जब तक सच्चाई झूठ के मुखौटे में छिपी रहती है।

प्रश्न– क्या दर्पण कभी झूठ नहीं बोलता ?
उत्तर– जी हां, वह आपको अपना असली चेहरा ही दिखायेगा।

प्रश्न– इंसान बड़ा है या पैसा ?
उत्तर– आज के भौतिक युग में पैसा को ज्यादा महत्व दिया जाता है, लेकिन इंसानियत सर्वश्रेष्ठ है।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

प्रश्न— अंधा कौन है ?

उत्तर— अंधा वह नहीं, जिसकी आँखे नहीं हैं। अन्धा वह है, जो अपने दोषों को ढ़कता है।

प्रश्न— सीखी कहाँ नबाब जूं, ऐसी देनी देन,
ज्यों ज्यों कर ऊँचो करो, त्यों त्यों नीचे नैन।

उत्तर— देनहार कोई और है, भेजत है दिन रैन,
लोग भरम हम पर करैं, ताते नीचे नैन।

प्रश्न— अनाचार कब बढ़ता है ?

उत्तर— जब सदाचार चुप रहता है।

प्रश्न— उत्पात किसको शोभा देता है और क्षमा किसको ?

उत्तर— उत्पात छोटों को और क्षमा बड़ों को शोभा देती है।

प्रश्न— मानव को दानव कौन बनाता है ?

उत्तर— उसका अहंकार।

प्रश्न— कौन इंतजार नहीं करते ?

उत्तर— मौत और समय।

प्रश्न— मनुष्य धोखा कब खाता है ?

उत्तर— जब वह अपने को चालाक और दूसरे को बेवकूफ समझता है।

प्रश्न— दिया तले अंधेरा क्यों होता है ?

उत्तर— क्योंकि वह दूसरों के लिये जलता है।

प्रश्न— अक्ल बड़ी या भैंस ?

उत्तर— हर हालत में अक्ल ही बड़ी होती है।

प्रश्न— सच बोलने वाला धकियाया जाता है और झूठ बोलने वाला मालपुआ खाता है। ऐसा क्यों ?

उत्तर— क्योंकि सच कड़वा होता है और झूठ शहद सा मीठा होता है।

प्रश्न— आज के युग में इंसान से ज्यादा पैसा की कद्र क्यों की जाती है?

उत्तर— क्योंकि आज के जमाने में पैसा से इंसान भी खरीदे जाते हैं।

प्रश्न— बात की मार और तलवार की मार में क्या फर्क है?

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

उत्तर– तलवार की मार का जख्म भर जाता है, पर बात का जख्म सदैव हरा रहता है, बहुत ही मुश्किल से भर पाता है।

प्रश्न– मकान और घर में क्या फर्क है?

उत्तर– मकान ईंट गारे से बनते हैं और घर प्रेम से।

प्रश्न– यमुना की लहरों से जब मैंने कल पूछा – 'दर्शन' और 'देखने' में अंतर है कितना ?

उत्तर– यमुना हंसी और कलकल स्वर में बोली – ''वृन्दावन'' और ''आगरा'' में है जितना।

आकाश में हर घुमड़ने वाला बादल बरसने वाला नहीं होता। कुछ ही बरसते हैं, कुछ तो केवल गरज कर छँट जाते हैं। जो गरजता है सो बरसता नहीं। जो बरसता है, सो गरजता नहीं।

भाग्य और पुरूषार्थ की तुलना ताश के खेल से की जा सकती है। ताश के खेल में अच्छे या बुरे पत्ते आना हमारे भाग्य के फल के समान है। परन्तु उन पत्तों से हम किस प्रकार खेलते हैं, यह हमारे पुरूषार्थ के समान है।

जो मनुष्य एक बात सुनकर पेट में रखता है, वह आदमी लाख रूपये का, जो एक कान से सुनकर दूसरे कान से निकाल देता है, वह आदमी सौ रूपये का है और जो आदमी कान से सुनकर जबान से निकालता फिरता है, वह एक कौड़ी का होता है।

इश्क, दौलत और जवानी इनमें से कोई भी वफादार नहीं होती है, और न ही इनके आँख होती है। इसीलिए इन तीनों में इन्सान अन्धा हो जाता है।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

॥ सज्जनता का काढ़ा ॥

यदि आप सज्जन बनना चाहते हैं, तो निम्नलिखित काढ़े का सेवन करने से अपने आप सज्जनता आते देर नहीं लगेगी :-

❖ आवश्यक सामग्री ❖

१. सच्चाई के पत्ते	-१ तोला
२. ईमानदारी की जड़	-३ तोला
३. उदारता का अर्क	-३ तोला
४. परोपकार का बीज	-५ तोला
५. सत्संगत का रस	-१ तोला
६. रहम दिल का छिलका	-४ तोला
७. स्वदेश प्रेम का रस	-५ तोला
८. दान-शीलता का सिरका	-७ तोला

❖ बनाने की विधि ❖

उपर्युक्त सब चीजों को एक साथ मिलाकर, परमात्मा की हाँड़ी में डालकर, स्नेह भाव के चूल्हे पर रख कर प्रेम की अग्नि में पकायें, फिर अच्छी तरह से पक जाने पर नीचे उतार कर ठंडा करें, फिर शुद्ध मन के कपड़े से छान कर मस्तिष्क की शीशी में भर लें।

❖ सेवन विधि ❖

इसको प्रतिदिन सन्तोष के गुलकन्द के साथ इन्साफ की चम्मच से तीन बार-सुबह, दोपहर एवं शाम को सेवन करें।

❖ परहेज रखना ❖

क्रोध की मिर्च, अहंकार का तेल, लोभ की मिठाई, स्वार्थ का घी, धोखे का पापड़, इन सबसे सावधान एवं दुराचरण की भावना से बचना।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi
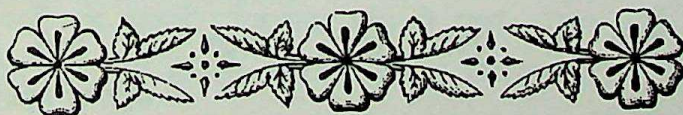
॥ पूजा के बारह फूल ॥

डरे हुए को अभयदान दो, भूखे को अनाज का दान।
प्यासे को जल दान करो, अपमानित का आदर सम्मान।।
विद्यादान करो अनपढ़ को, विपद ग्रस्त को आश्रय दान।
वस्त्र हीन को वस्त्र दान दो, रोगी को औषध का दान।।
धर्म रहित को धर्म सिखाओ, शोकातुर को धीरज दान।
भूले को सन्मार्ग बता दो, गृह - विहीन को दो गृह दान।।
करो सभी निस्वार्थ भाव से, मन में कभी न हो अभिमान।
अपने सम सबही को मानो, फिर किस पर किसका अहसान।।
इन बारह पुष्पों से, प्रभु का करता जो अर्चन ओ ध्यान।
हो निष्काम प्रेम - युत, उसको निश्चय मिलते हैं भगवान।।

॥ ज्ञाननिर्झर ॥

जो बिगड़ी को बनाते हैं उसे भगवान कहते हैं।
जो मुसीबत में काम आवे, उसे इन्सान कहते हैं।।
जो पैदा दर्द को कर दे, उसे तान कहते हैं।
जो रिझाता है भगवान को, उसे गान कहते हैं।।
जो दिल में राम रखता, उसे हनुमान कहते हैं।
जो पीता है जहर, उसे शिव भगवान कहते हैं।।
जो निभाया वचन पिता का, उन्हें श्रीराम कहते हैं।
जो दिया उपदेश गीता में, उन्हें कृष्ण भगवान कहते हैं।।

जो पाप में फँस जाता है, मानव है, जो उस पर खेद प्रकट करता है, देवता है, जो उस पर घमंड करता है, दानव है। –भामस फुलक

पाप से घृणा करो, पापी से नहीं।
– महात्मा गाँधी

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

।। गृह-लक्ष्मी बनाम दरिद्रा ।।

किन-किन गुणों के कारण नारी गृहलक्ष्मी बन जाती है और किन-किन दुर्गुणों से वही नारी साक्षात् दरिद्रा बन जाती है, यह बात पुराने ग्रन्थों में एक बड़ी रोचक गाथा द्वारा व्यक्त की गई है। हम उस कथा का संक्षिप्त अंश यहां उद्धृत करते हैं, जिससे पाठक और पाठिकाएं इसका मनन करके अपने घर को लक्ष्मी आवास बनाने में सफल हो सकें तथा दारिद्र्य दुर्बुद्धि की सम्भावित आपदाओं से बचने के लिये सावधान हो सकें।

दरिद्रा, लक्ष्मी की सगी बड़ी बहन है। पुराणों में वर्णन आता है कि जब समुद्र - मन्थन से भगवती लक्ष्मी निकली और भगवान विष्णु के साथ उनका पाणिग्रहण होने लगा तो लक्ष्मी जी ने कहा - भगवान ! आप तो स्वयं शास्त्रमर्यादा के निर्माता हैं। जब तक मेरी बड़ी बहन दरिद्रा कुंवारी है, भला मुझ छोटी का विवाह कैसे हो सकता है?

"तुम्हारी बड़ी बहन भी है यह तो अभी मालूम हुआ क्या नाम है उसका? और अभी तक वह कुंवारी क्यों है?" भगवान ने पूछा।

लक्ष्मी जी ने अपनी बड़ी बहन दरिद्रा का परिचय देते हुए कहा कि वर न मिलने के कारण ही अभी तक उसका विवाह न हो सका है।

भगवान विष्णु आखिर दरिद्रा के लिये वर खोजने निकले, पर जहाँ जाकर चर्चा करते वहीं "दरिद्रा" यह नाम सुनकर ही सब ठिठक जाते। भगवान बड़े घूमे फिरे, पर उस देवी के योग्य तथा उसे स्वीकार करने वाला वर उन्हें न मिल सका। अन्त में उन्होंने उद्दालक मुनि के चरण पकड़े और प्रार्थना की कि अन्य किसी दृष्टि से न सही परोपकार के लिये ही सही, वे दरिद्रा से विवाह कर लें। उद्दालक सहमत हो गये। विवाह सम्पन्न हो गया। पर मुनि जब उसे परिणीता कर आश्रम को लौट रहे थे तो आश्रम के यज्ञ धूप की गन्ध से दरिद्रा कुछ व्याकुलता सी अनुभव करने लगी और ठिठक कर खड़ी हो गई। ऋषि के कारण पूछने पर दरिद्रा ने कहा-जहाँ ऐसे-ऐसे काम होते हों वहाँ मैं नहीं रह सकती। उद्दालक मुनि ने पूछा - तुम कहाँ रह सकती हो और कहाँ नहीं रह सकती, इसका विस्तृत विवरण दो।

उसने कहा - जहां नित्य प्रति झाड़ू बुहारी लगती हो, गाय के गोबर से लेपन

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

होता हो, घर के सब लोग सूर्योदय से पहले सोकर उठते हों, स्नान, संध्या, भजन आदि कर्म करते हों, पितरों के लिये स्वधाकार और देवताओं के लिये स्वाहाकार होता हो, जिस घर की स्त्रियाँ स्वच्छ सुन्दर वस्त्राभूषणों से अलंकृत, गोपूजन, तुलसीपूजन आदि कृत्य करती हों, घर के बालक, युवा और युवतियाँ गुरूजनों के आज्ञाकारी हों और उनकी सेवा में सदैव तत्पर रहते हों, जहाँ समय समय पर व्रत, उपवास, स्नान, दान और यज्ञ हवनादि कृत्य किये जाते हों, ऐसे घर में मैं कदापि प्रवेश नहीं कर सकती।

किन्तु, मैं ऐसे स्थान में सुख पूर्वक बसती हूं जहां कि घर के लोग सूर्य चढ़ जाने पर भी खर्राटे की नींद ले रहें हों, जहाँ झाड़ू - बुहारी न लगती हो, कभी गाय के गोबर का चौका न लगता हो, रात के जूठे बर्तन दोपहर तक और दोपहर के उच्छिष्ट बर्तन रात तक बिखरे पड़े रहते हों, मक्खी और मच्छरों की भिनभिनाहट से जो घर सदैव मुखरित रहता है, जिस घर की स्त्रियाँ मैले-कुचले वस्त्र पहनकर और रूखे बिखरे केशों वाली स्त्रियाँ एक दूसरे से प्रातः-सायं लड़ती झगड़ती हों, वृद्ध जन छोटों से डाँट - डपट, मारपीट से पेश आते हों, तथा छोटे गुरूजनों के आदेशों की अवहेलना करते हों। ऐसा कहकर दरिद्रा जिद्द करके अपने स्थान पर वापिस आ गई। इस कथा से प्रत्येक गृहस्थ नारी अपने कर्तव्य को सीख सकती है।

सबसे प्रथम कर्तव्य है,
शिक्षा बढ़ाना देश में।
शिक्षा बिना ही पड़ रहे,
आज हम सब क्लेश में।
शिक्षा बिना कोई कभी,
बनता नहीं सत्पात्र है।
शिक्षा बिना कल्याण की,
आशा दुराशा मात्र है।

— मैथिलीशरण गुप्त

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

॥ नारी: विद्वानों के विचार ॥

❖ नारी नर की सहचरी, उसके धर्म की रक्षक, उसकी गृहलक्ष्मी तथा उसे देवत्व तक पहुँचाने वाली साधिका है। –डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन

❖ नारी यौवनकाल में गृहदेवी, मध्यकाल में सच्चा साथी और वृद्धावस्था में परिचारिका का काम देती है। – बेकन

❖ नारी में सरस्वती होती है, नारी में लक्ष्मी भी होती है और नारी में ही दुर्गा होती है। – मार्कण्डेय पुराण

❖ सबसे सुगन्ध वाली नारी वही है, जिसकी गंध किसी को नहीं मिलती। नारी का प्यार एक ऐसा भंवर है, जिसमें फंस कर इंसान निकल नहीं पाता। – प्लूटो

❖ वह इंसान बहुत भाग्यशाली है जिसका ख्याल कोई नारी करे। – शेक्सपियर

❖ नारी के नयनों में परमात्मा ने दो दीपक रख दिये हैं, जिनके प्रकाश में संसार के भूले–भटके लोग खोया मार्ग पा सकें। – विलीस

❖ नारी का अश्रुबल अपनी एक - एक बूंद में एक - एक बाढ़ लिए होता है। – जयशंकर प्रसाद

❖ पुरूष विजय का भूखा है, नारी समर्पण की। पुरूष लूटना जानता है, नारी लुट जाना। – महादेवी वर्मा

❖ बदला लेने और प्रेम करने में नारी पुरूष से अधिक निर्दयी है। – नीरो

❖ बल का अर्थ अगर पशुबल से किया जाय तो सचमुच स्त्री में पुरूष की अपेक्षा कम पशुबल है, पर बल का अर्थ नैतिक बल हो तो उसमें पुरूष से स्त्री काफी श्रेष्ठ है। – महात्मा गाँधी

❖ सर्वोपरि नारी माँ है, बहन है, बेटी है, दोस्त है–जो ममता की देवी है, स्नेह का भंडार है और त्याग - दया की स्वामिनी है। – सम्पादक

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

॥ नारी के आभूषण ॥

नारियाँ वस्तुतः आभूषणों से बहुत प्रेम करती हैं। हमारे शास्त्रों ने भी नारियों के लिये विविध प्रकार के रत्नाभूषणों आदि की व्यवस्था की है, पर प्रत्येक आभूषण के अन्तर्गत एक गुण, सन्देश छिपा है। प्रत्येक भारतीय नारी को चाहिये कि आभूषण धारण करने के साथ-साथ आभूषण के अन्तर्गत निहित अर्थ संदेश को भी हृदयंगम करे, ताकि उस आभूषण का नाम सार्थक हो सके :-

मिस्सी – मिस अर्थात् बहाना बनाना छोड़ दें।

पान या मेंहदी-लाज की लाली बनाये रखें।

काजल – शील का जल नयनों में रखें।

नथ – मन को नाथे अर्थात् नियन्त्रित रखें, जिससे नाक ऊँची रहे।

बेदी – बदी (बुराई) छोड़ दें।

टीका – ध्यान रखें यश का ही टीका लगे-कलंक का नहीं।

वंदनी – पति एवं गुरूजनों की वन्दना करें।

पत्ती – अपनी तथा परिवार की पत (लाज) रखें।

कर्ण फूल – कानों से दूसरों की प्रशंसा सुनें।

हँसली – हमेशा हँसमुख रहें।

मोहनमाला – सद्गुणों से सबका मन मोह लें।

कण्ठहार – पति के कण्ठ का हार बनें।

कड़े – किसी से कड़ी बात न बोलें।

छल्ले – किसी से छल न करें।

करघनी या कमरबंद – सत्कर्मों के लिये हमेशा कमर बाँध कर तैयार रहें।

पायल – सभी बड़ी बूढ़ी औरतों के पाँव (चरण) स्पर्श करें।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

।। दहेज: खतरनाक हैवान ।।

दहेज हमारे समाज के माथे पर कलंक है। इसे धो डालना हमारा परम धर्म और नैतिक कर्तव्य है। आइये संकल्प करें-दहेज रूपी दीपक की लौ से किसी भी नववधू का आँचल जलने न पाये।

-सम्पादक

सच कहता हूँ मेरी मानो, खतरनाक हैवान है ये।
दहेज माँगने वाले, सबसे शर्मनाक इंसान हैं ये।।
धिक्कार है उन लोगों को, जो बेटों की "नीलामी" करते हैं।
पैसों के लिये "सीता" को छोड़कर "सूर्पणखा" की हामी भरते हैं।।
बेटों को अगर पढ़ाया है तो लड़की वालों पर अहसान किया ?
लड़के वालों के स्वार्थ पर, बापू ने घर बर्बाद किया।।
माँगने वालों को इन्कार करो सब, बहुत बड़े शैतान हैं ये।
दहेज माँगने वाले सबसे शर्मनाक इंसान हैं ये।।
नई पीढ़ी के युवा साथियों ! इस कैन्सर का उपचार करें।
मांगने को उकसायें भी तो, साथी इन्कार करें।।
अपने लिये है, अपना कर्तव्य, नहीं अन्य पर अहसान है ये।
दहेज माँगने वाले बड़े शर्मनाक शैतान हैं ये।।

-शिव भगवान "पारीक" भीमा साभार "सन्मार्ग", कलकत्ता।

ज्यों-ज्यों दवा की मर्ज बढ़ता ही गया। दहेज समस्या हमारे सामने सुरसा की तरह मुँह फाड़े है। कितनी ही मासूम जिन्दगियाँ दहेज की बलिवेदी पर चढ़ रही हैं। उन पत्थर दिलवालों से हमारा अनुरोध है-

मत सताओ ऐ दुनियावालों ऐसे, ये भी हैं इंसा तुम्हारे जैसे।
इनके दिल में भी हैं अरमान कुछ, कहीं ये टूट न जायें शीशे जैसे।

-सम्पादक

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

॥ दहेज बनाम कफन ॥

आप ने देखा होगा 'कफन' का रंग उजला होता है,
दफन मिट्टी में कर दो या जला अग्नि में दो चाहे, कफन
उजला का उजला है, कभी मैला नहीं होता है,
गजब की बात कहता हूँ, पुरानी एक साल की,
कफन देखा इन आँखों ने सुर्ख लाल रंग की -
अर्थी जा रही थी एक, रोते थे कुछ लोग,
वृद्ध एक बेजार रोता था, उसे था अधिक कुछ शोक,
कफन की जगह शादी का जोड़ा था, ढका हुआ,
पैरों में महावर भी था, उसके रचा हुआ,
पूछा जो मैने वाकया! फूट कर वो रो पड़ा,
लुट गया मेरा चमन, जो था हरा - भरा
बड़े नाजों प्यार से, बेटी को पाला था,
शादी पक्की कर दी, लड़का भोला भाला था,
दहेज था अधिक, पर देने का वायदा किया,
सुख बेटी का देखा, पर समझो जहर दिया,
बारात आ गई .... नहीं - नहीं सामत मेरी आई,
न दे सका 'दहेज', टूटी बेटी की सगाई,
सिर पटका लाख रोया, गिड़गिड़ाया था मगर,
बेकार ! वे डिगे नहीं, सब बन गये पत्थर,
बिन दुल्हन की बारात, वापस गई शहर,
दुःख से मेरी लाडली, खा गई जहर,
डोली तो नहीं सज सकी, अर्थी सजा दिया,
मेंहदी की जगह खून का, रोचक रचा दिया,
किससे कहूँ ! कैसे कहूँ ! सुनता यहाँ है कौन,
पत्थर समाज आज का, पथ पर पड़ा है मौन,
जलती हैं, मरती हैं, लुटती हैं बेटियाँ,
नौजवान जाग उठो, क्यों अब भी सो रहे हो ?

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

दौलत के वास्ते, क्यों नीलाम हो रहे हो,
छेड़ दो लड़ाई, हो सगाई फूल हार से,
बनो न कसाई, अपनाओ इन्हें प्यार से,
लो न फायदा किसी, गरीब की लाचारी का,
सौदा न करो, वास्ता है, तुम्हें खुद्दारी का,
ये हैं 'चमन' के फूल, सहेज लो दामन में तुम,
खिल उठेगा गुलिस्ताँ, तूफाँ को समेटो तुम।

साभार-वासुदेव 'चमन'

॥ कम से कम इंसान बनो ॥

यदि भला किसी का कर न सको,
तो बुरा किसी का न करना।
अमृत पिलाने को न हो अगर,
तो जहर पिलाते भी डरना।।
सत्य मधुर यदि कह न सको,
तो झूठ कभी भी मत बोलो।
मौन रहो तो सबसे अच्छा,
कम से कम विष तो मत घोलो।।
महल किसी का बना न सको,
तो झोपड़ियां न जला देना।
मलहम पट्टी गर कर न सको,
तो खारा नमक न लगा देना।।
दीपक बन कर जल न सको,
तो अन्धकार न कर देना।।
इस दुनिया में आये हो तो,
कम से कम इंसान बनो।
काम - क्रोध - मद - लोभ त्याग कर,
प्रतिपल सीताराम भजो।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

॥ शराबः आधुनिक जहर ॥

बेमौत, बेकफन कई, मर गये जमाने में,
फिर भी पीते हैं जहर, लोग मयखाने में।
जहर की माँ, पतन की राह, हवस की आग है ये,
नेस्तनाबूद जो कर दे, वही शराब है ये।
अरे खुद पे नहीं तो, देश पर तरस खाओ,
ऐसे पागल न बनो लोगों, होश में आओ।
नन्हें मासूम से चहरों पे, कुछ नजर डालो,
उन्हें शराब की बोतल से, मत कुचल डालो।
वही अपनायेंगे, जो आज दिखाओगे उन्हें,
वही सीखेंगे, जो आज सिखाओगे उन्हें।
क्यों सुहागन को अभागिन की जिन्दगी दे दी,
तुमने मन्दिर में, इबादत में, गन्दगी दे दी।
कितने सपने, कितने अरमान थे, सुहागन के,
भर दिये कांटे, फूल बेच दिये आंगन के।
ऐ मेरे भाई, मेरे दोस्त, सम्भालो खुद को,
अरे नागिन के जाल से तो बचालो खुद को।
शराब डँसती है हर रोज, ऐसी नागिन है,
जरा पहचानो तो, ये दोस्त नहीं दुश्मन है।
कौन कहता है शरावी को गम नहीं होता,
शराब पीने से गम, दोस्त कम नहीं होता।
छोड़ दो, तोड़ दो, बोतल को अब न छूना कभी,
सुनो 'अरविन्द' की फरियाद, अब न पीना कभी।

अर्जुन "अरविन्द" के सौजन्य से
साभार "सन्मार्ग" कलकत्ता

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi
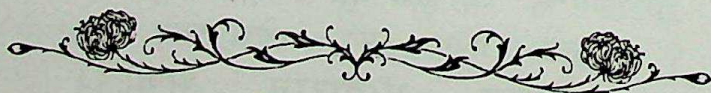
॥ यह कैसा मनोरंजन है ? ॥

वर्तमान समय में टी.वी. चैनलों, फिल्मों तथा पत्र-पत्रिकाओं में मनोरंजन का नाम देकर समाज के ऊपर जिसे थोपा जा रहा है, वह मनोरंजन के नाम पर विनाश ही है।

पत्र-पत्रिकाओं के मुख-पृष्ठों तथा अन्दर के पृष्ठों पर अश्लील चित्रों की भरमार रहती है। इस दिशा में अपनी पत्रिकाओं में नई-नई कल्पनाओं को लाने के लिए पाश्चात्य पत्रिकाओं का अनुकरण किया जाता है।

फिल्मी जगत तथा टी.वी. चैनल तो मानों इस स्पर्धा के लिये ही आरक्षित हैं। हर बार नये-नये उत्तेजक दृश्यों, अपराध की विद्याओं, हिंसा के तरीकों का प्रदर्शन करना तो मानो इनका सिद्धान्त ही बन गया है।

वास्तव में मनोरंजन से तो मन हल्का होना चाहिए, चिंताओं का दबाव कम होना चाहिए परन्तु यहाँ तो सब कुछ उल्टा ही होता है। ऐसी पाशवी वृत्तियों को प्रोत्साहन मिलता है जिनकी नित्य जीवन की गतिविधियों में कोई गुंजाइश ही नहीं होती। मस्तिष्क की शिराओं पर दबाव, चित्रपट देखने के बाद मन में कोलाहल तथा प्रचंड उद्वेग। एक काल्पनिक कथा पर बनी फिल्म **'एक दूजे के लिये'** को देखकर सैंकड़ो युवक-युवतियों द्वारा आत्महत्या जैसा पाप करना तथा **'शक्तिमान'** धारावाहिक में उड़ते हुये काल्पनिक व्यक्ति को देखकर कई मासूम बच्चों का छतों व खिड़कियों से कूदकर जान से हाथ धो बैठना, क्या यह विनाश की परिभाषा नहीं है ?

पाश्चात्य जगत का अंधानुकरण करके भारतीय समाज पहले ही पतन के बड़े गर्त में गिरा हुआ है। फैशनपरस्ती, भौतिकता तथा भोगवासना ने समाजोत्थान के मानदण्डों को ध्वस्त कर दिया है। युवा वर्ग व्यसनों तथा भोगवासना की दुष्प्रवृत्तियों का शिकार बन रहा है। ऐसी स्थिति में संतसमाज द्वारा ध्यान योग शिविरों, विद्यार्थी उत्थान शिविरों, रामायण तथा भागवत, गीता तथा उपनिषदों की कथा-सत्संगों के माध्यम से गिरते हुये मानव को अशांति कलह तथा दुःखी जीवन से सुख, शान्ति एवं दिव्य जीवन की ओर अग्रसर के महत् कार्य किये जा रहे हैं। इन कार्यक्रमों से लाखों-लाखों भटके हुये लोगों को सही राह मिल रही है। इसके कई उदाहरण हैं। **'यौवन सुरक्षा'** तथा **'महान नारी'**

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

जैसी प्रेरणादायी पुस्तकों से चारित्रिक पतन की खाई में गिर रहे युवावर्ग को भारत के ऋषि-प्रणीत संयमी एवं तेजस्वी जीवन जीने की प्रेरणा व कला मिल रही है। यदि विवेक-बुद्धि से विचार किया जाय तो भारत का अन्न खाने वाले इन लोगों को अपनी संस्कृति के उत्थान के लिये सहयोग करना चाहिए परन्तु ये तो समाज की उन्नति में बाधा बनकर देशद्रोही की भूमिका निभा रहे हैं। ऐसे लेख छापकर व्यभिचार और पाश्चात्य संस्कृति को बढ़ावा देने का कुकृत्य कर रहे हैं।

पाश्चात्य देशों के अधिकांश लोग अपनी संस्कृति को छोड़कर, उच्छृंखलता से बाज आकर सनातनी संस्कृति की ओर बढ़ रहे हैं परन्तु सनातनी संस्कृति के कुछ लोग पश्चिम की भोगवादी संस्कृति को अपना रहे हैं और उसका बड़े जोर-शोर से प्रचार कर रहे हैं। हे प्रभु ! यह कैसी विडम्बना है ?

जिनसे समाज को शांति, सत्प्रेरणा, उचित मार्गदर्शन तथा दिव्य जीवन जीने की कला मिल रही है, उनका तो विरोध होता है और जिनसे समाज में कुकर्म, व्यभिचार तथा चरित्र हनन जैसी कुचेष्टाओं को बढ़ावा मिले-ऐसे लेख प्रकाशित हो रहे हैं। अब आप स्वयं विचार कीजिये कि ऐसे लोग मानवता के मित्र हैं या घोर शत्रु ?

मोहनदास करमचंद गाँधी ने बचपन में केवल एक बार **'सत्यवादी हरिश्चन्द्र'** नाटक देखा था। उस नाटक का उन पर इतना गहरा प्रभाव पड़ा कि उन्होने आजीवन सत्यव्रत लेने का संकल्प ले लिया तथा इसी व्रत के प्रभाव से वे इतने महान् हो गये।

एक चलचित्र का बालक के जीवन पर कितना गहरा प्रभाव पड़ता है, यह गाँधी के जीवन से स्पष्ट हो जाता है। अब जरा विचार कीजिये कि जो बच्चे टी.वी. के सामने बैठकर एक ही दिन में कितने ही हिंसा, बलात्कार और अश्लीलता के दृश्य देख रहे हैं वे आगे चलकर क्या बनेंगे ? सड़क चलते हमारी बहन-बेटियों को छेड़नेवाले कहाँ से पैदा हो रहे हैं ? उनमें बुराई कहाँ से पैदा होती है ? कौन हैं ये लोग जो ५ और १० साल की बच्चियों को भी अपनी हवस का शिकार बना लेते हैं ? उनको यह सब कौन सिखाता है ? क्या ये किसी स्कूल से प्रशिक्षण लेते हैं ?

किसी भी स्कूल में ऐसा पाप करने का प्रशिक्षण नहीं मिलता। कोई भी

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

माता-पिता अपने बच्चों से ऐसा पाप नहीं करवाते। इसके बावजूद भी ऐसे लोग हैं तो उसके कारण हैं टी.वी., सिनेमा तथा गन्दे पत्र-पत्रिकायें जिनके पृष्ठों पर अश्लील चित्र तथा सामग्रियाँ छापी जाती हैं।

जिस देश के ऋषियों ने कहाः **'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता'** उसी देश की नारियों के लिए घर से बाहर निकलना भी असुरक्षित हो गया है। यह कैसा मनोरंजन है ? यह मनोरंजन नहीं है अपितु घर-घर में सुलगती वह आग है जो जब भड़केगी तो किसी से देखा भी नहीं जायेगा। जिस देश की संस्कृति में पति-पत्नी के लिये भी माता-पिता तथा बड़ों के सामने आपसी बातें करनी की मर्यादा रखी गयी है, उसी देश के निवासी एक साथ बैठकर अश्लील दृश्य देखते हैं, अश्लील गाने सुनते हैं। यह मनोरंजन के नाम पर विनाश नहीं तो और क्या हो रहा है ?

यदि आप अपनी बहन-बेटियों की सुरक्षा चाहते हैं, यदि आप चाहते हैं कि आपका बच्चा किसी गली का माफिया न बने, डॉन न बने अथवा वो बलात्कार जैसे कुकर्मो के कारण जेलों में न सड़े, यदि आप चाहते हैं कि आपके नौनिहाल संयमी, चरित्रवान् तथा महान् बनें तो आज से ही इन केबल कनेक्शनों, सिनेमाघरों तथा अश्लीलता का प्रचार करने वाले पत्र-पत्रिकाओं का बहिष्कार कीजिये। हमें नैतिक तथा मानसिक रूप से उन्नत करनेवाली फिल्मों की आवश्यकता है। हमें ऐसे प्रसारण चाहिए, ऐसे दृश्य चाहिए जिनसे स्नेह, सदाचार, सहनशीलता, करूणाभाव, आत्मीयता, सेवा-साधना, सच्चाई, सच्चरित्रता, तथा माता-पिता, गुरूजनों एवं अपनी संस्कृति के प्रति आदर का भाव प्रकट हो जिससे हमारा देश दिव्यगुणसम्पन्न हो, आध्यात्मिक क्षेत्र का सिरताज बने। इसके लिये जागृत होकर हम सबको मिलकर प्रयास करना चाहिए अन्यथा आने वाला समय हमें माफ नहीं करेगा और हमें इसकी वो कीमत चुकानी पड़ सकती है जिसका हमें आज अहसास भी नहीं है।

– साभार लोक कल्याण सेतु (वर्ष ३ अंक ३२)
में प्रकाशित लेख का संक्षिप्त सारांश

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

।। संसार के सात सुख ।।

पहला सुख नीरोगी काया, दूसरा सुख घर में माया।
तीसरा सुख सुलक्षणा नारी, चौथा सुख सुत आज्ञाकारी।
पाँचवा सुख राज में पासा, छठा सुख जलसार बासा।
सातवाँ सुख पड़ोसी अच्छा, सबसे सुखी वही बच्चा।

।। सरल और कठिन ।।

१. उपदेश देना सरल है – अमल करना कठिन है।
२. खर्च करना सरल है – कमाना कठिन है।
३. शत्रु बनाना सरल है – मित्र बनाना कठिन है।
४. विवाह करना सरल है – निबाह करना कठिन है।
५. वचन देना सरल है – पालन करना कठिन है।
६. काम बिगाड़ना सरल है – काम बनाना कठिन है।
७. उधार बेचना सरल है – वसूल करना कठिन है।

।। योग्यता ।।

कहने योग्य – सत्य। खाने योग्य – गम।
पीने योग्य – क्रोध। लेने योग्य – ज्ञान।
देने योग्य – दान। बोलने योग्य – मधुर वचन।
धारण योग्य – सन्तोष। दिखाने योग्य – दया।
जीतने योग्य – मोह। पढ़ने योग्य – सद्ग्रंथ।
छोड़ने योग्य – ईर्ष्या। समझने योग्य – अपनी त्रुटियाँ।
व्यवहार योग्य – सहनशीलता। स्मरण करने योग्य – हरिनाम।
करने योग्य – दूसरों की भलाई। सम्पूर्ण योग्य – इंसानियत।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi
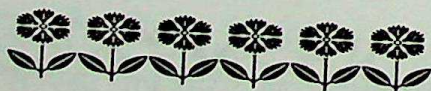
॥ ज्ञान की बातें ॥

- लेना चाहते हो तो आशीर्वाद लो।
- देना चाहते हो तो अभय दान दो।
- खाना चाहते हो तो क्रोध और गम को खाओ।
- मारना चाहते हो तो बुरे विचारों को मारो।
- जानना चाहते हो तो परमेश्वर को जानो।
- जीतना चाहते हो तो तृष्णाओं को जीतो।
- पीना चाहते हो तो ईश्वर चिंतन का शर्बत पीओ।
- पहनना चाहते हो तो नेकी का जामा पहनो।
- करना चाहते हो तो दीन दुखियों की सहायता करो।
- छोड़ना चाहते हो तो झूठ बोलना छोड़ दो।
- बोलना चाहते हो तो मीठे वचन बोलो।
- तौलना चाहते हो तो अपनी वाणी को तौलो।
- देखना चाहते हो तो अपने अवगुणों को देखो।
- सुनना चाहते हो तो दुःखियों की पुकार सुनो।
- पढ़ना चाहते हो तो महापुरूषों की जीवनी पढ़ो।
- दर्शन करना चाहते हो तो देव दर्शन करो।
- चलना चाहते हो तो सन्मार्ग पर चलो।
- पहचानना चाहते हो तो अपने आप को पहचानो।

अनमोल वचन

गुण न हो तो रूप व्यर्थ है, विनम्रता न हो तो विद्या व्यर्थ है, उपयोग न आवे तो धन व्यर्थ है, साहस न हो तो हथियार व्यर्थ है, भूख न हो तो भोजन व्यर्थ है, होश न हो तो जोश व्यर्थ है एवं उपकार न करने वाले का तो जीवन ही व्यर्थ है।

॥ क्रोधः अशान्ति का मूल ॥

क्रोध आदमी का सबसे ब्रड़ा शत्रु है। यह मस्तिष्क के दीप को बुझा देता है, जिससे मनुष्य की सोचने विचारने की शक्ति खत्म हो जाती है। क्रोध सबंधों को बिगाड़ता है। दुःखों, समस्याओं व तनावों को निमंत्रण देता है। यह वह नकारात्मक सोच है, जो मूर्खता से शुरू होता है और पश्चाताप पर खत्म होता है। कभी-कभी क्रोध के भयंकर परिणाम सामने आते हैं। क्रोध करने पर ही रावण मरा और दुर्योधन का नाश हुआ। अतः छोटी-छोटी बातों को बड़ा तूल देकर अहम् का मुद्दा बनाने से बाद में खुद को ही पछताना पड़ता है।

आवेश में उपजा क्रोध क्षणिक पागलपन है, जो अपनी अपेक्षायें पूरी न होने पर उपजता है व विवेक को खा जाता है। जिन बातों या स्थितियों से आवेश उपजता हो, उनसे दूर रहना और उन्हें अनदेखा करना ही उचित है। क्रोध हर दृष्टि से अपना ही नुकसान करता है, प्रतिपक्ष को हम पर हावी होने का मौका देता है।

क्रोध मानव का अपना ही खून जलाता है। गुस्सैल व्यक्ति अकेला पड़ जाता है। ज्यादा खीजता है, कुढ़ता है व तनाव मोल लेकर, विभिन्न व्याधियों का शिकार होकर अपना ही स्वास्थ्य चौपट कर लेता है। क्रोध के समय वाणी की मिठास खत्म हो जाती है, चेहरा विकृत व आँखें लाल हो जाती हैं। चेहरे की मांसपेशियों में तनाव आ जाने के कारण चेहरा भयावना लगने लगता है। कालान्तर में चेहरे पर झुर्रियाँ पड़ जाती हैं व अल्पवय में ही बुढ़ापा घेर लेता है। क्रोध शरीर की पाचन शक्ति को नष्ट कर देता है। क्रोध आदमी के दिन का चैन व रात की नींद हराम कर देता है। क्रोधित व्यक्ति खुद भी अशान्त हो जाता है एवं अपने घर परिवारजनों को भी अशान्त बना देता है।

क्रोध को शान्त करने के दस सूत्र

१. ऐसी कोई इच्छा ही न की जाय, जिसकी पूर्ति न होने पर क्रोध आने की संभावना हो।

२. भगवान में दृढ़ विश्वास रखना। जो होता है-भगवान की इच्छा से ही होता है, जो सर्वदा मंगलमयी है। मन में यह विश्वास रखना कि जो हो रहा है, मेरे लिये अच्छा ही हो रहा है।

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

३. क्रोध आने पर हाथ, पैर, मुँह, आँख धोकर थोड़ा ठण्डा जल तुरन्त पीना चाहिये।

४. तत्पश्चात् मौन धारण कर मन ही मन भगवान का रामनाम का जाप करना।

५. क्रोध आने पर किसी भी दूसरे काम में मन लगाने की चेष्टा करनी चाहिये, जिससे कि पहले की बात से ध्यान हट जाय।

६. क्रोध आने पर भी मन ही मन दबाना एवं दूसरे पर प्रकट न होने देने की चेष्टा करना और प्रकट हो जाने पर पश्चाताप करना।

७. क्रोध आने पर उपवास द्वारा प्रायश्चित करना एवं पहले से अधिक माला का जप करना एवं भगवान का दर्शन करना।

८. प्रातःकाल उठते ही मन में निश्चय करना कि मैं आज किसी भी परिस्थिति में किसी पर भी क्रोध नहीं करूंगा। तथा रोज की घटना को लिखकर स्वयं मनन करना कि क्रोध क्यों आया? अधिकतर क्रोध बेकार की बातों पर ही आया करता है। स्वयं मनन करने पर आप भी जान जायेंगे।

९. प्रत्येक मानव को भगवान का रूप समझना, जिससे क्रोध आने की संभावना क्षीण हो जायेगी।

१०. जिस पर क्रोध आ जाय उसके सामने बड़ी नम्रता से सच्चे मन से क्षमा माँगना।

नजरें बदली तो नजारे बदल गये,
किश्ती ने बदला रूख तो किनारे बदल गये।।

बाधायें कब बाँध सकी हैं, आगे बढ़ने वालों को
विपदायें कब रोक सकी हैं, पथ पर चलने वालों को।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

धन से क्या खरीद सकते हैं ?

धन से शैया खरीदी जा सकती है नींद नहीं।
धन से पुस्तकें खरीदी जा सकती हैं ज्ञान नहीं।
धन से भोजन खरीदा जा सकता है हाजमाशक्ति नहीं।
धन से दवाएं खरीदी जा सकती हैं स्वास्थ्य नहीं।
धन से मकान खरीदा जा सकता है घर नहीं।
धन से विलासिता खरीदी जा सकती है सभ्यता नहीं।
धन से आमोद प्रमोद खरीदा जा सकता है खुशी नहीं।
धन से प्रसाधन सामग्री खरीदी जा सकती है सुन्दरता नहीं।
धन से देवालय खरीदा जा सकता है निर्मलता नहीं।
धन से आज्ञाकारी सेवक खरीदा जा सकता है सम्मान नहीं।
धन से नौकर खरीदा जा सकता है मित्र नहीं।
धन से धन खरीदा जा सकता है समानता नहीं।
धन से विषय सुख खरीदा जा सकता है प्यार नहीं।
धन से आदमी खरीदे जा सकते हैं विश्वास नहीं।
धन से वस्तुएं खरीदी जा सकती है शान्ति नहीं।
धन से सामाजिक स्थिति खरीदी जा सकती है कुलीनता नहीं।
धन से मान्यता खरीदी जा सकती है प्रतिष्ठा नहीं।
धन से पदवी खरीदी जा सकती है महानता नहीं।
धन से सेवा खरीदी जा सकती है स्वामिभक्ति नहीं।
धन से शक्ति खरीदी जा सकती है प्रभाव नहीं।
धन से इंसान खरीदे जा सकते हैं इन्सानियत नहीं।

धन की प्यास जल की प्यास से कहीं बढ़ कर दुःखदायिनी है। जल की प्यास तो जल मिलने पर शान्त हो जाती है, परन्तु धन की प्यास धन मिलने पर और भी बढ़ती है।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

॥ जीवन-दर्पण ॥

जीवन एक चुनौती (Challenge) है – सामना करिये।
जीवन एक साहसिक कार्य (Adventure) है – हिम्मत रखिये।
जीवन एक दुःख (Sorrow) है – स्वीकार करिये।
जीवन एक दुःखान्त घटना (Tragedy) है – सामना करिये।
जीवन एक कर्तव्य (Duty) है – पूरा करिये।
जीवन एक खेल (Play) है – आराम से खेलिये।
जीवन एक रहस्य (Mistry) है – सुलझाइये।
जीवन एक संगीत (Music) है – आनन्द उठाइये।
जीवन एक चरम सुख (Bliss) है – स्वाद चखिये।
जीवन एक सुअवसर (Opportunity) है – सदुपयोग करिये।
जीवन एक सपना (Dream) है – महसूस करिये।
जीवन एक यात्रा (Journey) है – पूरा करिये।
जीवन एक प्रतिज्ञा (Promise) है – निभाइये।
जीवन एक सौन्दर्य (Beauty) है – पूजा करिये।
जीवन एक संघर्ष (Struggle) है – जारी रखिये।
जीवन एक लक्ष्य (Target) है – प्राप्त करिये।

जीवन कर्म का ही दूसरा नाम हैं। वह जो कि कर्म नहीं करता, उसका अस्तित्व है किन्तु वह जीवित नहीं।

–हिलाई

हम इस प्रकार जीवन व्यतीत करें कि हमारे मरने पर हमें दफनाने वाले भी दो आँसू बहा दें। *–पेट्रार्क*

प्रत्येक मनुष्य इस संसार के रंगमंच पर एक अभिनय करने आता है। अपनी मन प्रवृति से प्रेरित होकर अपने पाठ को दुहराता है - यही मनुष्य का जीवन है।

–भगवती चरण वर्मा

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

॥ अर्थ से मिली अर्थहीनता ॥

पुष्करलाल केडिया

आज अर्थ संचय की प्रवृत्ति ने मनुष्य को निर्बल और अकर्मण्य बना दिया है। शेयर, लाटरी, मटका, जुआ इसके स्पष्ट प्रमाण हैं। एक अकल्पित संशय पूर्ण भविष्य की कल्पना आज के आदमी को डरा रही है। वह छोटे से जीवन के कुल क्षणों से कई गुना अधिक संचय कर लेना चाहता है और इस अंधेपन में उसे यह कभी नहीं दिखायी देता कि वह अपने कृत्यों से कितनी हत्याएँ करता चला जा रहा है।

भारतीय दर्शन में जीवन लक्ष्य की प्राप्ति के लिए चार पुरूषार्थ निश्चित किये गये। धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष। ऋग्वेद में अर्थ की कामना उद्देश्य और लोगपरकता को शताधिक सूक्तियों में व्यक्त किया गया है। आदि पुरूष के गंभीर चिन्तनों में एक यह भी था- **कामोराये हवते मा स्वरित** अर्थात मेरा संकल्प मुझे कल्याण कारक धन प्राप्ति के लिये प्रेरणा देता है। ईश्वर से एक प्रार्थना भी थी- **बसो दानाय राघः समथयस्व** अर्थात हे सबको बसानेवाले प्रभो! तू दान देने के लिए हमें धन प्रदान कर। इस धन का समुचित उपयोग लोकहित में हो इसके लिए एक शिक्षा भी- **मापर्णिभूः** अर्थात कंजूस मत बन। पृथ्वी पर श्रेष्ठ जिस आर्य संस्कृति को ये संस्कार नैसर्गिक रूप में मिले आज उन्हें मनुओं की सन्तान अर्थहीन अर्थ की कामना में जीवन के सब रंग मिटाये जा रही है।

पहले धर्म के उद्देश्य हेतु अर्थ की कामना की जाती थी। आज अर्थ की कामना से धर्म निभाये जा रहे हैं। पूजा पाठ, यज्ञ हवन करने का एक उद्देश्य अर्थ प्राप्ति भी रह गया है। सन्तानोत्पति में भी यही भावना मन में उत्पात मचा रही है। पुत्र उत्पन्न होगा, कमायेगा, अर्थ-व्यवस्था में सहारा लगायेगा-पुत्री उत्पन्न होगी तो अपने साथ लक्ष्मी भी घर से ले जायेगी। अपनी ही सन्तान में भेद-भाव करा दिया इस अर्थ की भावना ने।

पहले उच्च शिक्षा प्राप्त करने का उद्देश्य-समाज, देश एवं देशान्तर में कुल का नाम ऊंचा करना था। आज उच्च शिक्षा का एकमात्र उद्देश्य हो गया है धन कमाना। उच्च शिक्षा प्राप्ति के लिए भर्ती होने के लिए हजार-हजार,

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

लाख-लाख रूपये देना या घूस की रकम लगाकर उसे चक्रवृद्धि ब्याज से भी ज्यादा दर पर वापिस वसूलना। मां बाप अपनी सन्तान की उच्च शिक्षा की व्यवस्था में अपना सारा सुख गंवा रहे हैं और उच्च शिक्षा प्राप्त सन्तान अन्त में अपने मां-बाप का परिचय मां बाप के रूप में कराने में भी कतरा रही है। परिवार में माँ-बाप के बंटवारे की भी नयी समस्या आ गयी है।

आज अर्थ संचय की प्रवृति ने मनुष्य को निर्बल और अकर्मण्य बना दिया है। शेयर, लाटरी, मटका, जुआ इसके स्पष्ट प्रमाण हैं, एक अकल्पित संशयपूर्ण भविष्य की कल्पना आज के आदमी को डरा रही है। वह छोटे से जीवन में जीवन के कुल क्षणों से कई गुना अधिक संचय कर लेना चाहता है और इस अंधेपन में उसे यह कभी नहीं दिखायी देता कि वह अपने कृत्यों से कितनी हत्याएं करता चला जा रहा है - आत्मा की, नैतिकता की, सौहार्द की और न जाने कितनी अनगिनत भावनाओं की। मनुष्य की संचय भावना का एक अंग्रेज लेखक ने जिक्र किया है, मैने हजार व्यक्तियों से एक सवाल किया और नौ सौ निन्यानवे (९९९) व्यक्तियों से एक जवाब मिला कि भविष्य में सुख की कामना के लिए वर्तमान किसी तरह गुजार रहे हैं, परन्तु चंचला लक्ष्मी के क्षणिक स्थायित्व पर मनुष्य में कितना अहंकार पैदा हो गया है कि इस बारे में सोचना ही भूल गया है।

विवाहों में होनेवाली फिजूल खर्ची, जन्म दिवस एवं अब विवाह की भी वर्षगांठ, सिल्वर जुबली। होड़ जो लग रही है अर्थ को अनर्थ में उपयोग की।

क्यों भूल गये हैं-हम उस विश्व प्रसिद्ध कहानी को। जमीन प्राप्ति की कामना में दिन भरे घोड़े पर दौड़ता रहा वह दीन। उसे वरदान मिला कि शाम तक वह जितनी जमीन माप लेगा, वह उसकी हो जायेगी। घोड़े ने जवाब दे दिया तो पैदल ही दौड़ पड़ा बेतहाशा। सांझ होने के पहले ही गिर पड़ा जमीन्न पर। लोगों ने कहा- बस इसके काम की यही दो गज जमीन है।

राणा प्रताप का नाम जबान पर आते ही हम गर्व का अनुभव करते हैं। चार सौ वर्ष पूर्व के भामाशाह एवं चेतक नाम की हमें जानकारी है किन्तु अपने परिवार में सौ वर्ष पूर्व कौन हुआ, हम नहीं बता पाते। सोचिये-क्या रह गया है जीवन का अर्थ! अर्थ का अर्थ।

अल्लाउद्दीन के चिराग की कथा सभी जानते हैं, चिराग के उस जिन्न

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

से सिवाय ऐशो आराम के कभी कुछ नहीं मांगा गया। दूसरों का भला हो ऐसा कोई हुक्म उस जिन्न को नहीं दिया गया, आखिर क्या हुआ? आदमी के स्वार्थ को देखकर जिन्न भी दुखी हो उठा और चला गया। क्यों भूल बैठे हम अपने आर्य मनीषियों के उस कथन को, 'ऊंचे उठकर अर्थात् समृद्ध बनकर अपने आश्रितों के अन्नदाता बनो।'

इस प्रसंग में एक लघु कथा का जिक्र वांछनीय होगा–दो भागीदार थे। एक सीधा सादा और दयालु मन एवं दूसरा पैसे को प्रधानता देनेवाला। पहला भागीदार सत्कर्मों की इच्छा रखते हुए भी अपने दूसरे भागीदार के रूपये संचय करने के स्वभाव के कारण कभी अपनी इच्छा पूरी नहीं कर पाता था। अन्त में उसने अपने दूसरे भागीदार से कहा 'मैं तो जा रहा हूं। वह सिर्फ आठ आने अपने साथ लेता आये। भागीदार ने दीन भाव से जीवन एक चुनौती कहा कि आठ आना क्या एक पैसा भी कोई साथ न ला सकेगा।' इस पर प्रथम भागीदार ने मधुर मुस्कान बिखेरते हुए कहा- अगर आठ आना साथ नहीं ला सकते तो इस पैसे पर सांप की भांति कुण्डली मारे क्यों बैठे हो? सभी जानते हैं कि सिकन्दर ने मरने के बाद कफन के बाहर हाथ निकाल देने को क्यों कहा था, इसीलिए कि दुनिया यह देखे कि मनुष्य खाली हाथ इस संसार में आता है और खाली हाथ ही इस संसार से चला जाता है।

पैसे की अर्थहीनता का अर्थ मनुष्य उस व्यक्ति के उदाहरण से भी नहीं सीखता जिसे यह वरदान मिला कि जो कुछ वह छू लेगा वह सोना हो जायेगा। उसकी हर वस्तु स्वर्णिम तो हो गयी परन्तु धातु की तरह बेजान भी। रोटी, बेटी सभी सोने की हो गयी। हम सोचें कि अर्थ हमें किस मोड़ पर ले आया है। हर आदमी आइने के सामने अजनबी सा खड़ा है। ईश्वर ने हमें इन्सान बनाकर भेजा और अर्थहीन अर्थ में उलझकर हम वो भी न बन सके।

– साभार 'मनीषिका'

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.
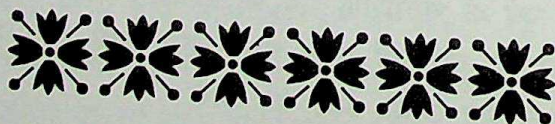
॥ भक्ति-ज्ञान कर्म की त्रिवेणी: मानव जीवन ॥

चिन्तन प्रस्तुतिः पुष्करलाल केडिया

भक्ति, ज्ञान और कर्म-वेदों के प्रज्ञावान ऋषियों से लेकर वर्तमान युग के मनीषियों तक ने इन तीनों की तात्विक मीमांसा करके, संसार को इनकी महत्ता का बोध कराया है। इनके गूढ़ तत्वों का अनुशीलन करके, यदि हम अपने जीवन में इनकी उपयोगिता पर विचार करें तो हमारी सारी क्रियाओं का इनसे गहरा संबंध ज्ञात होगा।

सृष्टि का सृजन, पोषण एवं विनाश करनेवाली तीन महाशक्तियां, ब्रह्मा, विष्णु एवं शिव के रूप में जानी जाती हैं। मनुष्य का जीवन बाल्यावस्था, युवावस्था एवं प्रौढ़ावस्था का संगम है। इसी प्रकार समूचा ब्रह्माण्ड, धरती, आकाश और पाताल, तीन स्तरों में विभाजित है। ज्ञान जीवन का आकाश है, भक्ति पाताल है और कर्म धरती। इन तीनों का संबंध शाश्वत है। ये तीनों पृथक होकर भी एक हैं। किसी एक के विच्छिन्न होने से संतुलन बिगड़ता है।

सनातन धर्म में ईश्वर प्राप्ति के तीन प्रमुख मार्ग बतलाये गये हैं-ज्ञान, भक्ति और कर्म। ये तीनों समानान्तर हैं, इनकी दिशा एक है। इन तीनों का समन्वय लक्ष्य प्राप्ति के लिए अनिवार्य है। जिस प्रकार शरीर की स्थिति, गति और क्रियाशीलता में रक्त, मांस और अस्थि तीनों की भूमिका समान महत्व की है, उसी प्रकार ज्ञान, भक्ति और कर्म की एकात्मता जीवन को सफल बनाने के लिए आवश्यक है।

जिन संत पुरूषों को संसार नमन करता है, उन्हें स्मरणीय बनाने में उनकी ईश्वर के प्रति आस्था के अतिरिक्त, उनके ज्ञान और कर्म की भी प्रमुख भूमिका रही है।

गोस्वामी तुलसीदास इसलिए अमर हुए कि उन्होंने दिन रात राम का ध्यान करते हुए कठिन साधना से ज्ञान प्राप्त किया, उस ज्ञान का उपयोग अमर ग्रंथों के सृजन में किया। इस प्रकार, भक्ति, ज्ञान और कर्म तीनों के सहयोग से उन्हे अमरता और अक्षय कीर्ति मिली।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

संत तुलसी की भांति अन्य महापुरूषों के जीवन में भी हमें भक्ति, ज्ञान और कर्म का अद्भुत संगम दिखायी देता है।

यह कैसी तिडम्बना है कि सरस्वती के देश में अज्ञानता, निरक्षरता, दुर्गा के देश में अत्याचार, अराजकता, विघटन-लीला, बुद्ध और महावीर के देश में हिंसा, श्रीराम के देश में कुशासन और श्रीकृष्ण के देश में कर्मयोग के महान सिद्धांतों का उपहास हम स्पष्ट देख रहे हैं। ऐसा क्यों?

लगता है, हमने जीवन के शाश्वत मूल्यों को ताक पर रख दिया है। हमने तत्वज्ञानियों की बताई हुई बातों की उपेक्षा की और अंत में दिशाहीन हो गये। हमने इस सत्य को नहीं जाना कि सच्ची भक्ति है, अपने आराध्य के दिव्य गुणों को ग्रहण करना। सच्चा ज्ञान है, धर्म-अधर्म, पाप-पुण्य, उचित-अनुचित को जानने पहचानने की दृष्टि प्राप्त करना तथा सच्चा कर्म है- जीवन, जगत और मानव समाज के कल्याण को अपने समस्त कार्यों का लक्ष्य बनाना, स्वयं को ऊपर उठाना और दूसरों के हित के लिए जीवन समर्पित करना। इस सत्य की ओर से दृष्टि फेरने का कुपरिणाम हमारे सामने है। हम भक्ति और ज्ञान से शून्य होकर काम करें अथवा कामकाज छोड़कर कहीं एकान्त में बैठकर ईश्वर का भजन करें अथवा ज्ञान से शून्य होकर भी स्वयं को नेतृत्व या संचालन करने के योग्य मान बैठें, तीनों ही गलत है।

भक्ति ज्ञान और कर्म के समन्वय का रूप स्पष्ट करने के लिए कथा प्रस्तुत है। एक स्थान पर मन्दिर बन रहा था। सैकड़ों श्रमिक कारीगर उसमें लगे थे। एक दिन एक राहगीर उधर से गुजरा और वहीं ठहरकर, मन्दिर का निर्माण कार्य देखने लगा। उसने एक श्रमिक से पूछा- 'यहां तुम क्या करते हो भाई?' श्रमिक बोला-देखते नहीं पत्थर तोड़ रहा हूं?'

राहगीर ने यही प्रश्न उसके साथी से पूछा। वह बोला- 'पेट पालने के लिए पत्थर तोड़ रहा हूँ।'

यही प्रश्न जब तीसरे श्रमिक से पूछा गया तो उसने कहा- 'मन्दिर का निर्माण कर रहा हूँ।'

एक ही काम करने वाले तीन व्यक्तियों ने एक प्रश्न के तीन अलग-अलग उत्तर दिये। पहले श्रमिक के उत्तर में सिर्फ कर्म का भाव था, दूसरे में ज्ञान का और तीसरे में ज्ञान, भक्ति और कर्म तीनों का।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

एक कथा इसी क्रम में और सुनिये। राजा अश्वघोष वैराग्य लेकर ईश्वर प्राप्ति की लालसा से देश देशान्तर घूमते फिर रहे थे। उन्हें न तीर्थाटन से शान्ति मिली, न देव दर्शन से। कथा प्रवचन सुनते सुनते ऊब चले, उससे भी कोई बात नहीं बनी। साधना से उनका मन उचट गया।

एक बार भ्रमण करते समय राजा की भेंट एक किसान से हुई, जो बड़ा प्रसन्न और संतुष्ट दिखायी दे रहा था। किसान से जब उन्होंने उसकी प्रसन्नता का रहस्य जानना चाहा तो उसने उन्हें अपने साथ खेतों में ले जाकर काम में लगा दिया। दिन भर बड़ी मेहनत करने के बाद शाम को थके मांदे राजा ने किसान के साथ ही रूखा सूखा भोजन किया। उन्हें बड़ी तृप्ति और शान्ति मिली।

किसान बोला- 'राजन! परिश्रम से रोटी कमाने और उसे मिल-बांटकर खाने से जो सुख, शान्ति और आत्मतुष्टि मिलती है, वह दुर्लभ है। जीवन एक चुनौती है। अश्वघोष की आंखें खुल गयी। उन्हें ऐसा लगा, जैसे उन्होंने ईश्वर को प्रत्यक्ष देख लिया है।

भगवान श्रीकृष्ण से नारद ने एक बार कौतूहलवश पूछा कि उनका अनन्य भक्त कौन है? श्रीकृष्ण ने उन्हें एक व्यक्ति का नाम बताया और उससे मिलने को कहा। नारद ने जाकर देखा कि वह एक चर्मकार है। दिन भर जूतों की मरम्मत करता है और एकाध बार ही भगवान का नाम लेता है। नारद को उसमें भक्त के लक्षण नहीं दिखायी दिये। वे लौट आये। तब श्रीकृष्ण ने उन्हें एक तेल भरा कटोरा दिया और उसे कैलाश पर भगवान शिव के पास पहुंचाने का आग्रह किया। नारद जब कटोरा पहुंचा कर आये तो श्रीकृष्ण उन्हें देखकर मुस्कराये।

उन्होंने पूछा- 'देवर्षि ! यहां से कैलाश तक की यात्रा में आपने कितनी बार नारायण का नाम लिया ? सच-सच बताइयेगा।'

नारद बोले- 'आपने तेल का कटोरा क्या पकड़ा दिया, मेरा सारा ध्यान उसी पर लगा रहा। नारायण का नाम लेने लगता तो तेल छलक जाता और कैलाश पहुंचने पर कटोरे में एक बूंद भी न बचता।'

श्रीकृष्ण ने कहा- 'कर्म करते हुए कभी - कभी ईश्वर का स्मरण कर लेना, उसमें सच्ची आस्था रखना और ज्ञान की दृष्टि से अपने कर्तव्यों का

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ठीक-ठीक पालन करना ही सर्वश्रेष्ठ बनने के लिए आवश्यक है।'

सड़क मरम्मत करनेवाला, पुल या इमारत बनाने वाला, कपड़ा बुनने या सिलाई करने वाला या अन्य कोई काम करने वाला यदि यह सोचे कि उसका कार्य देश या समाज की सेवा का रूप है तो उसे उस काम में अधिक आनन्द आयेगा। देश समाज की भक्ति उसमें काम की लगन दूनी कर देगी। उसकी योग्यता और ज्ञान से उसके काम में त्रुटि की सम्भावना नहीं रहेगी।

हमारे कर्ममय जीवन में ज्ञान, भक्ति और कर्म तीनों में सामंजस्य स्थापित होना चाहिए। इन तीनों की एकात्मकता ही सफलता और समस्त सिद्धियों का मूल है।

– साभार 'मनीषिका'
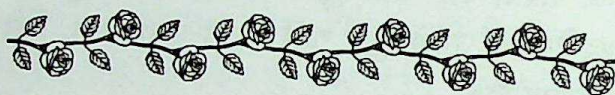
॥ आजकल के मानव चरित्र ॥

आश्रय देने पर – सिर चढ़ जाता है ।
उपदेश देने पर – मुड़कर बैठता है ।
आदर करने पर – खुशामद समझता है ।
उपकार करने पर – अस्वीकार करता है ।
विश्वास करने पर – हानि पहुँचाता है ।
क्षमा करने पर – दुर्बल समझता है ।
प्यार करने पर – आघात करता है ।
दुःख के समय – सुयोग खोजता है ।
सुख के समय – ईर्ष्या करता है ।

सलाह – ऐसे चरित्र वालों से सावधान रहिये !

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

॥ आस्था के बोल ॥

संकलनकर्ता : श्री हरिचरण जी चोखानी

१. जीवन तभी कष्टमय होता है, जब वस्तुओं की इच्छा करते हैं और मृत्यु तभी कष्टमयी होती है, जब जीने की इच्छा करते हैं।

२. प्रतिकूलताओं से डरो नहीं। उनका धैर्य और साहस से सामना करो। याद रहे कठिनाइयाँ ही आदमी को निखारती हैं। सोना आग में तपने के बाद ही कुन्दन बनता है। उर्दू का शेर है–

सुर्खरू होता है इंसां ठोकरें खाने के बाद।
रंग लाती है हीना पत्थर पे घिसने के बाद॥

३. जो सभी का होता है, वही हमारा होता है। जो किसी भी समय किसी का नहीं होता, वह हमारा हो ही नहीं सकता।

४. धन से वस्तु श्रेष्ठ है, वस्तु से मनुष्य श्रेष्ठ है, मनुष्य से विवेक श्रेष्ठ है और विवेक से भी परमात्मा श्रेष्ठ है।

५. जो स्वयं सेवा करने के लिये आगे आता है, वह स्वयंसेवक। जो निरन्तर कार्य करता है, वह कार्यकर्ता। जो अधिक कार्य करे–वह अधिकारी। इनका कुर्सी से क्या लेना देना ?

६. भूल करना मानव का स्वभाव है, लेकिन उसे स्वीकार कर उसमें सुधार करना मानवता है, अन्यथा भूल-कर्ता को निगल जाती है।

७. दूसरे भी हमारे लिये वैसे ही हैं जैसे हम दूसरों के लिये हैं।

८. अच्छाइयों को जानना अच्छी बात है, पर अच्छा होना बड़ी बात है।

९. जोखिम उठाना कर्मवीर की निशानी है। खतरों से खेले बिना खोखलापन दूर नहीं होता। जंग में घुड़सवार ही गिरते हैं। जिसने कभी घोड़े की सवारी ही नहीं की वो भला क्या गिरेगा ?

१०. मल्लाह वही है जो लहरों से खेले। डर गया वह डूब गया।

११. ठोकर खाकर संभल जाना जागरूकता की निशानी है।

१२. भविष्यदृष्टा वह है, जो पानी आने से पहले ही पाल बाँध ले।

१३. पाने का आनन्द बड़ा होता है। पर देने का सुख भी छोटा नहीं होता,

बशर्ते कि मन छोटा न हो। देने का सुख कुछ और ही है, जो देने वाला ही अनुभव कर सकता है।

१४. सुबह हो जाने के डर से आँख न खोलने वाला उल्लू होता है।

१५. सच लगने जैसा झूठ बोलना भी एक कला है। पर ऐसा कलाकार स्वयं डूबने से पहले अनेकों को डुबा जाता है।

१६. सतर्क वही है जो बिजली की चमक में सुई पिरो ले।

१७. मंजिल तो कदमों से चिपकी है। जिसने कदम बढ़ाया उसे मिल गई।

१८. बड़ों की आड़ लेने वाला बौना बनकर रह जाता है।

१९. संवेदनशीलता जीवित होने का सही प्रमाण है। संवेदनहीनता मुर्दों में जीवन का भ्रम पैदा करती है।

२०. दुःख दर्पण है, वह दिखाता है। सुख दर्शक है, बस देखता है।

२१. मोती का मोल आँखें करती हैं पर आँखें मोतिया जाने पर कौड़ी की नहीं रहती।

२२. समझदार वह है, जो समझदार बनता नहीं। जो समझदार बनता है, वह समझदार होता नहीं।

२३. तुम कहाँ से आये हो, यह जानना वश का नहीं। पर कहाँ जाना है– यह तो निश्चय कर लो।

२४. तुमने इतने मुखौटे बदले हैं कि असली चेहरा ही खो गया। कृत्रिमता स्वयं को खा जाती है। आज का मानव कृत्रिम जीवन जी रहा है।

२५. जो हर समय दूसरों के दोष को देखता है, वह अपनी पहचान खो बैठता है।

२६. सबसे बड़ा बनने का प्रयत्न करने वाला सबको छोटा बनाने के दोष का भागी होता है।

२७. सादगी से जीने वाला शांति से मरता है और शांति से मरना मुक्त होने की सूचना है।

२८. जिसकी रक्षा तुम्हें करनी पड़े वह तुम्हारा रक्षक नहीं हो सकता।

२९. धन स्वयं एक बड़ा खतरा है, वह भला तुम्हे खतरों से कैसे बचाएगा?

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

३०. केवल जुटावोगे तो बोझ बढ़ेगा, केवल लुटावोगे तो खोखले हो जाओगे। दोनों का सन्तुलन ही स्वस्थ जीवन है।

३१. काम को जीतने की बात कभी मत करो। उसे मर्यादित करो। काम ही राम हो जायेगा। काम यदि केवल पाप होता तो सृष्टि जोड़े जोड़े नहीं चलती।

३२. प्रेम ही परम तत्व है। प्रेम की पुकार परमात्मा को भी खींच लाती है। क्या भगवान ने करमा, मीरा, नरसी, प्रहलाद आदि भक्तों की पुकार नहीं सुनी?

३३. प्रेम और वासना में कोई विपर्य नहीं है। शरीर पर अटक जाना वासना है, आगे बढ़ जाना-प्रेम।

३४. प्यार का एक क्षण तकरार के कई युगों से बड़ा होता है।

३५. कोई हेय नहीं है। उजालों का जन्म अंधेरे की कोख से ही हुआ है। हर काली रात के बाद उजाला आता है-यह ध्रुव सत्य है।

३६. संन्यासी कोई नहीं होता, केवल न्यास बदलता है। पहले धन के पीछे दौड़ता है, फिर धर्म के।

३७. अपना बुरा करने वाले को भुला देना उतना ही महत्वपूर्ण है, जितना किसी की भलाई करके भूल जाना। **''जो तोको काँटा बोये, ताहि बोय तू फूल।''**

३८. सत्य स्वयं प्रकाशित होता है, उसे दिया नहीं दिखाना पड़ता। इसीलिये कहा गया है-**''साँच को आँच नहीं।''**

३९. जिन्दगी की दावत में शरीक होने के लिए जो शख्स आता है, उसे मौत का प्याला पीना ही पड़ता है। क्या भरोसा है जिन्दगानी का, आदमी बुलबुला है पानी का।

४०. संशयात्मा के लिये अपनी परछाई ही भूत बन जाती है। शक्की आदमी हर समय तनावग्रस्त रहता है। बहम की कोई दवा नहीं।

४१. जीवन एक नाटक है और हम करतार के द्वारा भेजे गये विभिन्न भूमिका निभाने वाले पात्र। जब हमारा अभिनय खत्म हो जाता है, हमें वापस बुला लिया जाता है।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

४२. जिन आदतों को हम प्रयत्नपूर्वक पालते है, वे ही हमारा भाग्य बन जाती हैं। मनुष्य आदतों का दास होता है।

४३. जो तुम्हारे जीवन-निर्माण में सहायक हो, तुम्हारे लिये वही तुम्हारा विश्वकर्मा है।

४४. माँ के द्वारा होने वाली परवरिश बच्चे का भविष्य लिख देती है। माँ ही विधाता है।

४५. विवाहित बेटे-बेटियों को मित्रवत समझो। उन्हें बाप वाला रोबीला स्वभाव रास नहीं आयेगा। उसमें धोखा खाने की संभावना है। कहावत है - जब बाप का जूता बेटे को आने लगे तो बाप को चाहिये कि बेटे से मित्र या भाई जैसा व्यवहार करे।

४६. सब समय परतें उघाड़ने वाले की जिन्दगी प्याज की गाँठ बनकर रह जाती है।

४७. एक दाना भी हाथ से बो दोगे तो पूरा वृक्ष उपहार में मिलेगा।

४८. चमत्कार को नमस्कार करना मजबूरी है। चमत्कार कर दिखाना दिलेरी है।

४९. जो लिया है, उसे लौटा देना शालीनता है, लेकिन लौटाकर शेखी बघारना मलिनता है।

५०. ढ़ोंगी का ढंग से क्या वास्ता? वह तो सदा बेढ़ंग होता है।

५१. साधू वो नहीं जो स्वादू है। साधू वह होता है, जो अपने जीवन को साध ले।

५२. दीप से दीप जलाना सृजन है। फूँक से दीप बुझाना है - संहार।

५३. खीर खाकर प्रसव करने से संतान का जीवन मधुर नहीं हो जाता। उसके लिये तो माँ को शहद बनकर जीना होता है।

५४. जिसे धूल समझकर ठुकराओगे, वही तुम्हारी आँख की किरकिरी बन जायेगा। अतः किसी को तुच्छ न समझो। जहाँ काम आवे सुई, वहाँ का करे तलवार?

५५. दोस्ती का दुश्मन दगा है - और जो दगा न करे वही सगा है।

५६. दो दो बात करने से काम बनता है। दो दो हाथ करने से काम बिगड़ता है।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

५७. दुनिया इक तमाशा है, लोग तमाशबीन हैं। तुम जैसा तमाशा दिखलाओगे, देख लेंगे। लेकिन याद रहे - तमाशे की क़ीमत केवल तालियाँ है।

५८. हर रोग की दवा है, पर दवा से मरने वालों का कोई इलाज नहीं।

५९. कागज की नाव लेकर आग की दरिया में उतरना बुद्धिमानी नहीं है।

६०. जिसे नंगापन रास आ गया, उसे कपड़े दिखाकर नहीं ठगा जा सकता।

६१. गरीब के मुँह पर गरीबी का बखान करना उसका शीलहरण करना जैसा है। कभी भी किसी गरीब की बद्‌दुआ मत लीजिये। उसकी हाय में लोहा को भी भस्म करने की ताकत होती है।

६२. पहाड़ से गिरने की अपेक्षा नजर से गिरना अधिक खतरनाक है। दूसरों की नजर से भले ही गिरो, लेकिन अपनी नजरों से कभी मत गिरो।

६३. आदमी अपने गुणों, संगति एवं व्यवहार से पहचाना जाता है, न कि अपनी पोशाक से।

६४. दुष्ट व्यक्ति अपनी आदतों से बाज नहीं आते-जैसे "**सूरदास की कामरी चढ़े न दूजो रंग।**"

६५. खुद काँच के महलों में रहने वाले दूसरों के मकानों की ओर पत्थर नहीं फेंका करते।

६६. व्यक्ति का व्यस्त रहना ही श्रेयस्कर है, क्योंकि खाली दिमाग शैतान का घर होता है।

६७. मनुष्य जैसा करता है, वैसा भरता है। बबूल का पेड़ बो कर आम के फलों की आशा करना व्यर्थ है।

६८. "**जिसकी लाठी उसकी भैंस**" यह कानून आदि काल से चला आ रहा है और आज भी चल रहा है। तुलसीदासजी ने कहा है- "**समरथ को नहीं दोष गोसाईं।**"

६९. आजकल के माता-पिता बच्चे की परवरिश नहीं करते। केवल उन पर पैसा खर्च करके अपने कर्तव्य की इतिश्री समझ लेते हैं।

७०. बलवान के सभी साथी हैं, निर्बल का कोई साथी नहीं। जो पवन आग को जगा देता है, वही दीपक को बुझा देता है।

७१. सदाचार नींच है, सद्‌विचार भवन है। नींच मजबूत होगी तो भवन

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

टिक सकेगा।

७२. जो भगवा कपड़े पहनता है, वह परमहंस नहीं है। हृदय को भगवा करने वाला ही सच्चा परमहंस है।

७३. मुर्गा समझता है कि सूरज बांग सुनने के लिये ही उगता है, लेकिन उसकी यह भूल है। **– जार्ज इलियट।**

७४. पाप से घृणा करो, पापी से नहीं। किसी के पाप को देखना, सुनना और कहना भी पाप है।

७५. स्नान से शरीर की शुद्धि, ध्यान से मन की शुद्धि और दान से धन की शुद्धि होती है।

७६. मनुष्य चतुर तो है, पर बिना ठोकर लगे सयानापन नहीं आता।

७७. पश्चाताप के आंसू मन का मैल धो देते है।

७८. मनुष्य का मन एक दर्पण के समान है। इसमें झांकने पर अपने दोष-गुण स्वतः नजर आयेंगे। दूसरों को धोखा दिया जा सकता है, अपने आप को नहीं।

७९. सत्संग एक पारसमणि है, जो लोहे जैसे कठोर एवं मन के काले व्यक्ति को भी चमकीला व गुणवान बना देती है।

८०. डूबेगा रे तीन जणां:- पूँजी कम-व्यापार घणां, पैदा कमती-खर्च घणां, जोर कमती-गुस्सा घणां।

८१. आचरण की एक बूंद सिद्धान्तों, सलाहों और शुभ संकल्पों के समुद्र से अच्छी हैं।

८२. जो 'मद' से मन को बचाता है, उसका मन 'मथुरा' बन जाता है।

८३. 'मजा' में बहुत साथ देते हैं, पर 'सजा' में कोई भी नहीं।

८४. कंजूस का गड़ा धन तभी बाहर निकालता है, जब वह स्वयं जमीन में गड़ जाता है। इस तरह वह अपनी सब कुछ दूसरों के लिए छोड़ जाता है।

८५. पाप का आरम्भ चाहे प्रातःकाल की तरह चमकदार हो, मगर उसका अन्त रात्रि की तरह अंधकारपूर्ण होता है।

८६. दुश्चरित्र आदमी से न दोस्ती करो, न जान पहचान। गर्म कोयला हाथ

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

जलाता है एवं ठंडा हाथ काला करता है।

८७. दुनिया में सबसे कठिन काम अपने को सुधारना और सबसे आसान काम दूसरों का दोष निकालना है।

८८. पाप की कमाई से कभी बरकत नहीं होती। कहा भी गया है चोरी का धन मोरी में जाता है।

८९. भेद को प्रकट करके उसे गुप्त रखने की सलाह देना कोरी मूर्खता हैं।

९०. समुद्र के सामने जो सिर उठाकर खड़ा रहता है उसको समुद्र की लहरें उठाकर पटक देती हैं और जो सिर झुकाकर सह लेता है उसको किनारे ला देती हैं।

९१. कम खानेवाले का शरीर स्वस्थ रहता है एवं गम खाने वाले का मन स्वस्थ रहता है। कम और गम खाने वाला कभी दुःखी नहीं होता।

९२. साईं का घर दूर है, जैसे ताड़ खजूर।
चढ़ा तो चाखा प्रेम रस, गिरा तो चकनाचूर।।

९३. जिस तरह डूबते सूरज को धब्बा नहीं लगता वैसे ही निर्धनता से गुणवान की हानि नहीं होती।

९४. खुशामद और सेवा में उतना ही अन्तर है, जितना झूठ और सच में।

९५. बेइमानी का प्रत्येक व्यवहार डंडी मारने से कम नहीं है।

९६. यदि तुम्हारे रोटी माँगने पर कोई तुम्हें पत्थर देता है तो भी उसका अहसान मानो क्योंकि हो सकता है उस बेचारे के पास तुम्हे देने के लिए और कुछ भी न हो।

९७. माता बच्चे की प्रथम पाठशाला है। मानव मस्तिष्क की शिक्षा शैशव के पालने से ही प्रारम्भ होती है।

९८. वासना की दीवानगी थोड़ी देर रहती है, लेकिन उसका पछतावा बहुत देर तक रहता है।

९९. ईश्वर ने हमें दो कान एवं दो आँख क्रमशः अधिक सुनने एवं देखने के लिए दी हैं, लेकिन जीभ एक ही दी है, ताकि हम बहुत ही कम बोलें।

१००. यौवन में दिन छोटे प्रतीत होते हैं, किन्तु वर्ष बड़े, किन्तु वृद्धावस्था में वर्ष छोटे किन्तु दिन बड़े।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

॥ आनन्दमय अन्तिम विदाई-महायात्रा ॥

यात्रा का अनुभव : यात्रा का अनुभव सभी भाई-बहनों को है। जब भी हमें बाहर की यात्रा पर जाना होता है तब हम उसकी तैयारी करते हैं। यात्रा की तिथि निर्धारित करके अपना रिजर्वेशन करवाते हैं। अपना दैनिक उपयोगिता वाला सामान तैयार करके साथ लेते हैं। जहां पहुंचना है, वहां पूर्व सूचना देते हैं। वहां पहुंच कर अपने घर पर कुशलता का समाचार देते हैं। इस यात्रा की तिथि, समय, गाड़ी, डिब्बा व आपके बैठने की व्यवस्था आदि सब बातें पूर्व निश्चित होती हैं। यात्रा पूरी होने के बाद आप अपने घर लौट आते हैं और अपने स्वजनों को यात्रा की अनुभूतियां सुनाते हुए उनके साथ बड़े आनन्द से रहते हैं।

महायात्रा : अंतिम विदाई : एक दिन आप इस परिवार में आये थे परिवारजनों ने आपका लालन-पालन किया, आपके शिक्षा की व्यवस्था की। गुणों के संपादन के बाद अपने गृहस्थ में प्रवेश किया, आपका परिवार बना। आपने अपने परिवार को संभाला। बालकों को पढ़ाया, योग्य बनाया, उनका विवाह किया। अब वे परिवार को संभालने वाले बन रहे हैं। आप वृद्धावस्था की तरफ बढ़ रहे हैं। वह क्षण समीप आ रहा है जब आप अपने स्थूल शरीर, प्रिय पति, पत्नी, पुत्रों, स्वजनों, घर दुकान, जमीन, जायदाद, धन, सम्पत्ति, मूल्यवान वस्तुएं आदि सभी को यहीं छोड़ कर महायात्रा के लिये प्रस्थान करेंगे इन सभी से आप अंतिम विदाई लेंगे।

महायात्रा : कुछ विशेषतायें : आपकी महायात्रा कैसी होगी, आप यहां से कहां जायेंगे- इसका वास्तविक अनुभव तो तभी होगा, जब आप महायात्रा करेंगे। लेकिन महायात्रा के बारे में सभी भाई-बहन निम्न बातें भलीभांति जानते हैं-

(i) आपको यह महायात्रा करनी ही होगी। आप कितने ही बलवान, धनवान, गुणवान, कुलवान, विद्वान व योग्य हैं, पर इस यात्रा पर तो आपको जाना ही होगा। आप महायात्रा से बच नहीं सकेंगे।

(ii) आपको यह भी पता नहीं है कि आपकी महायात्रा कब व कहां से आरम्भ होगी।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

(iii) महायात्रा का समय व क्षण आने के बाद आपको प्रस्थान करना ही होगा। आप इसे रद्द नहीं कर सकते। आपकी तैयारी है अथवा नहीं, आप जिस स्थिति में हैं, उसी स्थिति में आपको रवाना होना पड़ेगा।

(iv) इस यात्रा में आपको अकेले जाना होगा।

(v) आप यह भी नहीं जान पायेंगे कि आप कहां जा रहे हैं। यहां से विदाई लेकर आप जहां पहुँचेंगे, वहां की व्यवस्थायें कैसी हैं, आप वहां कब तक रहेंगे- ये सब समाचार आप अपने परिवारजनों को नहीं दे पायेंगे।

(vi) इस यात्रा में आप अपने साथ कुछ भी नहीं ले जा सकेंगे।

(vii) महायात्रा पर प्रस्थान करने के बाद आप वापस आकर अपने स्वजनों को यात्रा की अनुभूतियां नहीं सुना पायेंगे।

महायात्रा की तैयारी : आप एक दिन की यात्रा पर जाते हैं तो भी उसकी पूर्व तैयारी करते हैं। अपना आवश्यक सामान साथ लेते हैं। कुछ लंबी यात्रा होती है तो उसकी अधिक तैयारी करते हैं। आने, जाने, खाने, पीने, ठहरने आदि की समुचित व्यवस्थायें करते हैं ताकि यात्रा में कोई कष्ट न हो, यात्रा सुखद व आनन्दमय हो। क्या आपने महायात्रा के बारे में भी कुछ सोचा, क्या उसकी कुछ तैयारी की; क्या आप अपने स्वजनों से शांति व प्रसन्नतापूर्वक विदाई ले सकते हैं, आपको महायात्रा का भय तो नहीं लगता। यदि आप महायात्रा की तैयारी कर लेंगे तो आप बड़े आनन्द के साथ महायात्रा के लिये रवाना हो जायेंगे। आपकी महायात्रा सुखद, सुन्दर व आनन्दमय बन जायेगी।

आपकी तैयारी हुई या नहीं : यदि आपको महायात्रा का भय लगता है और आप यह सोचते हैं कि इस सुखद परिवार को छोड़कर कहां जायेंगे, हमारे बाद इस परिवार व संपत्ति को कौन संभालेगा, अभी बच्चे छोटे व कम समझदार हैं, अभी परिवार के अनेक कार्य बाकी हैं, हम नहीं रहेंगे तो सब कुछ अस्त-व्यस्त हो जायेगा, आदि, तो आपको यह मानना चाहिये कि आप महायात्रा की तैयारी नहीं कर पाये हैं। सावधान! आपकी तैयारी न हो और गाड़ी स्टेशन पर आ जाए तो बहुत घबराहट हो जायेगी। जल्दी में आप अपना आवश्यक सामान भूल सकते हैं, गाड़ी में चढ़ते समय फिसल कर नीचे गिर सकते हैं। आपको हानि हो सकती है।

महायात्रा का सामान : ज़ब आप किसी भी यात्रा पर जाते हैं तो

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

आवश्यक सामान साथ लेते हैं और अनावश्यक सामान घर पर ही छोड़ देते हैं। महायात्रा में भी अत्यावश्यक सामान साथ लेना है और अनावश्यक व बेकार सामान को यहीं छोड़ देना है। प्रभु की अखण्ड स्मृति, उनकी अगाध प्रियता महायात्रा का अत्यावश्यक सामान है, जो आपको साथ लेना है। शरीर, परिवार व सम्पत्ति की ममता, कामना, रोग, द्वेष, मोह, अभिमान आदि खतरनाक सामान यहीं छोड़ देना है।

दो में से एक चीज आपके साथ जायेगी : जब आप अपने शरीर, स्वजनों व सम्पति से अंतिम विदाई लेकर महायात्रा के लिये प्रस्थान करेंगे तो निम्न दो में से एक चीज आपके साथ अवश्य जायेगी–

(i) प्रभु की स्मृति, प्रभु का प्रेम, प्रभु का ध्यान।

(ii) परिवारजनों की स्मृति, ममता व कामना।

स्मरण रहे, अंतिम विदाई के क्षणों में आपकी शारीरिक शक्ति शून्य हो जायेगी। स्वजन आपके भौतिक शरीर को धरती पर उतार लेंगे। उस समय आपके हृदय में स्मृति रहेगी। आपको कुछ बातें याद आयेंगी। अंतिम समय की स्मृति के अनुसार ही आपको आगे की योनि मिलेगी। अंतिम समय में यदि प्रभु की याद आ जाती है, प्रभु का ध्यान हो जाता है तो आपको प्रभु की प्राप्ति हो जायेगी, आपका मानव जीवन सफल हो जायेगा। यदि अंतिम समय में संसार-परिवार-सम्पति की याद आ जाती है तो आपको संसार में लौटकर आना होगा। संतवाणी के अनुसार पुत्र, लक्ष्मी, मकान, स्त्री, वस्त्र की स्मृति से क्रमशः सूकर, सांप, प्रेत, वैश्या व वस्त्र के कीड़े की योनि मिलती है। परिवारजनों से आपकी अंतिम विदाई अत्यन्त आनन्दमय हो, आपको उनकी लेशमात्र भी याद न आये, आपके हृदय में प्रभु के पावन चरणों की स्मृति हो, उन्हीं में आपका ध्यान लगा रहे, उन्हीं के प्रेम से आप सराबोर हो जाएं- तब माना जायेगा कि आपने महायात्रा की पूरी तैयारी कर ली है; तभी आपका जीवन सफल होगा।

अंतिम विदाई को आनन्दमय बनाइये :

बात बहुत आश्चर्यजनक है। अब आपको कहा जा रहा है- इससे अंतिम विदाई लीजिये, उसकी तैयारी कीजिये, सावधान! किसी भी स्वजन की याद तक न आये, अन्यथा बहुत बड़ा खतरा पैदा हो जायेगा। जिस पति,

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

पत्नी, संतान, माता, पिता, भाई, बहनों व स्वजनों के साथ आप वर्षों तक रहे; जिस विशाल भवन व सामग्री का आपने लम्बे समय तक उपयोग किया, उसे संभाला– अंतिम समय में उसकी स्मृति भी आपके लिये खतरनाक बन जायेगी– प्रभु की यह लीला बहुत कठोर होते हुए भी अक्षरशः सत्य है। यहां से जाने के बाद आपका इस परिवार से कोई सम्बन्ध नहीं रहेगा। इसीलिये इसकी पूर्व तैयारी अत्यावश्यक है।

क्या करें ताकि परिवारजनों की याद न आये :

जब तक आप परिवार में रहें तब तक आनंद व प्रेम से रहें और जब परिवारजनों से अंतिम विदाई लेने का क्षण आये तो उनकी लेशमात्र भी स्मृति न आये– इसके लिए आपको निम्न बातों पर गंभीरता से विचार करके इन्हें अपने जीवन में धारण करनी होगी–

(i) सम्बन्ध विच्छेद :

'सम्बन्ध' का आशय है– ममता व कामना। इस विशाल संसार में जिनको आप 'मेरा' मानते हैं उनसे आपका 'मोह का सम्बन्ध' बन जाता है। आप इस परिवार से मोह के सम्बन्ध को तोड़ लीजिये। संबंध तोड़ने का आशय यह नहीं है कि आप परिवार को छोड़ दें, उनसे नाराज हो जाएं। सम्बन्ध विच्छेद का आशय है– सुख लेने की भावना से उन्हें 'मेरा' न मानें और उनसे सुख लेने की कामना न रखें। 'सेवा' करने की भावना से उन्हें 'अपना' मानें और भरपूर सेवा करें। इससे 'मोह का सम्बन्ध' टूट जायेगा।

(ii) चिंता छोड़ दीजिये : जिस प्रकार आप जगत की चिंता नहीं करते, उसी प्रकार आप जगत के इस छोटे से अंश 'परिवार' की चिंता मत कीजिये। परिवार को उसे सौंप दीजिये जो जगत का मालिक है। आप तो केवल सेवा कर दीजिये।

(iii) जो होना है, वह होगा : आपका विभाग है– 'करना'। आप अपना प्रत्येक कार्य पूरी सावधानी, योग्यता, सामर्थ्य, ईमानदारी व हितभाव से करें। 'क्या होगा, कैसे होगा, कब होगा'– इसकी चिंता न करें क्योंकि 'होना' आपके वश की बात नहीं है। ''जो होना है, वह होगा ही; जो होगा– उसमें मेरा परम हित है''–इसे स्वीकार कीजिये। कहा भी गया है –

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

होनी तो होके रहे, अनहोनी ना होय ।
जाको राखे साइयां, मार सकै ना कोय ।।

(iv) कुछ बातें निश्चित है : सभी भाई-बहनों के जीवन में कुछ बातें पूर्व निश्चित होती हैं- सुख, दुख, जीवन, मृत्यु आदि। श्रीरामचरितमानस में भी यह बात कही गई है-

सुनहु भरत भावी प्रबल बिलखि कहेउ मुनिनाथ।
हानि लाभु जीवनु मरनु जस अपजसु बिधि हाथ।।

-अयोध्याकाण्ड, १७१

(v) विविध :

परिवार के सदस्यों की सेवा कर दीजिये, बदले में किसी से कुछ भी लेने की आशा मत रखिये। अपने सुख-दुख का कारण किसी अन्य व्यक्ति को मत मानिये। राग-द्वेष, के स्थान पर 'प्रेम'; 'कामना' के स्थान पर 'सद्भावना', 'ममता' के स्थान पर 'अपनत्व' का भाव रखिये।

क्या करें ताकि प्रभु की याद आये :

यदि आप निम्न बातों पर गंभीरता से विचार करके इन्हें अपने जीवन का अंग बना लें तो आपका परिवार बहुत अच्छा बन जायेगा और अंतिम समय में आपको केवल प्रभु की याद आयेगी-

(i) सब कुछ प्रभु का है :

प्रभु ने आपको 'विश्वास' करने की सामर्थ्य दी है। विश्वास के आधार पर इस सत्य को मान लीजिये कि- 'इस जगत के मालिक प्रभु हैं; मेरे पास जो शरीर, परिवारजन व सम्पत्ति है- वह प्रभु की धरोहर है, मेरी व्यक्तिगत नहीं है। सब कुछ प्रभु का है- मैं, मेरा शरीर, इन्द्रियां, योग्यता, सामर्थ्य, स्वजन, सम्पति आदि।

(ii) मैं उनकी धरोहर संभाल लूंगा, सेवा कर दूंगा :

जब तक प्रभु की वस्तुएं व सम्पति मेरे पास है तब तक मैं उनकी ये चीजें संभाल कर रखूंगा।

(iii) वापस दे दूंगा :

जब भी प्रभु अपनी कोई वस्तु अथवा व्यक्ति या यह शरीर वापस लेंगे,

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

तब मैं उनकी धरोहर उन्हें प्रसन्नतापूर्वक वापस लौटा दूंगा। उसमें किसी प्रकार की आपत्ति नहीं करूंगा।

अंतिम अनुभूति :

यदि आप इस सच्ची बात को मान लेंगे कि ''सब कुछ प्रभु का है,'' तो कुछ ही समय बाद आपको यह अनुभूति होगी कि- ''सब कुछ में प्रभु की सत्ता है- यह सब कुछ जिसका है, वह भी इसमें है''। इस साधना के अंतिम चरण में आपको अनुभव होगा कि- ''सब कुछ नहीं है, कुछ भी नहीं है, केवल प्रभु ही प्रभु हैं, प्रभु के अलावा कुछ नहीं है। फिर भक्तिमति मीरा और तुलसी की भांति आप कह उठेगे-

जित देखूं तित श्याममयी है।
जित देखूं तित तू ही तू।।-मीरा

सीय राममय सब जग जानी।
करउँ प्रनाम जोरि जुग पानी।।-तुलसी

फिर भगवान श्रीकृष्ण की यह वाणी आपका जीवन बन जायेगी-

मतः परतरं नान्यत्किञ्चिदस्ति धनंजय।
मयि सर्वमिदं प्रोतं सूत्रे मणिगणा इव।।

-श्रीमद्भगवद्गीता, ७/७

इसका आशय है- ''इसलिये हे धनंजय! मेरे सिवाय किंचित मात्र भी दूसरी वस्तु नहीं है; यह सम्पूर्ण जगत सूत्र में सूत्र के मणियों की भांति मेरे मे गुंथा हुआ है।''

इस प्रभु वाणी की अनुभूति के साथ परिवार से आपकी आनन्दमय अंतिम विदाई होगी और आप प्रभु से अभिन्न हो जायेंगे। यही आपके इस अनमोल मानव जीवन का लक्ष्य है।

रोग के डर से आदमी खाना तो बन्द कर देता है, पर दण्ड और मरण के भय से वह पाप करना नहीं रोकता, कैसा आश्चर्य। – गेटे

ज्ञानी लोग तुम्हारा तमाम गुप्त इतिहास तुम्हारी आँखों में, चाल में और बर्ताव में बड़ी तेजी से पढ़ लेते हैं। – रामर्सन

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

॥ स्वास्थ्य चर्चा ॥

ओ३म् तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्।
पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतं, श्रुणुयाम
शरदः शतं, प्रब्रवाम शरदः शतं, दीनाः स्याम
शरदः शतं, भूयश्च शरदः शतात्॥ –ऋगवेद

"हे जगत पिता, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान, अनादि – अनन्त प्रभो ! आप सब कुछ देखने वाले, विद्वानों और उपासकों का हित करने वाले, शुद्ध और पवित्र हैं। आपकी कृपा से हम ऐसे स्वस्थ रहें कि सौ वर्ष तक देख सकें, सौ वर्ष तक जीवित रह सकें, सौ वर्ष तक सुनते रह सकें, सौ वर्ष तक बोलते रह सकें। सौ वर्ष तक दीनता रहित और आत्मनिर्भर बने रह सकें और आपकी कृपा से यदि सम्भव हो सके तो सौ वर्ष से अधिक समय तक भी ऐसे ही स्वस्थ बने रहें।"

मैं समझता हूँ कि स्वास्थ्य चर्चा के बगैर यह "गृहस्थ – गीता" पुस्तक अपूर्ण रह जायगी। इसलिये आइये विचार करें कि स्वास्थ्य का जीवन में क्या महत्व है ?

शास्त्रों के मतानुसार बहुत सी योनियों में भटकने के बाद पूर्व जन्म के सत्कर्मों के कारण ही हमें मानव योनि अर्थात् मनुष्य शरीर मिलता है। यह परम पिता परमेश्वर की हमें अनमोल देन है। अतएव इसे स्वस्थ रखना प्रत्येक मनुष्य का परम नैतिक कर्त्तव्य है। कहावत है स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ दिमाग रहता है (A sound mind in a sound body)। स्वस्थ व्यक्ति ही परिवार, समाज एवं देश की सेवा कर सकता है। अगर स्वस्थ व्यक्ति समाज की धरोहर है तो अस्वस्थ व्यक्ति अपने परिवार, समाज और देश पर बोझ है। आप ठंडे दिमाग से चिन्तन करिये कि जो स्वयं ही बीमार है वह भला दूसरे को कैसे सुख पहुँचा सकता है ? एक कहावत है – काया राखे धरम और पूँजी राखे व्यवहार। इसका अर्थ है कि यदि शरीर स्वस्थ और सशक्त होगा तो सभी कर्तव्यों का पालन संभव है और गाँठ में दाम रहने पर व्यवहार का पालन संभव है। जैसे बिना पूँजी के ठीक से व्यापार नहीं चल सकता वैसे ही बिना स्वास्थ्य के हम जीवन का ठीक ढंग से निर्वाह नहीं कर सकते और यह स्वास्थ्य कोई बाजार में बिकने वाली वस्तु नहीं है। बाजार में दवाइयाँ मिल सकती हैं, स्वास्थ्य नहीं मिलता। स्वास्थ्य ही ऐसी वस्तु है, जिसे न हमसे कोई

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

छीन सकता है और न ही कोई चुरा सकता है। यदि कोई मुझसे यह पूछे कि स्वस्थ्य मनुष्य और रोगी धनवान पुरूष इन दोनों में भाग्यवान कौन है ? तो मैं उत्तर दूँगा कि स्वस्थ मनुष्य ही भाग्यवान है और स्वास्थ्यहीन धनवान होने पर भी अभागा है।

अतः स्वास्थ्य की रक्षा करना अर्थात् उसको निरोग रखना हमारा पावन एवं नैतिक कर्तव्य है। संसार के सात सुखों में भी निरोगी काया को ही पहला सुख माना गया है।

हमें हमारी दिनचर्या में से थोड़ा समय निकाल कर स्वास्थ्य को देना चाहिये। यह जरा सा समय हमें आने वाली बहुत सी व्याधियों से बचा सकता है। अंग्रेजी में कहा गया है–

Prevention is better than Cure. Those who do not find a 'Little Time' everyday for health must be ready to sacrifice 'Lot of time' for illness.

।। स्वास्थ्य के दस अनमोल सूत्र ।।

हफ्ते में उपवास एक दिन भोजन दो ही शाम।
तीन सेर पानी नित पीना, घन्टे भर व्यायाम।।
करना उषाकाल के पहले, नित्य का कर्म तमाम।
लेना चिन्तामुक्त नींद में, छः घन्टे पूर्ण विश्राम।।
शान्त, स्वच्छ, निर्मल विचार और आशा से भर प्राण।
करना चिन्तन और प्रार्थना, नियमित दोनों शाम।।
बिना भूख के कभी न खाना, लाख सुस्वादु सामान।
जो खाना वो खूब चबाना, पाचन हो आसान।।
"अति" सर्वत्र वर्जयेत, "संयम" पर सर्वदा ध्यान।
सुन्दर सुखद स्वास्थ्य के स्वर्णिम ये दस सूत्र महान।।

सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद् दुःख भाग्भवेत्।।

हे प्रभो! इस जगत के सभी मनुष्य सुखी हों, सभी निरोग हों, सभी कल्याण को देखें, कोई भी मनुष्य दुःखी न हो।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

॥ स्वास्थ्य हेतु अमृतवाणी ॥

जहाँ तक काम चलता हो, गिजा से
वहाँ तक बचना चाहिये दवा से।।
अगर तुझको ज्यादा सर्दी सताय,
तो तू पीले तुलसी अदरक की चाय।।
जो तुझको महसूस हो, मेदे में गिरानी,
तो चखले सौंफ और अदरक का पानी।
जिगर के बल पर है इन्सान जीता,
जोफे जिगर हो, तो खा ले पपीता।।
जिगर में गर्मी तो दही खा,
आँतों में हो खुश्की तो घी खा।।
थकान से अगर हो हालत ढीले,
तो फौरन गरमा गरम दूध पी ले।।
जो ताकत में कमी हो तुझे महसूस,
तो मिश्री की डली मुल्तान की चूस।।
ज्यादा गर दिमागी है तेरा काम,
तो खाना तू शहद ओर बादाम।।
अगर हो कल्ब की गरमी का अहसास,
मुरब्बा आँवला खा और अनन्नास।।
जो लगता हो गला नजले के मारे,
तो करना फिटकरी के गरारे।।
हो अगर दाँतों के दर्द से बेकल,
अंगुली से सरसों तेल नमक मल।।
जो बदहजमी में तू चाहे इफाका,
तो दो एक वक्त कर ले तू फाका।।
जो तू असगन्ध दूध मिसरी संग पिये,
तो घोड़े की माफिक दनदनाता जिये।।

(साभार - "निरोगधाम" प्रथम अंक फरवरी ७६ से उद्धृत)

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

॥ फास्ट फूडः स्वाद तो है, स्वास्थ्य नहीं ॥

– वी. जी. मिश्र

समयाभाव ने रोजमर्रा के जीवनक्रम में फास्ट फूड का आविष्कार किया है। आज यह भोजन का अंग बन चुका है। महानगरों का अंग बन चुका है। महानगरों की फास्ट लाईफ फास्ट फूड की ओर आकर्षित हुई है। युवाओं के लिये तो जैसे यह खास फैशन है युवक स्मार्ट और पतले बनने के लिये एवं युवतियां अपने शारीरिक सौंदर्य को बढाने हेतु संतुलित भोजन के बदले फास्ट फूड की ओर अग्रसर हो रही हैं। इस खाद्य क्रांति ने समाज के हर आयु एवं वर्ग को प्रभावित किया है।

पाश्चात्य जीवन शैली की देन हमारी अपनी जिंदगी पर छाती जा रही है, परंतु उसके झटपट तैयार होने और सुंदर स्वादिष्ट लगने के मुखौटों के पीछे झाँकने की किसी को फुर्सत नहीं। सच तो यह है कि यह खाद्य धीमा जहर है। जो हमारे शरीर एवं मन दोनों को धीरे धीरे ही सही पर पूरी तरह भक्षण करता जा रहा है। इस रासायनिक भोजन के बदले संतुलित एवं प्राकृतिक खाद्य पर निर्भर रहना ही एकमात्र विकल्प है।

जिसे फास्ट फूड कहा जाता है, दरअसल यह पाश्चात्य जीवन शैली की एक बेबसी या मजबूरी है। वहां परिवार के सभी सदस्य कामकाजी होते हैं अतः यह उनकी जरूरत बन गयी है। वहां के लोग भी अस्वास्थ्यकर परिणामों को देखकर इसके खिलाफ खड़े हो गये हैं। और हम लोग हैं जो अपनी आंखे मूंदकर विवेक को ताक पर रख कर उसे अपनाने में गर्व महसूस करते हैं। इटली का मशहूर पीजा यहां आकर छा गया है। बर्गर योस अमेरिका का लोकप्रिय भोजन है। बर्गर की शाकाहारी एवं मांसाहारी दोनों किस्में प्रचलित हैं। हमारे देश में जहां उच्च वर्ग में सैंडविच, हाट डांग आइसक्रीम और शीतल पेय की लोकप्रियता बढ़ रही है तो वहीं मध्यमवर्गीय परिवारो में कैंडी, पेस्ट्री, कूकी, टॉफी स्वीट ड्राप, जैम, जैली, कैचप आदि का आकर्षण प्रबलतम हो रहा है। वैज्ञानिकों और पर्यावरणविदों दोनों ने ही इसके इस्तेमाल के प्रति सचेत किया है। विकसित देशों में खाद्य में मिलाये जाने वाले रासायनिक तत्वों की संख्या २० हजार से अधिक है। कुछ रसायन तो खाद्य पदार्थ को संरक्षित, संश्लेषित भी करते हैं।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

कुछ तो उसके रंगने और स्वादिष्ट बनाने हेतु प्रयोग में लाये जाते हैं। इसका प्रयोग करने वाले विकसित देशों अमेरिका एवं यूरोपीय देशों के लोगों के पेट में प्रति वर्ष डेढ़ किलो घातक रासायनिक पदार्थ पहुंच जाते हैं। इनमें से कुछ रसायन शरीर की चर्बी में वर्षों पड़े रहते हैं। जिससे कैंसर जैसी असाध्य बीमारी की संभावनाएँ बढ़ जाती हैं।

आजकल के प्रचलित फास्ट फूड में प्रायः विटामिन ए, सी, कैल्शियम और लोह तत्व की कमी होती है। फास्ट फूड पर्याप्त कैलोरी तो प्रदान करता है, परन्तु इसमें आवश्यक विटामिन का सर्वथा अभाव होता है। इसलिये यह भोजन शरीर में मोटापन लाने के बावजूद स्वस्थ्य नहीं रख सकता। अभी हाल में ही अखिल भारतीय आयुविज्ञान संस्थान के शोध वैज्ञानिक डा रामचन्द्र ने दिल्ली पब्लिक स्कूल के बच्चों का सर्वेक्षण किया। सर्वेक्षण में पाया गया कि १६ से १८ वर्ष के संभ्रांत परिवारों के बच्चे ज्यादातर किसी न किसी फास्ट फूड के शौकीन हैं और इसी वजह से ये एक्टिमिनासिस रोग के शिकार हैं।

फास्ट फूड में नमक या चीनी की अत्यधिक मत्रा होती है। नमक के ज्यादा प्रयोग से रक्तचाप बढ़ने की आशंका होती है। जबकि मीठे का ज्यादा प्रयोग चीनी के संतुलन को बिगाड़ देता है। परिणामतः एड्रिनेलीन बढ़ जाता है और तनाव और तंत्रिका संबंधी रोग पनपने लगते हैं। साथ ही इस तरह के भोजन में रेशे का अभाव होता है, जिससे डाइवर्टीक्लेसिस, पाइल्स, हर्निया, एपेंडीसाइटिस तथा पथरी जैसे रोग हो सकते हैं। फास्ट फूड पर निर्भर रहने वाले युवक-युवतियां ज्यादातर रक्ताल्पता, नेत्ररोग एवं अस्थिरोग से ग्रसित होते हैं।

फास्ट फूड में वसा, शर्करा तथा सोडियम की मात्रा कम होती है, इसी वजह से हृदय रोग, हड्डियों की कमजोरी तथा कैंसर का खतरा बढ़ जाता है। मांस जनित आहार को सुरक्षित रखने के लिये प्रयुक्त सोडियम नाइट्रेट से भी कैंसर की संभावना बनी रहती है।

डबल रोटी को भी स्वास्थ्य के लिये अच्छा नहीं माना जाता। इसी तरह नूडल्स, सेवइयों को भी अधिक समय तक खाने योग्य बनाये रखने के लिये सोडियम ग्लूटामेट रसायन का इस्तेमाल किया जाता है। यह स्वादहीन स्वाद ग्रंथियों को भ्रमित कर स्वाद का अहसास दिलाता है। सोडियम ग्लूटामेट

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

मस्तिष्क के हाइपोथैलेमस को प्रभावित करता है। कोल्डड्रिंक्स युवक-युवतियों के आधुनिक होने की पहचान बन गयी है। इन कार्बोनेट पेय पदार्थों का रासायनिक विश्लेषण करने पर बड़े ही भयावह नतीजे सामने आये हैं। विशेषज्ञों ने कोल्डड्रिंक्स को हृदय रोग, ट्यूमर, पेट के रोगों तथा अन्य कई रोगों के लिये भी जिम्मेदार माना है। इसीलिए बहुत से देशों ने इनके बेचने एवं सेवन पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगा दिया है।

पश्चिमी तकनीक पर आधारित आइसक्रीम में दूध क्रीम की जगह तेल और जल का मिश्रण होता है। इसमें दूध का एक मात्र अंश होता है। आइसक्रीम को चिकना बनाने के लिये स्टेबलाइजर मिला दिये जाते हैं, साथ ही इसमें अन्य रसायनों की भरमार होती है। खाद्य पदार्थों को आकर्षक बनाने के लिये विभिन्न रंगों का इस्तेमाल किया जाता है। इसमें मुंह के छाले, पाचन क्रिया में गडबडी, गले में दर्द, शरीर पर काले धब्बे, दमा जैसी बीमारियों की संभावनाएं बढ़ जाती हैं। टॉफी, चाकलेट, तरह-तरह के रंगीन लड्डू आदि के अलावा मक्खन को आकर्षित बनाने हेतु पीले रंग का प्रयोग होता है, जिसके प्रभाव से लीवर सिरोसिस होने की भारी आशंका पैदा हो जाती है। पेय पदार्थों में प्रयोग होने वाले रसायनों से यकृत, गुर्दे, दिमाग और तिल्ली से संबंधित बीमारी का खतरा रहता है।

कहा जाता है जैसा खाय अन्न वैसा होय मन। संस्कारित खाद्य के बदले फास्ट फूड लेने वाले बच्चों में हिंसक प्रवृति और आक्रामकता बढ़ जाती है। फास्ट फूड लेने वालो में मानसिक विकृतियां बढ़ती हैं। शाकाहारी व संतुलित भोजन को सर्वाधिक उपयुक्त माना जाता है। हाल के अनुसंधान में पाया गया है कि फास्ट फूड के प्रयोग से मष्तिष्क में सिरोटोनिन का स्तर कम हो जाता है और सिरोटोनिन का स्तर घट जाने से आक्रामक प्रवृति बढ़ जाती है।

परिष्कृत एवं पवित्र भोजन से मन एवं भावनाएं भी शुद्ध बनती हैं। अतः फास्ट फूड का अंधानुकरण न करते हुये शुद्ध सात्विक भोजन ही करना चाहिए।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.
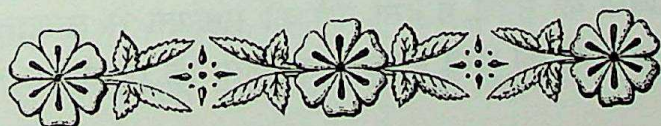
॥ 'तुलसी' केवल पौधा नहीं-आराधना की देवी ॥

तुलसी हम भारतवासियों को प्रकृति का सर्वोत्तम उपहार ही नहीं बल्कि वरदान है। इसकी महिमा का जितना भी वर्णन किया जाय, कम है। तुलसी पत्ता तो ईश्वरीय देन है ही इसकी लकड़ी, छाल, फूल, जड़, बीज, आदि सभी बहुत उपयोगी हैं। तुलसी का पौधा पर्यावरण को स्वच्छ रखने का सबसे बढ़िया साधन है। इसीलिये तो हमारे पूर्वज भवन निर्माण के समय सर्वप्रथम मकान के बीचों बीच आँगन में तुलसी का पौधा रोपने का प्रावधान रखते थे। पद्मपुराण में कहा गया है जितना आरोग्य संसार में फूल पत्तों से मिल पाता है उतना तुलसी के केवल एक पत्ते से मिल जाता है। यही कारण है कि भगवान के चरणामृत में भी केवल तुलसी दल को ही स्थान मिला है। साथ में जो मंत्र बोला जाता है, वह है "अकाल मृत्यु हरणं सर्वव्याधि विनाशनं" अर्थात अकाल मृत्यु को हरने वाला एवं सब व्याधियों का विनाश करने वाला। गरूड़ पुराण में भी तुलसी द्वारा स्वर्ग प्राप्ति की विधि का वर्णन है। आज भी मरणासन्न व्यक्ति के मुख में गंगाजल एवं तुलसी पत्ता दिया जाता है। ऐसा करने पर प्राण बिना किसी कष्ट के सरलता से निकल जाते हैं, पापों का नाश होता है एवं मृतक को स्वर्ग की प्राप्ति होती है ऐसा हमारा दृढ़ विश्वास है। विश्वास भला क्यों न होगा क्योंकि हम उस देश के वासी हैं जिस देश में गंगा बहती है। तुलसी के गंध में सड़न एवं बदबू को रोकने की अद्भुत क्षमता है। इसीलिए जब किसी घर में कोई मृत्यु हो जाती है एवं किसी कारणवश दाह संस्कार नहीं हो पाता है तो शव के पास तुलसी का पौधा लाकर रखा जाता है। तुलसी पौधे के पास रखा गया शव न तो तीन चार दिन तक सड़ेगा और न ही उसमें से बदबू निकलेगी।

स्त्रियों के लिये शास्त्रकारों ने तुलसी पूजन का विशेष महत्व माना है। यह बतलाने की आवश्यकता नहीं कि प्रचीन काल से ही अपने अनुपम गुणों के कारण तुलसी का पौधा प्रत्येक हिन्दु घर का एक आवश्यक अंग रहा है। श्री हनुमान जी महाराज जब सीता का पता लगाने लंका गये थे तो उन्होंने वहां उन राक्षसों की नगरी में इसी पौधे की सहायता से सनातन धर्मानुयायी परम भक्त विभीषण को खोज निकाला था, जैसा कि तुलसीदास ने लिखा है-

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

नामायुध अंकित गृह, शोभा बरनि न जाई।
नव तुलसीके वृन्द तहँ, देखि हरषि कपिराई॥

उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट है कि प्रचीन काल से ही प्रत्येक सद्गृहस्थ के यहाँ तुलसी का पौधा रहता है और जैसा कि शास्त्रीय विधान है कि स्त्रियाँ इसके पूजन द्वारा अपने सौभाग्य और वंश समृद्धि की कामना करती रही हैं। इसलिये प्रत्येक भारतीय नारी को प्रातः काल स्नानादि से निवृत्त होकर शुभ वस्त्र तथा मस्तक पर सिन्दूर आदि धारण कर भगवत् स्मरणान्तर तुलसी पूजन अवश्य करना चाहिए। पूजन की पूर्ण विधि से परिचित न होने पर तुलसी पौधे का जल से सिंचन और अक्षतों से अर्चन कर दीप जला कर नीचे लिखे मंत्र से सौभाग्य प्रार्थना करनी चाहिए-

सौभाग्यं सन्ततिं देहि, धनं धान्यंच में सदा।
आरोग्यं शोकशमनं, कुरू में माधव प्रिये॥

यह तो हुआ तुलसी का शास्त्रीय स्वरूप। अब आइये हम इसके वैज्ञानिक स्वरूप पर भी प्रकाश डालें। भारतीय संस्कृति की प्रत्येक क्रिया के पीछे सुविचारित वैज्ञानिक कारण है। तुलसी के पौधे को आँगन में रखने एवं पानी से पूजने के पीछे भी गूढ़ रहस्य है। तुलसी कीटाणु नाशक औषधि है। इसका प्रत्येक आँगन में रहना आवश्यक है, वायु शुद्धि की दृष्टि से और सहज उपलब्धि की दृष्टि से भी। तुलसी एक पौधा है जिसे रोजाना पानी चाहिए। यह कोई विशाल वृक्ष तो है नहीं, जो जमीन के भीतर गहराई से पानी खींच ले। अतः इसकी सुरक्षा के लिये प्रतिदिन जल से पूजन का विधान किया गया। पण्डितों ने बताया कि तुलसी की अराधना करने वाले स्वस्थ रहते हैं और उपेक्षा करने वाले बीमार। ठीक ही तो बताया है इसे संभाल कर रखना ही इसकी पूजा है। बीमारियों के घर भारत देश में सौ दवाओं की एक दवा तुलसी यदि आराधना की देवी बन गयी तो इसमें आश्चर्य की क्या बात है? इसकी उपयोगिता ने ही इसे इस पद पर प्रतिष्ठित किया है। निम्नलिखित विवेचन से स्पष्ट है कि लाख दुःखों की एक दवा तुलसी मानव जीवन में कितनी उपयोगी है। अगर हम इसका सही ढ़ंग से इस्तेमाल करें तो कितने ही असाध्य रोगों से छुटकारा पाया जा सकता है।

तुलसी का लेटिन नाम - **ऑसिमम सैन्कटम (Occimum Sanctum)** है।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

मस्तिष्क की गर्मी – तुलसी के पाँच पत्ते और काली मिर्च पीस लें। इसे एक ग्लास पानी में मिलाकर प्रातः २१ दिन पीयें। यह मस्तिष्क की गर्मी को दूर करने की शक्ति देती है।

शक्तिवर्धक – शौचादि से निवृत्त होकर प्रातः तुलसी के पाँच पत्ते पानी के साथ निगल जाने से, बल तेज और स्मरण शक्ति बढ़ती है। तुलसी के पत्ते का रस ७ बूँद पानी में मिलाकर पीने से माँसपेशियां और हड्डियाँ मजबूत होती हैं। तुलसी के बीज दूध में उबालकर शक्कर मिलाकर पीने से ताकत बढ़ती है।

मिरगी – तुलसी के हरे पत्ते को पीस कर मिरगी वाले के शरीर पर प्रतिदिन मालिश करने से लाभ होता है।

बेहोशी – तुलसी पत्तों को पीस कर नमक मिला कर उसका रस नाक में डालने से बेहोशी, मूर्च्छा में लाभ होता है।

मलेरिया – (१) नित्य तुलसी के पत्तों का सेवन करने से मलेरिया नहीं होता। मलेरिया हो जाये तो बुखार उतरने पर प्रातः १५ तुलसी के पत्ते और १० काली मिर्च खाने से पुनः मलेरिया बुखार नहीं चढ़ता। तुलसी के पत्ते से सभी प्रकार के ज्वरों में लाभ होता है। (२) २० तुलसी के पत्ते, १० काली मिर्च दो चम्मच शक्कर का काढ़ा बना कर पीने से मलेरिया में लाभ होता है। ज्वर, खाँसी, श्वास रोग में तुलसी पत्तियों का रस तीन ग्राम, अदरक का रस तीन ग्राम, शहद ५ ग्राम मिलाकर सुबह शाम चाटें, लाभ होगा।

जुकाम, खाँसी, गलशोथ, फेफ़ड़ों में कफ जमा हो तो तुलसी के सूखे पत्ते, कत्था, कपूर और इलायची सम भाग नौ गुनी शक्कर बारीक पीस लें। यह होमियोपैथी का x विचुर्ण (Trituration) बन जाता है। इसे चुटकी भर सुबह, शाम सेवन करने से जमा हुआ कफ निकल जाता है ।

नाक में दुर्गन्ध – तुलसी के पत्तों का रस या पीसे हुये सूखे पत्ते सूँघने से नाक की दुर्गन्ध दूर होती है और कीड़े मर जाते हैं।

ज्वर – दस तुलसी के पत्ते, तीन ग्राम सौंठ, पाँच लौंग, इक्कीस काली मिर्च स्वाद के अनुसार चीनी डालकर उबालें। जब पानी आधा रह जाये तो रोगी को पिलायें। ज्वर उतर जायेगा। यदि ज्वर में घबड़ाहट हो तो तुलसी के पत्तों के रस में शक्कर मिला कर शर्बत बनाकर पिलायें।

जीर्ण ज्वर और खाँसी – जीर्ण ज्वर साथ ही ऐसी खाँसी हो जिससे छाती में

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

दर्द हो तो तुलसी के पत्तों के रस में मिश्री मिलाकर पीने से लाभ होता है।

खाँसी– (१) पाँच लौंग भून कर तुलसी के पत्ते के साथ चबाने से सब तरह की खाँसी ठीक होती है। तुलसी की सूखी पत्तियाँ और मिश्री चार ग्राम की एक मात्रा लेने से खाँसी और फेफड़ों की घबड़ाहट दूर हो जाती है। (२) तुलसी के पत्ते और काली मिर्च समान भाग में लेकर पीस लें। इसकी मूंग के बराबर गोलियां बना लें। एक गोली चार बार दें। इससे कुकुर खाँसी भी ठीक हो जाती है। (३) तुलसी अदरक और प्याज का रस शहद के साथ सेवन करने से खाँसी में लाभ होता है। बलगम बाहर निकलता है। (४) तुलसी के पत्तियों का काढ़ा बना कर उसमें चीनी, गाय का दूध मिलाकर पीने से खाँसी और छाती का दर्द ठीक हो जाता है। (५) तुलसी का सूखा चूर्ण शहद मिला कर चाटने से खाँसी में आराम हो जाता है। (६) तुलसी, अदरक समान मात्रा में पीसकर एक चम्मच रस निकालें। इसमें एक चम्मच शहद मिलाकर चाटें इससे खाँसी के रोग ठीक हो जाते हैं।

२ ग्राम तुलसी का रस, ५ ग्राम मिश्री, तीन काली मिर्च मिलाकर लेने से छाती की जकड़न, पुराने बुखार और खाँसी में लाभ होता है।

निमोनिया– तुलसी के हरे पत्ते और काली मिर्च पीसकर पानी में मिलाकर पिलाने से निमोनिया में लाभ होता है।

भोजन का पाचन– भोजन के बाद तुलसी के ताजे पत्तों को पीसकर पानी मिलाकर पीने से अजीर्ण (भोजन न पचना) दूर होता है। नित्य तुलसी के पाँच पत्ते सेवन करने से भोजन शीघ्र पचता है।

जुकाम– (१) दस तुलसी के पत्ते, पाँच काली मिर्च पानी में मिलाकर चाय की तरह उबालें। फिर इसमें थोड़ा सा गुड़ और देशी घी या सेंधा नमक डाल कर पीयें। इससे जुकाम में लाभ होता है। केवल तुलसी के पत्ते के काढ़े से भी जुकाम ठीक हो जाता है। तुलसी के पत्ते, काली मिर्च, सौंठ को चाय की तरह उबाल कर शक्कर, दूध मिलाकर पीने से जुकाम में आराम होता है। तुलसी के पत्तियों को सुखाकर पीसकर सूंघने से बहता जुकाम रूक जाता है। बच्चों की सर्दी, खाँसी कफ की गड़गड़ाहट में तुलसी के पत्तों का रस शहद में मिलाकर पिलाने से लाभ होता है।

आधे सिर का दर्द– तुलसी के पत्तों का चूर्ण शहद के साथ सुबह, शाम चाटने

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

से लाभ होगा।

सिर दर्द– तुलसी के पत्ते छाया में सुखाकर रख लें। इन्हें पीस लें। इसे सिर दर्द के रोगी को सुँघाने से पीड़ा शान्त होती है तथा पागलपन की उत्तेजना ठीक होती है। तुलसी के पत्तों का रस और नींबू का रस समान मात्रा में पीने से सिर दर्द दूर होता है।

बच्चों के दस्त– तुलसी और पान का रस समान मात्रा में गर्म करके पिलाने से बच्चों के दस्त साफ आते हैं। पेट फूलना, अफरा ठीक हो जाता है।

सिर दर्द, दाद और ज्वर– तुलसी के पत्ते का रस १२ ग्राम नित्य पीयें।

हैजा, दाँत दर्द– तुलसी की पत्ती और काली मिर्च पीसकर गोली बना लें। इसे दुखते दाँत के नीचे दबाये रखने से दाँत दर्द शान्त हो जाता है। तुलसी के पत्ते दाँत से चबाकर खाने से दाँत मजबूत होते हैं। मुँह की बदबू दूर होती है।

पेचिश– तुलसी की पत्ती को शक्कर के साथ खिलाने से पेचिश दूर होती है।

पेट दर्द– तुलसी और अदरक के रस को सम भाग में लेकर गर्म करके पीने से लाभ होता है। १२ ग्राम तुलसी का रस पीने से पेट की मरोड़ ठीक हो जाती है।

दस्त– तुलसी के पत्तों का काढ़ा पीने से दस्तों में लाभ होता है। दस ग्राम तुलसी के पत्तों का रस नित्य पीने से पेट की मरोड़ और अजीर्ण में लाभ होता है।

उल्टी– तुलसी के पत्तों का रस पीने से उल्टी बंद हो जाती है। पेट के कीड़े (कृमि) मर जाते हैं। शहद और तुलसी का रस मिलाकर चाटने से जी मचलाना उल्टी भी बंद हो जाती है।

संग्रहणी– तुलसी के पत्तों का चूर्ण और शक्कर हरेक तीन ग्राम मिलाकर लें।

अजीर्ण, मन्दाग्नि– तुलसी काली मिर्च खाने के बाद चबाने से मन्दाग्नि ठीक हो जाती है। यह परीक्षित है। तुलसी के पत्ते के काढ़े में सेंधा नमक और सौंठ मिलाकर पीने से अजीर्ण ठीक होता है।

हिचकी– तुलसी का रस १२ ग्राम, शहद ६ ग्राम और दोनों को मिलाकर पीने से हिचकी बंद हो जाती है।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

यकृत (Liver)– एक ग्लास पानी में १२ ग्राम तुलसी के पत्ते उबाल कर चौथाई पानी रहने पर छान कर पीने से यकृत बढ़ना और एवं यकृत के अन्य रोग ठीक हो जाते हैं।

नकसीर – तुलसी का रस नाक में टपकाने से रक्तस्राव बंद होता है। पीनस, नाक में दर्द घाव, फुन्सी, हो तो तुलसी के सूखे पत्तों को पीस कर सूँघने से लाभ होता है।

सुनने में गड़बड़, कान का दर्द – तुलसी के पत्तों का रस गर्म करके कान में डालने से दर्द ठीक हो जाता है। कान बहता हो तो लगातार कुछ दिन डालने से लाभ होता है। बच्चों के श्वास में तुलसी के पत्ते का रस शहद में मिलाकर पीने से लाभ होता है।

सिर चकराना, लू लगना – तुलसी के पत्ते का रस चीनी मिलाकर पीने से लू नहीं लगती और लू लगने पर लाभ होता है। चक्कर नहीं आते।

प्रदर – (१) तुलसी के पत्तों का रस और शहद समान मात्रा में मिलाकर प्रातः और शाम चाटने से लाभ होता है। (२) तुलसी के रस में जीरा मिलाकर गाय के दूध के साथ सेवन करें।

स्त्रियों का अनावश्यक रक्तस्राव – तुलसी के जड़ का चूर्ण पान में रख कर खिलाने से बन्द हो जाता है। प्रसव पीड़ा के समय तुलसी के पत्ते का रस पिलाने से पीड़ा नहीं होती, मासिक धर्म रूकने पर तुलसी के बीज सेवन करने से लाभ होता है।

रक्त प्रदर – तुलसी के पत्तों के रस में मिश्री मिलाकर सेवन करने से रक्त प्रदर ठीक हो जाता है।

गर्भ निरोध – मासिक धर्म बंद होने के बाद तीन दिन एक कप तुलसी के पत्ते का काढ़ा सेवन करने से गर्भ नहीं ठहरता, हानिकारक भी नहीं है।

गर्भ धारण – यदि किसी स्त्री को मासिक धर्म होता है, परन्तु गर्भ नहीं ठहरता तो मासिक धर्म के दिनो में तुलसी के बीज चबाने से या पानी में पीसकर लेने से या काढ़ा बना कर पिलाने से गर्भ धारण होगा। यदि गर्भ ना रहे तो एक साल तक करें। इससे गर्भाशय निरोग, सबल बनकर गर्भधारण करने योग्य बनता है।

पेशाब में जलन – तुलसी की पत्ती चबाने से ठीक हो जाती है।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

छाले – तुलसी और चमेली के पत्ते चबाने से ठीक होता है ।

खाज-दाद – तुलसी के पत्तों का रस और नीबू का रस समान मात्रा में मिलाकर लगाने से ठीक हो जाता है। इससे चेहरे की छाइयाँ, मुँहासे, झाईं, काले धब्बे व अन्य त्वचा के रोग भी ठीक हो जाते हैं।

बच्चों के रोग – पेट फूलना, दस्त, खाँसी, सर्दी, उल्टी होने पर तुलसी के पत्तों के रस में चीनी मिलाकर शर्बत बना लें। इसकी एक छोटी चम्मच पिलायें, ये सब ठीक हो जायेंगे। नियमित प्रयोग से बच्चा स्वस्थ रहता है। बच्चों का उत्तम स्वास्थ बनाये रखने के लिये तुलसी, अदरक का रस गर्म करके ठंडा होने पर शहद मिलाकर पिलायें।

दमा – तुलसी के रस में बलगम को पतला कर निकालने का गुण है। इसलिये यह जुकाम, खाँसी में उपयोगी है। तुलसी का रस, शहद अदरक का रस, प्याज के साथ मिलाकर लेने से दमा खाँसी में बहुत लाभ होता है।

घाव – तुलसी के पत्तों को छाया में सुखाकर बारीक पीसकर कपड़े से छान कर घाव पर छिड़कने से घाव भर जाता है। इसके पत्तों को पीसकर भी लगा सकते हैं।

घावों में कीड़े – तुलसी के पत्तों को उबालकर उस पानी से घावों को धोयें। तुलसी के पत्तों का चूर्ण घावों पर छिड़कें। तुलसी के पत्तों के रस में पतला कपड़ा (गाज) भिगाकर पट्टी बाँधें।

सफेद दाग – खुजली की फुन्सियां, घाव आदि पर तुलसी का तेल नित्य तीन बार लगाने से लाभ होता है। एक जड़ सहित तुलसी का पौधा लें। इसे धोकर मिट्टी आदि साफ कर लें। फिर इसे कूटकर आधा किलो तिल के तेल में मिलाकर धीमी आँच पर पकायें। पानी जल जाने और तेल बचने पर मलकर छान लें। यह तुलसी का तेल बन गया, इसे लगायें।

जलना, खुजली, फोड़े, फुन्सी की मरहम – तुलसी के पत्तों का रस २५० ग्राम, नारियल का तेल २५० ग्राम, दोनों मिलाकर धीमी आग पर गर्म करें। जल का भाग जल जाने पर गर्म तेल में ही १२ ग्राम मोम डाल कर हिलायें। यह मलहम तैयार है। ऊपर लिखे सब रोगों में लाभदायक है।

निरोग – जो व्यक्ति ६ तुलसी के पत्ते नित्य खा लेता है वह अनेक रोगों से सुरक्षित रहता है तथा सामान्य रोग स्वतः दूर हो जाते हैं।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

बिजली गिरना – तार की बिजली या वर्षा में आकाश से बिजली गिरने से व्यक्ति बेहोश हो गया तो सिर तथा चेहरे पर तुलसी का रस मलने से होश में आ जाता है।

पानी को शुद्ध करना – पानी में तुलसी के पत्ते डालने से पानी शुद्ध हो जाता है। आग से जलने पर तुलसी के रस को नारियल के तेल में मिलाकर लगाने से जलन दूर होती है, छाले तथा घाव ठीक हो जातें हैं।

स्मरण शक्ति – दस तुलसी के पत्ते, पाँच काली मिर्च, पाँच बादाम, थोड़ा सा शहद मिलाकर ठण्डाई की तरह पीने से स्मरण शक्ति बढ़ती है।

एन्फ्लूएन्ज़ा – ७२ ग्राम तुलसी के पत्ते को २५० ग्राम पानी में उबाल लें। जब चौथाई पानी रह जाय तो छानकर सेंधा नमक मिलाकर गर्म -गर्म पिलायें।

प्यास – किसी रोग में यदि प्यास अधिक हो तुलसी के पत्तों को पीसकर पानी में मिलाकर, नीबू निचोड़ कर, मिश्री मिलाकर पिलाने से प्यास कम हो जाती है।

वात (Rheumatic Pain)– तुलसी के पत्तों को उबालते हुये इसकी भाप वात ग्रस्त अंगों पर दें तथा इसके पत्ते, काली मिर्च, गाय का घी तीनों मिलाकर सेवन करें। इससे वात व्याधि में लाभ होता है। जापान में यह प्रयोग लोकप्रिय है।

स्नायुशूल – तुलसी के बीजों का चूर्ण स्नायुशूल में लाभ करता है। मुंहासे, झाइयाँ, काले दागों पर तुलसी का चूर्ण मक्खन में मिलाकर चेहरे पर मलें।

फोड़े – तुलसी के पत्ते पानी में उबालकर पानी से फोड़ों को धोयें। ताजा पत्ते पीस कर फोड़ों पर लगायें।

फुन्सियां – गर्मी, वर्षा में होने वाली फुन्सियों पर तुलसी की लकड़ी घिस कर लगायें।

बाला – चमड़ी से लम्बे धागे की तरह कीड़ा निकलता है। इसे बाला या नेहरू कहते हैं। जहाँ बाला निकलने वाला होता है वहाँ सूजन वाले स्थान पर तुलसी की जड़ घिस कर लेप करने से बाला २-३ इंच बाहर निकल जाता है। इसे बाँध देना चाहिए। दुसरे दिन फिर इसी तरह लेप करें। इस प्रकार लेप करते रहने से पूरा बाहर निकल आता है। बाला बाहर निकल जाने पर भी लेप करते रहना चाहिये जिससे बाला पूरा भर जाये।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

बाल गिरना, सफेद होना – यदि कम आयु में बाल गिरते हों, सफेद हो गये हों, तो तुलसी के पत्ते और आँवले का चूर्ण पानी में मिलाकर सिर में मलें। दस मिनट बाद सिर धो लें । इससे बालों की जड़ मजबूत होती है तथा बाल काले होते हैं। सावधानी रखें कि लगाते समय या सिर धोते समय इसका पानी आँखों में न जाय।

गृध्रसी शूल – तुलसी के पत्तों को पानी में उबाल कर उसकी भाप वातनाड़ी पर दें।

मोटापा – तुलसी के पत्तों का रस एवं शहद मिलाकर कुछ दिनों तक सेवन करने से मोटापा कम होता है।

हृदय शक्तिवर्धक – सर्दी के मौसम में तुलसी के ७ पत्ते, ४ मिर्च, ४ बादाम सबको ठंडाई की तरह पीसकर आधा कप पानी में घोल कर नित्य पियें। इससे हृदय को शान्ति मिलती है। विभिन्न प्रकार के हृदय रोग ठीक हो जाते हैं।

पक्षाघात – तुलसी के पत्ते उबालकर रोग ग्रस्त अंगों पर भाप देने, धोने से लाभ होता है। तुलसी, सेंधा नमक दही सबको पीसकर लेप करें।

कुष्ट रोग – तुलसी के पत्तों को खाने व कुष्ट रोग पर मलने से लाभ होता है।

स्वप्नदोष – तुलसी की जड़ के छोटे-छोटे टुकड़े करके पीसकर पानी में मिलाकर पीने से लाभ होता है।

धातु दौर्बल्य – तुलसी के बीज ६० ग्राम, मिश्री ७५ ग्राम दोनो को पीस लें। नित्य तीन ग्राम गाय का दूध से लें। इससे धातु दौर्बल्य में लाभ होता है। परीक्षित है।

शीघ्र पतन – तुलसी की जड़ या बीज पान में रख कर खाने से शीघ्र पतन दूर होता है। देर तक रूकावट होती है। वीर्य पुष्ट होता है।

वीर्य सम्बन्धी रोग – ३ ग्राम तुलसी के बीज या जड़ का चूर्ण समान मात्रा में पुराने गुड़ में मिलाकर दूध के साथ सेवन करने से पुरूषत्व की वृद्धि होती है। पतला वीर्य गाढ़ा होता है तथा इसमें वृद्धि होती है। शरीर में गर्मी और शक्ति पैदा होती है। गैस कफ से होने वाले अनेक रोग दूर होते हैं। यह ४० दिन लें।

बवासीर – बवासीर पर तुलसी के पत्तों को पीस कर लेप करने या रस लगाने से लाभ होता होगा। तुलसी के पत्तों का सेवन नित्य करें।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

बर्र, भौंरा, बिच्छु के काटने पर – उस स्थान पर तुलसी के पत्ते को पीसकर नमक मिलाकर लगाने से जलन और कष्ट शीघ्र दूर हो जाते हैं। तुलसी के पत्तों का रस शरीर पर लगाने से मच्छर नहीं काटते हैं।

विषैले दंश – बिच्छु, बर्र, सर्प काट ले तो तुलसी के पत्ते पीसकर जल में मिलाकर रोगी को पिलायें।

चेचक ज्वर – तुलसी के पत्तों के साथ अजवाइन पीस कर नित्य सेवन करने से चेचक का ज्वर कम रहता है।

तुलसी का पत्ता सब तरह की दुर्गन्ध को नाश करने वाला है। खाना खाने के बाद तुलसी के पत्ते चबाने से मुँह में दुर्गन्ध नहीं आती।

जहाँ तुलसी के पत्ते उपलब्ध न हो, वहाँ होम्योपैथी से बनी तुलसी की मदर टिंचर ऑसिमम सेंकटम **(Occimum Sanctum)** काम में लेना चाहिए वायुमंडल को शुद्ध रखने के लिये हर घर में तुलसी का पौधा लगाना चाहिए।

क्या आप जानते हैं ?

१. शाकाहारी भोजन मांसाहारी भोजन की तुलना में पौष्टिक एवं स्वास्थ्य के लिए ज्यादा उपयुक्त है। ये विचार न सिर्फ पूर्व बल्कि पश्चिमी सभ्यता के वैज्ञानिकों, दार्शनिकों एवं चिकित्सकों के हैं।

२. शाकाहारी भोजन पचाने में शरीर के पाचन तंत्र पर उतना जोर नहीं पड़ता, न ही उतना समय लगता है जितना कि मांस को पचाने मे।

३. यह धारणा मिथ्या है कि मांस खाने से शरीर बलिष्ठ होता है। शक्तिशाली जानवर जैसे हाथी, घोड़ा व बैल जो शक्ति के स्वरूप हैं नितान्त शाकाहारी हैं।

४. आहार का हमारी अपनी प्रवृत्ति पर वैसा ही असर पड़ेगा जैसा हम उससे ग्रहण करेंगे। कहावत भी हैं-जैसा खाय अन्न वैसा होय मन। आपने देखा भी होगा कि मांसाहारी ही अधिक अपराधी और उग्र प्रवृत्ति के होते हैं, जबकि शाकाहारी लोग शांत एवं सात्विक विचारों वाले होते हैं।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

॥ जल उपचार - एक चमत्कार ॥

साधारणतया असाध्य रोगों को भी एक बहुत ही साधारण तथा आसान तरीके से ठीक किया जा सकता है जिसे हम, "जल से इलाज" कहते हैं। इस "जल से इलाज" पर अनुभवों के आधार पर 'जापानीज सिकनेस एसोसियेसन' द्वारा प्रकाशित एक लेख में जल से निम्नलिखित पुराने तथा असाध्य रोगों को ठीक किया जा सकता है :-

१. सरदर्द, रक्त चाप, रक्त की कमी, रक्त के थक्के, पक्षाघात, अम्ल, हृदय स्पन्दन तथा मरोड़।

२. कफ, दमा तथा टी. बी.।

३. तानिका शोथ, लीवर की बीमारियाँ, पेशाब की गड़बड़ी ।

४. अम्ल-शूल, गैसजनित, अतिसार, कब्ज, बवासीर तथा चीनी की बीमारियाँ।

५. अनियमित मासिक रक्तस्राव, श्वेत प्रदर तथा गर्भाशय का कैन्सर।

६. कान, नाक व गले की बीमारियाँ।

पानी को कैसे पीयें ?

तड़के, जब आप उठते हैं, बिना मुँह या दाँत धोये या दाँत साफ करने के बाद करीब ४ (चार) गिलास पानी एक साथ पी लें। पानी पीने के ४५ (पैंतालिस) मिनट तक कुछ भी न लें । पानी पीने के बाद आप अपने मुँह और दाँत साफ कर सकते हैं। जब आप इस परीक्षण को प्रारम्भ करें तब आपको नाश्ता, भोजन के पश्चात् दो घंटे तक पानी नहीं पीना चाहिये तथा सोने के पहले कुछ भी नहीं खाना चाहिये।

वे जो बीमार हैं या बहुत ज्यादा संवेदनशील हैं उन्हें पहले यह पद्धति २ (दो) गिलास पानी से प्रारम्भ करना चाहिये तथा धीरे-धीरे ४ चार गिलास तक बढ़ाना चाहिये और लगातार लेते रहना चाहिये। यह रोगियों तथा स्वस्थ्य व्यक्तियों के लिये समान रूप से लाभदायी है तथा वे अपने आपको बीमारियों से दूर रख सकते हैं।

परीक्षण करने पर पता चला कि विभिन्न प्रकार की बीमारियाँ नीचे दिये गये समय के अन्दर ठीक हो गयीं :-

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

१. धड़कन (रक्त चाप)	–	१ (एक) माह
२. गैस जनित कष्ट	–	१० (दस) दिन
३. कब्जियत	–	१० (दस) दिन
४. टी.बी.	–	३ (तीन) माह
५. चीनी	–	१ (एक) माह
६. कैन्सर	–	६ (छः) माह

जो रक्त के थक्के, गठिया, वात रोग से पीड़ित हैं, उन्हें इस अनुभव को एक सप्ताह तक दिन में तीन बार करना चाहिये। प्रारम्भिक दिनों में ३ से ४ बार ज्यादा पेशाब के सिवा इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं होता है तथा तीन से चार दिनों में नियमित हो जाता है।

आशा है कि आप इस चमत्कारिक ईलाज द्वारा अपनी सभी व्याधियों से मुक्त होकर प्रसन्नता से जीवनयापन करेंगे तथा स्वस्थ समाज का निर्माण करेंगे।

हमें ऐसा प्रेम करना चाहिए जिससे हम स्वार्थ से अंधे न हो जाएं। हमारे गले से गले, कंधे से कंधे और पैर से पैर मिलें लेकिन सिर से सिर न टकराएं। जब हममें ऐसी एकता हो जाएगी तभी हमारे सपने साकार हो पावेंगे। –मैथिलीशरण गुप्त

मनुष्य जन्म से ही न तो मस्तक पर तिलक लगाकर आता है न यज्ञोपवीत धारण करके। जो सत्कार्य करे, वह द्विज है और जो कुकर्म करता है, वह नीच। –गौतम बुद्ध

आग से जलते हुए एक ही सूखे वृक्ष से सारा वन जिस प्रकार जलकर भस्म हो जाता है, उसी प्रकार एक कुपुत्र सारे कुल के लिए संताप और विनाश का कारण होता है। –चाणक्य

बुरे लोगों को निन्दा में ही आनंद आता है। सारे रसों को चखकर भी कौवा गंदगी से ही तृप्त होता है। –महाभारत

यदि लोग हमारे बारे में कुछ ऊटपटांग बातें करते हैं तो हमें उनका उसी प्रकार बुरा नहीं मानना चाहिए जिस प्रकार गिरजाघर की मीनारें अपने इर्द-गिर्द चीलों के चीखने का खयाल नहीं करती। –इलियट

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

॥ प्रातः जागरण क्यों ? ॥

लेखक – कैलाशचन्द्र अग्रवाल

हमारी दैनिक चर्या का आरम्भ प्रातः ब्रह्ममुहूर्त में जागरण से होता है। शास्त्रों की आज्ञा है – **''ब्राह्मे मुहूर्ते बुध्यते''** अर्थात् प्रातःकाल ब्रह्म मुहूर्त में उठना चाहिये। ब्रह्ममुहूर्त की व्याख्या करते हुये शास्त्रों में बतलाया गया है कि रात्रि के अन्तिम प्रहर का जो तीसरा भाग है, उसी को ब्रह्ममुहूर्त कहते हैं। निद्रा त्याग के लिये यही समय शास्त्र निहित है। प्रातः जागरण का यह नियम हमारा दैनिक चर्या का अत्यन्त महत्वपूर्ण नियम है। समस्त दैनिक क्रियाओं की सफलता या असफलता बहुत कुछ इसी पर निर्भर है।

कभी सूक्ष्म दृष्टि से इस समय का अवलोकन किया जाय तो आप देखेंगे कि उस समय का प्राकृतिक वातावरण कितना मधुर और निराला होता है। प्रातः काल होते ही कमल खिल उठते हैं, भ्रमरावली गुंजार करने लग जाती है, पक्षी अपने कलरव से उपवनों एवं उद्यानों को मुखरित कर देते हैं, यह शीतल मंद सुगन्ध पवन अपने आवरण में मकरन्द की मादक गन्ध लिये डोलने लग जाता है। सचमुच ही समस्त सृष्टि एक नवीन जीवन की अनुभूति से खिल उठती है। लेकिन इस स्वर्गीय आनन्द का उपभोग ब्रह्म मुहूर्त में उठने वाला जीव ही कर सकता है। और तो और अधम जीव मुर्गा भी प्रातः होने के साथ ही तार स्वर में बाँग देकर अपने जग जाने का प्रमाण देना आरम्भ कर देता है। किन्तु अपने को सर्वश्रेष्ठ समझने वाला आज का मानव प्रकृति की अवहेलना करते हुये सूर्य चढ़े तक बिस्तर पर करवटें लेते नहीं अघाता। उसका प्रातः काल तो तब होता है, जब ७ बजे खिड़की से धूप आने लगती है एवं रेडियो बोल उठता है कि "बड़ी देर भई नंद लाला"। तब महाशय जी रेडियो की मधुर झंनकार सुनकर अंगड़ाई लेते हुये उठते हैं एवं चाय की फरमाईश करते हैं।

वर्ण कीर्ति मतिं लक्ष्मी स्वास्थ्यमायुश्च विदन्ति ।
ब्राह्मे मुहूर्ते संजाग्रच्छ्रिय वा पंकजं यथा ॥

अर्थात् ब्रह्म मुहूर्त में उठने से पुरूष को सौन्दर्य, लक्ष्मी, बुद्धि, स्वास्थ्य, वायु आदि की प्राप्ति होती है। उसका शरीर कमल के सदृश्य सुन्दर हो जाता है।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

इसके अतिरिक्त सम्पूर्ण रात्रि के पश्चात् प्रातः जब भगवान सूर्य उदय होने वाले होते हैं तो उनका चैतन्यमय तेज आकाश मार्ग द्वारा विस्तृत होने लगता है। यदि मनुष्य सजग होकर स्नानादि से निवृत्त होकर उपस्थान एवं जग द्वारा अन्न प्राणाधिदेव भगवान सूर्य की किरणों से अपने प्राणों में अतुल तेज का आह्वान करें तो वह पुरूष दीर्घजीवी हो जाता है। आधुनिक विज्ञान के अनुसार भी समस्त ब्रह्माण्ड में वायु का विभाग साधारणतया निम्न क्रम में किया जाता है:-

ऑक्सीजन (प्राणपद वायु)	-	२१ प्रतिशत
कार्बनडाइ ऑक्साइड (दूषित वायु)	-	६ प्रतिशत
नाईट्रोजन (नद्र जल)	-	७३ प्रतिशत
कुल योग	-	१०० प्रतिशत

विज्ञान के अनुसार सम्पूर्ण दिन वायु का यही प्रवहन क्रम रहता है किन्तु प्रातः और सायं जब सन्धि काल होता है इस क्रम में कुछ परिवर्तन हो जाता है। सायंकाल जगत्प्राणप्रेरक भगवान सूर्य के अस्त हो जाने से आक्सीजन अपने स्वाभाविक स्तर से मन्द पड़ जाती है और मनुष्य की प्राणशक्ति भी क्षीण हो जाती है, उसे विश्राम की आवश्यकता अनुभव होने लगती है। इसी प्रकार प्रातः काल के सूर्योदय के साथ उस वायु स्तर में वृद्धि होना स्वाभाविक है। इसलिये यदि मनुष्य निद्रामुक्त होकर इस समय वायु का सेवन करे तो उसका स्वास्थ्य बहुत अच्छा हो जायेगा। यह ध्रुव सत्य है। वास्तव में दीर्घ जीवन का एक ही मूल मंत्र है- जल्दी सोओ जल्दी उठो। **"Early to go bed early to rise, makes a man healthy, wealthy and wise."** अर्थात् जल्दी सोना और जल्दी उठना मनुष्य को स्वस्थ, धनवान और बुद्धिमान बना देता है। यह अंग्रेजी की कहावत सर्वरूपेण सत्य ही है। यह लेख विशेषतः समाज की युवापीढ़ी के लिये लिखा गया है जो देर रात से सोने और सुबह देर से उठने के आदी हो गये हैं। किन्तु यह आदत अभिशाप है। सुबह देर से उठने से दिन भर का कार्यक्रम अस्त व्यस्त हो जाता है। देर होने की वजह से समस्त कामों में हड़बड़ी से कोई भी काम सुचारू रूप से नहीं हो पाता। कहा भी गया है **''जल्दी काम शैतान का''**। ऊपरलिखित कारणों से स्पष्ट हो जाता है कि देर से उठना स्वास्थ्य के लिये तो हानिकारक है ही बल्कि देर से उठने वाला जिन्दगी की दौड़ में भी पिछड़ जाता है-यह ध्रुव सत्य है।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

॥ कुव्यसन की कुल्हाड़ी ॥

हर कुव्यसन कुल्हाड़ी है, मत काटो अपनी डाल।
कालिदास की महामूर्खता, इसकी एक मिसाल॥

मद्यपान :

शराब की लत बुरी संगत से लगती है, या इस गलत धारणा से कि इससे दुःख, थकान या तनाव कम होता है। यह पीने वालों का एक बहाना मात्र है। मद्य (Alcohol) ऐसा विष है, जो आमाशय, जिगर, नाड़ी, गुर्दा आदि को हानि पहुँचाकर शरीर को खोखला कर देता है।

"पहले व्यक्ति शराब पीने की शुरूआत करता है, फिर शराब उस व्यक्ति को पीने लगती है" - यह बिल्कुल सत्य है। जीवन की जिस डाल पर हम बैठे हैं, उसे शराब के कुव्यसन की कुल्हाड़ी से काटना महामूर्खता है एवं पतन की निशानी है।

शराब के प्यालों में बड़ी बड़ी रियासतें डूब गईं। बड़े-बड़े कुबेर के मालिक इससे तबाह हो गये। आज सभ्य शिक्षित समाज में दावतों, पार्टियों ओर खुशी के अवसरों पर पीना और पिलाना, जाम से जाम टकराना एक फैशन बन गया है। आज के सभ्य समाज का यह मापदण्ड बन गया है, किन्तु यह सभ्यता नहीं पतन की निशानी है।

धूम्रपान :

धूम्रपान का शौक प्रौढ़ों को ही नहीं, किशोरों और युवकों में भी तेजी से बढ़ रहा है। सिगरेट की पैकेट पर लिखी जाने वाली वैधानिक चेतावनी का भी उन पर कोई असर नहीं पड़ता। उनको नहीं मालूम कि वे अनजाने में ही अपना कितना बड़ा अनिष्ट कर रहे हैं।

धूम्रपान स्वास्थ्य और जीवन को नष्ट कर देने वाला प्राणघातक कुव्यसन है। आज संसार भर के चिकित्सा वैज्ञानिक गला फाड़-फाड़ कर कह रहे हैं, कि धूम्रपान हृदय रोग, कैंसर और उच्च रक्तचाप का जनक है। इसलिये अपनी दृढ़ इच्छा शक्ति के बल पर इस कुव्यसन से दूर रहें।

पान मसाला और जर्दा :

जेब में पान मसाला, मुँह में पान मसाला, भोजन के पहले एवं भोजन के बाद

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

पान मसाला, भोजों और पार्टियों में पान मसाला, स्वागत और सफर में पान मसाला, यहाँ तक कि शौच के समय भी पान मसाला - आजकल सर्वत्र एक छत्र साम्राज्य है इसका। नई पीढ़ी को इसका ज्यादा शौक लगा है। वे ऊपर से जर्दा का मिश्रण भी करते हैं। यह तो वही कहावत हुई कि एक तो करेला दूजे नीम चढ़ा।

पान मसाला के दुष्परिणाम शीघ्र ही प्रकट होने लगते हैं। यह मुँह, गले, फेफड़ों और पेट की स्वाभाविक क्रियाओं में बाधा उत्पन्न कर इन्हें भयंकर हानि पहुँचाता है। मुँह में पीक भरकर किसी से बात करना भी असभ्यता का परिचायक है। पान मसाला से मुँह में कैंसर होने का भी खतरा है।

कृपया लुभावने विज्ञापनों के चक्कर में न आवें। यह वो धीमा जहर (Slow-Poision) है, जो शरीर को जर्जर बना देता है। खुद भी न खायें एवं दूसरों को भी न खाने की सलाह दें।

मादक द्रव्य एवं नशीली दवाएँ :

आज सारी दुनिया में मादक द्रव्यों और नशीली दवाओं की बढ़ती हुई तस्करी और सर्वनाशी लत के कारण हाहाकार मचा हुआ है। धन के लालची मौत के सौदागरों ने अपने नीच स्वार्थ पूर्ति हेतु सर्वत्र अपना जाल बिछा रखा है। हेरोइन, चरस, गाँजा, अफीम, ब्राउन सुगर आदि मादक द्रव्य इतने भयानक हैं कि इनको सेवन की लत पड़ते ही मृत्यु की प्रक्रिया आरम्भ हो जाती है। नशीली दवा का आदी व्यक्ति दैनिक खुराक न मिलने पर पागलों की तरह चीखता और छटपटाता है उसकी दयनीय दशा देखी नहीं जाती। तड़प-तड़प कर सिसक-सिसक कर दम तोड़ते हुए पढ़े-लिखे युवकों/युवतियों को देखकर किसी का भी कलेजा काँप उठेगा।

मादक द्रव्यों के लिये प्रेरित करने वाला आपका सबसे बड़ा शत्रु है, जो आपको मौत के कुएँ में धकेलना चाहता है। सभी मादक पदार्थ विष हैं। उनका सेवन करने से किसी स्वप्न लोक या अद्भुत लोक में पहुँचने की बात मूर्खतापूर्ण है। ऐसी चीजें केवल एक ही लोक में पहुँचाती है - उसका नाम है यमलोक। भगवान ने हमें अनमोल जीवन नष्ट करने के लिये नहीं दिया है, उसको संभाल कर रखना हमारा नैतिक कर्तव्य है। फिर यह आत्मघात आखिर क्यों?

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

जुआ :

महाभारत में पाण्डवों ने सब कुछ हारने के बाद अपनी स्त्री द्रौपदी को भी दाँव पर लगा कर यह प्रमाणित कर दिया कि जुए का कुव्यसन मनुष्य को कितना नीचे गिरा देता है और किस प्रकार सब कुछ गँवा कर जुआरी श्रीहीन और दर-दर का भिखारी बन जाता है। वर्तमान युग में यह रेस, सट्टा, फाटका, मटका, ताश, लाटरी आदि नाना रूपों में प्रचलित है।

जुआ एक मृग-मरीचिका है। यह हारने वालों को उम्मीद की डोर में बाँध कर सर्वनाश की कगार पर पहुँचाता है और जीतने वालों को लालच के मकड़जाल में फँसाकर सर्वस्व खो देने के लिये विवश करता है।

जुए का खेल आग का खेल है, बरबादी का खेल है, घर फूँक कर देखा जाने वाला तमाशा है। जुआ देता कुछ नहीं लेता सब कुछ है। प्रलोभन इसका विष है, कुप्रवृत्तियाँ इसकी देन है और विनाश इसका अवश्यम्भावी कुपरिणाम है। इसलिये जुए की कुल्हाड़ी को पकड़ना तो दूर, छूने की भी कोशिश नहीं करनी चाहिये।

दूषित रूचि :

आजकल युवा वर्ग में अश्लील, अपराध, यौन एवं विचारों को दूषित करने वाले साहित्य को पढ़ने की रूचि बड़ी तेजी से बढ़ रही है। विचारों को प्रदूषित करने में दूषित साहित्य के अतिरिक्त उत्तेजक फिल्मों का भी हाथ है। दूषित रूचि पतन और विनाश के सिवा कुछ नहीं देती।

भगवान आदि शंकराचार्य ने कहा है कि मनुष्य के भीतर वासना की जो नदी है, उसे शुभ या अशुभ मार्ग पर प्रवाहित करना मनुष्य के अपने विवेक पर निर्भर करता है। उसका प्रवाह-पथ शुभ धरातल पर बनना ही मंगलकारी है। गीता में भगवान कृष्ण ने भी कहा है कि मन बड़ा चंचल होता है। मन को कभी भी बेलगाम नहीं होने देना चाहिये। इसकी लगाम सर्वदा मजबूती से पकड़े रहिये ताकि कहीं यह सन्मार्ग से भटक न जाय। यदि यह बेलगाम हो गया तो नाते रिश्ते को भी ताक पर रख कर आये दिन समाज में बलात्कार, हत्या का ताण्डव होने लगेगा।

(साभार – श्री पुष्करलाल जी केडिया द्वारा रचित 'हृदय-परिवर्तन' से)

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

।। मानसिक तनाव-एक विश्वव्यापी रोग ।।

मानसिक तनाव का आशय : रोग दो प्रकार के होते हैं

(क) **तन के रोग :** तन के रोग वे रोग हैं जिनसे आपका शरीर अस्वस्थ और कमजोर हो जाता हैः जिनसे आपके शरीर की सामान्य कार्य प्रणाली कमजोर हो जाती है; बुखार, जुकाम, निमोनिया, कब्ज, लकुवा, ब्लड प्रेसर, हार्ट अटेक, ऐड्स आदि तन के रोग हैं। इन रोगों से शारीरिक शक्ति क्षीण हो जाती है। इन्हें शारीरिक रोग भी कहते हैं।

(ख) **मन के रोग :** मन के रोग वे रोग हैं जिनसे आपका मन अस्वस्थ व कमजोर हो जाता है; जिनसे आपका मन अशान्त हो जाता है। दुखः, चिंता, भय, निराशा, क्रोध, डिप्रेशन, ईर्ष्या, राग, द्वेष, मोह, आदि मन में पैदा हो जाता है, घबराहट हो जाती है। इन रोगों को मानसिक रोग भी कहतें हैं।

मन के रोगों का दूसरा नाम है मानसिक तनाव। तन एवं मन के रोगों से आपके मस्तिष्क में भय पैदा हो जाता है। आपके मस्तिष्क की सामान्य प्रक्रिया अव्यवस्थित हो जाती है, आप घबरा जाते हैं। आप सोच नहीं पाते कि क्या करना चाहिए और क्या नहीं। आपके मस्तिष्क की शक्ति इतनी क्षीण हो जाती है कि आप कोई ठोस निर्णय नहीं ले पाते हैं।

अधिक खतरनाक रोग : वर्तमान चिकित्सा विज्ञान में सुगर, हार्ट, कैंसर, एड्स, ब्लड प्रेशर आदि शारीरिक रोगों का स्थाई उपचार नहीं है। इस दृष्टि से ये शारीरिक रोग अत्यंत खतरनाक हैं। लेकिन मन के रोग इससे भी खतरनाक होते हैं। मन के रोगों का तन पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है। जिस व्यक्ति का मन बीमार हो जाता है, शीघ्र ही उसका तन भी बीमार रहने लगता है किसी ने सत्य कहा है-

"चिता मुर्दे व्यक्ति को जलाती है, लेकिन चिंता जीवित व्यक्ति को जला देती है।"

"चिता देति निर्जीव को चिंता जीव समेत"।

तनाव का प्रभाव :

(1) नींद न आना : दुःख, चिंता और भय मानसिक तनाव का शरीर पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है। यदि आप तनाव से ग्रसित हैं तो आपको रात्रि में अच्छी

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

नींद नहीं आयेगी, भूत भविष्य के सैंकड़ों विचार आपके मन मस्तिष्क में घूमते रहेंगें; आपको पर्याप्त आराम नहीं मिलेगा। आराम की कमी से थकान आ जायेगीं। आप कुछ समय बाद शारीरिक रोग से ग्रसित हो जायेंगे।

(ii) हार्ट अटेक, लकुआ : मानसिक तनाव या चिंता से रक्त वाहिनियां या नसें सिकुड़ जायेंगी; नसों में प्रवाहित होनेवाला रक्त गाढ़ा हो जायेगा। रक्तप्रवाह में अनेक तरह की रूकावटें उत्पन्न हो जायेंगी। परिणामस्वरूप आपको हार्ट अटेक अथवा लकुवा जैसी घातक बीमारियां हो जायेंगी। विश्व के सुप्रसिद्ध हृदय विशेषज्ञों का मत है कि हार्ट अटेक का एक बहुत बड़ा और आधारभूत कारण 'मानसिक तनाव व चिंता' है।

(iii) कणिकाओं पर कुप्रभाव :

तनाव से रक्त में रहनेवाली वे कणिकायें कमजोर हो जाती हैं जो विभिन्न रोगों के कीटाणुओं से शरीर की रक्षा करती हैं। रक्त में रहनेवाली कणिकायें उन कीटाणुओं से लड़कर उन्हें बाहर धकेल देती हैं; आपके शरीर की रक्षा करती हैं। तनाव, आपकी कणिकाओं को कमजोर बनाता है। कमजोर कणिकाओं के कारण शारीरिक रोग होने की प्रबल संभावना रहती है।

(iv) प्राणशक्ति का अधिक व्यय :

एक शांत व्यक्ति चौबीस घंटे में २१६०० श्वांस लेता है। यदि आप मन के रोगों व तनाव से ग्रसित हैं तो आपके श्वांसो का खर्च अधिक होगा। फलस्वरूप प्रकृति व प्रभु की तरफ से मिले हुये सीमित श्वांस जल्दी खर्च हो जायेंगे। इस दृष्टि से मानसिक तनाव मृत्यु को निमंत्रण देना है।

(v) पारिवारिक कलह :

यदि मन के रोगों व तनाव से ग्रसित रहेंगे तो आपके परिवार में सदैव कलह रहेगी क्योंकि आप अपने परिवारजनों के प्रति अपने कर्त्तव्य का पालन नहीं कर पायेंगे।

(vi) अशांति, असफलता :

आप शांति, मुक्ति व भक्ति के अलौकिक आनन्द से वंचित रहेंगे। आपके जीवन में सब कुछ होते हुए भी अशांति रहेगी। आपका अनमोल मानव जीवन बेकार चला जायेगा आपके अशांत हृदय में न तो श्रेष्ठ विचारों का उदय होगा और न ही प्रभु की अखण्ड स्मृति जागृत होगी।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

(vii) शारीरिक प्रणाली बिगड़ना, हैमरेज हो जाना : लगातार मानसिक तनाव से आप व्यर्थ चिंतन में फंस जायेंगे। इस व्यर्थ चिंतन की परिणति होती है पागलपन में मानसिक संतुलन की विषमता आपको पागल बना सकती है; आप 'मैंटल हैमरेज' के शिकार हो सकते हैं ।

(viii) मृत्यु से भी खतरनाक : देश विदेश में आत्म हत्या करने वाले व्यक्तियों की संख्या बढ़ती जा रही है। मानसिक तनाव की चरम सीमा में व्यक्ति को महसूस होता है कि तनाव, मृत्यु से ज्यादा दुखःदायी है। तनाव के दुख से मुक्त होने के लिये वह मृत्यु का कष्ट सहन कर लेता है। जान-बूझ कर शरीर को मृत्यु के मुख में झोंक देता है।

तनाव-एक अन्तराष्ट्रीय रोग :

मानसिक तनाव का यह खतरनाक दावानल सम्पूर्ण विश्व में फैलता जा रहा है। आज अमीर-गरीब, शिक्षित-अशिक्षित, व्यवसायी-उद्योगपति, मजदूर, ग्रामीण-शहरी आदि सभी व्यक्ति इस रोग से ग्रसित हैं। आश्चर्य की बात तो यह है कि जिन व्यक्तियों के पास भौतिक सुख सुविधायें हैं, पर्याप्त धन सम्पति है वो भी मन के रोगों से मुक्त नही हैं। वे ज्यादा तनाव ग्रस्त है।

अपना निरीक्षण कीजिये :

यदि आपको अपने जीवन में कभी भी दुःख, चिंता, निराशा का अनुभव होता है; किसी भी कारण से आप भयभीत हो जाते हैं; आपको क्रोध आ जाता है; आप निराश हो जाते हैं तो आपको मानना चाहिए कि आप मानसिक तनाव से ग्रस्त हैं।

यदि आप सोचते हैं कि निंदा, अपमान, बुराई, तिरस्कार होने पर क्रोध होना स्वाभाविक है; आर्थिक हानि होने पर तो चिंता होगी ही; प्रियजन की मृत्यु में तो दुःख होगा ही तो यह आपकी बहुत भूल होगी। अपने साथ बहुत बड़ा धोखा होगा। चाहे कुछ भी हो आप मन के रोगों का शिकार न बनें।

रोग दब जाना व रोग मिट जाना : आप अपने साथ धोखा न कर बैठें, इसलिये हमारे संत एवं ग्रंथ हमें सावधान करते हैं कि भैया, अपने को संभालना; ऐसा न हो कि आपका रोग दबा हुआ हो और आप समझ बैठें कि आपका रोग मिट गया है। रोग दब जाना और रोग मिट जाना दोनों अलग-अलग बातें हैं। आप भलीभांति जानते हैं कि कैंसर, सुगर, आदि रोग जड़मूल से मिटते

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

नहीं हैं, बल्कि उपयुक्त उपचार करने व परहेज से रहने पर ये रोग कुछ समय के लिये दब जाते हैं, और नियंत्रण में रहते हैं, आपको ज्यादा परेशान नहीं करते हैं। जिस प्रकार शारीरिक रोग उपयुक्त उपचार कराने से दब जाते हैं, उसी प्रकार अनुकूलता से, सुख से, चिंता, भय, मानसिक तनाव से होने वाला दुःख कुछ समय के लिये दब जाता है, जड़मूल से मिटता नहीं है। जब तक आपके जीवन में अनुकूल परिस्थिति रहती है, अर्थात आपका स्वास्थ्य अच्छा; आपके परिवार के सभी सदस्य सेवाभावी हैं; समाज में आपका सम्मान है; आपके पास तरह तरह की सुविधायें हैं तब तक आप दुःख, चिंता और भय व तनाव से मुक्त रहेंगे; आप सोचेंगे कि हमारे मन के रोग मिट गये। लेकिन ज्यों ही आपके जीवन में प्रतिकूल परिस्थिति आयेगी अर्थात आपका शरीर बीमार होगा; परिवार व समाज में सम्मान कम हो जायेगा; आपको आर्थिक हानि होगी; परिवार के किसी प्रिय सदस्य की मृत्यु होगी, त्यों ही आप दुःख, चिंता और तनाव से ग्रसित हो जायेगें। आप इस वास्तविकता को अच्छी तरह जानते ही हैं कि अनुकूल परिस्थिति सदैव नहीं रहेगी, वह निश्चत रूप से जायेगी। विचार कीजिये, क्या आप बीमारी, बुढ़ापा, दुर्घटना, मृत्यु आदि प्रतिकूल परिस्थिति को टाल सकते हैं। इसे आने से रोक सकतें हैं। आप इन्हें टालने व रोकने का प्रयास कर सकते हैं, न रोक सकतें हैं, न टाल सकते हैं। प्रतिकूल परिस्थिति को रोकना संभव होता तो आप जीवन में प्रतिकूलता को आने नहीं देते। रोकना तो दूर रहा, आप यह भी नहीं जानते कि प्रतिकूलता कब, कहां, कैसे, किस रूप में आयेगी ।

क्या आप तनाव से मुक्त हो गये ?

आज आपके पास सब कुछ है स्वस्थ शरीर, शिक्षा, योग्यता, सेवाभावी प्रियजन, व्यवसाय, धन-संम्पत्ति, मान-सम्मान, सुख-सुविधायें, पद-प्रतिष्ठा आदि। आप जीवन में सत्य की चर्चा व चिंतन भी करतें हैं; सत्कार्य में भी समय देते हैं ये सब कुछ बहुत शुभ संकेत हैं। लेकिन विचार कीजिये क्या आपके जीवन में प्रतिकूलता का भय नहीं है; क्या प्रतिकूल परिस्थिति आने पर आप प्रसन्न व तनावमुक्त रह सकते हैं। यदि नहीं तो आपको अपने जीवन के बारे में चिंतन करना होगा, खोज करनी होगी कि भूल कहां है। सोचिये, सब कुछ होते हुये भी आप चिंता व तनाव से मुक्त रह पायेंगे, जब

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

यह सब कुछ यहीं छोड़कर आप सदैव के लिये इनसे अंतिम विदाई लेंगे अथवा इनमें से कोई आपसे अंतिम विदाई लेगा।

क्या तनाव से मुक्त होना संभव है ?

आप सभी भाई-बहनों को, मानव मात्र को प्रभु ने ऐसी विचित्र शक्ति प्रदान है कि आप इसी क्षण मानसिक तनाव व चिंता से मुक्त हो सकते हैं। यदि दुख व चिंता से मुक्त होना संभव नहीं होता तो आप इसके लिये प्रयास ही नहीं कर सकते। विश्वास कीजिये, आपका दुख कितना ही गंभीर क्यों न हो वह तत्काल मिट सकता है। हमारे संत व ग्रन्थ भी हमें यह आश्वासन देते हैं कि दुःख व तनाव से छुटकारा पाना संभव है। प्रभु के परम भक्त गोस्वामी श्री तुलसीदास ने कहा है -

बिगड़ी जनम अनेक की, सुधरे अब ही आज।

इसका आशय यह है कि अनेक जन्मों से आपकी स्थिति खराब है, आप दुःख व तनाव से ग्रसित हैं तो भी आप चिंता न करें। आपकी स्थिति आज भी सुधर सकती है, अर्थात् आपका तनाव मिट सकता है।

श्री रामचरितमानस में गोस्वामी जी ने मानसिक रोगों का वर्णन किया, फिर उसके निवारण का उपाय भी बताया। मुख्य मानसिक रोग हैं मोह, काम, लोभ, क्रोध, विषयों की इच्छायें, ममता, ईर्ष्या, हर्ष, विषाद, अहंकार, दम्भ, कपट, मद, मान, तृष्णा, मत्सर, अविवेक आदि। ये रोग तभी मिटते हैं जब "सद्गुरू रूपी वैद्य के वचन में विश्वास हो, विषयों की आशा न करें यही संयम है। श्री रघुनाथ जी की भक्ति संजीवनी जड़ी है। श्रद्धा से पूर्ण बुद्धि ही अनुपान है। इस प्रयास का संजोग बन जाये तो ये रोग भले ही नष्ट हो जाएं, नहीं तो करोड़ों प्रयत्नों से भी नहीं जाते।" मूल वाणी इस प्रकार है-

सद्गुरू बैद बचन बिस्वासा। संजम यह न बिषय के आसा।।
रघुपति भगति सजीवन मूरी। अनुपान श्रद्धा मति पूरी ।।
एहि बिधि भलेहिं सो रोग नसाहीं। नाहिं त जतन कोटि नहिं जाहीं।।

-उत्तरकाण्ड, १२१ ख/६, ७, ८

श्रीमद्भगवद्गीता में भी भगवान श्रीकृष्ण ने यही आश्वासन दिया है :

क्षिप्रं भवति धर्मात्मा शश्वच्छान्ति निगच्छति ।।

-गीता, अध्याय- ६/३१

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

"इसलिये वह धर्मात्मा हो जाता है और सदा रहने वाली परम शांति को प्राप्त होता है"।

यहाँ 'क्षिप्रं' का आशय है 'एक क्षण में'; 'सदा रहने वाली परम शांति' का अर्थ है 'दुःख, चिंता, भय, तनाव का जड़मूल से मिट जाना व स्थायी प्रसन्नता प्राप्त हो जाना।'

क्या करना होगा ?

दुःख, चिंता भय व मानसिक तनाव से मुक्त होने के लिये आपको अपने परिवार के साथ रहने की कला सीखनी होगी क्योंकि आपका परिवार आपके दुःख का मूल कारण है। आप में दुख मिटाने की अत्यंत सामर्थ्य है, आप इसमें एकदम स्वाधीन हैं, दुःख-निवृत्ति के लिये आपको अपना परिवार छोड़कर जाने की आवश्यता नहीं है और ना ही किसी विशेष प्रकार के कर्म करने की जरूरत है। इस कार्य में न तो समय लगता है और न ही श्रम। जीवन जीने की एक कला है। परिवारजनों के साथ रहने की एक विद्या है। इस कला को सीखने के बाद प्रतिकूलता आपको परेशान नहीं करेगी। आप हर परिस्थिति में अपने अखण्ड आनन्द में मस्त रहेंगे। प्रसन्नता व आन्नद ही वास्तविक जीवन है।

– डा. भीखमचन्द प्रजापति जी के प्रवचनों पर आधारित पुस्तक 'परिवार में रहने की कला' से साभार

जो खुदी को जलाता है, वह खुदा को पाता है।
जो खुद को जलाता है, वह मित्र को पाता है।।
मित्रता कोई सहज खेल नहीं, दो दिलों का मेल है।
भाव के बाजार में रोकड़े का मोल नहीं, मित्रता अनमोल है।।

कह रहा है आसमाँ, ये समाँ भी कुछ नहीं।
रोती है शबनम की नैरंगे जहाँ कुछ भी नहीं।।
जिनके महलों में, हजारो रंग के जलते थे फानूस।
झाड़ उनकी कब्र पे हैं, और निशाँ कुछ भी नहीं।।
जिनकी नौबतों से, गूँजते थे सदा आसमाँ।
दम बखुद हैं कब्र में, अब हूँ न हाँ कुछ भी नहीं।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

।। श्री गणेशाय नमः ।।

श्री गजानन गणपति नमः ।।
श्री गजानन गणपति नमः ।।
श्री गजानन गणपति नमः ।।
श्री गजानन गणपति नमः ।।
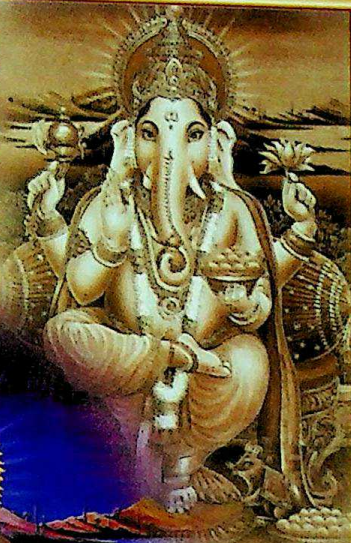
सर्व विघ्न विनाशाय, सर्व कल्याण हेतवे,
पार्वती प्रिय पुत्राय, गणेशाय नमो नमः ।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

॥ संसार सृष्टिचक्र एवं सत्संग महिमा ॥
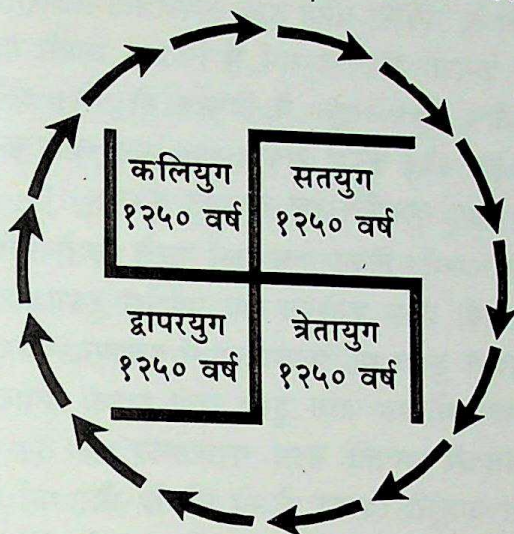
ऊपर संसार के सृष्टिचक्र का जो चित्र दिया गया है, उसमें स्वस्तिक का चिन्ह समय को चार बराबर भागों में बाँट रहा है। शास्त्रों का मत है कि ५००० वर्ष का एक सृष्टिचक्र होता है, जो उपरोक्त रूप से घूमता है। लोग स्वस्तिक की रेखा को शुभ मानते हैं और हर कार्य के प्रारम्भ में इसको बनाते तो हैं, परन्तु शायद इसके अर्थ और महत्व को नहीं जानते।

इस चक्र में सबसे पहले सतयुग दिखाया गया है। यहाँ स्वस्तिक की भुजा दायीं ओर है क्योंकि दायीं भुजा अच्छाई अथवा शुभ की सूचक मानी जाती है। आपने भी हनुमान चालीसा में पढ़ा होगा-**'बायें भुजा असुर संहारे, दाहिने भुजा सब सन्त उबारे'**। इस आदिकाल में सनातन धर्म के लोग दैवी-गुण स्वभाव वाले थे। आज भी यदि कोई मनुष्य अच्छे स्वभाव वाला होता है तो कहा जाता है कि फलां व्यक्ति देवता तुल्य है अथवा सतयुगी है। इस युग में सतगुण की प्रधानता थी। फिर त्रेतायुग आया। त्रेतायुग में लोग पवित्रता, सुख और शान्ति सम्पन्न थे। हाँ, अब दैवी गुणों की दो कलायें कम हो गयी थी। इसलिये यहाँ स्वस्तिक की भुजा नीचे की ओर है। क्योंकि इस युग में मनुष्य सतो प्रधान से उतर कर सतो-सामान्य में आ गये थे।

फिर द्वापर युग आया। अब सतयुग और त्रेतायुग के सूर्यवंश की आत्मायें अनेक जन्मसुख भोगने के बाद वाम मार्ग में चली गईं अर्थात्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

विकारों का प्रभाव बढ़ने लगा। इसलिये यहाँ स्वस्तिक की भुजा बायीं ओर अर्थात् उल्टे हाथ है, क्योंकि बायां हाथ अपवित्रता अर्थात् अशुभ का संकेतक है। इस युग में क्रमशः सनातन धर्म में गिरावट आती गई और लोग जाति के द्वारा ऊँच-नीच, छूत-अछूत में विभक्त हो गये। अनेक जाति होने के कारण कलह-क्लेश और लड़ाई झगड़ा शुरू हुआ और काम-क्रोधादि विकारों के कारण दुःख तथा अशान्ति का सूत्रपात हुआ।

उलटे कर्म अर्थात् विकारयुक्त कर्म करते करते सृष्टि अपवित्रता और दुःख की ओर बढ़ी तथा कलियुग का पदार्पण हुआ। द्वापर युग से जिन विकारों का सूत्रपात हुआ था, कालान्तर में इस्लाम, बौद्ध, ईसाई, जैन तथा इसी प्रकार अन्य धर्मों का जन्म हुआ तथा इनका प्रचार-प्रसार बढ़ने लगा और आज जातिवाद अपनी परम पराकाष्ठा पर है। आज तमोगुण की प्रधानता है, लोग आसुरी स्वभाव के हो गये हैं और धर्म प्रायः विलोप सा हो गया है। मानव विवेकहीन पशु के समान हो गया है। विश्व विनाश के कगार पर है। कब सृष्टि का विनाश हो जाय, कोई ठीक नहीं। यह सब इस कलियुग का प्रताप है।

इस कलियुग से पार होने का केवल एक ही उपाय है-प्रभु की शरण में जाना। कलियुग में सिर्फ स्मरण मात्र से ही प्रसन्न हो जाने वाले प्रभु का नाम जपने में ही कल्याण है। तुलसीदासजी ने लिखा है-

कलियुग केवल नाम अधारा, सुमिर सुमिर नर उतरहिं पारा।
उल्टा नाम जपत जग जाना, बाल्मीकि भये ब्रह्म समाना।

अर्थात् कलियुग में मनुष्य केवल भगवान के नाम से ही भव सागर से पार हो सकता है। बाल्मीकि जैसा बुरा कर्म करने वाला उल्टा-सीधा नाम जपकर भी ब्रह्म के समान बन गया। यह नाम जपने का ही प्रभाव है। लेकिन दुःख की बात है कि बिना मूल्य के मिलने वाले इस नाम को भी कोई नहीं लेता। तुलसीदासजी ने भी आश्चर्य प्रकट किया है-

ईश्वर नाम अमूल्य है, दामन बिना बिकाय।
'तुलसी' अचरज देखिये, कोई न ग्राहक आय॥

फिर तुलसीदासजी इसका गहराई से कारण खोजते हैं कि बगैर मूल्य के मिलने पर भी लोग भगवान का नाम क्यों नहीं लेते हैं और निम्न निष्कर्ष

पर पहुंचते हैं -

तुलसी पिछले पाप से, हरि चर्चा न सुहाय।
जैसे ज्वर के वेग से, भूख विदा हो जाय।

जब मनुष्य ज्वर ग्रस्त हो तो उसे अमृत से अमृत वस्तु भी अच्छी नहीं लगती। न दूध पीने को जी चाहता है न कुछ खाने को। हाँ, किसी-किसी समय चटपटी वस्तुएँ खाने की इच्छा होती है, परन्तु भूख फिर भी नहीं होती। इसी प्रकार जिन लोगों को पिछले जन्मों के पापों का ज्वर चढ़ा हुआ है, उन्हें प्रभु चर्चा अच्छी नहीं लगती। वे परमात्मा के नाम से भागते है। कुछ नास्तिक तो प्रभु का अस्तित्व ही नहीं मानते। ऐसे लोग वास्तव में रोगी हैं। उनका मन तथा आत्मा पाप-ग्रस्त हैं। इसीलिये तो उनका मन प्रभु-भजन में नहीं लगता। परन्तु वे नादान नहीं जानते कि ज्वर-ग्रस्त होते हुए भी वे रोग को और बढ़ा रहे हैं। ऐसे लोग दया के पात्र हैं। कहा जाता है कि जब तन में अम्ल हो तो मिश्री भी खारी लगती है, ठीक उसी प्रकार जब मन में पाप व काम भरा हो तो सत्संग की बातें बहुत बुरी लगती हैं। इसके उदाहरणों से हमारे सारे ग्रन्थ भरे पड़े हैं। रावण, कंस, हिरणाकश्यप, महिषासुर, जरासंध, शिशुपाल, दुर्योधन आदि न जाने कितने ही लोग स्वयं को ही भगवान मानते थे। पर जब पाप का घड़ा भर गया तो उनका वध हुआ, तब उन्हें भगवान की शक्ति का पता चला। आजकल सत्संग अर्थात् सन्तों का समागम (भक्तों का समावेश) मिलना बहुत ही दुर्लभ है। इसपर महात्मा सुन्दरदास जी ने कहा है-

तात मिलै पुनि मात मिलै, सुत भ्रात मिलै युवती सुखदाई।
राज मिलै गज बाज मिलै, सब साज मिलै मन-वांछित पाई।
लोक मिलै सुरलोक मिलै, विधि लोक मिलै बैकुण्ठहु जाई।
'सुन्दर' और मिले सब ही सुख, दुर्लभ सन्त समागम भाई।

अर्थात् दुनिया में सर्वसुख मिल सकता है, लेकिन सन्तों का मिलना बहुत ही दुर्लभ है। जहां सन्तों का समावेश हो जाता है, सत्संग होता है अर्थात् हरि कीर्तन होता है वहां भगवान, भक्त और नाम का त्रिवेणी संगम होता है। बैकुण्ठ पृथ्वी पर उतर आता है और सारा वातावरण महासुख से भर जाता है। इससे बढ़कर और कोई सुख नहीं है। तुलसीदासजी ने भी कहा है कि अगर संसार के सारे सुख तराजू के एक पलड़े पर रख दिये जायें और क्षण

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

मात्र का सत्संग वाला सुख दूसरे पलड़े पर तो सत्संग वाला पलड़ा ही भारी होगा।

तात ! स्वर्ग अपवर्ग सुख, धरिय तुला इक अंग।
तूल न ताहि सकल मिली, जो सुख लव सत्संग।।

इतना ही नहीं, स्वयं क्षीरशायी भगवान विष्णु भी अपने श्री मुखारविन्द से कहते हैं-

नाहं वसामि वैकुण्ठे, योगिनां हृदयं न च।
मद्‌भक्त यत्र गायन्ति, तत्र तिष्ठामि नारद।।

अर्थात् मैं न तो बैकुण्ठ में रहता है और न ही योगियों के हृदय में। मैं तो जहाँ मेरे भक्त आरती, भजन आदि गुणगान करते हैं, वहीं रहता हूँ। कहा भी गया है -

जिस घर में हो आरती, चरण कमल चित लाय।
वहाँ हरि बासा करें, बैकुण्ठ लोक से आय।।

हरि सेवा के पन्द्रह फूल

सच बोलो, हरिनाम लो, तजो कपट व्यवहार ।
सब प्रकार हिंसा तजो, करो अतिथि सत्कार ।।
ब्रह्मचर्य पालन करो, पर धन को दो त्याग ।
परिग्रह वस्तु मत करो, दृढ़ चारों बैराग ।।
प्रेम करो सबसे सदा, सदा करो सत्संग ।
वृद्धों की सेवा करो, कभी न बदलो रंग ।।
क्षमा करो अपराध को, दोष न देखो भूल ।
हरि सेवा में अति सुखद ये हैं पन्द्रह फूल ।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

॥ कलियुगः समस्यायें और समाधान ॥

तुलसिदास कह गये सभी से ऐसा कलियुग आयेगा।
पण्डितजन तो दुःखी रहेंगे, मूरख मौज उड़ायेगा।। टेर।।

अभिमानी आडम्बर वाला, संत यहां कहलायेगा।
डींग मारने वाला भाई, यहाँ पण्डित कहलायेगा।
सच्चे के सब दुश्मन होंगे, झूठा मौज उड़ायेगा।। १।।

वेद ज्ञान के बने विरोधी, वर्ण धर्म उठ जायेगा।
दीन दुखी जनता को राजा, नोच-नोच कर खायेगा।
रक्षक ही जब भक्षक होंगे, किसको कौन बचायेगा।। २।।

धन को हरने वाला भाई, बुद्धिमान कहलायेगा।
उल्टी-सीधी बात करे जो, वक्ता वही कहलायेगा।
स्वारथ में ही जियेगा मानव, स्वारथ में मर जायेगा।। ३।।

जटा-जूट रखाने वाला, तपसी यहाँ कहलायेगा।
भक्ष्य-अभक्ष्य को जो नहिं जाने, वो जन पूजा जायेगा।
तुलसीदल को छोड़ के मानव, मदिरा पान करायेगा।। ४।।

पहन जनेऊ गले में हरिजन, गीता ज्ञान सुनायेगा।
बेटा बाप का दुश्मन होगा, नारी के गुण गायेगा।
वीर सभी तो मौन रहेंगे, हिंजड़ा राज चलायेगा।। ५।।

गैर पुरूष का रूप सदा ही, नारी के मन भायेगा।
विधवाओं का रूप खिलेगा, विदुषी-मुख मुरझायेगा।
चाल-चलन और मर्यादा का, नाश यहाँ हो जायेगा।। ६।।

कलियुग में सब गुरूजनों का, चेला मान घटायेगा।
बात-बात में होगी हत्या, भाई को भाई खायेगा।
पूजा होगी दुष्टजनों की, धरम-करम उठ जायेगा।। ७।।

काल पड़ेगा समय-समय पर, मानव कष्ट उठायेगा।
घास की रोटी तक धरणी पर, भूखा मानव खायेगा।
अपने कर्मों का फल सज्जनों, इसी जनम में पायेगा।। ८।।

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

माया के बन्धन में मानव, भजन नहीं कर पायेगा।
चोरी जोरी लम्पट में मन, मूरख सदा लगायेगा।
झूठ बोल कर जो खुश करता, वह गुणवान कहायेगा।। ९।।

हरि नाम सब बुरे कर्म से, हमको सदा बचायेगा।
भक्त दयालु सब लोगों पर, रंग जमाना लायेगा।
त्यागी योगी कोई बिरला ही, कलियुग में बच पायेगा।
होगा फिर अवतार धरा पर, कलि-अवतार कहायेगा।। १०।।

राम नाम केसरी कनककसिपु कलिकाल ।
जापक जन प्रहलाद जिमि पालिहिं दलि सुरसाल ।।

अर्थात् राम-नाम नृसिंह भगवान हैं, कलियुग हिरण्यकश्यप है और जप करने वाले प्रह्लाद के समान हैं। यह राम-नाम देवताओं के शत्रु (कलियुगी रूपी दैत्य) को मारकर जप करने वालों की रक्षा करेगा।

रामायण के सात काण्ड मनुष्य जीवन की उन्नति की सात सीढ़ियाँ हैं, जो इनको चढ़ गया धन्य हो गया–

बालकाण्ड चरण है, अयोध्याकाण्ड जंघा है,
अरण्यकाण्ड उदर है, किष्किन्धाकाण्ड हृदय है,
सुन्दरकाण्ड कंठ है, लंकाकाण्ड मुख है,
और उत्तरकाण्ड मस्तक है ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

॥ भगवान का स्मरण कैसे करें ? ॥

प्रसिद्ध भक्त कवि कबीर ने कहा है-

माला तो कर में फिरै, जीभ फिरै मुख माहिं।
मनुवाँ तो चहुँ दिसि फिरै, यह तो सुमिरन नाहिं॥

कबीरजी ने दिखावा करने वाले पाखंडी भक्तों के ऊपर करारा व्यंग्य कसा है। उनका कहना है कि गले में कंठी बाँध लेने एवं हाथ में केवल जपमाला ले लेने मात्र से भगवान का स्मरण नहीं होता। भक्त और भगवान के बीच श्रद्धा और भक्ति का ही नाता है, दिखावा नहीं। भगवान से सम्पर्क जोड़ने के लिये मन की एकाग्रता होनी चाहिये। साधक को भगवान का स्मरण किस प्रकार से करना चाहिये, इसका संक्षिप्त विवरण नीचे दिया गया है-

१. ऐसे करो, जैसे चकवा-चकवी सूर्य का स्मरण करते हैं।
२. ऐसे करो, जैसे चातक मेघ का स्मरण करता है।
३. ऐसे करो, जैसे जल बिन तड़पती मछली जल का स्मरण करती है।
४. ऐसे करो, जैसे चकोर चन्द्रमा का स्मरण करता है।
५. ऐसे करो, जैसे डूबता हुआ आदमी जीवन-रक्षक का करता है।
६. ऐसे करो, जैसे नवीन विधवा अपने पति का स्मरण करती है।
७. ऐसे करो, जैसे क्षुधार्त मनुष्य भोजन का स्मरण करता है।
८. ऐसे करो, जैसे अफीमची अफीम न मिलने पर अफीम का स्मरण करता है।
९. ऐसे करो, जैसे जुआरी जुए का स्मरण करता है।
१०. ऐसे करो, जैसे निशानेबाज निशाने का स्मरण करता है।
११. ऐसे करो, जैसे लोभी मनुष्य धन का स्मरण करता है।
१२. ऐसे करो, जैसे राह-भटका पथिक अपने घर का स्मरण करता है।
१३. ऐसे करो, जैसे सद्योघटित पुत्र-वियोग से पीड़ित माता पुत्र का स्मरण करती है।
१४. ऐसे करो, जैसे किसान पके खेत का स्मरण करता है।
१५. ऐसे करो, जैसे सर्दी से कंपकपाता हुआ आदमी अग्नि का स्मरण करता है।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

कहने का तात्पर्य यह है कि भक्त को भगवान में प्रीति इस तरह रखनी चाहिये कि वह उसमें इस तरह खो जाय कि उसे इधर-उधर का कुछ भी होश न रहे। मनुष्य यदि स्वयं को पूर्ण समर्पित कर देता है, तो भगवान भक्त के गुलाम बन कर भक्त के पीछे-पीछे चलने लगेगें एवं पूर्णतया उसके वश में हो जायेंगे। जिस तरह एक अबोध बालक को गोपाल भैया बनकर जंगल पार कराना, किसान के घर मजदूर बनकर खेतों में हल चलाना, अर्जुन के रथ का सारथी बनना, नानी बाई का भात भरना आदि।
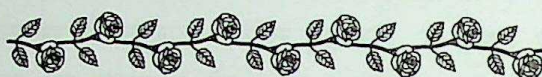
॥ गीता महात्म्य ॥

गीता सुगीता कर्तव्या किमन्यैः शास्त्रसंग्रहै।
या स्वयं पद्मनाभस्य मुखपद्माद्विनिःसृता॥

गीता का ही भली प्रकार से श्रवण, कीर्तन, पठन, मनन और धारण करना चाहिये। अन्य शास्त्रों के संग्रह की क्या आवश्यकता है? क्योंकि वह स्वयं पद्मनाभ भगवान के साक्षात् मुख-कमल से निकली हुई है।

गीतायाः श्लोकदशक सप्त पंच चतुष्टयम्।
द्वौ त्रीनेक तदर्थ वा श्लोकानां यः पठेन्नरः॥
गीतार्थ ध्यायते नित्यं कृत्वा कर्माणि भूरिशः।
जीवन्मुक्तः स विज्ञेयो देहान्ते परमं पदम्॥

अर्थात् गीता के दस, सात, पाँच, चार, तीन, दो, एक अथवा आधे श्लोक का भी जो मनुष्य पाठ करता है, जो बहुत से कर्म करते हुए भी नित्य गीता के अर्थ का चिन्तन करता रहता है, उसे जीवन्मुक्त समझना चाहिये, उसका देहान्त होने पर उसे परमपद प्राप्त हो जाता है।

श्रद्धावाननसूयश्च शृणुयादपि यो नरः।
सोऽपि मुक्तः शुमांलोकान्प्राप्नुयात्पुण्य कर्मणाम्॥१८-७१॥

जो कोई द्वेषरहित पुरूष श्रद्धाभाव के साथ इस गीताशास्त्र का श्रवण करेंगे, वे भी पापों से मुक्त होकर पुण्यात्माओं के लोकों को प्राप्त होंगे।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

॥ गीतामृत ॥

त्रिविधं नरेकस्येदं द्वारं नाशनमात्मनः।
कामः क्रोधस्तथा लोभस्तस्मादेतत्त्रयं त्यजेत् ॥१६-२१॥

अर्थात् काम, क्रोध और लोभ - ये तीनों आत्मा का अधःपतन करने वाले साक्षात् नरक के द्वार हैं। इसलिये बुद्धिमान मनुष्य को इन तीनों को त्याग देना चाहिये।

वासांसि जीर्णानि यथा विहाय नवानि गृहणाति नरोऽपराणि।
तथा शरीराणि विहाय जीर्णान्यन्यानि संयाति नवानि देही ॥२-२२॥

अर्थात् जिस प्रकार मनुष्य पुराने वस्त्रों को त्याग कर नये वस्त्र धारण करता है, उसी प्रकार आत्मा पुराने जीर्ण शरीर को त्याग कर नूतन देह ग्रहण करती है।

अनाश्रितः कर्मफलं कार्यं कर्म करोति यः।
स सन्यासी च योगी च न निरग्निर्न चाक्रियः ॥६-१॥

अर्थात् जो पुरूष कर्मफल में अनासक्त रहकर अपने कर्तव्य का पालन करता है, वही सच्चा सन्यासी और योगी है, अग्नि को त्यागने वाला अथवा कर्म को त्यागने वाला नहीं।

ईश्वरः सर्वभूतानां हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति।
भ्रामयन्सर्वभूतानि यन्त्रारूढ़ानि मायया ॥१८-६१॥

अर्थात् हे अर्जुन ! परमेश्वर प्राणीमात्र के हृदय में बैठा है। वही देहरूपी यन्त्र में आरूढ़ सब जीवों को अपनी माया शक्ति से घुमा रहा है।

पिताहमस्य जगतो माता धाता पितामहः।
वेद्यं पवित्रमोंकार ऋक्साम यजुरेव च ॥९-१७॥

अर्थात् भगवान कहते हैं कि मैं इस जगत का पिता, माता, पोषण करने वाला और पितामह हूँ। मैं ही जानने योग्य परम पावन ओंकार हूँ तथा ऋग्वेद, सामवेद और यजुर्वेद भी मैं ही हूँ।

समोऽहं सर्वभूतेषु न मे द्वेष्योऽस्ति न प्रियः।
ये भजन्ति तु मां भक्त्सा मयि ते तेषु चाप्यहम् ॥९-२९॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

अर्थात् मैं किसी से द्वेष नहीं करता ओर न किसी का पक्षपात करता हूँ, जीवमात्र में मेरा सद्भाव है। परन्तु जो प्राणी भक्ति भाव से मेरी सेवा करते हैं, वे मेरे प्रिय मुझमें ही स्थित हैं और मैं भी उनका प्रेमी हूँ, उनमें हूँ।

ये यथा मां प्रपद्यन्ते तांस्तथैव भजाम्यहम्।
मम वर्त्मानुवर्तन्ते मनुष्याः पार्थ सर्वशः ।।४-११ ।।

अर्थात् जो जिस भाव से मेरी शरण लेते हैं, उसी के अनुरूप मैं उन्हें फल देता हूँ। हे पार्थ ! मनुष्य मात्र सब प्रकार से मेरे ही पथ का अनुगमन करता है।

सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं ब्रज।
अहं त्वां सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः ।।१८-६६ ।।

अर्थात् सब प्रकार के धर्मों का परित्याग कर एकमात्र मेरी ही शरण में आ जा। मैं तुझे सब पाप कर्मों से मुक्त कर दूँगा। तू भय मत कर।

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम् ।।४-७ ।।
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्मसंस्थापनार्थय संभवामि युगे - युगे ।।४-८ ।।

भगवान अर्जुन से कहते हैं कि हे भारत ! जब-जब देशकाल में धर्म की हानि और अधर्म की वृद्धि होती है, तब-तब मैं अवतरित होता हूँ। भक्त जनों का उद्धार, दुष्टों का नाश और धर्म की फिर से स्थापना के लिये मैं युग-युग में प्रकट होता हूँ।

सर्वभूतस्थमात्मानं सर्वभूतानि चात्मनि।
ईक्षते योगयुक्तात्मा सर्वत्र समदर्शनः ।।६-२९ ।।

अर्थात् सच्चायोगी सब प्राणियों में मुझे देखता है और प्राणीमात्र को मुझमें स्थित देखता है। उस आत्मज्ञानी महापुरूष को वास्तव में सब में मेरा दर्शन होता है।

बन्धुरात्मात्मनस्तस्य येनात्मैवात्मना जितः।
अनात्मनस्तु शत्रुत्वे वर्तेतात्मैव शत्रुवत् ।।६-६ ।।

अर्थात् जिसने मन को वश में कर लिया है, उसके लिये मन सर्वश्रेष्ठ बन्धु

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

है और जिसने मन को वश में नहीं किया है, उसका मन ही परम शत्रु है।

न जायते मृयते वा कदाचिन्नायं भूत्वा भविता वा न भूयः।
अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो न हन्यते हन्यमाने शरीरे॥२-२०॥

अर्थात् आत्मा किसी भी काल में न तो जन्मती है और न मरती है तथा एक बार होकर यह कभी नष्ट भी नहीं होती। यह नित्य अजन्मा, शाश्वत और पुरातन है। देह के नष्ट हो जाने पर भी आत्मा नहीं मरती।

विहाय कामान्यः सर्वान्पुमांश्चरति निःस्पृहः।
निर्ममो निरहंकारः स शांतिमधिगच्छति॥२-७१॥

अर्थात् जिसने इंद्रियतृप्ति की वासना को सम्पूर्ण रूप में त्याग दिया है, जो सब प्रकार की इच्छा और ममता से मुक्त है तथा मिथ्या अहंकार को त्याग चुका है, वही सच्ची शान्ति को पाता है।

यो मां पश्यति सर्वत्र सर्वं च मयि पश्यति।
तस्याहं न प्रणश्यामि स च मे न प्रणश्यति॥६-३०॥

अर्थात् जो मुझे सब में देखता है और सब कुछ मुझ में स्थित देखता है, उसके लिये मैं कभी अदृश्य नहीं होता, अर्थात् सदा प्राप्त रहता हूँ और वह भी मेरे लिये कभी अदृश्य नहीं होता है।

-: आचार्य श्री धर्मेन्द्र जी महाराज के विचार :-

श्री मद्भगवद्गीता हिन्दू धर्म और चिन्तन के महानतम व्याख्याता भगवान वेदव्यास के द्वारा छन्दबद्ध की गयी श्री कृष्ण वाणी है। श्री मद्भगवद्गीता के श्लोक, इसीलिये श्लोक न रहकर मन्त्र हो गये हैं, जिनमें नित्य नूतन अर्थों का अन्मेष होता जाता है।

संसार में अभय का नितान्त निरापद निकेतन माँ की ममतामयी गोद ही है, उससे बढ़कर सुरक्षित शरणस्थल भला और क्या होगा? गीतामाता की गोद सम्पूर्ण मानवता का अभय निकेतन है। यही वह शरणस्थली है, जहां आकर मानवता निर्भय और निश्चिन्त हो सकती है।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

॥ गीता का सार ॥

१. क्यों निष्फल चिन्ता करते हो, किससे व्यर्थ डरते हो, कौन तुम्हें मार सकता है, आत्मा किसी काल में न जन्मती है और न मरती है।

२. जो हुआ-वह अच्छा हुआ, जो हो रहा है-वह अच्छा हो रहा है, जो होगा-वह अच्छा होगा। तुम भूत का शोक न करो, भविष्य का डर न करो, वर्तमान चल रहा है।

३. तुम्हारा क्या गया जो तुम रोते हो, तुम क्या लाये थे जो खो दिया, तुमने क्या पैदा किया था जो नाश हो गया, न कुछ तुम लेके आये, जो लिया यहीं से लिया, जो दिया यहीं पर दिया। जो लिया उस परमात्मा से लिया, जो आज तुम्हारा है, कल किसी का था, आगे और किसी का होगा। तुम इसको अपना समझ कर प्रसन्न होते हो और यही प्रसन्नता तुम्हारे दुख का कारण है।

४. परिवर्तन संसार का नियम है, जिसको तुम मृत्यु समझते हो यही तो जीवन है। एक मिनट में तुम करोड़ों के स्वामी होते हो, दूसरे ही क्षण दरिद्र बन जाते हो। तेरा-मेरा, छोटा-बड़ा, अपना-पराया मन से मिटा दो, फिर सब तुम्हारा है, तुम सबके हो।

५. न यह शरीर तुम्हारा है, न तुम इस शरीर के हो। यह आग, मिट्टी, पानी, वायु से बनता है, इसी में लीन हो जाता है, फिर भी तुम्हारी आत्मा वैसी की वैसी स्थिर है, फिर तुम क्या हो।

६. तुम अपने आप को उसके अर्पण करो, यही सबसे उत्तम सहारा है। जो उसके सहारे को जानता है, वह शोक, भय और चिन्ता से सर्वदा के लिये मुक्ति पा जाता है।

७. जो कुछ भी करो, प्रभु के अर्पण कर। ऐसा करने से सदा जीवन मुक्ति का आनन्द अनुभव करेगा तथा शरीर त्यागते ही तत्क्षण लीन होगा।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

॥ गीता-माता ॥

हरि सम जग कुछ बस्तु नहिं, प्रेम-पंथ-सम पंथ।
सतगुरू सम सज्जन नहीं, गीता सम नहिं ग्रंथ॥

गीता शास्त्रों का दोहन है। मैंने कहीं पढ़ा था कि सारे उपनिषदों का निचोड़ उसके सात सौ श्लोकों में आ जाता है। इसलिये मैंने निश्चय किया कि कुछ न हो सके तो भी गीता का ज्ञान प्राप्त कर लूँ। आज गीता मेरे लिये केवल बाइबिल नहीं है, केवल कुरान नहीं है, मेरे लिये वह माता हो गयी है। मुझे जन्म देने वाली माता तो चली गई पर संकट के समय गीता माता के पास जाना मैं सीख गया हूँ। मैंने देखा है कि जो कोई इस माता की शरण में जाता है, उसे ज्ञानामृत से वह तृप्त करती है।

जब-जब संकट पड़ते हैं, तब-तब संकट टालने के लिये गीता के पास दौड़ जाते हैं ओर उससे आश्वासन पाते हैं। हमें गीता को इस दृष्टि से पढ़ना है। वह हमारे लिये सद्गुरूमय है, माता रूप है और हमें विश्वास रखना चाहिये कि उसकी गोद में सर रखने से हम सही सलामत रहेंगे। गीता के द्वारा हम अपनी तमाम धार्मिक उलझनें सुलझायेंगे। इस विधि से जो रोज गीता का मनन करेगा, उसे उसमें से नित्य नया आनन्द मिलेगा- नये अर्थ प्राप्त होते रहेंगे। ऐसी एक भी धार्मिक समस्या नहीं, जिसे गीता हल न कर सके।

—महात्मा गाँधी।

॥ रामायण की महिमा ॥

हमें निज धर्म पर चलना, बताती रोज रामायण।
सदा शुभ आचरण करना, सिखाती रोज रामायण॥
जिन्हे संसार सागर से, उतर कर पार जाना है।
उन्हें सुख से किनारे पर, लगाती रोज रामायण।
कहीं छवि विष्णु की बाँकी, कहीं शंकर की है झाँकी।
हृदय आनन्द झूले पर, झुलाती रोज रामायण॥
सरल कविता की कुंजों में, बना मन्दिर है हिन्दी का।
जहाँ प्रभु प्रेम का दर्शन, कराती रोज रामायण॥
कभी वेदों के सागर में, कभी गीता की गंगा में।
कभी रस 'बिन्दु' में मन को, डुबोती रोज रामायण॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

॥ रामायण: पढ़ने का ग्रन्थ नहीं, जीने का शास्त्र ॥

–आचार्य श्री धर्मेन्द्र जी महाराज

राजर्षि दशरथ – तीर्थराज प्रयाग हैं। वे पुण्यश्लोक हैं। आर्यत्व के आदर्श और राजधर्म के प्रतीक हैं। पवित्रता के वे पर्याय हैं। निष्काम और निस्वार्थ पुत्रवत्सलता उनसे ग्रहण करो ।

तीनों माताएँ – दशरथ रूपी प्रयाग को पवित्र करने वाली गंगा, यमुना, सरस्वती रूपा त्रिवेणी हैं। कौशल्या ओर सुमित्रा की महिमा तो विश्वविदित है। छोटी माता की महिमा सरस्वती के समान गुप्त है। सरस्वती नहीं तो प्रयाग नहीं। कैकेयी नहीं तो रामकथा नहीं। कैकेयी माता ही रामकथा का मूल है। जो भरत जैसा पुत्र उत्पन्न करे, उसी का मातृत्व सार्थक है। इस तत्व को समझो।

लक्ष्मण – शौर्य और स्नेह के साकार समन्वय हैं। त्याग और तपश्चर्या के ज्वलन्त स्वरूप हैं। वे इन्द्रियजीत हैं। जो इन्द्रियजीत है वही इन्द्रजीत (मेघनाद) को जीत सकता है। संसार को जीतना चाहो तो इन्द्रियों को जीतो।

भरत – अर्थातु शुचिता की प्रतिमूर्ति। निर्मलता के साक्षात् अवतार भरत जैसी निर्मलता पा लेने पर कुछ और पाना शेष नहीं रहता। तुम्हें भगवान को खोकर भोग मिले तो तुम भरत के समान भोगों को ठुकरा दो और भगवान की शरण में पहुँच जाओ। भगवान को पाने के लिये भोग छोड़ो।

शत्रुघ्न – समर्पित कर्तव्यनिष्ठा के आदर्श हैं। कर्तव्य ही जीवन को उत्कर्ष पर पहुँचाता है। स्वयं को पीछे रखकर धर्म को आगे बढ़ाओ। यश की कामना नहीं, सत्य के शासन की कामना करो। शत्रुघ्न के चरित्र का यही सार है।

उर्मिला, माण्डवी और श्रुतिकीर्ति – कुलवधुओं का शील सौन्दर्य इन तीन देवियों में मूर्तिमान हो गया है। भोग नहीं, पति के अन्त:करण से अपने अन्त:करण का योग ही दाम्पत्य को दिव्यता देता है। दिव्य दाम्पत्य कैसा होता है ? ये तीन देवियाँ यही सिखाती हैं। दिव्य दम्पत्ति बनो। 'हैप्पी कपल" बनना सरल है, दिव्य दम्पत्ति बनना कठिन है।

हनुमानप्रभु – भक्ति सेवा और कर्म के साकार स्वरूप हैं। धर्म के लिये समर्पित शौर्य और सामर्थ्य ही पुरूषार्थ की सार्थकता है। अधर्म को मिटाने

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

और धर्म की स्थापना करने का व्रत हनुमानप्रभु से सीखो। असत्य और अन्याय का प्रतिकार का साहस उनसे ग्रहण करो। अधर्म को मिटा दो। धर्म को स्थापित करो।

विभीषण – के लिए न्याय और सत्य ही सर्वोपरि है। न्याय सबसे ऊपर और सत्य सबसे मूल्यवान है। न्याय और सत्य के लिए परिवार, धन, सम्पदा और सर्वस्व को भी छोड़ देना चाहिये।

सुग्रीव – मैत्री के आदर्श हैं। मैत्री कैसे निभाई जाती है, उनसे सीखो।

जटायु – का जीवन चन्दन है। प्रभु चरणों में जटायु के समान चन्दन बनकर समर्पित होना ही जीवन की सार्थकता है।

रावण – ने सिद्ध कर दिया कि अद्वितीय शौर्य, असीम सामर्थ्य, अजेय शक्ति, अटूट वैभव और अद्वितीय ज्ञान भी सदाचार के बिना निरर्थक है। सदाचार ही चरम पुरूषार्थ है। रावण के विकास और सर्वनाश से यही मन्त्र ग्रहण करना चाहिये।

सीता माँ – धैर्य की धुरी, शील की आधारशिला, पावनता की गंगोत्री और सतीत्व की ज्वलन्त ज्वाला हैं। वे मूर्तिमयी करूणा हैं। अटूट और अविचलित आस्था सीता माँ के रूप में साकार हुई। सीता माता का अनुसरण ही नारीत्व की धन्यता है।

श्री राम – तो साक्षात् धर्म हैं। "रामो विग्रहवान् धर्म।" धर्म को देखना हो तो श्रीराम प्रभु को देखो। देखो और उन्हें जीवन में उतार लो। धर्म को जानने के लिये मर्यादा पुरूषोत्तम राम को जानो।

सावधान! रामायण, पढ़कर आलमारी में रख देने का ग्रन्थ नहीं है। वह जीवन में उतारने का, जीने का शास्त्र है। रामायण को केवल पढ़ो मत। उसे जीओ। जो रामायण को जीयेगा, रामायण में जीयेगा वह स्वयं श्रीराम स्वरूप हो जायेगा।

साभार– नवरात्र प्रवचन आश्विन २०४१ वि. साल्टलेक, कलकत्ता

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

॥ श्री रामायण १०८ मनका ॥

भीड़ पड़ी जब भक्त पुकारे, दूर करो प्रभु दुःख हमारे,
दशरथ के घर जन्मे राम, पतितपावन सीताराम ॥
विश्वामित्र मुनीश्वर आये, दशरथ भूप से वचन सुनाये,
संग में भेजे लक्ष्मण राम, पतितपावन सीताराम ॥
वन में जाय ताड़का मारी, चरण छुआये, अहित्या तारी,
ऋषियों के दुःख हरते राम, पतितपावन सीताराम ॥
जनकपुरी रघुनन्दन आये, नगर निवासी दर्शन पाये,
सीता के मन भाये राम, पतितपावन सीताराम ॥
रघुनंन्दन ने धनुष चढ़ाया, सब राजों का मान घटाया,
सीता ने वर पायो राम, पतितपावन सीताराम ॥
परशुराम क्रोधित हो आये, दुष्ट भूप मन में हरषाये,
जनकराज ने किया प्रणाम, पतितपावन सीताराम ॥
बोले लखन सुनो मुनि ग्यानी, संत नहीं होते अभिमानी,
मीठी वाणी बोले राम, पतितपावन सीताराम ॥
लक्ष्मण वचन ध्यान मत दीजो, जो कुछ दण्ड दास को दीजो,
धनुष तोड़्या हूँ मैं राम, पतितपावन सीताराम ॥
लेकर के यह धनुष चढ़ाओ, अपनी शक्ति मुझे दिखलाओ,
छूवत चाप चढ़ाये राम, पतितपावन सीताराम ॥
हुई उर्मिला लखन की नारी, श्रुतिकीर्ति रिपुसूदन प्यारी,
हुई माण्डवी भरत के वाम, पतितपावन सीताराम ॥
अवधपुरी रघुनन्दन आये, घर-घर नारी मंगल गाये,
बारह वर्ष बिताये राम, पतितपावन सीताराम ॥
गुरू वशिष्ठ से आज्ञा लीनी, राज तिलक तैयारी कीनी,
कल को होंगे राजा राम, पतितपावन सीताराम ॥
कुटिल मंथरा ने बहकायी, कैकेई ने यह बात सुनाई,
दे दो मेरे दो वरदान, पतितपावन सीताराम ।
मेरी विनती तुम सुन लीजो, भरत पुत्र को गद्दी दीजो,
होत प्रात वन भेजो राम, पतितपावन सीताराम ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

धरनी गिरे भूप तत्काला, लागा दिल में सूल विशाला,
तब सुमन्त बुलवाये राम, पतितपावन सीताराम ।।
राम पिता को शीश नवाये, मुख से वचन कहा नहीं जाये,
कैकई वचन सुनायो राम, पतितपावन सीताराम ।।
राजा के तुम प्राण प्यारे, इनके दुःख हरोगे सारे,
अब तुम वन में जाओ राम, पतितपावन सीताराम ।।
वन में चौदह वर्ष बिताओ, रघुकुल रीति-नीति अपनाओ,
तपसी वेष बनाओ राम, पतितपावन सीताराम ।।
सुनत वचन राघव हर्षाये, माताजी के मन्दिर आये,
चरण कमल में किया प्रणाम, पतितपावन सीताराम ।।
माता जी मैं तो वन जाऊँ, चौदह वर्ष बाद फिर आऊँ,
चरण कमल देखूँ सुख धाम, पतितपावन सीताराम ।।
सुनी शूल सम जब यह बानी, भू पर गिरी कौशल्या रानी,
धीरज बंधा रहे श्रीराम, पतितपावन सीताराम ।।
सीताजी जब यह सुन पाई, रंग महल से नीचे आई,
कौशल्या को किया प्रणाम, पतितपावन सीताराम ।।
मेरी चूक क्षमा कर दीजो, वन जाने की आज्ञा दीजो,
सीता को समझाते राम, पतितपावन सीताराम ।।
मेरी सीख सिया सुन लीजो, सास ससुर की सेवा कीजो,
मुझको भी होगा विश्राम, पतितपावन सीताराम ।।
मेरा दोष बता प्रभु दीजो, संग मुझे सेवा में लीजो,
अर्द्धांगिनी तुम्हारी राम, पतितपावन सीताराम ।।
समचार सुनि लक्ष्मण आये, धनुष बाण संग परम सुहाये,
बोले संग चलूंगा राम, पतितपावन सीताराम ।।
राम लखन मिथिलेशकुमारी, वन जाने की करी तैयारी,
रथ में बैठ गये सुख धाम, पतितपावन सीताराम ।।
अवधपुरी के सब नर नारी, समाचार सुन व्याकुल भारी,
मचा अवध में अति कोहराम, पतितपावन सीताराम ।।
श्रृंगवेरपुर रघुवर आये, रथ को अवधपुरी लौटाये,
गंगा तट पर आये राम, पतितपावन सीताराम ।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

केवट कहे चरण धुलवाओ, पीछे नौका में चढ़ जाओ,
पत्थर कर दी, नारी राम, पतितपावन सीताराम ।।
लाया एक कठौता पानी, चरण कमल धोये सुख मानी,
नाव चढ़ाये लक्ष्मण राम, पतितपावन सीताराम ।।
उतराई में मुँदरी दीनी, केवट ने यह विनती कीनी,
उतराई नहीं लूँगा राम, पतितपावन सीताराम ।।
तुम आये हम घाट उतारे, हम आयेंगे घाट तुम्हारे,
तब तुम पार लगायो राम, पतितपावन सीताराम ।।
भरद्वाज आश्रम पर आए, राम लखन ने शीश नवाए,
एक रात कीन्हा विश्राम, पतितपावन सीताराम ।।
भाई भरत अयोध्या आये, कैकई को कटु वचन सुनाये,
क्यों तुमने वन भेजे राम, पतितपावन सीताराम ।।
चित्रकूट रघुनन्दन आये, वन को देख सिया सुख पाये,
मिले भरत से भाई राम, पतितपावन सीताराम ।।
अवधपुरी को चलिये भाई, यह सब कैकई की कुटिलाई,
तनिक दोष नहीं मेरा राम, पतितपावन सीताराम ।।
चरण पादुका तुम ले जाओ, पूजा कर दर्शन फल पावो,
भरत को कंठ लगाये राम, पतितपावन सीताराम ।।
आगे चले राम रघुराया, निशाचरों का वंश मिटाया,
ऋषियों के हुए पूरन काम, पतितपावन सीताराम ।।
'अनसूया' की कुटिया आये, दिव्य वस्त्र सिय मां ने पाये,
था मुनि अत्रि का वह धाम, पतितपावन सीताराम ।।
मुनि-स्थान आए रघुराई, शूर्पनखा की नाक कटाई,
खरदूषन को मारे राम, पतितपावन सीताराम ।।
पंचवटी रघुनन्दन आए, कनक मृग "मारीच" संग धाये,
लक्ष्मण तुम्हें बुलाते राम, पतितपावन सीताराम ।।
रावण साधु वेष में आया, भूख ने मुझको बहुत सताया,
भिक्षा दो यह धर्म का काम, पतितपावन सीताराम ।।
भिक्षा लेकर सीता आई, हाथ पकड़ रथ में बैठाई,
सूनी कुटिया देखी राम, पतितपावन सीताराम ।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

धरनी गिरे राम रघुराई, सीता के बिन व्याकुलताई,
हे प्रिये सीते, चीखे राम, पतितपावन सीताराम ।।
लक्ष्मण, सीता छोड़ नहीं तुम आते, जनक दुलारी नहीं गंवाते,
बने बनाये बिगड़े काम, पतितपावन सीताराम ।।
कोमल बदन सुहासिनि सीते, तुम बिन व्यर्थ रहेंगे जीते,
लगे चाँदनी - जैसे घाम, पतितपावन सीताराम ।।
सुन री मैना, सुन रे तोता, मैं भी पंखों वाला होता,
वन वन लेता ढूँढ तमाम, पतितपावन सीताराम ।।
श्यामा हिरनी, तू ही बता दे, जनक नन्दनी मुझे मिला दे,
तेरे जैसी आँखें श्याम, पतितपावन सीताराम ।।
वन वन ढूँढ रहे रघुराई, जनक दुलारी कहीं न पाई,
गिद्धराज ने किया प्रणाम, पतितपावन सीताराम ।।
चख चख कर फल शबरी लाई, प्रेम सहित खाये रघुराई,
ऐसे मीठे नहीं हैं आम, पतितपावन सीताराम ।।
विप्र रूप धरि हनुमत आये, चरण कमल में शीश नवाये,
कन्धे पर बैठाये राम, पतितपावन सीताराम ।।
सुग्रीव से करी मिताई, अपनी सारी कथा सुनाई,
वाली पहुंचाया निज धाम, पतितपावन सीताराम ।।
सिंहासन सुग्रीव बिठाया, मन में वह अति हर्षाया,
वर्षा ऋतु आई हे राम, पतितपावन सीताराम ।।
हे भाई लक्ष्मण तुम जाओ, वानरपति को यूं समझाओ,
सीता बिन व्याकुल है राम, पतितपावन सीताराम ।।
देश देश वानर भिजवाये, सागर के सब तट पर आये,
सहते भूख प्यास और घाम, पतितपावन सीताराम ।।
सम्पाती ने पता बताया, सीता को रावण ले आया,
सागर कूद गये हनुमान, पतितपावन सीताराम ।।
कोने कोने पता लगाया, भगत विभीषण का घर पाया,
हनुमान को किया प्रणाम, पतितपावन सीताराम ।।
अशोक वाटिका हनुमत आये, वृक्ष तले सीता को पाये,
आँसू बरसे आठो याम, पतितपावन सीताराम ।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

रावण संग निशिचरी लाके, सीता को बोला समझाके,
मेरी ओर तुम देखो बाम, पतितपावन सीताराम ।।
मन्दोदरी बना दूं दासी, सब सेवा में लंका वासी,
करो भवन चलकर विश्राम, पतितपावन सीताराम ।।
चाहे मस्तक कटे हमारा, मैं नहीं देखूं बदन तुम्हारा,
मरे तन मन धन हैं राम, पतितपावन सीताराम ।।
ऊपर से मुद्रिका गिराई, सीताजी ने कंठ लगाई,
हनुमान ने किया प्रणाम, पतितपावन सीताराम ।।
मुझको भेजा है रघुराया, सागर लांघ यहां मैं आया,
मैं हूं राम दास हनुमान, पतितपावन सीताराम ।।
भूख लगी फल खाना चाहूँ, जो माता की आज्ञा पाऊँ,
सब के स्वामी हैं श्री राम, पतितपावन सीताराम ।।
सावधान होकर फल खाना, रखवालों को भूल न जाना,
निशाचरों का है यह धाम, पतितपावन सीताराम ।।
हनुमान ने वृक्ष उखाड़े, देख देख माली ललकारे,
मार मार पहुंचाये धाम, पतितपावन सीताराम ।।
अक्षय कुमार को स्वर्ग पहुंचाया, इन्द्रजीत फाँसी ले आया,
ब्रह्मफाँस में बंधे हनुमान, पतितपावन सीताराम ।।
सीता को तुम लौटा दीजो, प्रभु से क्षमा याचना कीजो,
तीन लोक के स्वामी राम, पतितपावन सीताराम ।।
भगत विभीषण ने समझाया, रावण ने उसको धमकाया,
सनमुख देख रहे हनुमान, पतितपावन सीताराम ।।
रूई, तेल, घृत, वसन मंगाई, पूँछ बाँध कर आग लगाई,
पूँछ घुमाई है हनुमान, पतितपावन सीताराम ।।
सब लंका में आग लगाई, सागर में जा पूँछ बुझाई,
हृदय कमल में राखे राम, पतितपावन सीताराम ।।
सागर कूद लौट कर आये, समाचार रघुवर ने पाये,
दिव्य भक्ति का दिया इनाम, पतितपावन सीताराम ।।
वानर रीछ संग में लाये, लक्ष्मण सहित सिंधु तट आये,
लगे सुखाने सागर राम, पतितपावन सीताराम ।।

सेतू कपि नल नील बनावें, राम-राम लिख सिला तिरावें,
लंका पहुंचे राजा राम, पतितपावन सीताराम ।।
अंगद चल लंका में आया, सभा बीच में पाँव जमाया,
बाली पुत्र महा बलधाम, पतितपावन सीताराम ।।
रावण पांव हटाने आया, अंगद ने फिर पांव उठाया,
क्षमा करें तुझको श्री राम, पतितपावन सीताराम ।।
निशाचरों की सेना आई, गरज तरज कर हुई लड़ाई,
वानर बोले जय श्री राम, पतितपावन सीताराम ।।
इन्द्रजीत ने शक्ति चलाई, धरनी गिरे लखन मुरझाई,
चिन्ता करके रोये राम, पतितपावन सीताराम ।।
जब मैं अवधपुरी से आया, हाय पिता ने प्राण गँवाया,
वन में गई चुराई बाम, पतितपावन सीताराम ।।
भाई तुमने भी छिटकाया, जीवन में कुछ सुख नहीं पाया,
सेना में भारी कोहराम, पतितपावन सीताराम ।।
जो संजीवनी बूटी को लाए, तो भाई जीवित हो जाये,
बूटी लायेगा हनुमान, पतितपावन सीताराम ।।
जब बूटी का पता न पाया, पर्वत ही लेकर के आया,
कालनेम पहुंचाया धाम, पतितपावन सीताराम ।।
भक्त भरत ने बाण चलाया, चोट लगी हनुमत लंगड़ाया,
मुख से बोले जय सियाराम, पतितपावन सीताराम ।।
बोले भरत बहुत पछताकर, पर्वत सहित बाण बैठाकर,
तुम्हें मिला दूं राजा राम, पतितपावन सीताराम ।।
बूटी लेकर हनुमत आया, लखन लाल उठ शीष नवाया,
हनुमत कंठ लगाये राम, पतितपावन सीताराम ।।
कुम्भकरन उठकर तब आया, एक बाण से उसे गिराया,
इन्द्रजीत पहुंचाया धाम, पतितपावन सीताराम ।।
दूर्गापूजन रावण कीनो, नौ दिन तक आहार न लीनो,
आसन बैठ किया है ध्यान, पतितपावन सीताराम ।।
रावण का व्रत खंडित कीना, परम धाम पहुंचा ही दीना,
वानर बोले जय श्रीराम, पतितपावन सीताराम ।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

सीता ने हरि दर्शन कीना, चिन्ता शोक सभी तज दीना,
हँस कर बोले राजा राम, पतितपावन सीताराम ।।
पहले अग्नि परीक्षा पाओ, पीछे निकट हमारे आओ,
तुम हो पतिव्रता हे बाम, पतितपावन सीताराम ।।
करी परीक्षा कंठ लगाई, सब वानर सेना हरषाई,
राज्य विभीषण दीन्हा राम, पतितपावन सीताराम ।।
फिर पुष्पक विमान मंगाया, सीता सहित बैठे रघुराया,
दण्डकवन में उतरे राम, पतितपावन सीताराम ।।
ऋषिवर सुन दर्शन को आये, स्तुति कर मन हर्षाये,
तब गंगा तट आये राम, पतितपावन सीताराम ।।
नन्दी ग्राम पवनसुत आये, भाई भरत को वचन सुनाये,
लंका से आए हैं राम, पतितपावन सीताराम ।।
कहो विप्र तुम कहां से आए, ऐसे मीठे वचन सुनाए,
मुझे मिला दो भैया राम, पतितपावन सीताराम ।।
अवधपुरी रघुनन्दन आये, मन्दिर-मन्दिर मंगल छाये,
माताओं को किया प्रणाम, पतितपावन सीताराम ।।
भाई भरत को गले लगाया, सिंहासन बैठे रघुराया,
जग ने कहा "है राजा राम", पतितपावन सीताराम ।।
सब भूमि विप्रों को दीनी, विप्रों ने वापस दे दीनी,
हम तो भजन करेंगे राम, पतितपावन सीताराम ।।
धोबी ने धोबन धमकाई, रामचन्द्र ने यह सुन पाई,
वन में सीता भेजी राम, पतितपावन सीताराम ।।
बाल्मीकि आश्रम में आई, लव व कुश हुए दो भाई,
धीर वीर ज्ञानी बलवान, पतितपावन सीताराम ।।
अश्वमेध यज्ञ क़ीन्हा राम, सीता बिनु सब सूने काम,
लव कुश वहां दियो पहचान, पतितपावन सीताराम ।।
सीता राम बिना अकुलाई, भूमि से यह विनय सुनाई,
मुझको अब दीजो विश्राम, पतितपावन सीताराम ।।
सीताजी भूमि में समाई, देखकर चिन्ता की रघुराई,
बार बार पछताये राम, पतितपावन सीताराम ।।

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

राम राज्य में सब सुख पावें, प्रेम मगन हो हरि गुन गावें,
दुख कलेश का रहा न नाम, पतितपावन सीताराम ।।
ग्यारह हजार वर्ष परयन्ता, राज कीन्ह श्री लक्ष्मी कंता,
फिर बैकुन्ठ पधारे राम, पतितपावन सीताराम ।।
अवधपुरी बैकुन्ठ सिधाई, नर नारी सबने गति पाई,
शरनागत प्रतिपालक राम, पतितपावन सीताराम ।।
"श्याम सुन्दर" ने लीला गाई, मेरी विनय सुनो रघुराई,
भूलूं नहीं तुम्हारा नाम, पतितपावन सीताराम ।।

यह माला पूरी हुई, मनका एक सौ आठ ।
मनोकामना पूर्ण हो, नित्य करे जो पाठ ।।

'सम्पादक के विचार'

"कागज के पन्नों को तुलसी, तुलसी-दल जैसा बना गया।"

श्रद्धेय श्री धर्मेन्द्र जी महाराज ने रामायण को जीने का शास्त्र बताया है, वह शतप्रतिशत ठीक है। यह ग्रन्थ हमारे व्यक्तिगत जीवन को ऊँचा उठाने में बहुत सहायक हुआ है। इसमें राम की रावण पर विजय नहीं, अपितु पुण्य की पाप पर, न्याय की अन्याय पर और सत्य की असत्य पर विजय का वर्णन है। इसके हर एक पात्र से हमें शिक्षा मिलती है। प्रत्येक पात्र ने एक - एक आदर्श उपस्थित किया है। इस ग्रन्थ में पिता-पुत्र, पति-पत्नी, भाई-भाई, गुरू-शिष्य, स्वामी-सेवक आदि नाना सम्बन्धों का निर्वाह आदर्श रूप से किया गया है, जिन्हें हम अपने आचरण में ढाल कर हम अपने पारिवारिक और सामाजिक जीवन को सुखी, सम्पन्न और शान्तिपूर्ण बना सकते हैं। रामायण हमारे आध्यात्मिक जीवन को उठानेवाला ग्रन्थ है। यह हिन्दू जाति, हिन्दू धर्म और हिन्दू संस्कृति का सजग प्रहरी है। इसके रचयिता तुलसीदासजी को लोकनायक कहा जाता है। गोस्वामीजी के बारे में निम्नलिखित कथन वास्तव में सत्य है :-

तुलसी तुलसी सब कहैं, तुलसी वन की घास।
भई कृपा श्री राम की, बन गये तुलसी दास।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

सीता ने हरि दर्शन कीना, चिन्ता शोक सभी तज दीना,
हँस कर बोले राजा राम, पतितपावन सीताराम ।।
पहले अग्नि परीक्षा पाओ, पीछे निकट हमारे आओ,
तुम हो पतिव्रता हे बाम, पतितपावन सीताराम ।।
करी परीक्षा कंठ लगाई, सब वानर सेना हरषाई,
राज्य विभीषण दीन्हा राम, पतितपावन सीताराम ।।
फिर पुष्पक विमान मंगाया, सीता सहित बैठे रघुराया,
दण्डकवन में उतरे राम, पतितपावन सीताराम ।।
ऋषिवर सुन दर्शन को आये, स्तुति कर मन हर्षाये,
तब गंगा तट आये राम, पतितपावन सीताराम ।।
नन्दी ग्राम पवनसुत आये, भाई भरत को वचन सुनाये,
लंका से आए हैं राम, पतितपावन सीताराम ।।
कहो विप्र तुम कहां से आए, ऐसे मीठे वचन सुनाए,
मुझे मिला दो भैया राम, पतितपावन सीताराम ।।
अवधपुरी रघुनन्दन आये, मन्दिर-मन्दिर मंगल छाये,
माताओं को किया प्रणाम, पतितपावन सीताराम ।।
भाई भरत को गले लगाया, सिंहासन बैठे रघुराया,
जग ने कहा "है राजा राम", पतितपावन सीताराम ।।
सब भूमि विप्रों को दीनी, विप्रों ने वापस दे दीनी,
हम तो भजन करेंगे राम, पतितपावन सीताराम ।।
धोबी ने धोबन धमकाई, रामचन्द्र ने यह सुन पाई,
वन में सीता भेजी राम, पतितपावन सीताराम ।।
बाल्मीकि आश्रम में आई, लव व कुश हुए दो भाई,
धीर वीर ज्ञानी बलवान, पतितपावन सीताराम ।।
अश्वमेध यज्ञ क़ीन्हा राम, सीता बिनु सब सूने काम,
लव कुश वहां दियो पहचान, पतितपावन सीताराम ।।
सीता राम बिना अकुलाई, भूमि से यह विनय सुनाई,
मुझको अब दीजो विश्राम, पतितपावन सीताराम ।।
सीताजी भूमि में समाई, देखकर चिन्ता की रघुराई,
बार बार पछताये राम, पतितपावन सीताराम ।।

राम राज्य में सब सुख पावें, प्रेम मगन हो हरि गुन गावें,
दुख कलेश का रहा न नाम, पतितपावन सीताराम ।।
ग्यारह हजार वर्ष परयन्ता, राज कीन्ह श्री लक्ष्मी कंता,
फिर बैकुन्ठ पधारे राम, पतितपावन सीताराम ।।
अवधपुरी बैकुन्ठ सिधाई, नर नारी सबने गति पाई,
शरनागत प्रतिपालक राम, पतितपावन सीताराम ।।
"श्याम सुन्दर" ने लीला गाई, मेरी विनय सुनो रघुराई,
भूलूं नहीं तुम्हारा नाम, पतितपावन सीताराम ।।

यह माला पूरी हुई, मनका एक सौ आठ ।
मनोकामना पूर्ण हो, नित्य करे जो पाठ ।।

'सम्पादक के विचार'

''कागज के पन्नों को तुलसी, तुलसी-दल जैसा बना गया।''

श्रद्धेय श्री धर्मेन्द्र जी महाराज ने रामायण को जीने का शास्त्र बताया है, वह शतप्रतिशत ठीक है। यह ग्रन्थ हमारे व्यक्तिगत जीवन को ऊँचा उठाने में बहुत सहायक हुआ है। इसमें राम की रावण पर विजय नहीं, अपितु पुण्य की पाप पर, न्याय की अन्याय पर और सत्य की असत्य पर विजय का वर्णन है। इसके हर एक पात्र से हमें शिक्षा मिलती है। प्रत्येक पात्र ने एक - एक आदर्श उपस्थित किया है। इस ग्रन्थ में पिता-पुत्र, पति-पत्नी, भाई-भाई, गुरू-शिष्य, स्वामी-सेवक आदि नाना सम्बन्धों का निर्वाह आदर्श रूप से किया गया है, जिन्हें हम अपने आचरण में ढाल कर हम अपने पारिवारिक और सामाजिक जीवन को सुखी, सम्पन्न और शान्तिपूर्ण बना सकते हैं। रामायण हमारे आध्यात्मिक जीवन को उठानेवाला ग्रन्थ है। यह हिन्दू जाति, हिन्दू धर्म और हिन्दू संस्कृति का सजग प्रहरी है। इसके रचयिता तुलसीदासजी को लोकनायक कहा जाता है। गोस्वामीजी के बारे में निम्नलिखित कथन वास्तव में सत्य है :-

तुलसी तुलसी सब कहैं, तुलसी वन की घास।
भई कृपा श्री राम की, बन गये तुलसी दास।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

।। मानस सिद्ध मन्त्र ।।

रामचरित मानस की चौपाइयाँ केवल साधारण चौपाइयाँ न होकर सिद्ध मन्त्र हैं। संस्कृत के मंत्र कठिन होते हैं, परन्तु रामायण के मन्त्र सरल, सरस और सार्थक हैं। जापक इनमें तन्मय हो जाता है। इच्छा शक्ति तल्लीन हो जाती है। सुरति में निरति मिल जाती है और नियति बदल जाती है।

रक्षा रेखा

मन्त्र सिद्ध करने के लिये या किसी संकटपूर्ण जगह पर रात व्यतीत करने के लिये अपने चारों ओर रक्षा की रेखा खींच लेनी चाहिये। लक्ष्मणजी ने सीताजी की कुटी के आसपास जो रेखा खींची थी, उसी लक्ष्य पर रक्षामन्त्र बनाया गया है। इसे एक सौ आठ आहुति द्वारा सिद्ध कर लेना चाहिये-

मामभिरक्षय रघुकुल नायक, घृत बर चाप रूचिर कर सायक।।

१. **विपत्ति – नाश के लिये :–**

राजिव नयन धरें धनु सायक, भगत विपत्ति भंजन सुखदायक।।

२. **संकट – नाश के लिये :–**

प्रभु दीनदयालु कहावा, आरतिहरण बेद जसु गावा।।
जपहिं नामु जन आरति भारी, मिटहिं कुसंकट होहिं सुखारी।।
दीनदयाल बिरदु संभारी, हरहु नाथ मम संकट भारी।।

३. **कठिन क्लेश – नाश के लिये :–**

हरन कठिन कलि कलश कलेसू, महा मोह निसि दलन दिनेसू।।

४. **विघ्न – विनाश के लिये :–**

सकल बिघ्न व्यापहिं नहिं तेही, राम सुकृपाँ बिलोकहिं जेहीं।।

५. **खेद – नाश के लिये :–**

जब तें राम ब्याहि घर आए, नित नव मंगल मोद बधाए।।

६. **महामारी, हैजा आदि का प्रभाव न पड़ने हेतु :–**

जय रघुबंस बनज बन भानू, गहन दनुज कुल दहन कृसानू।।

७. **विविध रोगों तथा उपद्रवों की शान्ति के लिये :–**

दैहिक दैविक भौतिक तापा, राम राज नहिं काहुहि ब्यापा।।

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

८. मस्तिष्क की पीड़ा दूर करने के लिये :-

हनूमान अंगद रन गाजे, हाँक सुनत रजनीचर भाजे।।

९. विष – नाश के लिये :-

नाम प्रभाउ जान सिव नीको, कालकूट फलु दीन्ह अमी को।।

१०. अकाल – मृत्यु – निवारण के लिये :-

नाम पाहरू दिवस निसि ध्यान तुम्हार कपाट।
लोचन निज पद जंत्रित जाहिं प्रान केहिं बाट।।

११. भूतों को भगाने के लिये :-

प्रनबउँ पवनकुमार खल बन पावक ग्यान घन।
जासु हृदयँ आगार बसहिं राम सर चाप धर।।

१२. नजर झाड़ने के लिये :-

स्याम गौर सुंदर दोउ जोरि, निरखहिं छबि जननी तृन तोरी।।

१३. खोयी हुई वस्तु पुनः प्राप्त करने के लिये :-

गई बहोर गरीब नेवाजू, सरल सबल साहिब रघुराजू।।

१४. जीविका प्राप्ति के लिये :-

बिस्व भरन पोषन कर जोई, ताकर नाम भरत अस होई।।

१५. दरिद्रता दूर करने के लिये :-

अतिथि पूज्य प्रियतम पुरारि के, कामद घन दारिद दवारि के।।

१६. लक्ष्मी प्राप्ति के लिये :-

जिमि सरिता सागर महुँ जाहीं, जद्यपि ताहि कामना नाहीं।।
तिमि सुख संपति बिनहिं बोलाएँ, धरमसील पहिं जाहिं सुभाएँ।।

१७. पुत्र प्राप्ति के लिये :-

प्रेममगन कौसल्या निसि दिन जात न जान।
सुत सनेह बस माता बालचरित कर गान।।

१८. सम्पत्ति प्राप्ति के लिये :-

जे सकाम नर सुनहिं जे गावहिं, सुख संपत्ति नाना विधि पावहिं।।

१९. ऋद्धि – सिद्धि प्राप्त करने के लिये :-

साधक नाम जपहिं लय लाएँ, होहिं सिद्ध अनिमादिक पाएँ।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

२०. सब सुख प्राप्ति के लिये :–

सुनहिं बिमुक्त बिरत अरू बिषई, लहहिं भगति गति संपति नई।।

२१. मनोरथ सिद्धि के लिये :–

भव भेषज रघुनाथ जसु सुनहिं जे नर अरू नारि।
तिन्ह कर सकल मनोरथ सिद्ध करहिं त्रिसिरारि।।

२२. कुशल–क्षेम के लिये :–

भुवन चारि दस भरा उछाहू, जनकसुता रघुबीर बिआहू,

२३. मुकदमा जीतने के लिये :–

पवन तनय बल पवन समाना, बुद्धि बिबेक बिग्यान निधाना।।

२४. शत्रु के सामने जाना हो, उस समय के लिये :

कर सारंग साजि कटि भाथा, अरि दल दलन चले रघुनाथा।।

२५. शत्रु को मित्र बनाने के लिये :–

गरल सुधा रिपु करहिं मिताई, गोपद सिंधु अनल सितलाई।।

२६. शत्रुता – नाश के लिये :–

बयरू न कर काहू सन कोई, राम प्रताप बिषमता खोई।।

२७. शास्त्रार्थ में विजय पाने के लिये :

तेहिं अवसर सुनि सिवधनु भंगा, आयउ भृगुकुल कमल पतंगा।।

२८. विवाह के लिये :–

तब जनक पाइ बसिष्ठ आयसु ब्याह साज सँवारि कै।
मांडवी श्रुतकीरति उरमिला कुअँरि लई हँकारि कैं।।

२९. यात्रा की सफलता के लिये :–

प्रबिसि नगर कीजे सब काजा, हृदयँ राखि कोसलपुर राजा।।

३०. परीक्षा में पास होने के लिये :–

जेहि पर कृपा करहिं जनु जानी, कबि उर अजिर नचावहिं बानी।।
मोरि सुधारिहि सो सब भाँती, जासु कृपा नहिं कृपा अघाती।।

३१. आकर्षण के लिये :–

जेहिं कें जेहिं पर सत्य सनेहू, सो तेहि मिलइ न कछु संदेहू।

३२. स्नान से पुण्य – लाभ के लिये :–

सुनि समुझहिं जन मुदित मन मज्जहिं अति अनुराग।
लहहिं चारि फल अछत तनु साधु समाज प्रयाग।।

३३. निन्दा की निवृत्ति के लिये :–

राम कृपा अवरेब सुधारी, बिबुध धारि भई गुनद गोहारी।।

३४. विद्या प्राप्ति के लिये :–

गुर गृहँ गए पढ़न रघुराई, अल्प कंाल बिद्या सब आई।।

३५. उत्सव होने के लिये :–

सिय रघुबीर विवाहु जे सप्रेम गावहिं सुनहिं।
तिन्ह कहुँ सदा उछाहु मंगलायतन राम जसु।।

३६. यज्ञोपवीत धारण करके उसे सुरक्षित रखने के लिये :–

जुगुति बेधि पुनि पोहिअहिं रामचरित बर ताग।
पहिरहि सज्जन बिमल उर सोभा अति अनुराग।।

३७. प्रेम बढ़ाने के लिये :–

सब नर करहिं परस्पर प्रीती, चलहिं स्वधर्म निरत श्रुति नीति।

३८. कातर की रक्षा के लिये :–

मोरें हित हरि सम नहिं कोऊ, एहि अवसर सहाय सोइ होऊ।।

३९. भगवत्स्मरण करते हुए आराम से मरने के लिये :–

राम चरन दृढ़ प्रीति करि बालि कीन्ह तनु त्याग।
सुमन माल जिमि कंठ ते गिरत न जानई नाग।।

४०. विचार शुद्ध करने के लिये :–

ताके जुग पद कमल मनावउँ, जासु कृपाँ निरमल मति पावउँ।

४१. संशय – निवृत्ति के लिये :–

राम कथा सुन्दर कर तारी, संसय बिहग उड़ावनि हारी।।

४२. ईश्वर से अपराध क्षमा कराने के लिये :–

अनुचित बहुत कहेउँ अग्याता, छपहु छमा मंदिर दोउ भ्राता।।

४३. विरक्ति के लिये :–

भरत चरित करि नेमु तुलसी जो सादर सुनहिं।
सीय राम पद पेमु अवसि होइ भव रस बिरति।।

४४. ज्ञान प्राप्ति के लिये :–

छिति जल पावक गगन समीरा, पंच रचित अति अधम सरीरा।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

४५. **भक्ति की प्राप्ति के लिये :-**

भगत कल्पतरू प्रनत हित कृपासिंधु सुख धाम।
सोइ निज भगति मोहि प्रभु देहु दया करि राम।।

४६. **श्री हनुमानजी को प्रसन्न करने के लिये :-**

सुमिरि पवनसुत पावन नामू, अपने बस करि राखे रामू।।

४७. **मोक्ष प्राप्ति के लिये :-**

सत्य संघ छाँड़े सर लच्छा, काल सर्प जनु चले सपच्छा।।

४८. **श्री सीतारामजी के दर्शन के लिये :-**

नील सरोरूह नील मनि नील निरधर स्याम।
लाजहिं तन सोभा निरखि कोटि कोटि सत काम।।

४९. **श्री जानकीजी के दर्शन के लिये :-**

जनकसुता जग जननि जानकी,
अतिसय प्रिय करूना निधान की।।

५०. **श्री रामचन्द्रजी को वश में करने के लिये :-**

केहरि कटि पट पीत धर सुषमा सील निधान।
देखि भानुकुल भूषनहि बिसरा सखिन्ह अपान।।

५१. **सहज स्वरूप – दर्शन के लिये :-**

भगत बछल प्रभु कृपा निधाना, बिस्वबास प्रगटे भगवाना।।

अष्टांग हवन की सामग्री

(१) चन्दन का बुरादा, (२) तिल, (३) शुद्ध घी, (४) शक्कर, (५) अगर, (६) तगर, (७) कपूर, (८) शुद्ध केशर, (९) नागरमोथा, (१०) पञ्चमेवा, (११) जौ और (१२) चावल।

चौपाई मन्त्र का विधान है कि रात में दस बजे के बाद अष्टांग हवन की सामग्री और एक माला लेकर एकान्त में बैठ जाना चाहिये। एक बार चौपाई पढ़कर हवन करें और माला का एक मनका पीछे करें। इस प्रकार एक सौ आठ बार मन्त्रोच्चारण के साथ हवन करना चाहिये। बस मन्त्र सिद्ध हो गया। फिर जब जिस कार्य के लिये आवश्यकता हो इनका श्रद्धापूर्वक जब तक कार्य सिद्ध न हो नित्य जप करते रहना चाहिये।

आशा है कि पाठकगण इन चौपाई-मन्त्रों की सहायता से अपने दुःखों को दूर करेंगे।

–कल्याण से साभार

॥ ॐ का महत्व ॥

ओम् (ॐ) का जीवन में बहुत बड़ा महत्व है। गीता में भी ॐकार के जाप का विधान है। इसके हजारों अर्थ हैं। उसमें एक यह है – परमात्मा का आह्वान करना। यह वेदों का बीज भूत महामंत्र है, साक्षात ब्रह्म है। वैज्ञानिक दृष्टिकोण से भी "ॐ ॐ" ऐसा उच्चारण करने मात्र से प्राणों की उर्ध्वगति स्वयंमेव होने लगती है। इसमें प्राणों की उर्ध्वगति करने की अद्भुत क्षमता है। इसको साक्षात् ब्रह्म माना गया है। इसीलिये आपने देखा होगा कि कई चित्रकारों ने ॐ के भीतर ही भगवान को चित्रित किया है।

ॐ है जीवन हमारा, ॐ प्राणाधार है।
ॐ है कर्ता विधाता, ॐ पालनहार है।।
ॐ है दुःख का विनाशक, ॐ सर्वदानन्द है।
ॐ है बल तेजधारी, ॐ करूणाकन्द है।।
ॐ सबका पूज्य है, हम ॐ का पूजन करें।
ॐ के ही ध्यान से हम शुद्ध अपना मन करें।।
ॐ के गुरू मन्त्र जपने से रहेगा शुद्ध मन।
बुद्धि प्रतिदिन बढ़ेगी धर्म में होगी लगन।।
ॐ के जप से हमारा ज्ञान बढ़ता जायगा।
अन्त में यह ॐ हमको मुक्ति तक पहुंचायगा।।

ॐकारमन्त्र

ॐकार बिन्दु संयुक्तं नित्यं ध्यायन्ति योगिनः।
कामदं मोक्षदं चैव ॐकाराय नमो नमः।।

तन तम्बूरा तार मन, अद्भुत है ये साज।
हरि के कर से बज रहा, हरि की है आवाज।।

सीतापति की कोठड़ी, चन्दन जड़या किवाड़।
ताला कुंजी प्रेम की, खोलो कृष्ण मुरारि।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

।। हरि ओम नमोः नारायण ।।

दोहा- **श्वास-श्वास पर ओम् कह, वृथा जन्म मत खोय।**
क्या जाने इस श्वास का, आवन होय न होय।।

ओम् हरि ओम् हरि, ओम् हरि ओम्।
नारद ऋषि की वाणी है, देवों ने पहचानी है।। ॐ।।
मूल मंत्र नारायण का, कष्ट हरेगा तन मन का।
उलझा गोरख धन्धे में, सार समझा ले जीवन का।
बाल भक्त ध्रुव ज्ञानी था, परम ब्रह्म का ध्यानी था।। ॐ।।
हरि ॐ शब्द अनूठा है, इसका मजा वो ही लूटा है।
चिन्तन कर परमेश्वर का, भव बन्धन से छूटा है।
नींद से जागो चेत करो, नारायण से हेत करो।। ॐ।।
अजर अमर अविनाशी है, निर्भय सर्व प्रकाशी है।
शेषासन पर सोया है, क्षीर सिन्धु का वासी है।
अलख निरंजन स्वामी है, पूरण अन्तर्यामी है।। ॐ।।
ज्योतिर्रूप विधाता है, सब देवों से नाता है।
"श्याम बहादुर शिव" का तो, वो ही भाग्य विधाता है।
दीनबन्धु दुःखहारी है, केशव कुंज बिहारी है।। ॐ।।
ओम् हरि ओम् हरि.................

क्या भरोसा जिन्दगी का?

साँस रूक जायेगी चलते चलते, शमा बुझ जायेगी चलते चलते।
दम निकल जायेगा रोशनी का, क्या भरोसा है इस जिन्दगी का।।
दुनिया है हकीकत पुरानी, चलके रूकना है उसकी रवानी।
नाम रह जायेगा आदमी का, क्या भरोसा है जिन्दगी का।।
हम रहें ना रहें, मोहब्बत रहेगी, दास्ताँ अपनी दुनिया कहेगी।
फर्ज पूरा करो बन्दगी का, क्या भरोसा है इस जिन्दगी का।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

॥ गुरू महिमा ॥

गुरू गोविन्द दोऊ खड़े, काके लागूँ पाय।
बलिहारी गुरूदेव की, जिन गोविन्द दियो बताय॥

कबीर के उपरोक्त दोहे से ही गुरू की महिमा स्पष्ट है। उन्होंने भगवान से भी बढ़कर गुरू को महत्व दिया है। और यह अटल सत्य भी है, क्योंकि गुरू ही हमारा पथ प्रदर्शन करते हुए प्रभु से मिलने का मार्ग प्रशस्त करते हैं। इसलिये उनकी महिमा का जितना भी गुणगान किया जाय उतना ही कम है। वे हमारी अन्तरात्मा पर पड़ी मैली चादर को अपने उपदेश रूपी साबुन से धोकर आत्मा को परमात्मा में लीन कर देते हैं।

गुरू के उपदेश के बिना आत्मतत्व की उपलब्धि नहीं होती। योगवाशिष्ट में वशिष्ठ देवजी ने कहा भी है-

''गुरूपदेशच बिना नात्मतत्वागमो भवेन''

आदिकाल में भारतीय संस्कृति में गुरू का बड़ा ऊँचा स्थान रहा है। यद्यपि आज के समय में गुरू शिष्य प्रणाली लुप्त हो चुकी है और फलस्वरूप स्कूल कालेजों में फीस देकर पढ़ने वाले छात्रों के हृदयों में अपने गुरू के प्रति वह सम्मान का भाव एवं श्रद्धा नहीं होती जो प्राचीन भारत में गुरू वर्ग के प्रति शिष्यों की होती थी। अनायास ही हमारी आँखों के सामने वह तपोवन-कालीन सभ्यता का चलचित्र उभर आता है, जब आज की भाँति विद्या का विक्रय नहीं था, जिसमें निर्धनता के कारण कोई विद्यार्थी शिक्षा से वंचित नहीं रह पाता था और जिसमें राजा रंक के भेदभाव को भुलाकर सभी बालक एक ही वृक्ष की छाया के नीचे कुशासनों पर बैठकर साथ-साथ विद्याध्ययन किया करते थे। "सादा जीवन उच्च विचार" उस गुरू कुल का मूल मंत्र था, तप और त्याग पवित्र ध्येय था और लोक हित पर जीवन उत्सर्ग की शिक्षा उनका आदर्श। इन गुरूओं की छत्रछाया से निकलने वाले कपिल, कणाद, गौतम, पाणिनि, शंकर, एकलव्य आदि आज भी विश्व में अपनी सानी नहीं रखते।

इसीलिये कहा गया है-

गुरू बिन ज्ञान न ऊपजै, गुरू बिन भगति न होय।
गुरू बिन संशय ना मिटै, गुरू बिन मुक्ति न होय॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

गुरू के बिना जीवन वृथा है। उनके पथ प्रदर्शन बिना इस भवसागर को पार करना कठिन ही नहीं असंभव है। धर्म शास्त्रों में भी कहा गया है कि निगुरे के हाथ से खाने-पीने में बड़ा पाप लगता है, निगुरे का दिया दान, पुण्य, तीर्थ, व्रत, तप सब ही निष्फल हो जाते हैं। यहाँ तक कि देवता भी उसके हाथ का दिया हुआ ग्रहण नहीं करते।

अतः आपसे मेरा नम्र निवेदन है कि अगर आपने अभी तक किसी को गुरू नहीं बनाया हो, तो जितनी जल्दी संभव हो गुरू बना लें एवं गुरू मंत्र ग्रहण करें।

लेखक : कैलाश चन्द्र अग्रवाल

गुरू-धोबी शिष-कापड़ा, साबुन-सिरजनहार।
सुरत-सिला पर धोइये, निकसे रंग अपार।।

नवनि नीच कै अति दुखदाई। जिमि अंकुस धनु उरग बिलाई।।
भयदायक खल कै प्रिय बानी। जिमि अकाल के कुसुम भवानी।।

नीच का झुकना (नम्रता) भी अत्यन्त दुःखदायी होता है, जैसे अंकुश, धनुष, साँप और बिल्ली का झुकना। दुष्ट की वाणी भी उसी प्रकार भय देने वाली होती है, जैसे बिना ऋतु के फूल।

जपहिं नामु जन आरत भारी। मिटहिं कुसंकट होहिं सुखारी।।
राम भगत जग चारि प्रकारा। सुकृती चारिउ अनघ उदारा।।

(संकटसे घबड़ाये हुए) आर्त भक्त नामजप करते हैं तो उनके बड़े भारी बुरे-बुरे संकट मिट जाते हैं और वे सुखी हो जाते हैं। जगत् में चार प्रकारके (१-अर्थार्थी- धनादि की चाह से भजनेवाले, २-आर्त-संकट की निवृत्ति के लिये भजने वाले, ३-जिज्ञासु- भगवान् को जानने की इच्छा से भजने वाले, ४-ज्ञानी- भगवान् को तत्त्व से जानकर स्वाभाविक ही प्रेम से भजने वाले) रामभक्त हैं और चारों ही पुण्यात्मा, पापरहित और उदार हैं।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

॥ गुरू चालीसा ॥

गुरूर्ब्रह्मा, गुरूर्विष्णु, गुरूर्देवो महेश्वरः ॥
गुरूः साक्षात् परंब्रह्म, तस्मै श्री गुरवे नमः ॥
ध्यान मूलं गुरोमूर्ति, पूजा मूलं गुरौः पदम् ।
मन्त्र मूलं गुरोर्वाक्यं, मोक्ष मूलं गुरूः कृपा ॥

श्री गणपति का ध्यान धर, शारद मात मनाय।
गुरू की महिमा मैं लिखूँ, गुरूपद शीष नवाय।।१।।
प्रात समय सुमिरन करें, गुरूदेव का नाम।
ज्ञान बढ़े गुण उपजे, पावे पद निर्वाण।।२।।
सतगुरू महिमा बहुत है, गावत वेद पुराण।
मुख छोटा प्रभुता बड़ी, किस विधि करूँ बयान।।३।।
कलम न उपमा लिख सके, वाणी कहे न सार।
शेष सरस्वती शारदा, पावे न जाका पार।।४।।
सब धरती कागज करूँ, कलम करूँ बनराय।
सब सिन्धू स्याही करूँ, उपमा लिखी न जाय।।५।।
सूर्यतेज परमाण हो, शीतल चन्द्र समान।
सर्व ओपमा आपकी, गुरू गुण के हो धाम।।६।।
हाथ जोड़ विनती करूँ, मैं बालक नादान।
दास (मदन) का लीजिये, साष्टांग प्रणाम।।७।।
गुरूदेव महादेव हो, सब देवों के देव।
ब्रह्मा, विष्णु, महेश भी, नित उठते करते सेव।।८।।
गुरूदेव के वचन पर, जो नर कर विश्वास।
भव सागर से वह तरे, छूटे यम की त्रास।।९।।
गुरू की महिमा बहुत है, किसने पाया पार।
वेद पुराण सद्ग्रन्थ सब, मान गये हैं हार।।१०।।
शीत घाम गुरू मेह को, सहते बारम्बार।
योग जोग जप तप करें, महिमा अपरम्पार।।११।।
गुरूदेव ब्रह्मा कहो, गुरू ही विष्णु मान।
गुरूदेव महादेव हैं, तीनों गुरू को जान।।१२।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

यज्ञ, दान, व्रत, नेम कर, अरू आसन को साद।
सत्यधर्म प्रालन करे, रखे वेद मरजाद।।१३।।
कभी क्रोध व्यापे नहीं, कभी न व्यापे काम।
लोभ मोह को छोड़ते, भजते सीताराम।।१४।।
गुरूदेव पर ब्रह्म हैं, कहते वेद पुराण।
दास (मदन) का लीजिये, बारम्बार प्रणाम।।१५।।
गुरू बिना होता नहीं, ज्ञान ध्यान परकास।
ज्ञान बिना मिलता नहीं, परमधाम का वास।।१६।।
रामायण गीता कहे, कहे वेद का सार।
सुन सुन पापी हो गये, भवसागर से पार।।१७।।
एक दोय की क्या कहूँ, तारे सब संसार।
महिमा अकथ अपार है, कहते वेद पुकार।।१८।।
गुरूदेव संसार में, सत्य धर्म को मूल।
आन पंथ में जायकर, क्यों चाटे जग धूल।।१९।।
सेवा में सबसे बड़ी, गुरू सेवा को जान।
तन मन से सेवा करो, पावो पद निर्वाण।।२०।।
गुरू ब्रह्मा, गुरू विष्णु, गुरू महादेव जाण।
गुरूदेव पर ब्रह्म हैं, वेद साख परमाण।।२१।।
गुरू मंत्र का जाप करो, मन में रख विश्वास।
कभी दुख पावे नहीं, पूरे मन की आस।।२२।।
लाख योग जप तप करो, करो कोटि उपवास।
गुरूदेव के मंत्र बिन, होय न भव - भय नाश।।२३।।
गुरू देत हैं मंत्र को, देते सद्उपदेश।
जासे सब संशय मिटे, कलिमल कठिन कलेश।।२४।।
आप दुख सहते सहीं, करते पर उपकार।
सब जग तारण लेत हैं, बार बार अवतार।।२५।।
सुनलों सज्जन चेत कर, गुरू बताते भेद।
सरल सुपंथ बतायकर, जन का मेटे खेद।।२६।।
जब गुरू की होवे कृपा, मूरख हो गुणवान।
बाँझ पुत्र पावे सही, निर्धन हो धनवान।।२७।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

गुरू शरणागत जायकर, रख सत्य धरम की टेक।
सकल कामना सिद्ध हो, लगे रेख पर मेख।।२८।।
सत्य तेल दीपक भरा, ज्ञान की बाट बनाय।
धर्म की ज्योति जगाय के, सच्चा भेद बताय।।२९।।
रोग शोक संताप को, दिया गुरू ने खोय।
मंत्र देय पावन किया, ज्ञान उजाला जोय।।३०।।
तारे सब संसार को, फिर तेरा क्या एक।
गुरूदेव महिमा बड़ी, इसमें मीन न मेख।।३१।।
गुरू मंत्र का जप करो, गुरू शरणागत होय।
अमर होय काया तेरी, पुनर्जन्म नहीं होय।।३२।।
राग द्वेष रखते नहीं, नहीं मान अभिमान।
समदर्शी रहते सदा, देते विद्यादान।।३३।।
सत्य धर्म की स्थापना, करते बारम्बार।
चौरासी के चक्र से, जन को लेय उबार।।३४।।
गुरू गोविन्द दोनों खड़े, किसे नमाऊँ माथ।
कृपा भई गुरूदेव की, मिला हरी का साथ।।३५।।
जब होवे गुरू की कृपा, नर नारायण होय।
तीन लोक चौदह भुवन, पला न पकड़े कोय।।३६।।
बहुत कहे क्या लाभ है, थोड़े में ही जान।
गुरू बिना मिलता नहीं सच्चा पद निर्वाण।।३७।।
गुरूदेव नर रूप में, जग तारण जगदीश।
दास (मदन) विनती करे, दीजे शुभ आशीष।।३८।।
गुरू की महिमा यह लिखी, तुच्छ बुद्धि अनुसार।
भूल चूक जो होय सो, सज्जन लेय सुधार।।३९।।
गुरू चालीसा नित पढ़े, तन मन से चित लाय।
सकल कामना सिद्ध हो, सहज पार हो जाय।।४०।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

॥ गुरू आरती ॥

(१)

ऊँ जय गुरूदेव हरे, स्वामी जय गुरू देव हरे।
पूरण ब्रह्म अजन्मा, नित सुख वेद ररे।।ऊँ।।
शीतल शांत सदा इकरस, मन वाणी से परे। स्वामी.
कृपा कर वर दीजो, द्वितीया भाव जरे।।ऊँ।।
सबके प्रेरक सब के भीतर, सर्व रूप सदा। स्वामी.
नेति नेति श्रुति गावत, पावत नहीं भेदा।।ऊँ।।
तुम्हारो ध्यान धरत नित, ब्रह्मा विष्णु हरे। स्वामी.
सहंसर नाम उचारत, उपमा शेष करे।।ऊँ।।
पूजा पूजक पूज्य, रूप सब ही आप धारे। स्वामी.
तुम हो सबमें व्यापक, सबसे हो न्यारे।।ऊँ।।
प्रभु उपकार तुम्हारो, हमसे जाय न बरे। स्वामी.
तपते तेल से निकास्यों, ऐसी कृपा करे।।ऊँ।।
सब ज्योतिन की ज्योति, सूर्य चन्द्र तारे। स्वामी.
ले प्रकाश तुम्हारा, सब प्रकाश करे।।ऊँ।।
की कुछ भेंट तुम्हारी, मिलकर दास करे। स्वामी.
तुम्हारी भेंट तुम्हारे, हमसे कुछ ना सरे।।ऊँ।।
दासन दास थारी आरति, चरणाँ के बीच करे। स्वामी.
कृपा दृष्टि निहारो, सिर पर हाथ धरे।।ऊँ।।

(२)

जय गुरूदेव हरे, स्वामी जय गुरूदेव हरे।
भक्त जनन के संशय, क्षण में दूर करें।। जय गुरूदेव....
महापुरूष अवतारी, जग के हित आते। स्वामी ......
धर्म सनातन कहके, सबको समझाते।। जय गुरूदेव ....
गुरू ब्रह्मा, गुरू विष्णु, गुरू शिव कहलाते। स्वामी......
पार ब्रह्मा परमेश्वर, वेद शास्त्र गाते।। जय गुरूदेव....
पथ भ्रष्टों के पथ हो स्वामी, मारग दिखलाते। स्वामी....
गुरू मंत्र का जप कर, जग से तर जाते।। जय गुरूदेव.....
गुरू चरणों की सेवा, जो कोई मन लाते। स्वामी....
दास मदन की कथनी, वांछित फल पाते। जय गुरूदेव....

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

॥ श्री गणेश-स्तुति ॥

ॐ गजाननं भूतगणाधि सेवितम्, कपित्थजम्बू फल चारू भक्षणम्।
उमासुतं शोक विनाश कारकम्,नमामि विघ्नेश्वर पादपंकजम्।
सर्व विघ्न - विनाशाय सर्व कल्याणहेतवे,
पार्वती प्रिय पुत्राय गणेशाय नमो नमः॥

गाइये गणपति जगवंदन। शंकर - सुवन भवानी - नंदन।।१।।
सिद्धि-सदन, गज-बदन, विनायक। कृपा-सिंधु, सुंदर, सब-लायक।।२।।
मोदक-प्रिय, मुद-मंगल-दाता। विद्या-वारिधि, बुद्धि-विधाता।।३।।
मांगत तुलसीदास कर जोरे। बसहिं रामसिय मानस मोरे।।४।।

भावार्थ - सम्पूर्ण जगत् के वन्दनीय, गुणों के स्वामी श्री गणेशजी का गुणगान कीजिये, जो शिव-पार्वती के पुत्र और उनको प्रसन्न करने वाले हैं।।१।। जो सिद्धियों के स्थान हैं, जिनका हाथी का सा मुख है, जो समस्त विघ्नों के नाशक हैं यानि विघ्नों को हटाने वाले हैं, कृपा के समुद्र हैं, सुन्दर हैं, सब प्रकार के योग्य हैं।।२।। जिन्हें लड्डू बहुत प्रिय हैं, जो आनन्द और कल्याण के देने वाले हैं, विद्या के अथाह सागर हैं, बुद्धि के विधाता है।।३।। ऐसे श्री गणेशजी से यह तुलसीदास हाथ जोड़कर केवल यही वर माँगता है कि मेरे मनमंदिर में श्री सीतारामजी सदा निवास करें।।४।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.
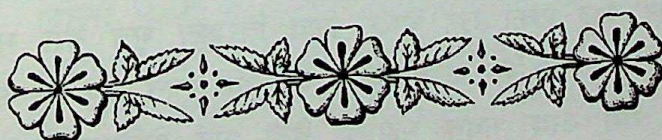
॥ श्री गणेश चालीसा ॥

दोहा- **बुद्धिभरण अशरण शरण, हरण अमंगल जाल।**
सिद्धिसदन करिवर बदन, जय जय गिरजा लाल॥

॥चौपाई॥

जय गणेश गणपति गजराजू, मंगल भरन करन शुभकाजू॥
जय गजवदन सुख-दाता, विश्वविनायक बुद्धि विधाता॥
वक्र तुण्ड शुचि शुण्ड सुहावन, तिलक त्रिपुण्ड भाल मनभावन।
राजित मणि मुक्तन उर माला, स्वर्ण मुकुट शिर नयन विशाला॥
पुस्तक पाणि कटार त्रिशूला, मोदक भोग सुगन्धित फूला।
सुन्दर पीताम्बर तन साजित, चरण पादुका मुनि मन राजित॥
धनि शिव सुवन षड़ानन भ्राता, गौरी ललन विश्वविख्याता।
ऋद्धि सिद्धि तव चँवर सुढ़ारे, मूषक वाहन सोहत द्वारे॥
कहौं जन्म शुभ कथा तुम्हारी, अति शुचि पावन मंगलकारी।
एक समय गिरिराज कुमारी, पुत्र हेतु तप कीन्हो भारी॥
बन्यो बदन मैल की मूरति, अति छविवन्त मोहिनी सूरति।
सो द्वारे ड्योढी पर लाई, द्वारपाल करितुहिं बैठाई॥
असुर एक शिव रूप बनावै, छल करनी हित घात लगावै।
ताहि समय शंकर जो आयो, बिनु पहचान जान नहीं पायो॥
पूछहीं शिव तुम केहि के लाला, बोलत मैं तुम वचन रसाला।
मैं गिरिजासुत तुमहिं बतावत, बिनु चिन्हें कोउ जान न पावत॥
भवन धरों जनि पांव उभारी, अहै कौन पहिचान तुम्हारी।
आवहिं मातु बूझि तब जाओ, बालक से जनि रारि बढ़ाओ॥
धर्‍या शम्भु जब पावँ अगारी, मच्यो तुरत सरवर तब भारी।
तत्क्षण कछु शंका उर धारी, शिव तिरशूल भूल बस मारी॥
सिरस फूल सम शिर कटि गयऊ, चट उड़ि गगन लोप तहँ भयऊ।
शम्भु गये अब भवन मंझारी, बैठी जहं गिरिराज कुमारी॥

कहन लगे शिव मन सकुचाये, कहो सती सुत कहं ते जाये।
तुरतहिं कथा प्रकट हवै सारी, करी सोच गिरिजा मन भारी।।
कियो न भल स्वामी तुम जाओ, लाओ सुवन जहां से पाओ।
चले तुरत सुनि शिव विज्ञानी, चट इक हस्ती के शिर आनी।।
धड़ ऊपर थापित कर दीन्हें, प्राणवायु संचालन कीन्हें।
नाम 'गणेश' शम्भु तब कीन्हें, बनहु बुद्धि निधि अस वर दीन्हें।।
प्रथम पूज्य तुम हो सुख दाता, अति शुचि विद्या बुद्धि सुज्ञाता।
नाम तुम्हार प्रथम लै कोई, कारज करै सकल सिद्ध होई।।
तुम सुमिरत सुख सम्पति नाना, तुम्हें बिसारे नहिं कल्याना।
तुम्हरो शाप आज जग अंकित, चौथ मयंक भयो कलंकित।।
बुद्धि परीक्षा तुहिं शिव कीन्हा, पृथ्वी क़र प्रदक्षिण लीन्हा।
चले षडानन भूमि भुलाई, रचे बैठी तुम बुद्धि उपाई।।
'राम' नाम लिखि महि पर अंका, सात भँवर दी करी नहिं शंका।
धनि गणेश कहि शिव मन हर्षे, नभते सुरन सुमन बहु वर्षे।
तुम्हरी महिमा बुद्धि बड़ाई, शेष सहस्त्रमुख सकै न गाई।
मै मति हीन मलीन दुखारी, करों कौन विधि विनय तुम्हारी।।
भजन राम सुन्दर प्रभु दासा, लग प्रयाग मकरा दुर्वासा।
अब प्रभु दया दीन पर कीजै, अपनी भक्ति शक्ति कछु दीजै।।

दोहा - श्री गणेश यह चालीसा, पाठ करै धरि ध्यान,
नित नव मंगल - गृह लहै, मिलै जगत सन्मान।
दुई सहस्र सन विक्रमी, कृष्ण भाद्रतिथिगंग,
पूरण चालीसा भयो, सुन्दर भक्ति अभंग।

आग चकमक में है, जैसे हवा गगन में,
लाली मेंहदी के पात में, महक है सुमन में।
मक्खन ज्यों दही में, पुतली ज्यों नयन में,
यूँ बसो प्रभु सभी, प्राणियों के मन में।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

॥ श्री गणपति आरती ॥

दुन्दाला दुःख भंजना, सदा उजाला भेष।
सबसे पहले सुमरिये, गौरी-पुत्र गणेश॥
गौरी नन्दन गुण सदन, देवन के देवेश।
जंगल में मंगल करो, हर्ता विघ्न-कलेश॥

जै गणेश जै गणेश, जै गणेश देवा।
माता जाँकी पार्वती, पिता महादेवा॥ जै गणेश ....
लड्डुवन को भोग लगे, संत करें सेवा।
पान चढ़े पुष्प चढ़े, और चढ़े मेवा॥ जै गणेश ....
एक दन्त दयावन्त चार भुजाधारी।
मस्तक सिन्दूर सोहे, मूसे की सवारी॥ जै गणेश ....
अन्धन को आँख देत, कोढ़ियन को काया।
बांझन को पुत्र देत, निर्धन को माया॥ जै गणेश ....
दीनन की लाज राखो, शंभु-सुत हमारी।
कामना को पूरी करो, जाऊँ बलिहारी। जै गणेश ....
जय गणेश जय गणेश, जय गणेश देवा।
विघ्न विनाशक स्वामी, सुख सम्पत्ति देवा। जै गणेश ....
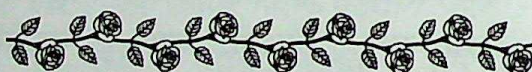
सुमति कुमति सबकें उर रहहिं। नाथ पुरान निगम अस कहहिं॥
जहाँ सुमति तहँ, संपति नाना। जहाँ कुमति तहँ विपत्ति निदाना॥

पुराण और वेद ऐसा कहते हैं कि कुबुद्धि और सुबुद्धि सबके हृदय में रहती हैं। जहाँ सुबुद्धि है वहाँ सब प्रकार की धन-सम्पत्ति है एवं जहाँ कुबुद्धि है, वहाँ परिणाम में विपत्तियाँ हैं।

॥ आरती श्री गणेशजी की ॥

गणपति की सेवा मंगल मेवा सेवा से विघ्न टरै।
तीन लोक तैंतीस देवता द्वार खड़े सब अर्ज करै। टेर।

ऋद्धि-सिद्धि दक्षिण बाम बिराजे अरू आनन्द सो चवर करें।
धूप दीप और लिये आरती भक्त खड़े जयकार करें। गणपति।
गुड़ के मोदक भोग लगत हैं, मुषक वाहन चढ़ा करै।
सौम्य रूप से ये गणपति को बिघ्न विभाज्या दूर परै। गणपति।
भादोमास और शुक्ल चतुर्थी दिन दोपेरा दूर परे।
लियो जन्म गणपति प्रभुजी सुनि दुर्गा मन आनन्द भरे। गणपति।
अद्भुत बाजा बजा इन्द्र का देववधू जहं गान करै।
श्री शंकर के आनन्द उपज्यो नाम सुने सब विघ्न टरै। गणपति।
आनि विधाता बैठे आसन इन्द्र अप्सरा निरत करै।
देख वेद ब्रह्माजी जाको विघ्नविनायक नाम धरै। गणपति।
एक दन्त गजवदन विनायक त्रिनयन रूप अनूप धरै।
पग थम्बासा उदर पुष्ट है, देख चन्द्रमा हास्य करै। गणपति।
दे शराप श्री चन्द्र देव को कला हीन तत्काल करै।
चौदह लोक में फिरै गणपति तीन भुवन में राज्य करै। गणपति।
उठ प्रभात जब करै ध्यान कोई ताके कारज सर्व सरै।
पूजा काल गावै आरती ताके शिर यश छत्र फिरै। गणपति।
गणपति की पूजा पहले करनी काम सभी निर्विघ्न सरै।
भक्तगण गणपतिजी की हाथ जोड़ स्तुति करै।
गणपति की सेवा मंगल मेवा सेवा से विघ्न टरै। गणपति।

धीरज, धर्म, मित्र, अरू नारी। आपद काल परिखि अहिं चारी॥

धैर्य, धर्म, मित्र और स्त्री इन चारों की विपत्ति के समय ही परीक्षा होती है।

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

॥ श्री विष्णु वन्दना ॥

यस्य स्मरणमात्रेण जन्मसंसार बन्धनात्,
विमुच्यते नमस्तस्मै विष्णवे प्रभविष्णवे।
नमः समस्त भूतानामादि भूताय भूभृते,
अनेक रूपाय विष्णवे प्रभविष्णवे॥

अर्थात्- जिनके स्मरण मात्र से मनुष्य जन्म मृत्युरूप संसार बन्धन से मुक्त हो जाता है, सबकी उत्पत्ति के कारण भूत उन भगवान विष्णु को नमस्कार है। सम्पूर्ण प्राणियों के आदिभूत, पृथ्वी को धारण करने वाले अनेक रूपधारी और सर्वसमर्थ भगवान विष्णु को प्रणाम है।

सशंख चक्रं सकिरीटकुण्डलं, सपीतवस्त्रम सरसीरूहेक्षणम्।
सहारवक्षःस्थलकौस्तुभश्रियं, नमामि विष्णुं शिरसा चतुर्भुजम्॥

अर्थात् - (हिन्दी काव्य रूपान्तर)

शोभित चारों भुजा सुदर्शन शंख-गदा-सर सिज से युक्त।
रूचिर किरीट, सुभग पीताम्बर, कमल नयन शोभा संयुक्त॥
चिन्ह विप्र पद का वक्षस्थल पर, कौस्तुभमणि गल मंजुल हार।
परम सुखद श्री विष्णु चरण, वन्दन करता हूं बारम्बार॥

अर्थात्- भगवान शंख और चक्र धारण किये हुये हैं, उनके मस्तक पर सुन्दर किरीट-मुकुट और कानों में कुण्डल हैं, वे पीताम्बर पहने हुए हैं, नेत्र कमलदल के सदृश कोमल, विशाल और खिले हुये हैं, वक्षःस्थल पर कौस्तुभमणि, रत्नों का चन्द्रहार और श्रीवत्स का चिन्ह सुशोभित है, ऐसे चतुर्भुज भगवान विष्णु को सिर झुका कर प्रणाम करता हूँ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं ।
विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभांगम् ।।
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं ।
वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम् ।।

अर्थ- जिनकी आकृति अतिशय शान्त है, जो शेषनाग की शैय्या पर शयन किये हुए हैं, जिनकी नाभि में कमल है, जो देवताओं का भी ईश्वर और सम्पूर्ण जगत् का आधार हैं, जो आकाश के सदृश सर्वत्र व्याप्त हैं, नीलमेघ के समान जिनका वर्ण है, अतिशय सुन्दर जिनके सम्पूर्ण अंग हैं, जिन्हे योगियों द्वारा ध्यान करके प्राप्त किया जाता है, जो सम्पूर्ण लोकों के स्वामी हैं, ऐसे श्री लक्ष्मीपति कमलनेत्र विष्णु भगवान को मैं प्रणाम करता हूँ।

।। श्रीमन् नारायण भजन ।।

श्रीमन् नारायण नारायण नारायण
भज मन नारायण नारायण नारायण।१। श्री.
लक्ष्मीनारायण नारायण श्री सत्यनारायण नारायण ।२। श्री.
वेद पुराण भागवत गीता बाल्मीकि जी की रामायण।३। श्री.
चारों वेद पुराण अष्टदश वेद व्यास जी की पारायण।४। श्री.
शिवसनकादि आदि ब्रह्मादिक सुमिर-२ भए पारायण।५। श्री.
श्यामल गात पिताम्बर सोहे विप्र चरण उर धारायण।६। श्री.
नारायण के चरण कमल पर कोटि काम छबि वारायण।७। श्री.
शंख चक्र गदा पद्म विराजे गल कौस्तुभ मणि धारायण।८। श्री.
खम्भ फाड़ हिरणाकुश मार्‌यो भक्त “प्रहलाद” उबारायण।९। श्री.
गज और ग्राह लड़े जल भीतर लड़त लड़त गज हारायण।१०। श्री.
जो भर सूंड रही जल बाहर, तब हरिनाम उचारायण।११। श्री.
जल डूबत गजराज उबार्‌यो, चक्र सुदर्शन धारायण।१२। श्री.
सरयू के तीरे अयोध्या नगरी, रामचन्द्र अवतारायण।१३। श्री.
मोर मुकुट मकराकृत कुण्डल, अद्भुत शोभा धारायण।१४। श्री.

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

सरयू के तीरे तुरंग नचावे, धनुषबाण हरि धारायण।१५। श्री.
कोमल गात पिताम्बर सोहे, उर वैजन्ती धारायण।१६। श्री.
माता-पिता की आज्ञा पाई, चित्रकूट पग धारायण।१७। श्री.
सागर ऊपर शिला तिराई, कपिदल पार उतारायण।१८। श्री.
रावण के दस मस्तक छेदे, राज विभीषण पारायण।१९। श्री.
राम रूप होय रावण मार्‌यो, भक्त विभीषण तारायण।२०। श्री.
यमुना तीरे मथुरा नगरी, श्रीकृष्ण अवतारायण।२१। श्री.
मथुरा में हरि जन्म लियो है, गोकुल में पग धारायण।२२। श्री.
बाल समय हरि पूतना मारी, जननी की गति पारायण।२३। श्री.
बालपने मुख माटी खाई, तीन लोक दरशारायण।२४। श्री.
मातु यशोदा ऊखल बांध्यो, यमलार्जुन हरि तारायण।२५। श्री.
मोर मुकुट पिताम्बर सोहे, श्रवणन कुण्डल धारायण।२६। श्री.
यमुना के तीरे धेनु चरायी, मुख पर मुरली धारायण।२७। श्री.
पैठि पाताल कालियो नाथ्यो, फन-फन निरत करायण।२८। श्री.
वृन्दावन में रास रच्यो है, सहस्त्र गोपी एक नारायण।२९। श्री.
इन्द्र कोप कियो ब्रज ऊपर, बर्षत मूसल धारायण।३०। श्री.
डूबतहि ब्रज राख लियो है, नख पर गिरवर धारायण।३१। श्री.
माता-पिता की बन्दी छुड़ाई, मामा कंस को मारायण।३२। श्री.
कृष्ण रूप होय कंस पछाड़्यो, उग्रसेन कुल तारायण।३३। श्री.
द्रुपद सुता को चीर बढ़ायो, दुष्ट दुशासन हारायण।३४। श्री.
दुर्योधन घर मेवा त्यागे, साग विदुर घर पारायण।३५। श्री.
शबरी के बेर सुदामा के तन्दुल, रूचि रूचि भोग लगारायण।३६। श्री.
सुत को नाम अजामिल लीन्यो, नाम लेत अवतारायण।३७। श्री.
अजामिल, गज, गणिका तारी, ऐसे पतित उधारायण।३८। श्री.
जो कोई भक्ति करे माधव की, मातु पिता कुल तारायण।३९। श्री.
श्री सत्यनारायण नाम लेत ही, पाप होत सब नाशायण।४०। श्री.
माधवदास आस रघुवर की, भवसागर से पारायण।४१। श्री.

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

।। जगत के पालनहार- भगवान विष्णु।।

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

यस्य स्मरणमात्रेण जन्म संसार बन्धनात्,
विमुच्यते नमस्तस्मै विष्णवे प्रभविष्णवे।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

।। आरती श्री सत्यनारायणजी की ।।

ऊँ जय लक्ष्मीरमणा, जय श्री लक्ष्मीरमणा।
सत्यनारायण स्वामी, जन - पातक - हरणा।।जय.।। टेर।।
रत्नजड़ित सिंहासन अद्भुत छवि राजै।
नारद करत निराजन, घंटा ध्वनि बाजै।। जय.।।
प्रकट भये कलि कारण, द्विज को दरस दियो।
बूढ़ो ब्राह्मण बनकर, कंचन महल कियो।। जय.।।
दुर्बल भील कठारो, जिन पर कृपा करी।
चन्द्रचूड़ एक राजा, जिनकी विपति हरी।। जय.।।
वैश्य मनोरथ पायो, श्रद्धा तज दीन्ही।
सो फल भोग्यो प्रभुजी फिर स्तुति कीन्ही।। जय.।।
भाव भक्ति के कारण, छिन-छिन रूप धर्‌यो।
श्रद्धा धारण कीनी, तिनको काज सर्‌यो।। जय.।।
ग्वाल-बाल संग राजा बन में भक्ति करी।
मनवांछित फल दीन्हों, दीनदयालु हरी। जय.।।
चढ़त प्रसाद सवायो, कदली फल मेवा।
धूप - दीप - तुलसी से राजी सत्यदेवा।। जय.।।
श्री सत्यनारायण स्वामीजी की आरती जो कोई नर गावै।
तन-मन-सुख-सम्पत्ति मनवांछित फल पावै।। जय.।।

यदि चमगादड़ या उल्लू को सूर्य का प्रकाश नहीं दिखायी देता और वे सूर्य के अस्तित्व को अस्वीकार कर देते हैं, तो क्या इससे सूर्य का अस्तित्व समाप्त हो जायेगा ? ऐसी ही बात ईश्वर एवं आत्मा के अस्तित्व के सम्बन्ध में भी मानी जाये।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

॥ श्री जगदीश्वर जी की स्तुति ॥

ओऽम जय जगदीश हरे, प्रभु ! जय जगदीश हरे।
भक्त जनों के संकट, क्षण में दूर करे। ओऽम
जो ध्यावै फल पावै, दुख बिनसै मन का। प्रभु....
सुख सम्पत्ति घर आवै, कष्ट मिटै तन का। ओऽम
मात - पिता तुम मेरे, शरण गहूँ मैं किसकी। प्रभु...
तुम बिन और न दूजा, आस करूँ जिसकी। ओऽम
तुम पूरण परमात्मा, तुम अन्तर्यामी। प्रभु....
पारब्रह्म परमेश्वर, तुम सबके स्वामी। ओऽम
तुम करूणा के सागर, तुम पालन - कर्ता। प्रभु....
मैं मूरख खल कामी, कृपा करो भर्ता ओऽम
तुम हो एक अगोचर, सबके प्राणपती। प्रभु...
किस विधि मिलूँ दयामय ! तुमको मैं कुमती। ओऽम
दीनबन्धु दुखहर्ता, तुम ठाकुर मेरे। प्रभु....
अपने हाथ उठाओ, द्वार पड़ा तेरे। ओऽम
विषय विकार मिटाओ, पाप हरो देवा। प्रभु...
श्रद्धा - भक्ति बढ़ाओ, संतन की सेवा। ओऽम
तन, मन, धन सब कुछ है तेरा। प्रभु...
तेरा तुझको अर्पण, क्या लागे मेरा। ओऽम
श्री जगदीश स्वामी जी की आरती जो कोई नर गावे। प्रभु...
कहत शिवानन्द स्वामी, सुख सम्पत्ति पावे। ओऽम

एक भगवत्तत्व अथवा परमतत्व ही वास्तविक तत्व है। उसके सिवा सब अतत्व है। तत्व वह है जो अविनाशी है, शाश्वत है – ऐसा केवल भगवत्तत्व ही है।

"भगवान के विधान में 'अशुभ' नाम की कोई वस्तु नहीं है, बल्कि है केवल शुभ या उसके लिये तैयारी।" – श्री अरविन्द

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

॥ आरती श्री बैकुण्ठनाथ भगवान की ॥

जय कमला कान्ता, प्रभु जय श्री लक्ष्मी कान्ता
शरणागत रक्षन्ता, बैकुण्ठ भगवन्ता। ॐ जय कमला.।
दिव्य देश गंगा तट सुन्दर मन्दिर अति सोहे। प्रभु मंदिर.
निरख निरख छवि सुन्दर, मुनि जन मन मोहे। ॐ जय कमला.।
श्याम स्वरूप मनोहर शोभा, पीत बसनधारी। प्रभु पीत.
मुख शोभा शशि मंडल मन्द हंसी प्यारी। ॐ जय कमला.।
शीश मुकुट मकराकृत कुण्डल अद्भुत छवि राजे। प्रभु अद्भुत.
मस्तक तिलक विराजे बन माला साजै। ॐ जय कमला.
शंख चक्र गदा पद्म विराजे, महिमा अति भारी। प्रभु महिमा.
मणिमुक्ता बाजूबन्द, कंकण सुखकारी। ॐ जय कमला.
हृदय कमल बीच लक्ष्मी, कटि में करधनी राज रही। प्रभु कटि.
चरणन में नुपुरध्वनि, छमछम बाज रही। ॐ जय कमला.
श्रीदेवी भूदेवी संग में, पंकज मुख सोहे। प्रभु पंकज.
कर दरशन मन परसन, भक्तन मन मोहे। ॐ जय कमला.
मणि सिंहासन राजे चितवन कोमल सुखकारी। प्रभु कोमल.
शेषनाग फन उपर, छत्र कियो भारी। ॐ जय कमला.
जय और विजय पोलिया ठाढ़े, अलियन चँवर ढुरे। प्रभु सखियन.
सनकादिक नारदमुनि शारद ध्यान धरे। ॐ जय कमला.
दीन दयाल दयानिधि प्रभु तुम भक्तन हितकारी। प्रभु तुम.
शरणागत प्रतिपालक, भवबंधन हारी। ॐ जय कमला.
जय-जय-सब जगपालक, भगवन हो अन्तर्यामी। प्रभु हो.
सत्य स्वरूप दयामय, करूणानिधि स्वामी। ॐ जय कमला.
आरती श्री बैकुण्ठ नाथ जी की जो कोई नर गासी। प्रभु जो.
मनवांछित वर पासी छूटत लख चौरासी। ॐ जय कमला.
जय कमला कान्ता, प्रभु जय श्री लक्ष्मी कान्ता। प्रभु जय.
शरणागत रक्षन्ता, बैकुण्ठ भगवन्ता। ॐ जय कमला.।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

॥ श्री विष्णुशतनामस्तोत्रम् ॥

ॐ वासुदेवं हृषीकेशं वामनं जलशायिनम् ।
जनार्दनं हरि कृष्णं श्रीवक्षं गरूडध्वजम् ।
बाराहं पुण्डरीकाक्षं नृसिंहं नरकान्तकम् ।
अव्यक्तं शाश्वतं विष्णुंमनन्तमजमव्ययम् ।
नारायणं गदाध्यक्षं गोविन्दं कीर्तिभाजनम् ।
गोवर्धनोद्धरं देवं भूधरं भुवनेश्वरम् ।
वेत्तारं यज्ञपुरूषं यज्ञेशं यज्ञवाहकम् ।
चक्रपाणिं गदापाणिं शंखपाणिं नरोत्तमम् ।
वैकुण्ठं दुष्टदमनं भूगर्भं पीतवाससम् ।
त्रिविक्रमं त्रिकालज्ञं त्रिमूर्तिं नन्दकेश्वरम् ।
रामं रामं हयग्रीवं भीमं रौद्रं भवद्‌भवम् ।
श्रीपतिं श्रीधरं श्रीशं मंगलं मंगलायुधम् ।
दामोदरं दमोपेतं केशवं केशिसूदनम् ।
वरेण्यं वरदं विष्णुमानन्दं वसुदेवजम् ।
हिरण्यरेतसं दीप्तं पुराणां पुरूषोत्तमम् ।
सकलं निष्कलं शुद्धं निर्गुणं गुणशाश्वतम् ।
हिरण्यतनुसंकाशं सूर्यापुतसमप्रभम् ।
मेघश्यामं चतुर्बाहुं कुशलं कमलेक्षणम् ।
ज्योतिरूपमरूपं च स्वरूपं रूपसंस्थितम् ।
सर्वज्ञं सर्वरूपस्थं सर्वेशं सर्वतोमुखम् ।
ज्ञानं कूटस्थमचलं ज्ञानदं परमं प्रभुम् ।
योगीशं योगनिष्णातं योगिनं योगरूपिणम् ।
ईश्वरं सर्वभूतानां वन्दे भूतमयं प्रभुम् ।
इति नामशतं दिव्यं वैष्णवं खलु पापहम् ।
व्यासेन कथितं पूर्व सर्वपापप्रणाशनम् ।
यः पठेत्प्रातरूत्थाय स भवेद्वैष्णवो नरः ।
सर्वपापविशुद्धात्मा विष्णुसायुज्यमाप्नुयात् ।
चान्द्रायणसहस्राणि कन्यादानशतानि च ।
गवां लक्षसहस्राणि मुक्तिभागी भवेन्नरः ।
अश्वमेधायुतं पुण्यं फलं प्राप्नोति मानवः ।
॥ इति श्री विष्णुशतनामस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

॥ श्री राम दरबार ॥

दक्षिणे लक्ष्मणो यस्य वामे च जनकात्मजा ।
पुरतो मारूतिर्यस तं वन्दे रघुनन्दम ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

॥ 'राम नाम' का जीवन में महत्व ॥

पार्वतीजी ने एक बार शिवजी से पूछा- "महाराज! आप राम नाम इतना लेते हैं और इसका इतना महात्म्य बतलाते हैं, संसार के लोग भी तो इस नाम को रटते हैं, फिर क्या कारण है कि उनका उद्धार नहीं होता ?" महादेवजी बोले- "उनका राम नाम की महिमा में विश्वास नहीं है"। वे परीक्षा के लिये काशी के एक घाट पर बैठ गये, जहाँ से लोग रामनाम रटते हुये गंगास्नान करके लौटते थे। महादेवजी एक कीचड़ भरे गड्ढे में गिर पड़े और पार्वतीजी ऊपर बैठी रही। जो भी व्यक्ति उस मार्ग से निकलता पार्वतीजी उससे कहती- "मेरे पति को गड्ढे से निकाल दो"। जो निकालने जाता उससे कहती- "जो निष्पाप हो वही निकाले, अन्यथा भस्म हो जायगा।" इस प्रकार एक पर एक लोग आते और शर्त सुनकर वापस लौट जाते। शाम हो गई, पर कोई निष्पाप निकालने वाला न मिला। अन्त में गोधूलि बेला में गंगास्नान करके एक व्यक्ति आया और रामनाम रटता हुआ वहाँ पहुंचा। वह निकालने के लिये बढ़ा तो पार्वतीजी ने कहा कि निष्पाप व्यक्ति होना चाहिये। इस पर वह बोला- गंगा स्नान कर चुका हूं और राम नाम ले रहा हूं, फिर भी पाप लगा है ? पाप तो एक बार राम के नाम स्मरण से ही छूट जाता है। मैं सर्वथा निष्पाप हूं और मैं इस व्यक्ति को निकालूंगा। ठीक इसी प्रकार हम हैं। गंगास्नान करते हैं, राम नाम लेते हैं, परन्तु हम सर्वथा निष्पाप नहीं हैं, क्योंकि नाम में हमारी पूर्ण आस्था नहीं है। जितनी शक्ति नाम में पाप नाश की है, उतनी शक्ति तो महापापी में पाप करने की भी नहीं है। नाम अन्तःकरण को मधुमय, प्रकाशमय और आनन्दमय बना देता है।

"राम नाम" गोपनीय मन्त्र है। इसका मूल्य लोग अपने ज्ञान और दृष्टि के अनुसार ही लगाते हैं। मणि का गुण सब्जी बेचने वाला नहीं जान सकता, उसका मूल्य तो जौहरी ही लगा सकता है। जिसकी जितनी पहुंच है उतना ही अधिक मूल्यवान उसके लिये राम नाम है। राम नाम की अनन्त महिमा है। नाम महिमा का वर्णन सहस्त्र जिह्वा के शेष नाग भी नहीं गा सके। फिर अन्यों की तो बात ही नहीं कही जा सकती।

"राम" शब्द में तीन अक्षरों का समावेश है-

र + आ + म = राम

र– अक्षर सूर्य की शक्ति रखता है।
आ– अक्षर अग्नि की शक्ति रखता है।
म– अक्षर चन्द्रमा की शक्ति रखता है।

अर्थात्- "राम" शब्द के अन्दर सूर्य, चन्द्र और अग्नि की शक्ति निहित है। राम नाम के जापक को तीनों शक्तियों का महान तत्व प्राप्त होता है। सूर्य ज्ञान को उत्पन्न करता है, अग्नि पाप का नाश करती है एवं चन्द्रमा अमरत्व प्रदान करता है। इस तरह केवल एक "राम" के नाम द्वारा अनन्त तत्व की प्राप्ति हो जाती है।

राम - राम के दो अक्षर में क्या जाने क्या बल है।
नामोच्चारण से ही मन का धुल जाता सब मल है।
गद्गद् होता कण्ठ, नयन से स्त्रवित होता जल है।
पुलकित होता हृदय, ध्यान आता प्रभु का पल पल है।।
यही चाह है नाथ ! नाम जप का यह तार न टूटे।
सब छूटे तो छूटे प्रभु ! तेरा ध्यान कभी न छूटे।।

लेखक - **कैलाश चन्द्र अग्रवाल**

जिसकी गांठ में राम हैं, उसके पास सब सिद्धियाँ हैं। उसके आगे अष्ट सिद्धि और नौ निधि हाथ जोड़े खड़ी रहती हैं।

卐 कल और आज 卐

रामराज्य में दूध की नदियाँ बहती थी
लोग केवल पीते ही नहीं, नहाते भी थे
कृष्ण काल में मक्खन पेट भर खाते थे
कलिकाल में परम्परा निभा रहे हैं
अब मक्खन को खाते नहीं लगा रहे हैं
हुजूर के हरम में जी हुजूरी अलापे जा रहे हैं
त्रेता सतयुग में भरे दूध दही के ताल
कलियुग में घी सूंघकर गुजर करें गोपाल

।। श्री राम स्तुति ।।

।। श्री रामचन्द्राय नमः।।

नीलाम्बुजश्यामल कोमलांगं, सीतासमारोपितवामभागम्।
पाणौ महासायकचारूचापं, नमामि रामं रघुवंशनाथम्।।

भावार्थ—नीले कमल के समान श्याम और कोमल जिनके अंग हैं, श्री सीताजी जिनके बायें भाग में विराजमान हैं और जिनके हाथों में अमोघ बाण और सुन्दर धनुष हैं, उन रघुवंश के स्वामी श्री रामचन्द्रजी को मैं नमस्कार करता हूँ।

राम नाम की लूट है, जो लूट सके, तो लूट ।
अन्त काल पछतायेगा, प्राण जायेंगे छूट ।।

राम नाम रटते रहो, जब लगि घट में प्रान ।
कबहुँ तो दीनदयाल के, भनक पड़ेगी कान ।।

राम नाम सो ही जानिये, जो रमता सकल जहान ।
घट घट में जो रम रहा, उसे राम पहचान ।।

मो सम दीन न दीन हित तुम्ह समान रघुबीर ।
अस बिचारि रघुबंश मनि, हरहु विषम भव भीर ।।

चित्रकूट के घाट पर, भई सन्तन की भीर ।
तुलसीदास चन्दन घिसे, तिलक करें रघुवीर ।।

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

॥ रामरक्षास्तोत्रम् ॥

''रामरक्षाकवच'' की सिद्धि की विधि

नवरात्रा में प्रतिदिन नौ दिनों तक ब्रह्म-मुहूर्त में नित्यकर्म तथा स्नानादि से निवृत्त हो शुद्ध वस्त्र धारण कर कुशा के आसन पर सुखासन लगाकर बैठ जाइये। भगवान श्री राम के कल्याणकारी स्वरूप में चित्त को एकाग्र करके इस महान् फलदायी स्तोत्र का कम से कम ग्यारह बार और यदि यह न हो सके तो सात बार नियमित रूप से प्रतिदिन पाठ कीजिये। पाठ करने वाले को श्री राम की शक्तियों के प्रति जितनी अखण्ड श्रद्धा होगी, उतना ही फल प्राप्त होगा। वैसे "रामरक्षाकवच" कुछ लंबा है, पर इस संक्षिप्त रूप से भी काम चल सकता है। पूर्ण शान्ति और विश्वास से इसका जाप होना चाहिये, यहाँ तक कि कण्ठस्थ हो जाय।

विनियोग :

अस्य श्रीरामरक्षास्तोत्रमन्त्रस्य बुधकौशिक ऋषिः श्री सीतारामचन्द्रो देवता अनुष्टुप् छन्दः सीता शक्तिः श्रीमान् हनुमान् कीलकं श्री रामचन्द्रप्रीत्यर्थे रामरक्षास्तोत्रजपे विनियोगः।

ध्यानम्

ध्यायेदाजानुबाहुं धृतशरधनुषं बद्धपद्मासनस्थं
पीतं वासो वसानं नवकमलदलस्पर्धिनेत्रं प्रसन्नम्।
वामांकारूढसीतामुखकमलमिलल्लोचनं नीरदाभं
नानालंकारदीप्तं दधतमुरूजटामण्डलं रामचन्द्रम्॥

॥ स्तोत्रम् ॥

चरितं रघुनाथस्य शतकोटिप्रविस्तरम्।
एकैकमक्षरं पुंसां महापातकनाशनम्॥१॥

ध्यात्वा नीलोत्पलश्यामं रामं राजीवलोचनम्।
जानकीलक्ष्मणोपेतं जटामुकुटमण्डितम्॥२॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

सासितूणधनुर्बाणपाणिं नक्तंचरान्तकम्।
स्वलीलया जगत्त्रातुमाविर्भूतमजं विभुम्॥३॥

रामरक्षां पठेत्प्राज्ञः पापघ्नीं सर्वकामदाम्।
शिरो मे राघवः पातु भालं दशरथात्मजः॥४॥

कौसल्येयो दृशौ पातु विश्वामित्रप्रियः श्रुती।
घ्राणं पातु मखत्राता मुखं सौमित्रिवत्सलः॥५॥

जिह्वां विद्यानिधिः पातु कण्ठं भरतवन्दितः।
स्कन्धौ दिव्यायुधः पातु भुजौ भग्नेशकार्मुकः॥६॥

करौ सीतापतिः पातु हृदयं जामदग्न्यजित्।
मध्यं पातु खरध्वंसी नाभिं जाम्बवदाश्रयः॥७॥

सुग्रीवेशः कटी पातु सक्थिनी हनुमत्प्रभुः।
ऊरू रघूत्तमः पातु रक्षःकुलविनाशकृत्॥८॥

जानुनी सेतुकृत्पातु जंघे दशमुखान्तकः।
पादौ विभीषणश्रीदः पातु रामोखिलं वपुः॥९॥

एतां रामबलोपेतां रक्षां यः सुकृती पठेत्।
स चिरायुः सुखी पुत्री विजयी विनयी भवेत्॥१०॥

पातालभूतलव्योमचारिणश्छद्मचारिणः।
न द्रष्टुमपि शक्तास्ते रक्षितं रामनामभिः॥११॥

रामेति रामभद्रेति रामचन्द्रेति वा स्मरेन्।
नो न लिप्यते पापैर्भुक्तिं मुक्तिं च विन्दति॥१२॥

जगज्जैत्रैकमन्त्रेण रामनाम्नाभिरक्षितम्।
यः कण्ठे धारयेत्तस्य करस्थाः सर्वसिद्धयः॥१३॥

वज्रपञ्जरनामेदं यो रामकवचं स्मरेत्।
अव्याहताज्ञः सर्वत्र लभते जयमंगलम्॥१४॥

आदिष्टवान्यथा स्वप्ने रामरक्षामिमां हरः।
तथा लिखितवान्प्रातः प्रबुद्धो बुधकौशिकः॥१५॥

आरामः कल्पवृक्षाणां विरामः सकलापदाम्।
अभिरामस्त्रिलोकानां रामः श्रीमान्स नः प्रभुः॥१६॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

तरूणौ रूपसम्पन्नौ सुकुमारौ महाबलौ।
पुण्डरीकविशालाक्षौ चीरकृष्णाजिनाम्बरौ ॥१७॥

फलमूलाशिनौ दान्तौ तापसौ ब्रह्मचारिणौ।
पुत्रौ दशरथस्यैतौ भ्रातरौ रामलक्ष्मणौ ॥१८॥

शरण्यौ सर्वसत्त्वानां श्रेष्ठौ सर्वधनुष्मताम्।
रक्षःकुलनिहन्तारौ त्रायेतां नो रघूत्तमौ ॥१९॥

आत्तसज्जधनुषाविषुस्पृशावक्षयाशुगनिषंगसंगिनौ।
रक्षणाय मम रामलक्ष्मणावग्रतः पथि सदैव गच्छताम ॥२०॥

संनद्धः कवची खड्गी चापबाणधरो युवा।
गच्छन्मनोरथान्नश्च रामः पातु सलक्ष्मणः ॥२१॥

रामो दाशरथिः शूरो लक्ष्मणानुचरो बली।
काकुत्स्थः पुरूषः पूर्णः कौसल्येयो रघूत्तमः ॥२२॥

वेदान्तवेद्यो यज्ञेशः पुराणपुरूषोत्तमः।
जानकीवल्लभः श्रीमानप्रमेयपराक्रमः ॥२३॥

इत्येतानि जपन्नित्यं मद्भक्तः श्रद्धयान्वितः।
अश्वमेधाधिकं पुण्यं सम्प्राप्नोति न संशयः ॥२४॥

रामं दूर्वादलश्यामं पद्माक्षं पीतवाससम्।
स्तुवन्ति नामभिर्दिव्यैर्न ते संसारिणो नराः ॥२५॥

रामं लक्ष्मणपूर्वजं रघुवरं सीतापतिं सुन्दरं।
काकुत्स्थं करूणार्णवं गुणनिधिं विप्रप्रियं धार्मिकम्॥
राजेन्द्रं सत्यसंधं दशरथनतयं श्यामलं शान्तमूर्तिं।
वन्दे लोकाभिरामं रघुकुलतिलकं राघवं रावणारिम् ॥२६॥

रामाय रामभद्राय रामचन्द्राय वेधसे।
रघुनाथाय नाथाय सीतायाः पतये नमः ॥२७॥

श्री राम राम रघुनन्दन राम राम श्री राम राम भररताग्रज राम राम।
श्रीराम राम रणकर्कश राम राम श्रीराम राम शरणं भव राम राम ॥२८॥

श्रीरामचन्द्रचरणौ मनसा स्मरामि श्रीरामचन्द्रचरणौ वचसा गृणामि।
श्रीरामचन्द्रचरणौ शिरसा नमामि श्रीरामचन्द्रचरणौ शरणं प्रपद्ये ॥२९॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

माता रामो मत्पिता रामचन्द्रः स्वामी रामो मत्सखा रामचन्द्रः।
सर्वस्वं मे रामचन्द्रो दयालुर्नान्यं जाने नैव जाने न जाने ।।३०।।

दक्षिणे लक्ष्मणो यस्य वामे च जनकात्मजा।
पुरतो मारूतिर्यस्य तं वन्दे रघुनन्दनम् ।।३१।।

लोकाभिरामं रणरङ्गधीरं राजीवनेत्रं रघुवंशनाथम्।
कारूण्यरूपं करूणाकरं तं श्रीरामचन्द्रं शरणं प्रपद्ये ।।३२।।

मनोजवं मारूततुल्यवेगं जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम्।
वातात्मजं वानरयूथमुख्यं श्रीरामदूतं शरणं प्रपद्ये ।।३३।।

कूजन्तं रामरामेति मधुरं मधुराक्षरम्।
आरूह्य कविताशाखां वन्दे वाल्मीकिकोकिलम् ।।३४।।

आपदामपहर्तारं दातारं सर्वसम्पदाम्।
लोकाभिरामं श्रीरामं भूयो भूयो नमाम्यहम् ।।३५।।

भर्जनं भवबीजानामर्जनं सुखसम्पदाम्।
तर्जनं यमदूतानां रामरामेति गर्जनम् ।।३६।।

रामो राजमणिः सदा विजयते रामं रमेशं भजे
रामेणाभिहता निशाचरचमू रामाय तस्मै नमः।
रामान्नास्ति परायणं परतरं रामस्य दासोऽस्म्यहं
रामे चित्तलयः सदा भवतु मे भो राम मामुद्धर ।।३७।।

राम रामेति रामेति रमे रामे मनोरमे।
सहस्रनाम तत्तुल्यं रामनाम वरानने ।।३८।।

(इति श्री बुधकौशिकमुनिविरचितं श्रीरामरक्षास्तोत्रं सम्पूर्णम्)

छिति, जल, पावक, गगन, समीरा ।
पंच रचित अति अधम शरीरा ।।

पृथ्वी, जल, अग्नि, आकाश और वायु-इन पांच तत्वों से यह अत्यन्त अधम शरीर रचा गया है। अन्त में यह पार्थिव भौतिक शरीर इन्हीं में विलीन हो जाता है। लेकिन इसके भीतर की आत्मा सदैव अमर है।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

॥ श्रीराम स्तुति ॥

श्री रामचन्द्र कृपालु भजु मन, हरण भव भय दारूणम्।
नव कंज - लोचन, कंज-मुख, कर-कंज, पद कंजारूणम्।।१।।
कन्दर्प अगणित अमित छवि, नवनील - नीरद - सुंदरम्।
पटपीत मानहु तड़ित रूचि शुचि, नौमि जनक-सुतावरम्।।२।।
भजु दीनबन्धु दिनेश, दानव - दैत्यवंश-निकंदनम्।
रघुनंद आनन्दकंद, कौशलचन्द दशरथ-नन्दनम्।।३।।
सिर मुकुट कुंडल तिलक चारू उदार अंग विभूषणम्।
आजानुभुज शर-चाप-धर, संग्राम-जित-खरदूषणम्।।४।।
इति वदति तुलसीदास, शंकर-शेष-मुनि-मन-रंजनम्।
मम हृदय-कंज-निवास कुरू, कामादि खल-दल-गंजनम्।।५।।
मनुजाहिं राचेउ मिलहिं सो बरू सहज सुन्दर साँवरो।
करूणा निधान सुजान सीलु सनेहु जानत रावरो।।६।।
एहि भाँति गौरि असीस सुनि सिय सहित हियँ हरषी अली।
तुलसी भवानिहिं पूजी पुनि-पुनि मुदित मन मन्दिर चली।।७।।

सोरठा – जानि गौरि अनुकूल सिय, हिय हरषु न जाइ कहि।
मंजुल मंगल मूल बाम अंग फरकन लगे।।

सियावर रामचन्द्र की जय !

भावार्थ – हे मन ! कृपालु श्री रामचन्द्रजी का भजन कर। वे संसार के जनम-मरण रूप दारूण भय को दूर करने वाले हैं, उनके नेत्र नव विकसित कमल के समान हैं, मुख, हाथ और चरण भी लाल कमल के सदृश्य हैं।।१।। उनके सौन्दर्य की छटा अगणित कामदेवों से बढ़कर है, उनके शरीर का नवीन-नील-सजल मेघ के जैसा सुन्दर वर्ण है, पीताम्बर शरीर में मानों बिजली के समान चमक रहा है, ऐसे पावन रूप जानकीपति श्री रामजी को मैं नमस्कार करता हूँ।।२।। हे मन ! दीनों के बन्धु, सूर्य के समान तेजस्वी, दानव और दैत्यों के वंश का समूल नाश करने वाले, आनन्द-कन्द, कौशल-देशरूपी आकाश में निर्मल चन्द्रमा के समान, दशरथनन्दन श्री राम का भजन कर।।३।। जिनके मस्तक पर रत्नजटित मुकुट, कानों में कुण्डल,

भाल पर सुन्दर तिलक और प्रत्येक अंग में सुन्दर आभूषण सुशोभित हो रहे हैं, जिनकी भुजायें घुटनों तक लम्बी हैं, जो धनुष बाण लिये हुये हैं, जिन्होंने संग्राम में खरदूषण को जीत लिया है।।४।। जो शिव, शेष और मुनियों के मन को प्रसन्न करने वाले और काम, क्रोध, लोभादि शत्रुओं का नाश करने वाले हैं। तुलसीदास प्रार्थना करते हैं कि वे श्री रघुनाथजी मेरे हृदय-कमल में सदा निवास करें।।५।। गौरी पूजन में लीन जानकी पर गौरीजी प्रसन्न हो सीताजी को वर देती हुई कहती हैं कि – हे सीता! जिसमें तुम्हारा मन अनुरक्त हो गया है, वह स्वभाव से ही सुन्दर साँवला वर (श्री रामचन्द्रजी) तुमको मिलेगा। वे दया के सागर और सुजान (सर्वज्ञ) हैं, तुम्हारे शील और स्नेह को जानते हैं।।६।। इस प्रकार श्री गौरीजी का आशीर्वाद सुनकर जानकीजी सहित समस्त सखियाँ अत्यन्त हर्षित हुईं। तुलसीदासजी कहते हैं कि तब सीताजी माता भवानी को बार-बार पूजकर प्रसन्न मन से राजमहल को लौट चलीं।।७।।

गौरीजी को अपने अनुकूल जानकर सीताजी को जो हर्ष हुआ वह अवर्णनीय है। सुन्दर मंगलों के मूल उनके बायें अंग फड़कने लगे।

कृपा की न होती जो आदत तुम्हारी,
तो सूनी ही रहती अदालत तुम्हारी ।।
जो दीनों के दिल में जगह तुम न पाते,
तो फिर किस दिल में होती हिफाजत तुम्हारी ।।
गरीबों की दुनिया है आबाद तुमसे,
गरीबों से है बादशाहत तुम्हारी ।।
न मुल्जिम ही होते, न तुम होते हाकिम,
न घर-घर में होती इबादत तुम्हारी ।।
तुम्हारी ही उलफत के दृग "बिन्दु" हैं ये,
तुम्हे सौंपते हैं अमानत तुम्हारी ।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

॥ आरती श्री राम जन्म ॥

भए प्रगट कृपाला दीनदयाला, कौशल्या हितकारी।
हरषित महतारी मुनि मन हारी अद्भुत रूप निहारी।
लोचन अभिरामा तनु घनश्यामा निज आयुध भुज चारी।
भूषण बनमाला नयन विशाला शोभा सिन्धु खरारी।
कइ दुइ कर जोरी अस्तुति तोरी केहि विधि करौं अनंता।
माया गुन ज्ञाना तीत अमाना वेद पुराण भनंता।
करूणा सुख सागर सब गुन आगर जेहिं गावहिं श्रुति संता।
सो मम हित लागी जन अनुरागी प्रगट भयेउ श्रीकन्ता।
ब्रह्माण्ड निकाया निर्मित माया रोम रोम प्रति वेद कहै।
मम उर सो गासी यह उपहासी सुनत धीर मति थिर न रहै।
उपजा जब ज्ञाना प्रभु मुसकाना चरित बहुत बिधि कीन्ह चहै।
कहि कथा सुनाई मातु बुझाई जेहि प्रकार सुत प्रेम लहै।
माता पुनि बोली सो मति डोली तजहु तात यह रूपा।
कीजै सिसुलीला अति प्रिय सीला यह सुख परम अनूपा।
सुनि वचन सुजाना रोदन ठाना होई बालक सुरभूपा।
यह चरित जे गावहिं हरि पद पावहिं ते न परहिं भवकूपा।

दोहा – बिप्र धेनु सुर सन्त हित, लीन्ह मनुज अवतार।
निज इच्छा निर्मित तनु, माया गुन गो पार॥

भावार्थ – दीनों पर दया करने वाले, कौशल्या के हितकारी कृपालु प्रभु प्रगट हुये। मुनियों के मन को हरने वाले उनके अद्भुत रूप का विचार करके माता हर्ष से भर गई। नेत्रों को आनन्द देने वाला मेघ के समान श्याम शरीर था, चारों भुजाओं में अपने आयुध धारण किये हुये थे, आभूषण और वनमाला पहने थे, बड़े-बड़े नेत्र थे। इस प्रकार शोभा के समुद्र तथा खर राक्षस को मारने वाले भगवान प्रगट हुए। दोनों हाथ जोड़कर माता कहने लगी – हे अनन्त ! मैं किस प्रकार स्तुति करूँ। वेद और पुराण तुमको माया, गुण और ज्ञान से परे और परिणाम रहित बतलाते हैं। श्रुतियाँ और संत जन दया और सुख का समुद्र, सब गुणों का धाम कहकर जिनका गान करते हैं, वही भक्तों पर प्रेम करने वाले लक्ष्मी पति भगवान मेरे कल्याण के लिये प्रगट हुए हैं।

वेद कहते हैं कि तुम्हारे प्रत्येक रोम में माया के रचे हुए अनेकों ब्रह्माण्डों के समुद्र हैं। तुम मेरे गर्भ में रहे – इस हँसी की बात के सुनने पर धीर पुरूषों की बुद्धि भी स्थिर नहीं रहती (विचलित हो जाती है)। जब माता को ज्ञान उत्पन्न हुआ, तब प्रभु मुस्कराये। वे बहुत प्रकार के चरित्र करना चाहते हैं। अतः उन्होंने (पूर्व जन्म की) सुन्दर कथा कहकर माता को समझाया, जिससे उन्हें पुत्र का (वात्सल्य) प्रेम प्राप्त हो (भगवान के प्रति पुत्र भाव हो जाय)।

माता की वह बुद्धि बदल गई, तब वह फिर बोली – हे तात ! यह रूप छोड़कर अत्यन्त प्रिय बाल लीला करो, (मेरे लिये) यह सुख परम अनुपम होगा। (माता का) यह वचन सुनकर देवताओं के स्वामी सुजान भगवान ने बालक रूप होकर रोना शुरू कर दिया। (तुलसीदासजी कहते हैं–) जो इस चरित्र का गान करते हैं, वे श्री हरि का पद पाते हैं। फिर संसार रूपी कूप में नहीं गिरते। ब्राह्मण, गौ, देवता और संतों के लिये भगवान ने मनुष्य का अवतार लिया। वे (अज्ञानमयी, मलिन) माया और उसके गुण (सत्, रज, तम) और (बाहरी तथा भीतरी) इन्द्रियों से परे हैं। उनका (दिव्य) शरीर अपनी इच्छा से ही बना है। (किसी कर्मबन्धन से पर वश होकर त्रिगुणात्मक भौतिक पदार्थों के द्वारा नहीं)।

एक भक्त की चाह

मनमोहक सूरत है तुम्हारी, मिल जाओगे तुम कहीं न कहीं,
ये चाहें हमारे दिल में है, हम पायेंगे तुमको कहीं न कहीं।
काशी, मथुरा वृन्दावन में और अवधपुरी की गलियन में,
गंगा, यमुना सरयूतट पर तुम दर्शन दोगे कहीं न कहीं।
हम भटकेंगे तुम्हे पाने को तपसी बनकर, योगी बनकर,
फिर तुम खुद ही शरमाओगे और दर्शन दोगे कही न कहीं।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

॥ आरती श्री जानकीनाथ की ॥

जय जानकिनाथा, जय श्री रघुनाथा ।
दोऊ कर जोरें बिनवौ प्रभु ! सुनिये बाता ।। टेक।।
तुम रघुनाथ हमारे प्रान, पिता - माता ।
तुम ही सज्जन - संगी, भक्ति - मुक्ति दाता ।। जय।।
लख चौरासी काटो, मेटो यम त्रासा ।
निसिदिन प्रभु मोहि राखिये अपने ही पासा ।। जय।।
राम लछिमन भरत संग शत्रुघन भैया ।
जगमग ज्योति बिराजै, शोभा अति लहिया ।। जय।।
हनुमत नाद बजावत, नेवर झमकाता ।
स्वर्णथाल करै आरती, कौसल्या माता ।। जय।।
सुभग मुकुट सिर, धनु सर कर सोभा भारी ।
मनीराम दर्शन करि, पल-पल बलिहारी ।। जय।।

॥ आरती श्री जानकीजी की ॥

आरती कीजै जनक लली की, राममधुपपन कमल-कली की।।
रामचन्द्र मुखचन्द्र चकोरी, अंतर साँवर बाहर गोरी।
सकल सुमंगल सुफल फली की ।। आरती....
पिय दृग मृग जुग बंधन डोरी, पीय प्रेम रस-राशि किशोरी।
पिय मन गति विश्राम थली की ।। आरती....
रूप-राम-गुननिधि जग स्वामिनि, प्रेम प्रवीन राम अभिरामिनि।
सरबस धन 'हरिचंद' अलीकी ।। आरती....

ईर्ष्या का काम है जलाना, लेकिन सबसे पहले वह उसी को जलाती है, जिसके हृदय में उसका जन्म होता है। ईर्ष्यालु व्यक्ति उन चीजों से आनन्द नहीं उठा पाता, जो उसके पास मौजूद हैं, बल्कि उन वस्तुओं से दुःख उठाता है जो दूसरों के पास हैं। इसीलिये आज का मनुष्य अपने दुःख से उतना दुःखी नहीं है, जितना वह पराये सुख से है।

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

॥ मधुर कीर्तन-रघुपति राघव राजाराम ॥

(१)

रघुपति राघव राजाराम, पतित पावन सीताराम ।
सीताराम - सीताराम, भज मन प्यारे सीता राम ।।१।।
भीड़ पड़ी भक्तों ने पुकारा, कष्ट हरो प्रभु आप हमारा ।
तब दशरथ घर प्रगटे राम, पतित पावन सीताराम ।।२।।
ताड़क बन में ताड़का मारी, गौतम नारी अहिल्या तारी ।
सब ऋषियों के पूरण काम, पतित पावन सीताराम ।।३।।
जनकपुरी में शिव-धनु तोरी, सीताराम विवाह भयोरी ।
कैसी सुन्दर जोड़ी राम, पतित पावन सीताराम ।।४।।
राज तिलक की देख तैयारी, कैकेयी ने तब बात बिगाड़ी ।
चौदह वर्ष गये वन में राम, पतित पावन सीताराम ।।५।।
पंचवटी में गये रघुराई, सूर्पनखा की नाक कटाई ।
खरदूषण को मारे राम, पतित पावन सीताराम ।।६।।
गिद्ध जटायु स्वर्ग पठायो, मित्र राज सुग्रीव बनायो ।
सीता सुधि लाये हनुमान, पतित पावन सीताराम ।।७।।
माया मृग मारीच बनायो, योगी बन सीता हर ल्यायो ।
वन-वन सीता ढूंढे राम, पतित पावन सीताराम ।।८।।
लंकापति रावण को मारा, राज विभीषण को दे डारा ।
सीता घर ले आये राम, पतित पावन सीताराम ।।९।।
मात कौशल्या आरती उतारे, सब मिलकर जय जयकार पुकारे ।
राज तिलक पाये श्री राम, पतित पावन सीताराम ।।१०।।
पार्वती ने शिव से पूछा, कौन बड़ा है जग में ऊँचा ।
बोले शंकर कहो श्रीराम, पतित पावन सीताराम ।।११।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

॥ मधुर कीर्तन-रघुपति राघव राजाराम ॥

(२)

रघुपति राघव राजाराम, पतित पावन सीताराम ।।१।।
सीताराम सीताराम, भज प्यारे तू सीताराम ।।२।।
राम कृष्ण हैं तेरे नाम, सबको सन्मति दे भगवान ।।३।।
दीन - दयालु राजा राम, पतित पावन सीताराम ।।४।।
जय रघुनन्दन जय सियाराम, जानकी बल्लभ सीताराम ।।५।।
जय रघुनन्दन जय घनश्याम, रूक्मिणी - बल्लभ राधेश्याम ।।६।।
जय मधुसूदन जय गोपाल, जय मुरलीधर जय नन्दलाल ।।७।।
जय दामोदर कृष्ण मुरार, देवकीनन्दन सर्वाधार ।।८।।
जय गोविन्द जय गोपाल, केशव माधव दीनदयाल ।।९।।
राधाकृष्ण जय कुंजबिहारी, मुरलीधर गोबर्धन धारी ।।१०।।
दशरथ नन्दन अवधकिशोर, यशुमतिसुत जय माखन चोर ।।११।।
कौशल्या के प्यारे राम, यशुमति सुत जय नव घनश्याम ।।१२।।
बृन्दावन मथुरा में श्याम, अवधपुरी में सीताराम ।।१३।।
जय गिरिजापति जय महादेव, जय जय शम्भो जय महादेव ।।१४।।
जय जय दुर्गा, जय माँ तारा, जय गणेश जय शुभ आगारा ।।१५।।

"श्री राम नाम"

पढ़े छःवों शास्त्र ओ अठारहों पुराण देखे,
वेदों को आदि से अन्त तक छाना है।
तीरथ तप ज्ञान ध्यान, योग यज्ञ ब्रत दान,
संध्या-तर्पण शिल्प-विद्या ज्योतिष को जाना है।
नाड़ी पहचानना औ चाकरी के जाने दाँव पेच,
जाना सहनाई औ खेती बाग का लगाना है।
इतना जिन जाना, तिन खाक नहीं जाना सन्तों,
जाना है वही जिन श्री राम नाम जाना है।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

॥ कृषि विज्ञान की जन्मदात्री अन्नपूर्णा ॥

-चिन्तन प्रस्तुति : पुष्कर लाल केडिया

भगवान शिव जगत्-पिता हैं। उन्होंने जगज्जननी पार्वती को एक दिन अपने पास बुलाकर कहा - देवी, तुम्हें जगत् के समस्त प्राणियों का भरण-पोषण करना है। उनके लिये अन्न की व्यवस्था करनी है। पार्वती ने विनय पूर्वक कहा- 'हे जगत्-पिता, आपने मुझे अन्न की व्यवस्था का भार दिया है। अन्न की व्यवस्था के लिये मुझे आपसे उन वस्तुओं एवं शक्ति की आवश्यकता है, जो समाधि की अवस्था में आपके काम नहीं आती हैं।'

पार्वती की बातें सुनकर भगवान शिव सोचने लगे कि ऐसी कौन सी चीजें हैं जो समाधि की अवस्था में मेरे उपयोग में नहीं आती हैं ? उन्होंने पार्वती से पूरी बात स्पष्ट करने के लिये कही।

पार्वती ने कहा- "स्वामी, मै आपके इस त्रिशुल का उपयोग हल के रूप में करना चाहती हूँ। इससे जमीन की खुदाई हो सकेगी, मिट्टी को बीज बोने योग्य बनाया जा सकेगा। आपके नादिया (बैल) को मैं हल जोतनें के काम में लगाऊँगी। खेतों की जुताई के अलावा इसके गोबर से खाद का काम भी लिया जा सकेगा। इसके गोबर से गैस भी तैयार की जा सकेगी। इसकी सहायता से कुओं से पानी भी निकाला जा सकेगा। मैं आपके जटाजूट में निवास करने वाली बहिन गंगा को भी अपने साथ ले जाऊँगी, ताकि इनके जल से खेत सींचे जा सकें। आपके इन गणों का उपयोग मैं खेती के सभी कामों में श्रमिकों के रूप में करूँगी। ये आधा तन ढँके अपनी मस्त-प्रसन्न मुद्रा में खेतों पर मेहनत का काम भली भाँति कर सकेंगे। ये अपना पसीना बहाकर अन्न की उपज बढ़ायेंगे।"

भगवान शिव बड़े ध्यान से पार्वती के विचार सुन रहे थे। वे मन ही मन उनकी सूझ-बूझ की प्रशंसा भी कर रहे थे। पार्वती बोली-स्वामी, अनाज के पौधों को चूहों से बचाने के लिये मैं आपके सर्पों को पहरेदारों के रूप में खेतों में रखूँगी। आपका यह डमरू पक्षियों से अनाज की रक्षा करने के काम आयेगा। उसकी आवाज सुनकर वे भय के कारण फसल को नष्ट न कर पायेंगे। आक एवं धतूरे का उपयोग मैं खेत की बाड़ पर करूँगी। इससे खेत की बाड़ मजबूत रहेगी और कोई अकारण उससे आ-जा नहीं सकेगा।

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

अनाज एकत्र होने पर उसके रख-रखाव में यह भस्म, जिसे आप शरीर पर लगाते हैं, काम आयेगी, जिससे अनाज सड़ने नहीं पायेगा। आपके खप्पर से अन्न वितरण का कार्य सुगम हो जायेगा।

भगवान शिव पार्वती की बातें सुनकर मुस्कराये। पार्वती के चिन्तन और नयी सूझ पर उनका मस्तक गर्व से तन गया।

उपर्युक्त प्रतीक कथा का निष्कर्ष यह है कि यदि समझदारी और दूरदर्शिता से काम लिया जाये तो एक ही वस्तु का उपयोग कई प्रकार से किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त इस कथा में यह सन्देश भी है कि मनुष्य को ईश्वर एवं प्रकृति ने जो शक्तियाँ प्रदान की हैं, उनका पूरा उपयोग यदि किया जाये तो जीवन में बड़े काम किये जा सकते हैं। विडम्बना यह है कि हम अपनी शक्तियों को न तो अच्छी तरह पहचानते हैं और न ही उनका ठीक-ठीक उपयोग करना जानते हैं। उचित उपयोग करने पर विध्वंशकारी शक्ति का उपयोग सृजन के लिये भी हो सकता है।

कृषि-कार्य का दार्शनिक विवेचन करें तो हमें एक नयी जीवन-दृष्टि मिलती है। पृथ्वी की भाँति मनुष्य की कर्मभूमि भी उर्वरा है। यदि उसे सदाचारों से जोतें, उत्तम विचारों से सींचें और सत्कार्यों के बीज बोयें तो पुण्य और कीर्ति की फसल लहलहायेगी।

चेतावनी पद

आँखों पे तनेगा जाला, नाक से बहेगा नाला,
लाठी से पड़ेगा पाला, जब जिन्दगानी में ।
खड़े खड़े वस्त्र पर करोगे मल मूत्र त्याग,
पड़े पड़े थूकते रहोगे पीक दानी में ।
भक्ति क्या करोगे तुम, शक्ति न रहेगी जब,
राम राम बोलते तुम्हारी बँधवानी में ।
अतः योग योग से और भोग से वियोग कर,
करलो भजन भगवान का जवानी में ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

।। ॐ नमः शिवाय * सत्यम् शिवम् सुन्दरम् ।।

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

॥ श्री शंकर वन्दना ॥

कर्पूरगौरं करूणावतारं संसारसारं भुजगेन्द्रहारं ।
सदावसन्तं हृदयारविन्दे भवं भवानी सहितं नमामि ॥
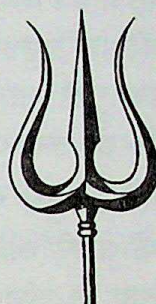
नमामि देवं वरदं वरेण्यं, नमामि देवं च सनातनम् ।
नमामि देवाधिपमीश्वरं हरे, नमामि शम्भूं जगदैकबन्धुम् ॥

सबकों वर देने वाले सर्वश्रेष्ठ भगवान शंकर को मैं प्रणाम करता हूँ। देवताओं के पालक और ईश्वर पापहारीहर को मैं नमस्कार करता हूँ। ईश्वर सत्य है। सत्य ही शिव है। शिव ही सुन्दर है।

सत्यम्-शिवम्-सुन्दरम्।

शिव महामंत्र

ॐ नमः शिवाय नमः शिवाय, नमः शिवाय नमों नमः ।
सोऽहमं ब्रह्मा, सोऽहमं विष्णु, सोऽहमं शंकर नमो नमः ॥
ॐ नमः शिवाय नमः शिवाय, नमः शिवाय नमो नमः ।

शिव समान दाता नहीं, विपद विदारण हार ।
लज्जा सबकी राखियो, शिव बैलन के असवार ॥

सेवा पूजा बन्दगी, सभी आपके हाथ ।
मैं तो कछु जानू नहीं, आप जाने भोलेनाथ ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

॥ परिवार प्रमुख : भगवान शिव ॥

चिन्तन प्रस्तुति : श्री पुष्करलाल केडिया

संसार में जन्म लेने वाले प्रत्येक व्यक्ति को एक न एक दिन परिवार प्रमुख बनना पड़ता है। शिव की पूजा करने वाले या उपासना करने वाले व्यक्ति यदि श्रेष्ठ परिवार प्रमुख बनने के लिये भगवान शिव के स्वरूप में व्याप्त तद्‌विषयक गुणों का अवलोकन करें और उन्हें अपने जीवन में ढ़ालने की चेष्टा करें तो उन्हें एक वरदान की उपलब्धि होगी।

श्रेष्ठ परिवार प्रमुख में सबसे पहला गुण यह होना चहिये कि वह अपने सुख से अधिक अपने आश्रितों के सुख की चिन्ता करे और इसके निमित्त त्याग करे। मनुष्य के जीवन में तीन वस्तुएँ सर्वाधिक आवश्यक हैं- रोटी, कपड़ा और मकान। भगवान शिव ने इन तीनों ही चीजों की समस्त सुविधाएँ अपने परिवार को देकर, स्वयं सात्विक जीवन अपनाया है। उन्होंने परिवार के लोगों के लिये नाना प्रकार के स्वादिष्ट व्यंजनों, बहुमूल्य वस्त्रों और भव्य भवनों की व्यवस्था की है। उनका अपना आहार बना आक, धतूरा, बिल्वपत्र, वस्त्र बना बाघम्बर और निवास स्थान बनी श्मशान भूमि।

दूसरा गुण ? जिस परिवार में दिन-रात कलह मची हो, ईर्ष्या, द्वेष, बैर, स्पर्धा का बोलबाला हो, वह परिवार नर्क बन जाता है। स्वर्ग वहाँ है जहाँ एकता, प्रेम और शान्ति हो। अब देखो न, शिव का वाहन बैल, उमा का वाहन सिंह, शिव का कण्ठहार सर्प, श्री गणेश का वाहन मूषक और कार्तिक का वाहन मयूर। सब आपस में एक दूसरे के पुश्तैनी जानी दुश्मन हैं। मगर वाह रे शिव का प्रताप! सबको प्रेम और एकता के ऐसे धागे में बाँध रखा है कि वे आपस में हिलमिल कर रहते हैं। श्रेष्ठ परिवार प्रमुख में परिवार के विभिन्न प्रकृति के सदस्यों को परस्पर अटूट स्नेह सूत्र में बाँध कर रखने की क्षमता अनिवार्य है।

'शिवजी को विषपान करते हुए जो दिखलाया जाता है, उसका भी कोई सम्बन्ध परिवार-प्रमुख के गुणों से है ?' बिलकुल है। परिवार प्रमुख की जिम्मेदारियाँ पहाड़ की तरह भारी होती हैं। उसे परिवार के गुण-दोषों, अवगुणों, झंझट-झमेलों और तकरार पैदा करने वाली बातों को विष के घूँट

की तरह अपने गले में ही अटकाये रखना पड़ता है। यदि उन चीजों को उगल दे तो परिवार का अनिष्ट होगा और यदि अपने गले के नीचे उतार ले तो स्वयं विक्षिप्त हो जायेगा। शिव ने समुद्र-मंथन के समय उत्पन्न महाभयंकर हलाहल विष को सृष्टि के कल्याण के लिये अपने कण्ठ में धारण कर लिया था और नीलकण्ठ हो गये थे। परिवार प्रमुख को भी नीलकण्ठ बनना चाहिये।

परिवार प्रमुख को छोटी-बड़ी बातों के विषय में उचित निर्णय लेने के लिये अपने मस्तिष्क को सर्वदा सन्तुलित, शीतल और स्वस्थ भी रखना पड़ता है। सर्वमान्य और सर्वोचित निर्णय ठण्डे दिमाग से ही लिये जा सकते हैं। महाशिव के मस्तक पर चन्द्रमा और गंगा का होना इस बात का संकेत है कि मस्तिष्क को सदा शीतल रखो। चन्द्रमा और गंगाजल दोनों में असीम शीतलता है।

क्रोध निश्चित ही बुरी चीज है, मगर उसकी भी एक मर्यादा है। अन्याय, उद्दण्डता, अनुशासनहीनता और अराजकता का दमन करने के लिये किया गया क्रोध मंगलकारी होता है। परिवार के सदस्यों में यह भय होना चाहिये कि यदि वे उचित आचरण नहीं करेंगे तो उनका स्वामी उन पर रूष्ट होगा, उन्हें दण्ड देगा। तुलसीदास ने भी कहा है, "भय बिन होहि न प्रीति।" परिवार प्रमुख के स्वभाव में कठोरता और कोमलता का समन्वय होना अनिवार्य है।

शिव ने काम पर विजय पाकर यह आदर्श सामने रखा है कि परिवार-प्रमुख को सदा कामजयी होना चाहिये। यदि वही कुमार्ग पर चलने लगे, कामी, लम्पट और पतित हो जाय तो समूचे परिवार का चरित्र उसी के अनुरूप बनेगा। परिवार-प्रमुख को अपने आत्मीयजनों को सुमार्ग पर चलने की प्रेरणा देने के लिये स्वयं चरित्रवान बनना चाहिये।

शिव ने कुरीतियों का बहिष्कार करने, दीन हीनों, सेवक दासों को प्रेम और आदर प्रदान करने का भी एक अनूठा उदाहरण स्थापित किया। अपने विवाह में उन्होंने दहेज न लेकर पर्वतराज की कन्या का वरण किया। देवों और ऋषियों की भाँति अपने गणों, भूत-प्रेतों को भी ससम्मान बारात में साथ चलने का अवसर दिया। परिवार-प्रमुख को कुरीतियों का विरोधी होना चाहिये। उसे अपने सम्पर्क में रहने वाले निम्न श्रेणी के व्यक्तियों को भी सम्मान और महत्व देकर अपने बड़प्पन का परिचय देना चाहिये।

श्रेष्ठ परिवार प्रमुख बनने के लिये परिवार के हित का सर्वदा गहन चिन्तन करना एवं पारिवारिक समस्याओं का समाधान ढूँढने के लिये चित्त को एकाग्र करना आवश्यक है। चित्त की एकाग्रता के लिये ध्यान (Concentration & Meditation) विशुद्ध भारतीय वैज्ञानिक पद्धति है। भगवान शिव का ध्यानमग्न होना यह प्रकट करता है कि उनका अधिकांश समय परिवार एवं जगत के कल्याण का चिन्तन करने में बीतता है।

परिवार संतुलन ही पारिवारिक सुखों का मूल आधार है। हम दो हमारे दो एवं छोटा परिवार सुखी परिवार का शाश्वत प्रतीक है- शिव परिवार। उनके केवल दो पुत्र हैं - गणेश एवं कार्तिकेय।

शिव तो महादेव हैं। वे गुणों की खान हैं। उनका अनुकरण मनुष्य तो क्या किसी भी लोक के प्राणी नहीं कर सकते। हम शिव की उपासना करते हैं, हमें उनके गुणों से प्रेरणा लेनी चाहिये और यही कामना करनी चाहिये कि हम सूर्य भले न बन सकें, कम से कम दीपक तो अवश्य बनें जिससे अपने मन को प्रकाश मिले, दूसरों को प्रकाश मिले और हमारा व्यक्तित्व और चरित्र हमारा मार्गदर्शन करे तो हमारी शिव भक्ति भी सार्थक होगी और हमारा मनुष्य जीवन भी।

परमात्मा एक

प्रत्येक नदी का मार्ग अलग-अलग होता है, परन्तु सबका लक्ष्य स्थान तो एक ही होता है—समुद्र। इसी तरह भिन्न-भिन्न शास्त्रों को मानने वालों के ईष्टदेव भिन्न-भिन्न होते हैं, फिर भी सबका लक्ष्य एक ही है-परमात्मा। परमात्मा एक ही है। दीपक को जिस रंग के काच से ढ़का जायेगा, उसी रंग का प्रकाश देगा। इसी प्रकार परमात्मा भी विभिन्न रूप में दीखते हैं, जैसे राम, कृष्ण, शिव, गणेश आदि।

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

॥ शिव चालीसा ॥

दोहा– जय गणेश गिरजा सुवन, मंगल मूल सुजान।
कहत अयोध्यादास अब, देउ अभय बरदान॥

चौपाई

जय गिरिजा पति दीन दयाला। सदा करत सन्तन प्रति पाला॥
भाल चन्द्रमा सोहत नीके। कानन कुण्डल नाग फनीके॥
अंग गौर सिर गंग बहाये। मुण्ड माल तन क्षार लगाये॥
मृग-छाल बाघम्बर सोहे। छवि को देख नाग मुनि मोहे॥
मैना मातु की हवै दुलारी। बाम अंग सोहत छवि भारी॥
कर त्रिशूल सोहत छवि न्यारी। करत सदा शत्रुन क्षयकारी॥
नन्दी गणेश सोहत हैं कैसे। सागर मध्य कमल हैं जैसे॥
कार्तिक श्याम और गण राऊ। या छवि को कहि जात न काऊ॥
देवन जबहिं जाय पुकारा। तबहीं दुख प्रभु आप निवारा॥
किया उपद्रव तारक भारी। देवन सब मिलि तुमहिं पुकारी॥
तुरत षड़ानन आप पठायउ। नव निमेष महं मारि गिरायउ॥
आप जलंधर असुर संहारा। सुयश तुम्हार विदित संसारा॥
त्रिपुरासुर सन युद्ध मचाई। सबहिं कृपा करि लीन बचाई॥
किया तपहिं भागीरथ भारी। पुरेऊ प्रतिज्ञा तासु पुरारी॥
दानिन महं तुम सम कोउ नाहीं। सेवक स्तुति करत सदाहीं॥
वेद नाम महिमा तुम गाई। अकथ अनादि भेद नहीं पाई॥
प्रगटी उदधि मंथन में ज्वाला। जरे सुरासुर भये बेहाला॥
कीन्ह दया तहँ करी सहाई। नील कण्ठ तब नाम कहाई॥
पूजन रामचन्द्र तब कीन्हा। जीत के लंक विभीषण दीन्हा॥
सहस कमल में हो रहे धारी। कीन्ह परीक्षा तबहिं पुरारी॥
एक कमल प्रभु राखेउ जोई। कमल नयन पूजन चहं सोई॥
कठिन भक्ति देखी प्रभु शंकर। भये प्रसन्न दिये इच्छित वर॥
जय जय जय अनन्त अविनाशी। करत कृपा सब के घटवासी॥
दुष्ट सकल नित मोहि सतावै। भ्रमत रहो मोहि चैन न आवै॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

त्राहि त्राहि मैं नाथ पुकारो। यहि अवसर मोहि आन उबारो।।
ले त्रिशूल शत्रुन को मारों। संकट से मोहि आन उबारो।।
माता पिता भ्राता सब कोई। संकट में पूछत नहिं कोई।।
स्वामी एक है आश तुम्हारी। आय हरहु मम संकट भारी।।
धन निरधन को देत सदाहीं। जो कोई जांचे वो फल पाहीं।।
स्तुति केहि विधि करों तुम्हारी। क्षमहुं नाथ अब चूक हमारी।।
शंकर हो संकट के नाशन। मंगल कारण विघ्न विनाशन।।
योगी मुनिगण ध्यान लगावे। शारद नारद शीश नवावे।।
नमो नमो जय नमः शिवाये। सुर ब्रह्मादिक पार न पाये।।
जो यह पाठ करे मन लाई। ता पर निश्चय शम्भु सहाई।।
ऋनियां जो कोई हो अधिकारी। पाठ करे सो पावन हारी।।
पुत्र हेतु इच्छा कर जोई। निश्चय शिव प्रसाद तेहि होई।।
पण्डित त्रयोदशी को लावे। ध्यान पूर्वक होम करावे।।
त्रयोदशी व्रत करै हमेशा। ताके तन नहिं रहे कलेशा।।
शंकर सम्मुख पाठ सुनावे। मन क्रम वचन जो ध्यान लगावे।।
कहे "अयोध्या" आस तुम्हारी। नाथ सकल दुख हरहु हमारी।।

दोहा– नित्य नेम करि प्रात ही, पाठ करौं चालीस।
तुम मेरी मन कामना, पूर्ण करो जगदीश।।
मंगसर छठ हेमन्त ऋतु, सम्बत् चौसठ जान।
स्तुति चालीसा शिवहिं, पूर्ण कीन्ह कल्याण।।
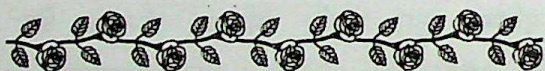
सुभ अरू असुभ सलिल सब बहई। सुरसरि कोउ अपुनीत न कहई।।
समरथ कहुं नहिं दोष गोसाईं। रवि पावक सुरसरि की नाईं।।

गंगाजी में शुभ और अशुभ सभी जल बहता है, पर कोई उसे अपवित्र नहीं कहता। सूर्य, अग्नि और गंगाजी की भाँति समर्थ को कुछ दोष नहीं लगता। उसके सब दोष ढ़क जाते हैं।

॥ आरती त्रिभुवन देव की (जय शिव ओंकारा) ॥

जय शिव ओंकारा, हर जय शिव ओंकारा।
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव अर्द्धंगी धारा।।
ऊँ हर हर हर महादेव।। टेर।।

एकानन चतुरानन पंचानन राजै, शिव पंचानन..
हंसासन गरूड़ासन वृषवाहन साजै।। ऊँ।।

दोय भुज चार चतुर्भुज, दश भुज अति सोहै, स्वामी दश..
तीनों रूप निरखता, त्रिभुवन जन मोहै।। ऊँ।

अक्षमाला, वनमाला, रूण्डमाला धारी, स्वामी रूण्डमाला..
चन्दन मृग मद चन्दा, भाले शुभकारी।। ऊँ।।

श्वेताम्बर पीताम्बर बाघम्बर अंगे, स्वामी बाघम्बर..
सनकादिक ब्रह्मादिक भूतादिक संगे।। ऊँ।।

करमध्येन कमण्डल चक्र त्रिशुल धरता, स्वामी चक्र..
सुखकर्ता दुखहर्ता जग पालन कर्ता।। ऊँ।।

ब्रह्मा-विष्णु सदाशिव जानत अविवेका, स्वामी जानत..
प्रणवाक्षर ऊँ मध्ये ये तीनों एका।। ऊँ।।

काशी में विश्वनाथ विराजत, नन्दो ब्रह्मचारी, स्वामी नन्दो..
नित उठ भोग लगावत, सेवत नरनारी।। ऊँ।।

त्रिगुणा स्वामीजी की आरती जो कोई नर गावे, स्वामी जो..
भणत शिवानन्द स्वामी मनवांछित फल पावै।। ऊँ।।

ऊँ जय शिव ओंकारा, हो मन भज शिव ओंकारा,
हो मन रट शिव ओंकारा, हो शिव गल रूण्डमाला,
हो शिव ओढ़त मृगछाला, हो शिव पीवत भंग प्याला,
हो शिव रहते मतवाला, हो शिव पार्वती प्यारा,
हो शिव ऊपर जल धारा, ब्रह्मा - विष्णु सदाशिव
अर्द्धंगी धारा।। .... ऊँ हर हर हर महादेव

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

॥ आरती कैलाशवासी शंकरजी की ॥

शीश गंग अर्द्धंग पार्वती सदा विराजत कैलाशी।
नन्दी भृंगी नृत्य करत हैं, गण भक्तन शिव के दासी।।
शीतल मंद सुगन्ध पवन बहे जहाँ बैठे हैं शिव अविनासी।
करत गान गन्धर्व सप्त स्वर राग रागिनी अतिगासी।।
यक्ष रक्ष भैरव जहँ डोलत, बोलत हैं बन के वासी।
कोयल शब्द सुनावत सुन्दर, भ्रमर करत हैं गुंजासी।।
कल्पद्रुम अरू पारिजात तरू, लाग रहे हैं लक्षासी।
कामधेनु कोटिक जहँ डोलत, करत फिरत हैं भिक्षासी।।
सूर्यकान्त सम पर्वत शोभित चन्द्रकान्त सम हिमरासी।
छहों तो ऋतु नित फलत रहत हैं, पुष्प चढ़त हैं वर्षासी।।
देव मुनिजन की भीड़ पड़त है, निगम रहत जो नितगासी।
ब्रह्मा-विष्णु हर को ध्यान धरत हैं, कछु शिव हमको फरमासी।।
ऋद्धि सिद्धि के दाता शंकर, सदा आनन्दित सुखरासी।
जिनको सुमिरन सेवा करता, छूट जाय यम की फांसी।।
त्रिशूलधरजी को ध्यान निरंतर, मन लगाय जो नर गासी।
दूर करो विपदा शिव तन की, जन्म जन्म शिव पद पासी।।
कैलाशी काशी के वासी, अविनासी मेरी सुधि लीजो।
सेवक जान सदा चरनन को, अपनो जान कृपा कीजो।।
आप तो प्रभुजी सदा सयाने बाबा, अवगुण मेरो सब ढकियो।
सब अपराध क्षमा कर शंकर, किंकर की विनती सुनियो।।
अभय दान दीज्यो प्रभु मौ को, सकल सृष्टि के हितकारी।
भोलेनाथ बाबा भक्त निरंजन, भव भंजन भव शुभकारी।।
काल हरो हर कष्ट हरो हर, दुख हरो दारिद्र हरो।
नमामि शंकर भजामि भोले बाबा, हर हर शंकर त्वं शरणम्।।

महादेव जय जय शिवशंकर, जय गंगाधर जय डमरूधर ।
हर हर शंकर त्वं शरणम्, हर हर शंकर त्वं शरणम् ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

॥ आरती बाघम्बरधारी की ॥

करदे दीनों का दुःख दूर ओ बाघम्बर वाले,
कर दो सबों का दुःख दूर ओ बाघम्बर वाले।।
कोई तो चढ़ावे शिवजी जल की धारा,
कोई चढ़ावे कच्चा दूध ओ बाघम्बर वाले।।
हरी हरी बेलपतिया चन्दन चावल,
और चढ़ाउँ फल फूल ओ बाघम्बर वाले।।
आक धतूरा शिवजी भोग लगत हैं,
भंगिया पियो भरपूर ओ बाघम्बर वाले।।
बायें अंग मां गिरिजा बिराजे,
गोद लिये हो गणेश ओ बाघम्बर वाले।।
नन्दी गण असवारी सोहे,
हाथ लिये त्रिशूल ओ बाघम्बर वाले।।
कंचन थाल कर्पूर की बाती,
आरती करत नर नार ओ बाघम्बर वाले।।
अरजी हमारी भोला मरजी तुम्हारी,
अरजी करो मंजूर ओ बाघम्बर वाले।।

शिव नाम महिमा

दुई बेर द्वारका, तीन बार त्रिवेणी,
चार बार काशी में गंग नहाये ते।
पाँच बार नीमसार, छः बार गंगा,
सात बार पुष्कर में आचमन कराये ते।
रामेश्वर, बैजनाथ, बद्री, केदारनाथ,
सकल सुतीर्थन में यज्ञ कराये ते।
जेते फल होत कोटि कोटि यज्ञ कीन्हे,
तेते फल होत शिव नाम गाये ते।

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

॥ आरती भोलानाथ अमली की ॥

बाबा – बाबा सब कहै, माई कहै न कोय।
बाबा के दरबार में माई कहे सो होय॥

भोलानाथ अमली ओ म्हारा शंकर अमली।
बगिया में भंगिया बोवाय राखूँली॥ भोला.॥
कांई बोउँ काशीजी में, कांई जी प्रयाग,
कांई बोउँ हर की पैड़ी, कांई जी कैलाश॥ भोला.॥
काशीजी में केशर बोउँ, चन्दन प्रयाग,
हर की पैड़ी बिजया बोउँ, धतुरो कैलाश॥ भोला.॥
कांई मांगे नांदियो जी, कांई जी गणेश,
कांई मांगे भोलो शम्भू जोगिया को भेष॥ भोला.॥
दूर्बा मांगे नांदियो जी, मोदक गणेश,
बिजया मांगे भोलो शम्भू, जोगिया को भेष॥ भोला.॥
घोटे-घोटे नांदियो जी, छाणत गणेश,
भर-भर प्याला देवै गोरजा, पीवै जी महेश॥ भोला.॥
आकड़ा की रोटी पोऊँ, धतूरा को साग,
बिजया की तरकारी छूंकू, जीमो भोलेनाथ॥ भोला.॥
भूखो मांगे अन्न धन, राजा मांगे रूप,
कुष्टी मांगे निर्मल काया, बांझ मांगे पूत॥ भोला.॥
भूखो देस्यां अन्न धन, राजा देस्यां रूप,
कुष्टी देस्यां निर्मल काया, बांझ देस्यां पूत॥ भोला.॥
नांचे नांचे नांदियो जी नांचे जी गणेश,
नांचे म्हारा भोला शम्भू, जोगिया को भेष॥ भोला.॥
कैलाश पर्वत तपे महादेव, नन्दियो चेलो साथ,
भोला बाबा की आरती करै जीको, बैकुंठा को बास।भोला.॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

॥ श्री बाबा बासुकीनाथ की स्तुति ॥

बिमल विभूति बूढ़ वरद बहनवां से,
लम्बे लम्बे लट लटकावे बाबा बासुकी।१।
काल कूट कंठ सोवे नील बरनवा से,
लाले - लाले लोचन घुमावे बाबा बासुकी।२।
ऐसन कलेवर बनाये देहो नागेश्वर,
देखि जन महिमा लोभावे बाबा बासुकी।३।
अन्धे पावे लोचन विविध दुख मोचन से,
कोढ़िया सुन्दर तन पावे बाबा बासुकी।४।
निपुत्र के पुत्र देत कुमति सुमति देत,
निर्धन को करत निहाल बाबा बासुकी।५।
धन्य धन्य दारूक बन जहां बसे आप हर,
मेटि देत विधि अंक भाल बाबा बासुकी।६।
परम आरत हूँ मैं सुख शान्ति सब खोई,
तेरे द्वारे भिक्षा मांगन आये बाबा बासुकी।७।
कहत साधकगण मेरी बेरी काहे हर,
करूणा करत नहिं आवे बाबा बासुकी।८।
सबके जे सुनि-सुनि दूर कैले दुःख सब,
हमरा के बेरिया निठुर बाबा बासुकी।९।
कहि-कहि कहु अब कहाँ-कहाँ जाऊँ नाथ,
अनाथ के नाथ कहेले बाबा बासुकी।१०।
देवघर देवलोक देव धन्य महादेव,
उहे जो हुकुम कईला जाहु बाबा बासुकी।११।
तुम बिन अब कोई दृष्टि पथ आवे नहीं,
केहि अब अरज सुनाऊँ बाबा बासुकी।१२।
सुनै छलियन बासुकीनाथ छबि बड़ दानी बाबा
अब किये एहन निठुर बाबा बासुकी।१३।
मातु पिता परिजन सबके छोड़लो हम
अहिं के शरण अब धइलो बाबा बासुकी।१४।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

शरण यहां के हम सतत जे धइलो बाबा,
अब अहां तजि कहां जाऊँ बाबा बासुकी।१५।
दीनानाथ दीनबन्धु आशुतोष विश्वम्भर,
आरत हरण नाम अछि बाबा बासुकी।१६।
कृपा के कटाक्ष देय एक बेर हेरू हर,
दुःखिया के संकट हरहु बाबा बासुकी।१७।
हमहुं जे अइलौ शरण में अहां के बाबा,
हमरा के देखिके डरेला बाबा बासुकी।१८।
जाहि दिन से ज्ञान भइल हमरा के अब बाबा,
ताहि दिन से शरण धईलीं बाबा बासुकी।१६।
जाहि दिन से शरण अहां के हम धइलों बाबा,
हृदय के बात सब सुनैलों बाबा बासुकी।२०।
ग्राम-देव ग्राम-लोक ग्राम धन महादेव,
सेहो ना सुनेलो दुःख मोर बाबा बासुकी।२१।
कहत भगतगण दुइ कर जोरि बाबा,
निपुत्र के पुत्र अब देहु बाबा बासुकी।२२।
कहत सेवकगण दुइ कर जोरी बाबा,
दुःखिया के दुःख हरहु बाबा बासुकी।२३।
कहत विनय करि देश के सेवक बाबा,
भारत के संकट हरहु बाबा बासुकी।२४।

कहो उसी से, जो कहे न किसी से ।
माँगो उसी से जो दे दे खुशी से ॥

बाबा तेरे दरबार में अजब जलवा गिरी देखी ।
देते किसी को न देखा, मगर झोली भरी देखी ॥

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

॥ आरती बाबा भूतनाथ की ॥

जय भूतनाथ बाबा, भोले जय भूतनाथ बाबा।
तुमको निशदिन ध्यावत, सुर नर मुनि बाबा।। जय भूत...
कर त्रिशूल विराजत, और डमरू बाजे।
जटा में गंग की धारा, माथे चन्दा साजे।। जय भूत...
नन्दी की असवारी सोहे, तन पर मृगछाला।
कानों में कुण्डल सोहे, गले में मुण्डमाला।। जय भूत...
तन पर भस्मी रमावे, संग गिरिजा माता।
सर्पों के गहने पहने, तुम शक्ति दाता।। जय भूत...
तुम बिन ज्ञान न होवे, मुक्ति न होवे बाबा।
भक्तों के रखवाले, तुम ही हो बाबा।। जय भूत...
भाँग धतूरा खावो, ध्यान में मतवाला।
शिखर कैलाश विराजो, तुम मुक्ति दाता।। जय भूत...
या आरती भूतनाथ की, जो कोई नर गाता।
उर भक्ति अति आती, सुख सम्पत्ति पाता।। जय भूत...
जय भूतनाथ बाबा, भोले जय भूतनाथ बाबा।
तुमको निशदिन ध्यावत, सुर नर मुनि बाबा।। जय भूत...

शिव नामावली

ॐ महादेव शिवशंकर शम्भो उमाकान्त हर त्रिपुरारे ।
मृत्युञ्जय बृषभध्वज शूलिन् गंङ्गाधर मृडमदनारे ।।
हर शिवशंकर गौरीशं वन्दे गंगाधरमीशम ।
रूद्रं पशुपतिमीशानं कलये काशीपुरिनाथम् ।।
जय शम्भो जय शम्भो शिव गौरीशंकर जय शम्भो ।
जय शम्भो जय शम्भो शिव गौरीशंकर जय शम्भो ।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

॥ श्री शिवपंचाक्षरस्तोत्र नमः शिवाय ॥

नागेन्द्रहाराय त्रिलोचनाय भष्माङ्ग रागाय महेश्वराय ।
नित्याय शुद्धाय दिगम्बराय तस्मै नकाराय नमः शिवाय ॥
मन्दाकिनीसलिलचन्दनचर्चिताय नन्दीश्वरप्रमथनाथमहेश्वराय ।
मन्दारपुष्पबहुपुष्पसुपूजिताय तस्मै मकाराय नमः शिवाय ॥
शिवाय गौरीवदनाब्जवृन्दसूर्याय दक्षाध्वरनाशकाय ।
श्रीनीलकण्ठाय वृषभध्वजाय तस्मै शिकाराय नमः शिवाय ॥
वशिष्ठकुम्भोद्भवगौतमार्य मुनीन्द्रदेवार्चितशेखराय ।
चन्द्रार्कवैश्वानरलोचनाय तस्मै वकाराय नमः शिवाय ॥
यक्षस्वरूपाय जटाधराय पिनाकहस्ताय सनातनाय ।
दिव्याय देवाय दिगम्बराय तस्मै यकाराय नमः शिवाय ॥
पंचाक्षर मिदं पुण्यं यः पठेच्छिवसन्निधौ ।
शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते ॥
(इति श्री मच्छंकराचार्यविरचितं शिवपंचाक्षरस्तोत्र सम्पूर्णम्)

शिव को निम्न २१ नामों से नमस्कार करें :-

ॐ नमः शिवायः, ॐ रूद्राय नमः, ॐ नीलकंठाय नमः,
ॐ सोमनाथाय नमः, ॐ कपर्दिने नमः, ॐ बृषभध्वजाय नमः,
ॐ सुरेशाय नमः, ॐ सोमेश्वराय नमः, ॐ व्यालप्रियायै नमः,
ॐ दिगम्बराय नमः, ॐ उमाकान्ताय नमः, ॐ ईशाय नमः,
ॐ जगत्प्रतिष्ठाय नमः, ॐ अन्धकासुरमर्दिने नमः, ॐ त्रिनेत्राय नमः,
ॐ विश्वनाथाय नमः, ॐ श्मशानवासिने नमः, ॐ गौरीपतये नमः,
ॐ पशुपतिनाथाय नमः, ॐ लिंगाय नमः, ॐ मृत्युञ्जाय नमः ।

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

॥ श्री रूद्राष्टकम् ॥

नमामीशमीशान निर्वाणरूपं। विभुं व्यापकं ब्रह्म वेदस्वरूपं ॥
निजं निर्गुणं निर्विकल्पं निरीहं। चिदाकाशमाकाशवासं भजेऽहं ॥१॥
निराकारमोंकारमूलं तुरीयं। गिराज्ञान गोतीतमीशंगिरीशं ॥
करालं महाकाल कालं कृपालं। गुणागार संसारपारं नतोऽहं ॥२॥
तुषाराद्रि संकाश गौरं गभीरं। मनोभूतकोटि प्रभा श्री शरीरं ॥
स्फुरन्मौलि कल्लोलिनी चारू गंगा। लसद्भालबालेन्दु कंठे भुजंगा ॥३॥
चलत्कुण्डलं भ्रू सुनेत्रं विशालं। प्रसन्नानं नीलकंठ दयालं ॥
मृगाधीशचर्माम्बरं मुण्डमालं। प्रियं शंकरं सर्वनाथ भजामि ॥४॥
प्रचंडं प्रकृष्टं प्रगल्भं परेशं। अखंडं अजं भानुकोटिप्रकाशं ॥
त्रयः शूल निर्मूलनं शूलपाणिं। भजेऽहं भवानीपतिं भावगम्यं ॥५॥
कलातीत कल्याण कल्पान्तकारी। सदा सज्जनानन्ददाता पुरारी ॥
चिदानन्द संदोह मोहापहारी। प्रसीद प्रसीद प्रभो मन्मथारी ॥६॥
न यावद् उमानाथ पादारविन्दं। भजंतीह लोके परे वा नराणां ॥
न तावत्सुखं शान्ति सन्तापनाशं। प्रसीद प्रभो सर्वभूताधिवासं ॥७॥
न जानामि योगं जपं नैव पूजां। नतोऽहं सदा सर्वदा शंभु तुभ्यं ॥
जरा जन्म दुःखौघतातप्यमानं। प्रभो पाहि आपन्नमामीश शंभो ॥८॥

रूद्राष्टकमिदं प्रोक्तं विप्रेण हरतोषये।
ये पठन्ति नरा भक्त्या तेषां शम्भुः प्रसीदति ॥९॥

शिव सुधारस का प्याला, गर मुझको पीना आजाता
तो पीते पीते इतना पीता, सागर का किनारा आ जाता
फरियाद गर मेरी सुनते तो तुझको पसीना आ जाता
इतना रोता तेरी चौखट पर, सावन का महिना आ जाता

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

॥ विल्व स्तोत्रम् ॥

ॐ त्रिदलं त्रिगुणाकारं त्रिनेत्रं च त्रियायुधम्।
त्रिजन्म पाप संहारं विल्व पत्रं शिवार्पणम् ॥१॥
अखण्डे विल्व पत्रं च पूजयेन्नंदि शंकरम्।
मुच्यते सर्वपापेभ्यो विल्व पत्रं शिवार्पणम् ॥२॥
शालग्रामेतु विप्राणां तड़ागादिषु कूपयोः।
यज्ञ कोटि सहस्रेण विल्व पत्रं शिवार्पणम् ॥३॥
मेरू कांचन यद्दानं गबां कोटि शतै रपि।
कोटि कन्या महादानं विल्व पत्रं शिवार्पणम् ॥४॥
न वर्ण न च गन्धं न च पुष्पं न च कोमलम्।
यज्ञ कोटि सहस्रैस्तु विल्प पत्रं शिवार्पणम् ॥५॥
दर्शनं विल्व पत्रस्य स्पर्शनं पापनाशनम्।
यज्ञ कोटि समदानं विल्प पत्रं शिवार्पणम् ॥६॥
त्रिशाखैः विल्व पत्रैश्च अछिद्रेः कोमलैः शुभैः।
तव पूजां करिष्यामि विल्व पत्रं शिवार्पणम् ॥७॥
तुलसी विल्व निबेश्च जंबीरै रामलैः शुभैः।
पंच विल्वं मिति ख्यातं प्रसीद परमेश्वरः ॥८॥
नरस्कारादि संयुक्तं शिव इत्यक्षर द्वयं।
जिहवाग्रे वसते यस्य सुफलं तस्य जीवनम् ॥९॥
उमाया सत देवेश वाहनं नन्दि भूषणम्।
तब पूजां करिष्यामि विल्व पत्रं शिवार्पणम् ॥१०॥
आज्ञानेन कृतं पापं स्मरणेन विनश्यति।
तव पूजां करिष्यामि विल्व पत्रं शिवार्पणम् ॥११॥

ॐ नाम में सार है, नाम जपो भोलेनाथ।
बिगड़े काज सँवारता, बाबा पशुपतिनाथ॥

दाता के दरबार में खड़े सभी कर जोड़।
देने वाला एक है, माँगत लाख करोड़॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

॥ श्री हनुमान स्तुति ॥

मनोजवं मारूत तुल्यवेगं, जितेन्द्रियं, बुद्धिमतां वरिष्ठम्।
वातात्मजं वानरयूथमुख्यं, श्री रामदूतं शरणं प्रपद्ये॥

अर्थात् – मन की तरह गतिमान, मारूत की तरह वेग वाले, जितेन्द्रिय, बुद्धिमान, वरिष्ठ, वानरयूथ के मुख्य, वातात्मज श्री रामदूत की शरण में जाता हूँ।

अतुलितबलधामं हेमशैलाभदेहं, दनुजवनकृशानुं ज्ञानिनामग्रगण्यम्।
सकलगुणनिधानं वानराणामधीशं रघुपतिवरदूतं वातजातं नमामि॥

अर्थात् – अतुलित बलवाले, स्वर्णपर्वत की आभा से पूरित देह वाले, राक्षसरूपी वन को जलाने के लिये अग्निरूप, ज्ञानियों में अग्रगण्य, सकल गुणों के निधान, वानरों के अधीश्वर, रघुपति श्री राम के प्रिय भक्त, पवन तनय हनुमान को मैं प्रणाम करता हूँ।

लाल लंगोटो हाथ में घोटो, मुख में नागर पान।
या छवि मेरे मन बसो, पवन पुत्र हनुमान॥

बाबा की है क्या पहचान? लाल लंगोटा लाल निशान।
जय बजरंगी जय हनुमान, जय बजरंगी जय हनुमान॥

संकट मोचन हनुमान प्रभु, भक्तों के प्रतिपाल।
शरणागत की लाज राखियो, हे अंजनी के लाल॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

॥ हनुमान चालीसा ॥

दोहा – श्री गुरू चरण सरोज रज, निज मन मुकुरू सुधारि।
बरनऊ रघुवर बिमल जसु, जो दायकु फल चारि।
बुद्धिहीन तनु जानिके, सुमिरौं पवन कुमार।
बल बुद्धि विद्या देहु मोहिं, हरहु कलेस विकार।

श्री गुरू महाराज के चरण कमलों की धूलि से अपने मन रूपी दर्पण को पवित्र करके श्रीरघुवीर के निर्मल यश का वर्णन करता हूँ, जो चारों फल (धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष) देने वाला है। हे पवन कुमार! मै आपका सुमिरन करता हूँ। आप तो जानते ही हैं कि मेरा शरीर और बुद्धि निर्मल है। मुझे शारीरिक बल, सद्बुद्धि एवं ज्ञान दीजिए और मेरे दुःखों व दोषों का नाश कर दीजिए।

चौपाई

जय हनुमान ज्ञान गुण सागर, जय कपीश तिहुं लोक उजागर।
रामदूत अतुलित बलधामा, अंजनि - पुत्र पवनसुत नामा।
महावीर विक्रम बजरंगी, कुमति निवार सुमति के संगी।

श्री हनुमानजी ! आपकी जय हो। आपका ज्ञान और गुण अथाह है। हे कपीश्वर ! आपकी जय हो। तीनों लोकों (स्वर्गलोक, भूलोक, पाताल लोक) में आपकी कीर्ति है।

हे पवनसुत अंजनीनन्दन ! श्री रामदूत ! आपके समान दूसरा बलवान नहीं है। हे महावीर बजरंगबली ! आप विशेष पराक्रम वाले हैं। आप बुरी बुद्धि को दूर करते हैं और अच्छी बुद्धि वालों के साथी, सहायक हैं।

कंचन बरन बिराज सुवेसा, कानन कुण्डल कुंचित केसा।
हाथ बज्र औ ध्वजा बिराजै, कांधे मूंज जनेऊ साजै।

सुनहरे रंग, सुन्दर वस्त्रों, कानों में कुण्डल और घुंघराले बालें से सुशोभित हैं। आपके हाथ में बज्र और ध्वजा है और कन्धे पर मूंज के जनेऊ की शोभा है।

शंकर सुवन केसरीनन्दन, तेज प्रताप महा जगबन्दन।
विद्यावान गुणी अति चातुर, रामकाज करिबे को आतुर।

हे शंकर के अवतार ! हे केसरी नन्दन ! आपके पराक्रम और महान यश की संसार भर में वन्दना होती है। आप प्रकाण्ड विद्यानिधान हैं, गुणवान और अत्यन्त कार्यकुशल होकर श्रीराम काज करने के लिये उत्सुक रहते हैं।

प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया, राम लखन सीता मन बसिया।
सूक्ष्म रूप धरि सियहिं दिखावा, विकट रूप धरि लंक जरावा।

आप श्रीरामचरित सुनने में आनन्द रस लेते हैं। श्रीराम, सीता और लक्ष्मण आपके हृदय में बसे रहते हैं। आपने अपना बहुत छोटा रूप धारण करके सीताजी को दिखलाया और भयंकर रूप करके लंका को जलाया।

भीम रूप धरि असुर संहारे, रामचन्द्र के काज संवारे।
लाय संजीवन लखन जियाये, श्री रघुवीर हरषि उर लाये।

आपने विकराल रूप धारण करके राक्षसों को मारा और श्री रामचन्द्र के उद्देश्यों को सफल बनाया। आपने संजीवनी बूटी लाकर लक्ष्मणजी को जिलाया जिससे श्री रघुवीर ने हर्षित होकर आपको हृदय से लगा लिया।

रघुपति कीन्ही बहुत बड़ाई, तुम मम प्रिय भरत सम भाई।
सहस बदन तुम्हरो जस गावैं, अस कहि श्रीपति कंठ लगावैं।

श्री रामचन्द्रजी ने आपकी बहुत प्रशंसा की और कहा कि तुम मुझे भरत जैसे प्यारे भाई हो। श्रीराम ने आपको यह कहकर हृदय से लगा लिया कि तुम्हारा यश हजार मुख से सराहनीय है।

सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा, नारद सारद सहित अहीसा।
यम कुबेर दिगपाल जहां ते, कवि कोबिद कहि सके कहांते।

श्रीसनक, श्रीसनातन, श्रीसनन्दन, श्रीसनत्कुमार आदि मुनि, ब्रह्मा आदि देवता, नारदजी, सरस्वतीजी, शेषनागजी, यमराज, कुबेर आदि, सब दिशाओं के रक्षक, कवि, विद्वान, पंडित या कोई भी आपके यश का पूर्णतः वर्णन नहीं कर सकते।

तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा, राम मिलाय राजपद दीन्हा।
तुम्हरो मन्त्र विभीषण माना, लंकेश्वर भये सब जग जाना।

आपने सुग्रीवजी को श्रीराम से मिलाकर उपकार किया जिसके कारण वे राजा बने। आपके उपदेश का विभीषणजी ने पालन किया, जिससे वे लंका के राजा बने, इसको सब संसार जानता है।

जुग सहस्र योजन पर भानू, लील्यो ताहि मधुर फल जानू।
प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं, जलधि लांघि गये अचरज नाहीं।

जो सूर्य इतने योजन दूरी पर है कि उस पर पहुंचने के लिये हजार युग लगे। उस हजारों योजन की दूरी पर स्थित सूर्य को आपने एक मीठा फल समझ कर निगल लिया। आपने श्रीरामचन्द्रजी की अंगूठी मुंह में रखकर समुद्र लांघ लिया। इसमें कोई आश्चर्य नहीं है।

दुर्गम काज जगत के जेते, सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते।
राम दुआरे तुम रखवारे, होत न आज्ञा बिनु पैसारे।

संसार में जितने भी कठिन से कठिन काम हों, वो आपकी कृपा से सहज हो जाते हैं। श्रीरामचन्द्रजी के द्वार के आप रखवाले हैं, जिसमें आपकी आज्ञा बिना किसी को प्रवेश नहीं मिलता। (अर्थात् श्रीराम कृपा पाने के लिये आपकी प्रसन्नता आवश्यक है।)

सब सुख लहैं तुम्हारी सरना, तुम रक्षक काहू को डरना।
आपन तेज सम्हारो आपै, तीनों लोक हांकते कांपै।

जो भी आपकी शरण में आते हैं उन सभी को आनन्द प्राप्त होता है और जब आप रक्षक हैं तो फिर किसी का डर नहीं रहता। आपके सिवाय आपके वेग को कोई नहीं रोक सकता। आपकी गर्जना से तीनों लोक कांप जाते हैं।

भूत पिशाच निकट नहिं आवै, महाबीर जब नाम सुनावै।
नासै रोग हरै सब पीरा, जपत निरन्तर हनुमत बीरा।

जहां 'महावीर' हनुमानजी का नाम सुनाया जाता है वहां भूत-पिशाच पास भी नहीं फटक सकते। वीर हनुमानजी ! आपका निरन्तर जप करने से सब रोग चले जाते हैं ओर सब पीड़ा मिट जाती है।

संकट तें हनुमान छुड़ावै, मन क्रम वचन ध्यान जो लावै।
सब पर राम तपस्वी राजा, तिनके काज सकल तुम साजा।

हे हनुमानजी ! विचार करने में, कर्म करने में और बोलने में, जिनका ध्यान आप में रहता है, उनको सब संकटों से आप छुड़ा देते हैं। तपस्वी राजा श्रीरामचन्द्रजी सबसे श्रेष्ठ हैं, उनके सब कार्यों को आपने सहज में कर दिया।

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

और मनोरथ जो कोई लावै, सोइ अमित जीवन फल पावै।
चारों युग परताप तुम्हारा, है परसिद्ध जगत उजियारा।

जिस पर आपकी कृपा हो, वह कोई भी अभिलाषा करे तो उसे ऐसा फल मिलता है, जिसकी जीवन में कोई सीमा नहीं होती। चारों युग (सतयुग, द्वापर, त्रेता तथा कलियुग) में आपका यश फैला हुआ है, जगत में आपकी कीर्ति सर्वत्र प्रकाशमान है।

साधु सन्त के तुम रखवारे, असुर निकन्दन राम दुलारे।
अष्ट सिद्धि नौ निधि के दाता, अस वर दीन्ह जानकी माता।

हे श्रीराम के दुलारे ! आप सज्जनों की रक्षा करते हैं और दुष्टों का नाश करते हैं। आपको माता जानकी से ऐसा वरदान प्राप्त हुआ है जिससे आप किसी को भी *आठों सिद्धियाँ और **नौ निधियाँ (सब प्रकार की सम्पत्ति) दे सकते हैं।

***अणिमा –** जिससे साधक किसी को दिखाई नहीं पड़ता और कठिन से कठिन पदार्थ में प्रवेश कर जाता है।

महिमा – जिसमें योगी अपने को बहुत बड़ा बना लेता है।

गरिमा – जिससे साधक अपने को चाहे जितना भारी बना लेता है।

लघिमा – जिससे जितना चाहे उतना हल्का बन जाता है।

प्राप्ति – जिससे इच्छित पदार्थ की प्राप्ति होती है।

प्राकाम्य – जिससे इच्छा करने पर पृथ्वी में समा सकता है, आकाश में उड़ सकता है।

ईशित्व – जिससे सब पर शासन का सामर्थ्य हो जाता है।

वशित्व – जिससे दूसरों को वश में किया जाता है।

****पद्म, महापद्म, शंख, मकर, कच्छप, मुकुन्द, कुन्द, नील, बच्चे (नौ निधियाँ)।**

राम रसायन तुम्हरे पासा, सदा रहो रघुपति के दासा।
तुम्हरे भजन राम को पावै, जन्म - जन्म के दुख बिसरावै।
अंत काल रघुवर पुर जाई, जहा जन्म हरि भक्त कहाई।

आप निरन्तर श्री रघुनाथ जी की शरण में रहते हैं, जिससे आपके पास बुढ़ापा और असाध्य रोगों का नाश के लिए 'राम-नाम' औषधि है। आपका भजन करने से श्रीरामचन्द्रजी प्राप्त होते हैं और जन्म-जन्मान्तर के दुःख दूर

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

होते हैं और अन्य समय श्री रघुनाथजी के धाम को जाते हैं और यदि फिर भी जन्म लेंगे तो भक्ति करेंगे और श्रीराम भक्त कहलायेंगे।

और देवता चित्त न धरई, हनुमत सेइ सर्व सुख करई।
संकट कटै मिटै सब पीरा, जो सुमिरै हनुमत बलबीरा।

हे हनुमानजी ! आपकी सेवा करने से सब प्रकार के सुख मिलते हैं, फिर अन्य किसी देवता की आवश्यकता नहीं रहती। हे वीर हनुमान जी ! जो आपका सुमिरन करता है, उसके सब संकट कट जाते हैं और सब पीड़ा मिट जाती हैं।

जै जै जै हनुमान गोसाईं, कृपा करहु गुरू देव की नाईं।
जो शत बार पाठ कर कोई, छूटहिं बन्दि महा सुख होई।

हे स्वामी हनुमानजी ! आपकी जय हो, जय हो, जय हो। आप मुझ पर कृपालु श्री गुरूजी के समान कृपा कीजिए। जो कोई इस हनुमान चालीसा का सौ बार पाठ करेगा वह सब बन्धनों से छूट जायेगा और उसे परमानन्द मिलेगा।

जो यह पढ़े हनुमान चालीसा, होय सिद्धि, साखी गौरीसा।
तुलसीदास सदा हरि चेरा, कीजै नाथ हृदय मँह डेरा।

भगवान शंकर ने यह हनुमान चालीसा लिखवाया इसलिये वे साक्षी हैं कि जो इसे पढ़ेगा उसे निश्चय ही सफलता प्राप्त होगी। हे नाथ हनुमानजी! तुलसीदास सदा ही श्रीराम का दास है। इसलिये आप उसके हृदय में निवास कीजिये।

दोहा

पवनतनय संकट हरन, मंगल मूरति रूप।
राम लखन सीता सहित, हृदय बसहु सुर भूप।

हे संकटमोचन पवनकुमार ! आप आनन्द मंगलों के स्वरूप हैं। हे देवराज ! आप श्रीराम, सीताजी और लक्ष्मण सहित मेरे हृदय में निवास कीजिये।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

॥ श्री संकटमोचन हनुमानाष्टक ॥

बाल समय रवि भक्षि लियो, तब तीनहुं लोक भयो अंधियारो।
ताहि सो त्रास भयो जग को, यह संकट काहु सो जात न टारो।
देवन आनि करि विनती तब, छाँड़ि दियो रवि कष्ट निवारो।
को नहिं जानत है जग में कपि, संकट मोचन नाम तिहारो।१।

हे हनुमानजी ! आप बालक थे तब आपने सूर्य को अपने मुँह में रख लिया जिससे तीनों लोकों में अंधेरा हो गया! इससे संसार भर में विपत्ति छा गई और उस संकट को कोई भी दूर नहीं कर सका ! देवताओं ने आकर आपसे विनती की और आपने सूर्य को मुक्त कर दिया! इस प्रकार संकट दूर हुआ। हे हनुमान जी ! संसार में ऐसा कौन है जो आपका 'संकटमोचन' नाम नहीं जानता।

बालि की त्रास कपीस बसै गिरि, जात महाप्रभु पंथ निहारो।
चौकि महामुनि शाप दीयो तब, चाहिये कौन उपाय बिचारो।
के द्विज रूप लिवाय महाप्रभु, सो तुम दास के शोक निवारो।
को नहिं जानत है जग में कपि, संकट मोचन नाम तिहारो।२।

बालि के डर से सुग्रीव पर्वत पर रहते थे। उन्होंने श्री रामचन्द्र को आते देखा। उन्होंने आपको पता लगाने भेजा। आपने अपना ब्राह्मण का रूप करके श्रीरामचन्द्रजी से भेंट की और उनको अपने साथ लिवा लाये जिससे आपने सुग्रीव के शोक का निवारण किया। हे हनुमानजी ! संसार में ऐसा कौन है जो आपका 'संकटमोचन' नाम नहीं जानता।

अंगद के संग लेन गये सिय, खोज कपीस यह बैन उचारो।
जीवत ना बचिहौं हम सो जु, बिना सुधि लाये इहाँ पगु धारो।
हेरि थके तट सिन्धु सबै तब, लाय सिया सुधि प्राण उबारो।
को नहिं जानत है जग में कपि, संकट मोचन नाम तिहारो।३।

सुग्रीव ने अंगद के साथ सीताजी की खोज के लिये अपनी सेना को भेजते समय कह दिया था कि यदि सीताजी का पता लगाकर नहीं लाये तो हम तुम सबको मार डालेंगे। सब ढूँढ-ढूँढ कर हार गये। तब आप समुद्र के तट से कूदकर सीताजी का पता लगा कर लाये जिससे सबके प्राण बचे।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

हे हनुमानजी ! संसार में ऐसा कौन है जो आपका 'संकटमोचन' नाम नहीं जानता।

रावण त्रास दई सीय को तब, राक्षसि सों कहि शोक निवारो।
ताहि समय हनुमान महाप्रभु, जाय महा रजनीचर मारो।
चाहत सीय अशोक सो आगि सु दै प्रभु मुद्रिका शोक निवारो।
को नहिं जानत है जग में कपि, संकट मोचन नाम तिहारो।४।

जब रावण ने श्रीसीताजी को भय दिखाया और कष्ट दिया और सब राक्षसियों से कहा कि सीताजी को मनावें, हे महावीर हनुमानजी ! उस समय आपने पहुँच कर महान राक्षसों को मारा। सीताजी ने अशोक वृक्ष से अग्नि माँगी (स्वयं को भस्म करने के लिये) परन्तु आपने उसी वृक्ष पर से श्रीरामचन्द्रजी की अंगूठी डाल दी जिससे सीताजी की चिन्ता दूर हुई। हे हनुमानजी ! संसार में ऐसा कौन है जो आपका 'संकटमोचन' नाम नहीं जानता।

बाण लग्यो उर लक्ष्मण के तब, प्राण तजो सुत रावण मारो।
लै गृह बैद्य सुषेण समेत तबै, गिरि द्रोण सु बीर उपारो।
आनि संजीवन हाथ दई तब, लछिमन के तुम प्राण उबारो।
को नहिं जानत है जग में कपि, संकट मोचन नाम तिहारो।५।

रावण के पुत्र मेघनाद ने बाण मारा जो लक्ष्मणजी की छाती पर लगा और उनके प्राण संकट में पड़ गये। तब आप ही सुषेण वैद्य को घर सहित उठा लाये और द्रोणाचल पर्वत सहित संजीवनी बूटी ले आये जिससे लक्ष्मणजी के प्राण बच गये। हे हनुमानजी ! संसार में ऐसा कौन है जो आपका 'संकटमोचन' नाम नहीं जानता।

रावण युद्ध अजान कियो तब, नाग की फाँस सबै सिर डारो।
श्री रघुनाथ समेत सबै दल, मोह भयो यह संकट भारो।
आनि खगेश तबै हनुमान जु, बन्धन काटि सुत्रास निवारो।
को नहिं जानत है जग में कपि, संकट मोचन नाम तिहारो।६।

रावण ने घोर युद्ध करते हुए सबको नागपाश में बाँध लिया तब श्रीरघुनाथ सहित सारे दल में यह भय छा गया कि यह तो बहुत भारी संकट है। उस समय, हे हनुमानजी ! आपने गरूड़जी को लाकर बंधन कटवा दिया जिससे संकट दूर हुआ। हे हनुमानजी ! संसार में ऐसा कौन है जो आपका

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

'संकटमोचन' नाम नहीं जानता।

बन्धु समेत जबै अहिरावण, ले रघुनाथ पाताल सिधारो।
देबिहिं पूजि भलि विधि सों बलि देऊ सबै मिलि मन्त्र विचारो।
जाय सहाय भयो तब ही, अहिरावण सैन्य समेत संहारो।
को नहिं जानत है जग में कपि, संकट मोचन नाम तिहारो।७।

जब अहिरावण ने श्री रघुनाथजी को लक्ष्मण सहित पाताल को ले गया और भलीभाँति देवी की पूजा करके सबके परामर्श से यह निश्चय किया कि इन दोनों भाइयों की बलि दूंगा, उसी समय आपने वहां पहुंच कर अहिरावण को उसकी सेना समेत मार डाला। हे हनुमानजी ! संसार में ऐसा कौन है जो आपका 'संकटमोचन' नाम नहीं जानता।

काज किये बड़ देवन के तुम बीर महाप्रभु देखि बिचारो।
कौन सो संकट मोर गरीब को, जो तुमसों नहिं जात है टारो।
बेगि हरो हनुमान महाप्रभु, जो कछु संकट होय हमारो।
को नहिं जानत है जग में कपि, संकट मोचन नाम तिहारो।८।

हे महावीर ! आपने बड़े बड़े देवों के कार्य संवारे हैं। अब आप देखिये और सोचिये कि मुझ दीन-हीन का ऐसा कौन सा संकट है जिसको आप दूर नहीं कर सकते। हे महावीर हनुमानजी ! हमारा जो कुछ भी संकट हो आप उसे शीघ्र दूर कर दीजिये। हे हनुमान जी ! संसार में ऐसा कौन है जो आपका 'संकटमोचन' नाम नहीं जानता।

दोहा – लाल देह लाली लसे, अरूधरि लाल लंगूर।
बज्र देह दानव दलन, जय जय जय कपि सूर।
यह अष्टक हनुमान को विरचित तुलसीदास।
गंगादास जूं प्रेम से पढ़े होय दुःखनाश।

आपका शरीर लाल है और आपकी पूंछ लाल है और आपने लाल सिंदूर धारण कर रखा है तथा आपके वस्त्र भी लाल हैं। आपका शरीर वज्र है और आप दुष्टों का नाश कर देते हैं। हे हनुमानजी ! आपकी जय हो, जय हो, जय हो। इस अष्टक हनुमान को तुलसीदासजी ने रचा है। उनका कहना है कि इस हनुमानाष्टक को जो भी प्राणी प्रेम से पढ़ेगा उसका निश्चय ही समस्त दुःखों का नाश हो जायेगा।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

॥ अथ बजरंग बाण ॥

दोहा – निश्चय प्रेम प्रतीति ते, विनय करैं सनमान।
तेहि के कारज सकल शुभ, सिद्ध करैं हनुमान॥

चौपाई

जय हनुमन्त सन्त हितकारी, सुन लीजै प्रभु विनय हमारी।
जन के काज बिलम्ब न कीजै, आतुर दौरि महा सुख दीजै।
जैसे कूदि सिन्धु के पारा, सुरसा बदन पैठि बिस्तारा।
आगे जाय लंकिनी रोका, मारेहु लात गई सुरलोका।
जाय बिभीषण को सुख दीन्हा, सीता निरखि परमपद लीन्हा।
बाग उजारि सिन्धु महँ बोरा, अति आतुर जमकातर तोरा।
अक्षयकुमार को मारि संहारा, लूम लपेटि लंक को जारा।
लाह समान लंक जरि गई, जय जय धुनि सुरपुर नभ भई।
अब विलम्ब केहि कारन स्वामी, कृपा करहु उर अन्तर्यामी।
जय जय लक्ष्मण प्राण के दाता, आतुर होई दुःख करहु निपाता।
जय हनुमान जयति बल – सागर, सुर-समूह-समरथ भटनागर।
ऊँ हनु हनु हनु हनुमन्त हठीले, बैरिहि मारू बज्र के कीले।
गदा बज्र लै बेरिहिं मारो, महाराज प्रभु दास उबारो।
हुँकार हुँकार महाप्रभु धावो, बज्र गदा हनु विलंब न लाओ।
ऊँ ह्रीं ह्रीं ह्रीं हनुमन्त कपीशा, ऊँ हुँ हुँ हुँ हनु अरि उरसीसा।
सत्य होहु हरि शपथ पाय के, राम दूत धरू मारू धाइ कै।
जय जय जय हनुमन्त अगाधा, दुख पावत जन केहि अपराधा।
पूजा जप तप नेम अचारा, नाहिं जानत हौ दास तुम्हारा।
बन उपवन मग गिरि गृह माहीं, तुम्हारे बल हौं डरपत नाहीं।
पाँय परौं कर जोरि मनावौं, यहि अवसर अबकेहि गोहरावौं।
जय अंजनि कुमार बलवन्ता, शंकरसुवन वीर हनुमन्ता।
बदन कराल काल-कुल-घालक, राम-सहाय सदा प्रतिपालक।
भूत, प्रेत, पिशाच, निशाचर, अग्नि बैताल काल मारी मर।
इन्हें मारू तोहिं शपथ राम की, राखु नाथ मरजाद नाम की।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

जनकसुता हरि दास कहावो, ता की शपथ विलम्ब न लावो।
जय-जय-जय धुनि होत अकाशा, सुमिरत होत दुसह दुख नाशा।
चरण-पकरि कर जोरि मनावों, यहि औसर अब केहि गोहरावौं।
उठु उठु चलु तोहि राम दोहाई, पायं परौं कर जोरि मनाई।
ऊँ चं चं चं चं चपल चलन्ता, ऊँ हनु हनु हनु हनु हनुमन्ता।
ऊँ हं हं हांक देति कपि चंचल, ऊँ सं सं सहमि पराने खल दल।
अपने जन को तुरत उबारो, सुमिरत होय आनन्द हमारो।
ताते बिनती करौं पुकारी, हरहु सकल दुःख विपति हमारी।
ऐसो बल प्रभाव प्रभु तोरा, कस न हरहु दुःख संकट मोरा।
हे बजरंग, बाण सम धावौ, मैटि सकल दुःख दरस दिखावौ।
हे कपिराज काज कब ऐहो, अवसर चूकि अंत पछतैहो।
जन की लाज जात एहि बारा, धावहु हे कपि पवन कुमारा।
जयति जयति जै-जै कपि राई, जयति-जयति जै-जै सुखदाई।
जयति-जयति-जय राम पियारे, जयति-जयति जै सिया दुलारे।
जयति-जयति-मुद मंगल दाता, जयति-जयति त्रिभुवन विख्याता।
एहिं प्रकार गावत गुण शेषा, पावत पार नहीं लवलेसा।
राम-रूप सर्वत्र समाना, देखत रहत सदा हर्षाना।
विधि सारदा सहित दिन राती, गावत कपि के गुन बहु भाँति।
तुम सम नहीं जगत बलवाना, करि विचार देखेऊँ विधि नाना।
यह सिय जानि शरण तव आई, ताते विनय करौ चित्त लाई।
सुनि कपि आरत वचन हमारे, मैटहु सकल दुःख भ्रम भारे।
एहि प्रकार विनती कपि केरी, जो जन करै लहै सुख ढेरी।
याके पढ़त वीर हनुमाना, धावत बाण तुल्य बलवाना।
मैटत आय दुःख छिन माहीं, दै दर्शन रघुपति ढिग जाहीं।
पाठ करै बजरंग बाण की, हनुमत रक्षा करें प्राण की।
डीठ मूठ टौना दिक नासै, पर-कृत यंत्र-मंत्र नहिं त्रासै।
भैरवादि सुर करें मिताई, आयुधि मानि करे सेवकाई।
प्रण करि पाठ करें मन लाई, अल्प मृत्यु ग्रह दोष नसाई।
आवृत ग्यारह प्रतिदिन जापैं, ताकि छांह काल नहिं व्यापै।
दै गुगुल की धूप हमेशा, करै पाठ तन मिटै कलेशा।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

यहि बजरंग बाण जेहि मारे, ताहि कहो फिरि कवन उबारै।
शत्रु समूह मिटे सब आपै, देखत ताहि सुरासुर काँपै।
तेज प्रताप बुद्धि अधिकाई, रहै सदा कपिराज सहाई।

दोहा – प्रेम प्रतीतहि कपि भजै, सदा धरै उर ध्यान,
बाधा सब हरे, करे सब काम सफल हनुमान।

(इति श्री बजरंग बाण समाप्त)

॥ संकट मोचन हनुमत की स्तुति ॥

ॐ जय हनुमत वीरा स्वामी जय हनुमत वीरा
संकट मोचन स्वामी , तुम है रण – धीरा। ॐ जय...
पवन पुत्र अंजनी सुत, महिमा अति भारी
दुःख दारिद्र मिटावो, संकट सब हारी। ॐ जय...
बाल समय में तुमने, रवि को भक्ष लियो
देवन स्तुति कीन्ही, तब ही छोड़ दियो। ॐ जय...
कपि सुग्रीव राम संग, मैत्री करवाई
बाली बली मराय, कपीशहिं गद्दी दिलवाई। ॐ जय...
जारी लंक को ले सिय की सुधि वानर हर्षाये
कारज कठिन सुधारे, रघुवर मन भाये। ॐ जय...
शक्ति लगी लक्ष्मण के भारी सोच भयो
लाय संजीवन बूँटी, दुःख सब दूर कियो। ॐ जय...
ले पाताल अहिरावण, जबहि पैठि गयो
ताहि मारि प्रभु लाये, जय जयकार भयो। ॐ जय...
घाटे मेंहदीपुर में शोभित, दर्शन अति भारी
मंगल और शनिश्चर, मेला है जारी। ॐ जय...
श्री बालाजी की आरती, जो कोई नर गावे
कहत "इन्द्र" हर्षित मनवांछित फल पावे। ॐ जय...

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

।। श्री हनुमान जी की आरती ।।

आरती कीजे हनुमान लला की, दुष्टदलन रघुनाथ कला की।
जाके बल से गिरिवर कांपे, रोग दोष जाके निकट न झांके।
अंजनि पुत्र महा बलदाई, संतन के प्रभु सदा सहाई।
दे बीड़ा रघुनाथ पठाये, लंका जारि सिया सुधि लाये।
लंका सो कोटि समुद्र सी खाई, जात पवनसुत बार न लाई।
लंका जारि असुर संहारे, सियाराम जी के काज संवारे।
लक्ष्मण मुर्छित पड़े सकारे, आनि संजीवन प्राण उबारे।
पैठि पाताल तोरि जमकारे, अहिरावण की भुजा उखारे।
बायें भुजा असुर दल मारे, दाहिने भुजा सन्त जन तारे।
सुर नर मुनि जन आरती उतारे, जै जै जै हनुमान जी उचारे।
कंचन थाल कपूर लौ छाई, आरति करत अंजना माई।
जो हनुमानजी की आरती गावैं, बसि बैकुण्ठ अमर पद पावैं।
लंक विध्वंस किये रघुराई, तुलसी दास स्वामी कीरति गाई।

।। श्री सालासरजी की झांकी ।।

जयश्री सालासर हनुमान अनोखी थारी झांकी।
अनोखी थारी झांकी और महिमा थारी बांकी। जय.।
थारे माथे मुकुट विराजे, काना कुण्डल साजे।
बाबा गले विराजे हार, अनोखी थारी झांकी। जय.।
थारे हाथाँ लाडू साजे, काँधे पर वृक्ष बिराजे।
बाबा रोम रोम में राम, अनोखी थारी झांकी। जय.।
थारे पग घूंघर साजे, चलने में रिमझिम बाजे।
बाबा चलगता को बकलहार, अनोखी थारी झांकी। जय.।
लक्ष्मण के शक्ति लागे, तब लेन संजीवन भागे।
बाबा लाया पहाड़ उठाय, अनोखा थारी झांकी। जय.।
रावण न रामजी मारे, तब राज विभीषण पावे।
बाबा सीताजी से मिलाय, अनोखी थारी झांकी। जय.।
दूर दूर से यात्री आवे, चरणों में शीश नवावे।
बाबा हमारो संकट काट, अनोखी थारी झांकी। जय.।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

॥ हनुमानजी का बिड़द बंका ॥

दोहा - बेगा पधारो पवनसुत, हरो भक्त की पीर
दुश्मन का प्रभु नाश करो, ताक लगाओ तीर।

पायं लागूं ओ महाराज बिड़द बंका
थांपर वारी जाऊँ ओ महाराज बिड़द बंका
बिड़द बंका ओ गढ़ तोड़ी लंका । पायं.।
कुण थारी माता, कुण पिता है,
कुण थारो नाम धरयोजी हनुमन्ता । पायं.।
अंजनी मेरी माता, पवन पिता है,
ब्रह्मा म्हारो नाम धर्योजी हनुमन्ता । पायं.।
कुण रे सत से सागर लांघ्यो,
कुण रे हुकुम से जलाई लंका । पायं.।
रामजी के सत से सागर लांघ्यो,
मात सिया के हुकुम से जलाई लंका। पायं।
रावण मार अहिरावण मार्यो,
कुम्भकरण पर बाजे डंका । पायं.।
तुलसीदास आस रघुवर की,
असुरन मार मिटाई शंका । पायं.।

जिसे हम 'बन्दर' कहकर निकृष्ट समझते हैं, उस वानर में जितना सद्गुण, संयम और नियम है, उतना मनुष्य में कहाँ है? चाहे कितना भी भूखा रहे पर बानर रामफल अथवा सीताफल नहीं खायेगा। कारण, इन फलों के साथ इसके आराध्यदेव का नाम जुड़ा हुआ है। इसी तरह जिसके जीवन में संयम नहीं, जिसके जीवन में प्रभु-भक्ति का कोई नियम नहीं, उसका जीवन निरर्थक है।

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

॥ श्री हनुमत सत्वाचार ॥

(क्षमा प्रार्थना)

हाथ जोड़ विनती करूँ, धरूँ हृदय में ध्यान ।
शरणागत की लाज रख, हे पवन-पुत्र हनुमान ।।
मेंहदीपुर और सालासर, थारा पावन धाम ।
अनुपम छवि हनुमान की, दर्शन से कल्याण ।।
हनुमत हनुमत मैं रटूँ, हनुमत जीवन आधार ।
नित जो सुमिरन करे, होज्या भव से पार ।।
चैत्र सुदी पूनम को, उत्सव भारी होय ।
बाबा के दरबार से, खाली जाय न कोय ।।
लाल लंगोटे वाले की, लाल ध्वजा फहराय ।
सारे वेद पुराण भी, तुमरा ही यश गाय ।।
मंगल और शनिवार को, जो घृत-सिन्दूर चढ़ाय ।
संकट कटे मिटे सब पीरा, अन्त अमर पद पाय ।।
ध्वजा नारियल मोदक मेवा, जो कोई भोग लगाय ।
तेरी कृपा बनी रहे, मन चाहा वर पाय ।।
संकट मोचन हनुमान का, धरें हमेशा ध्यान।
'युवासंघ' पावे सदा, तेरी कृपा से मान।।

क्या कहें किसी से राज अपना, दुनिया में अपना कोई नहीं।
यह दुनिया अपने अपनों की, अपनों में अपना कोई नहीं।

जाम पर जाम पीने से क्या फायदा, रात बीती सुबह को उतर जायेगी।
एक बार यह फकीरी जाम पी ले जरा, तेरी सारी जिन्दगी सुधर जायेगी।

क्या करेगा प्यार वह भगवान से, क्या करेगा प्यार वह ईमान से?
जन्म लेकर गोद में इंसान की, प्यार कर न पाया जो इंसान से।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

॥ श्री रामचरितमानस ॥

॥सुन्दर काण्ड॥

–:०:–

श्लोक

शान्तं शाश्वतमप्रमेयमनघं निर्वाणशान्तिप्रदं
ब्रह्माशम्भुफणीन्द्रसेव्यमनिशं वेदान्तवेद्यं विभुम् ।
रामाख्यं जगदीश्वरं सुरगुरूं मायामनुष्यं हरिं
वन्देऽहं करूणाकरं रघुवरं भूपालचूड़ामणिम् ॥१॥
नान्या स्पृहा रघुपते हृदयेऽस्मदीये
सत्यं वदामि च भवानखिलान्तरात्मा ॥
भक्तिं प्रयच्छ रघुपुङ्गव निर्भरां मे
कामादिदोषरहितं कुरू मानसं च ॥२॥
अतुलितबलधामं हेमशैलाभदेहं
दनुजवनकृशानुं ज्ञानिनामग्रगण्यम् ॥
सकलगुणनिधानं वानराणामधीशं
रघुपतिप्रियभक्तं वातजातं नमामि ॥३॥

जामवंत के वचन सुहाए। सुनि हनुमंत हृदय अति भाए।।
तब लगि मोहि परिखेहु तुम्ह भाई। सहि दुख कंद मूल फल खाई।।
जब लगि आवौं सीतहि देखी। होइहि काजु मोहि हरष विसेषी।।
यह कहि नाइ सबन्हि कहुँ माथा। चलेउ हरषि हियँ धरि रघुनाथा।।
सिंधु तीर एक भूधर सुंदर। कौतुक कूदि चढ़ेउ ता ऊपर।।
बार बार रघुबीर सँभारी। तरकेउ पवन तनय बल भारी।।
जेहि गिरि चरन देइ हनुमंता। चलेउ सो गा पाताल तुरंता।।
जिमि आमोघ रघुपति कर बाना। एही भाँति चलेउ हनुमाना।।
जलनिधि रघुपति दूत विचारी। तै मैनाक होहि श्रमहारी।।

दोहा – हनुमान तेहि परसा कर पुनि कीन्ह प्रनाम ।
राम काजु कीन्हें बिनु मोहि कहाँ विश्राम ॥१॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

जात पवनसुत देवन्ह देखा। जानै कहुँ बल बुद्धि बिसेषा।।
सुरसा नाम अहिन्ह कै माता। पठइन्हि आइ कही तेहिं बाता।।
आजु सुरन्ह मोहि दीन्ह अहारा। सुनत बचन कह पवनकुमारा।।
राम काजु करि फिरि मैं आवौं। सीता कइ सुधि प्रभुहि सुनावौं।।
तब तव बदन पैठिहउँ आई। सत्य कहउँ मोहि जान दे माई।।
क़वनेहुँ जतन देइ नहिं जाना। ग्रससि न मोहि कहेउ हनुमाना।।
जोजन भरि तेहिं बदनु पसारा। कपि तनु कीन्ह दुगुन बिस्तारा।।
सोरह जोजन मुख तेहिं ठयऊ। तुरत पवनसुत बत्तीस भयऊ।।
जस जस सुरसा बदनु बढ़ावा। तासु दून कपि रूप देखावा।।
सत जोजन तेहिं आनन कीन्हा। अति लघु रूप पवनसुत लीन्हा।।
बदन पइठि पुनि बाहर आवा। मांगा बिदा ताहि सिरू नावा।।
मोहि सुरन्ह जेहि लागि पठावा। बुद्धि बल मरमु तोर मैं पावा।।

दोहा – राम काजु सब करिहहु तुम्ह बल बुद्धि निधान ।
आसिष देइ गई सो हरषि चलेउ हनुमान ।।२।।

निसिचरि एक सिंधु महुँ रहई। करि माया नभु के खग गहई।।
जीव जंतु जे गगन उड़ाहीं। जल बिलोकि तीन्ह कै परिछाहीं।।
गहइ छाहँ सक सो न उड़ाई। एहि बिधि सदा गगनचर खाई।।
सोई छल हनूमान कहँ कीन्हा तासु कपटु कपि तुरतहिं चीन्हा।।
ताहि मारि मारूतसुत बीरा। बारिधि पार गयउ मतिधीरा।।
तहाँ जाइ देखी बन सोभा। गुंजत चंचरीक मधु लोभा।।
नाना तरू फल फूल सुहाए। खग मृग वृंद देखि मन भाए।।
सैल बिसाल देखि एक आगें। ता पर धाइ चढ़ेउ भय त्यागें।।
उमा न कछु कपि कै अधिकाई। प्रभु प्रताप जो कालहि खाई।।
गिरि पर चढ़ि लंका तेहिं देखी। कहि न जाइ अति दुर्ग बिसेषी।।
अति उतंग जलनिधि चहु पासा। कनक कोट कर परम प्रकासा।।

छं०- कनक कोट बिचित्र मनि कृत सुंदरायतना घना।
चउहट्ट हट्ट सुबट्ट बीथीं चारू पुर बहु बिधि बना।।
गज बाजि खच्चर निकर पदचर रथ बरूथन्हि को गनै।
बहुरूप निसिचर जूथ अतिबल सेन बरनत नहिं बनै।।१।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

बन बाग उपबन बाटिका सर कूप बापीं सोहहीं।
नर नाग सुर गंधर्व कन्या रूप मुनि मन मोहहीं।।
कहुँ माल देह बिसाल सैल समान अतिबल गर्जहीं।
नाना अखारेन्ह भिरहिं बहुबिधि एक एकन्ह तर्जहीं।।२।।
करि जतन भट कोटिन्ह बिकट तन नगर चहुँ दिसि रच्छहीं।
कहुँ महिष मानुष धेनु खर अज खल निसाचर भच्छहीं।।
एहि लागि तुलसीदास इन्ह की कथा कछु एक है कही।
रघुबीर सर तीरथ सरीरन्हि त्यागि गति पैहहिं सही।।३।।

दोहा – पुर रखवारे देखि बहु, कपि मन कीन्ह विचार ।
अति लघु रूप धरौं निसि नगर करौं पइसार ।।३।।

मसक समान रूप कपि धरी, लंकहि चलेउ सुमिरि नरहरी ।
नाम लंकिनी एक निसिचरी, सो कह चलेसि मोहि निदरी ।
जानेहि नहीं मरमु सठ मोरा, मोर अहार जहाँ लगि चोरा ।
मुठिका एक महा कपि हनी, रूधिर बमत धरनीं ढनमनी ।
पुनि संभारि उठी सो लंका, जोरि पानि कर बिनय ससंका ।
जब रावनहि ब्रह्म बर दीन्हा, चलत बिरंचि कहा मोहि चीन्हा ।
बिकल होसि तै कपि के मारे, तब जानेसु निसिचर संघारे ।
तात मोर अति पुन्य बहूता, देखेऊँ नयन राम कर दूता ।

दोहा – तात स्वर्ग अपवर्ग सुख धरिअ तुला एक अंग ।
तूल न ताही सकल मिलि जो सुख लव सतसंग ।।४।।

प्रबिसि नगर कीजे सब काजा, हृदयँ राखि कोसलपुर राजा ।
गरल सुधा रिपु करहिं मिताई, गोपद सिंधु अनल सितलाई ।
गरूड़ सुमेरू रेनु सम ताहि, राम कृपा करि चितवा जाही ।
अति लघु रूप धरेउ हनुमाना, पैठा नगर सुमिरि भगवाना ।
मंदिन मंदिर प्रति कर सोधा, देखे जहँ तहँ अगनित जोधा ।
गयउ दसानन मंदिर माहीं, अति बिचित्र कहि जात सो नाहीं ।
सयन किएँ देखा कपि तेही, मंदिर महुँ न दीखि बैदेही ।
भवन एक पुनि दीख सुहावा, हरि मंदिर तहँ भिन्न बनावा ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

दोहा – रामायुध अंकित गृह सोभा बरनि न जाइ ।
नव तुलसिका बृंद तहँ देखि हरषे कपिराइ ।।५।।

लंका निसिचर निकर निवासा, इहाँ कहाँ सज्जन कर बासा ।
मन महुँ तरक करैं कपि लागा, तेहीं समय बिभीषनु जागा ।
राम राम तेहिं सुमिरन कीन्हा, हृदयँ हरष कपि सज्जन चीन्हा ।
एहि सन हठि करहिऊँ पहिचानी, साधु ते होइ न कारज हानी ।
विप्र रूप धरि बचन सुनाए, सुनत बिभीषन उठि तहँ आए ।
करि प्रनाम पूँछी कुसलाई, विप्र कहहु निज कथा बुझाई ।
की तुम्ह हरि दासन्ह महँ कोई, मोरे हृदय प्रीति अति होई ।
की तुम्ह रामु दीन अनुरागी, आयहु मोहि करन बड़भागी ।

दोहा – तब हनुमंत कही सब राम कथा निज नाम ।
सुनत जुगल तन पुलक मन मगन सुमिरि गुन ग्राम ।।६।।

सुनहु पवनसुत रहनि हमारी, जिमि दसनन्हि महुँ जीभ बिचारी ।
तात कबहुँ मोहि जानि अनाथा, करिहहिं कृपा भानुकुल नाथा ।
तामस तनु कछु साधन नाहीं, प्रीति न पद सरोज मन माहीं ।
अब मोहि भा भरोस हनुमंता, बिनु हरिकृपा मिलहिं नहीं संता ।
जौं रघुबीर अनुग्रह कीन्हा, तो तुम्ह मोहि दरसु हठि दीन्हा ।
सुनहु बिभीषन प्रभु कै रीति, करहिं सदा सेवक पर प्रीती ।
कहहु कवन मैं परम कुलीना, कपि चंचल सबहीं बिधि हीना ।
प्रात लेइ जो नाम हमारा, तेहि दिन ताहि न मिलै अहारा ।

दोहा – अस मैं अधम सखा सुनु मोहू पर रघुबीर ।
कीन्ही कृपा सुमिरि गुन भरे बिलोचन नीर ।।७।।

जानतहूँ अस स्वामी बिसारी, फिरहिं ते काहे न होहिं दुखारी ।
एहि बिधि कहत राम गुन ग्रामा, पावा अनिर्बाच्य बिश्रामा ।
पुनि सब कथा बिभीषन कही, जेहि बिधि जनक सुता तहँ रही ।
तब हनुमंत कहा सुनु भ्राता, देखि चहउँ जानकी माता ।
जुगुति बिभीषन सकल सुनाई, चलेउ पवनसुत बिदा कराई ।
करि सोइ रूप गयउ पुनि तहवाँ, बन असोक सीता रह जहवाँ ।

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

देखि मनहि महुँ कीन्ह प्रनामा, बैठेहिं बीति जात निसि जामा ।
कृस तनु सीस जटा एक बेनी, जपति हृदयँ रघुपति गुन श्रेनी ।

दोहा – निज पद नयन दिएँ मन राम पद कमल लीन ।
परम दुखी भा पवनसुत देखि जानकी दीन ॥८॥

तरू पल्लव महुँ रहा लुकाई, करइ विचार करौं का भाई ।
तेहि अवसर रावनु तहँ आवा, संग नारि बहु किएँ बनावा ।
बहु विधि खल सीतहि समुझावा, साम दाम भय भेद देखावा ।
कह रावनु सुनु सुमुखि सयानी, मंदोदरी आदि सब रानी ।
तव अनुचरी करउँ पन मोरा, एक बार बिलोकु मम ओरा ।
तृन धरि ओट कहति बैदेही, सुमिरि अवधपति परम सनेही ।
सुनु दसमुख खद्योत प्रकासा, कबहुँ कि नलिनी करइ बिकासा ।
अस मन समुझु कहति जानकी, खल सुधि नहिं रघुबीर बान की ।
सठ सूनें हरि आनेहि मोही, अधम निर्लज्ज लाज नहिं तोही ।

दोहा – आपुहि सुनि खद्योत सम रामहि भानु समान ।
परूष बचन सुनि काढ़ि असि बोला अति खिसिआन ॥९॥

सीता तैं मम कृत अपमाना, कटिहउँ तव सिर कठिन कृपाना ।
नाहिं त सपदि मानु मम बानी, सुमुखि होति न त जीवन हानी ।
स्याम सरोज दाम सम सुंदर, प्रभु भुज करि कर सम दसकंधर ।
सो भुज कंठ कि तव असि घोरा, सुनु सठ अस प्रवान मन मोरा ।
चंद्रहास हरू मम परितापं, रघुपति बिरह अनल संजातं ।
सीतल निसित बहसि बर धारा, कह सीता हरू मम दुख भारा ।
सुनत बचन पुनि मारन धावा, मयतनयाँ कहि नीति बुझावा ।
कहेसि सकल निसिचरिन्ह बोलाई, सीतहि बहु बिधि त्रासहु जाई ।
मास दिवस महुँ कहा न माना, तौ मैं मारबि काढ़ि कृपाना ।

दोहा – भवन गयउ दसकंधर इहाँ पिसाचिनि बृंद ।
सीतहि त्रास देखावहिं धरहिं रूप बहु मंद ॥१०॥

त्रिजटा नाम राच्छसी एका, राम चरन रति निपुन बिबेका ।
सबन्हौं बोलि सुनाएसि सपना, सीतहि सेइ करहु हित अपना ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

सपनें बानर लंका जारी, जातुधान सेना सब मारी ।
खर आरूढ़ नगन दससीसा, मुंडित सिर खंडित भुज बीसा ।
एहि बिधि सो दच्छिन दिसि जाई, लंका मनहुँ बिभीषन पाई ।
नगर फिरी रघुबीर दोहाई, तब प्रभु सीता बोलि पठाई ।
यह सपना मैं कहउँ पुकारी, होइहि सत्य गएँ दिन चारी ।
तासु बचन सुनि ते सब डरीं, जनकसुता के चरनन्हि परीं ।

दोहा – जहँ तहँ गई सकल तब सीता कर मन सोच ।
मास दिवस बीते मोहि मारिहि निसिचर पोच ॥११॥

त्रिजटा सन बोलीं कर जोरी, मातु बिपति संगिनि तैं मोरी ।
तजौं देह करू बेगि उपाई, दुसह बिरहु अब नहिं सहि जाई ।
आनि काठ रचु चिता बनाई, मातु अनल पुनि देहि लगाई ।
सत्य करहि मम प्रीति सयानी, सुनै को श्रवन सूल सम बानी ।
सुनत बचन पद गहि समुझाएसि, प्रभु प्रताप बल सुजसु सुनाएसि ।
निसि न अनल मिल सुनु सुकुमारी, अस कहि सोनिज भवन सिधारी ।
कह सीता बिधि भा प्रतिकूला, मिलिहि न पावक मिटिहि न सूला ।
देखिअत प्रगट गगन अंगारा, अवनि न आवत एकउ तारा ।
पावकमय ससि स्त्रवत न आगी, मानहुँ मोहि जानि हतभागी ।
सुनहि बिनय मम बिटप असोका, सत्य नाम करू हरू मम सोका ।
नूतन किसलय अनल समाना, देहि अगिनि जनि करहि निदाना ।
देखि परम बिरहाकुल सीता, सो छन कपिहि कलप सम बीता ।

दोहा – कपि करि हृदयँ बिचार दीन्हि मुद्रिका डारि तब ।
जनु असोक अंगार दीन्ह हरषि उठि कर गहेउ ॥१२॥

तब देखि मुद्रिका मनोहर, राम नाम अंकित अति सुंदर ।
चकित चितव मुदरी पहिचानी, हरष बिषाद हृदयँ अकुलानी ।
जीति को सकइ अजय रघुराई, माया ते असि रचि नहिं जाई ।
सीता मन बिचार कर नाना, मधुर बचन बोलेउ हनुमाना ।
रामचन्द्र गुन बरनैं लागा, सुनतहिं सीता कर दुख भागा ।
लागीं सुनै श्रवन मन लाई, आदिहु तें सब कथा सुनाई ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

श्रवनामृत जेहिं कथा सुहाई, कही सो प्रगट होति किन भाई ।
तब हनुमंत निकट चलि गयऊ, फिरि बैठीं मन बिसमय भयऊ ।
राम दूत मैं मातु जानकी, सत्य सपथ करूनानिधान की ।
यह मुद्रिका मातु मैं आनी, दीन्हि राम तुम्ह कहँ सहिदानी ।
नर बानरहि संग कहु कैसें, कही कथा भइ संगति जैसे ।

दोहा – कपि के बचन सप्रेम सुनि उपजा मन बिस्वास ।
जाना मन क्रम बचन यह कृपासिंधु कर दास ॥१३॥

हरिजन जानि प्रीति अति गाढ़ी, सजल नयन पुलकावलि बाढ़ी ।
बूड़त बिरह जलधि हनुमाना, भयहु तात मो कहुँ जलजाना ।
अब कह कुसल जाऊँ बलिहारी, अनुज सहित सुख भवन खरारी ।
कोमलचित कृपाल रघुराई, कपि केहि हेतु धरी निठुराई ।
सहज बानि सेवक सुखदायक, कबहुँक सुरति करत रघुनायक ।
कबहुं नयन मम सीतल ताता, होइहहिं निरखि स्याम मृदु गाता ।
बचनु न आव नयन भरे बारी, अहह नाथ हौं निपट बिसारी ।
देखि परम बिरहाकुल सीता, बोला कपि मृदु बचन बिनीता ।
मातु कुसल प्रभु अनुज समेता, तव दुख दुखी सुकृपा निकेता ।
जनि जननी मानहु जियँ उना, तुम्ह ते प्रेमु राम के दूना ।

दोहा – रघुपति कर संदेसु अब सुनु जननी धरि धीर ।
अस कहि कपि गदगद भयउ भरे बिलोचन नीर ॥१४॥

कहेउ राम बियोग तव सीता, मो कहुँ सकल भए बिपरीता ।
नव तरू किसलय मनहुँ कृसानू, कालनिसा सम निसि ससि भानू ।
कुबलय बिपिन कुंत बन सरिसा, बारिद तपत तेल जनु बरिसा ।
जे हित रहे करत तेइ पीरा, उरग स्वास सम त्रिबिध समीरा ।
कहेहू ते कछु दुख घटि होई, काहि कहौं यह जान न कोइ ।
तत्व प्रेम कर मम अरू तोरा, जानत प्रिया एकु मन मोरा ।
सो मनु सदा रहत तोहि पाहीं, जानु प्रीति रसु एतनेहि माहीं ।
प्रभु संदेसु सुनत बैदेही, मगन प्रेम तन सुधि नहिं तेही ।
कह कपि हृदयँ धीर धरू माता, सुमिरू राम सेवक सुखदाता ।
उर आनहु रघुपति प्रभुताई, सुनि मम बचन तजहु कदराई ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

दोहा – निसिचर निकट पतंग सम रघुपति बान कृसानु ।
जननी हृदयँ धीर धरू जरे निसाचर जानु ॥१५॥

जौं रघुबीर होति सुधि पाई, करते नहिं बिलंबु रघुराई ।
राम बान रवि उएँ जानकी, तम बरूथ कहं जातुधान की ।
अबहिं मातु मैं जाऊँ लवाई, प्रभु आयसु नहिं राम दोहाई ।
कछुक दिवस जननी धरू धीरा, कपिन्ह सहित अइहहिं रघुबीरा ।
निसिचर मारी तोहि लै जैहहिं, तिहुँ पुर नारदादि जसु गैहहिं ।
हैं सुत कपि सब तुम्हहि समाना, जातुधान अति भट बलवाना ।
मोरें हृदय परम संदेहा, सुनि कपि प्रगट कीन्हि निज देहा ।
कनक भूधराकार सरीरा, समर भयंकर अतिबल बीरा ।
सीता मन भरोस तब भयऊ, पुनि लघु रूप पवनसुत लयऊ ।

दोहा – सुनु माता साखामृग नहिं बल बुद्धि बिसाल ।
प्रभु प्रताप तें गरूड़हि खाइ परम लघु व्याल ॥१६॥

मन संतोष सुनत कपि बानी, भगति प्रताप तेज बल सानी ।
आसिष दीन्हि रामप्रिय जाना, होहु तात बल सील निधाना ।
अजर अमर गुननिधि सुत होहू, करहूँ बहुत रघुनायक छोहू ।
करहुँ कृपा प्रभु अस सुनि काना, निर्भर प्रेम मगन हनुमाना ।
बार बार नाएसि पद सीसा, बोला बचन जोरि कर कीसा ।
अब कृतकृत्य भयउँ मैं माता, आसिष तव अमोघ बिख्याता ।
सुनहु मातु मोहि अतिसय भूखा, लागि देखि सुंदर फल रूखा ।
सुनु सुत करहिं बिपिन रखवारी, परम सुभट रजनीचर भारी ।
तिन्ह कर भय माता मोहि नाहीं, जौं तुम्ह सुख मानहु मन माहीं ।

दोहा – देखि बुद्धि बल निपुन कपि कहेउ जानकी जाहु ।
रघुपति चरन हृदयँ धरि तात मधुर फल खाहु ॥१७॥

चलेउ नाई सिरू पैठेउ बागा, फल खाएसि तरू तोरैं लागा ।
रहे तहाँ बहु भट रखवारे, कछु मारेसि कछु जाइ पुकारे ।
नाथ एक आवा कपि भारी, तेहिं असोक बाटिका उजारी ।
खाएसि फल अरू बिटप उपारे, रच्छक मर्दि मर्दि महि डारे ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

सुनि रावन पठए भट नाना, तिन्हहि देखि गर्जेउ हनुमाना ।
सब रजनीचर कपि संघारे, गए पुकारत कछु अधमारे ।
पुनि पठयउ तेहिं अच्छकुमारा, चला संग लै सुभट अपारा ।
आवत देखि बिटप गहि तर्जा, ताहि निपाति महाधुनि गर्जा ।

दोहा – कछु मारेसि कछु मर्देसि कछु मिलएसि धरि धूरि ।
कछु पुनि जाइ पुकारे प्रभु मर्कट बल भूरि ।।१८।।

सुनि सुत बध लंकेस रिसाना, पठएसि मेघनाद बलवाना ।
मारसि जनि सुत बाँधेसु ताही, देखिअ कपिहि कहाँ कर आही ।
चला इन्द्रजित अतुलित जोधा, बंधु निधन सुनि उपजा क्रोधा ।
कपि देखा दारून भट आवा, कटकटाई गर्जा अरू धावा ।
अति बिसाल तरू एक उपारा, बिरथ कीन्ह लंकेस कुमारा ।
रहे महाभट ताके संगा, गहि गहि कपि मर्दइ निज अंगा ।
तिन्हहि निपाति ताहि सन बाजा, भिरे जुगल मानहुँ गजराजा ।
मुठिका मार चढ़ा तरू जाइ, ताहि एक छन मुरूछा आई ।
उठि बहोरि कीन्हिसि बहु माया, जीति न जाइ प्रभंजन जाया ।

दोहा – ब्रह्म अस्त्र तेहि साँधा कपि मन कीन्ह बिचार ।
जौं न ब्रह्मसर मानउँ महिमा मिटइ अपार ।।१९।।

ब्रह्मबान कपि कहुँ तेहिं मारा, परतिहुँ बार कटकु संघारा ।
तेहिं देखा कपि मुरछित भयऊ, नागपास बाँधेसि लै गयऊ ।
जासु नाम जपि सुनहु भवानी, भव बंधन काटहिं नर ग्यानी ।
तासु दूत कि बंध तरू आवा, प्रभु कारज लगि कपिहिं बँधावा ।
कपि बंधन सुनि निसिचर धाए, कौतुक लागि सभाँ सब आए ।
दसमुख सभा दीखि कपि जाई, कहि न जाई कछु अति प्रभुताई ।
कर जोरे सुर दिसिप बिनीता, भृकुटि बिलोकत सकल सभीता ।
दखि प्रताप न कपि मन संका, जिमि अहिगन महुँ गरूड़ असंका ।

दोहा – कपिहि बिलोकि दसानन बिहसा कहि दुर्बाद ।
सुत बध सुरति कीन्हि पुनि उपजा हृदयँ विषाद ।।२०।।

कह लंकेस कवन तैं कीसा, केहि कें बल घालेहि बन खीसा ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

की धौं श्रवन सुनेहि नहिं मोही, देखउँ अति असंक सठ तोही ।
मारे निसिचर केहिं अपराधा, कहु सठ तोहि न प्रान कइ बाधा ।
सुनु रावन ब्रह्माण्ड निकाया, पाइ जासु बल बिरचति माया ।
जाकें बल बिरंचि हरि ईसा, पालत सृजत हरत दससीसा ।
जा बल सीस धरत सहसानन, अंडकोस समेत गिरि कानन ।
धरइ जो बिबिध देह सुरत्राता, तुम्हे से सठन्ह सिखावनु दाता ।
हर को दंड कठिन जेहिं भंजा, तेहि समेत नृप दल मद गंजा ।
खर दूषन त्रिसिरा अरू बाली, बधे सकल अतुलित बलसाली ।

दोहा – जाके बल लवलेस तें जितेहु चराचर झारि ।
तासु दूत मैं जा करि हरि आनेहु प्रिय नारि ॥२१॥

जानऊँ मैं तुम्हारि प्रभुताई, सहसबाहु सन परी लराई ।
समर बालि सन करि जसु पावा, सुनि कपि बचन बिहसि बिहरावा ।
खायउँ फल प्रभु लागी भूँखा, कपि सुभाव तें तोरेउँ रूखा ।
सब कें देह परम प्रिय स्वामी, मारहिं मोहि कुमारग गामी ।
जिन्ह मोहि मारा ते मैं मारे, तेहि पर बाँधेउँ तनयँ तुम्हारे ।
मोहि न कछु बाँधे कइ लाजा, कीन्ह चहउँ निज प्रभु कर काजा ।
बिनती करउँ जोरि कर रावन, सुनहु मान तजि मोर सिखावन ।
देखहु तुम्ह निज कुलहि बिचारी, भ्रम तजि भजहु भगत भयहारी ।
जाकें डर अति काल डेराई, जो सुर असुर चराचर खाई ।
तासों बयरू कबहुँ नहिं कीजै, मोरे कहें जानकी दीजै ।

दोहा – प्रनतपाल रघुनायक करूना सिंधु खरारि ।
गएँ सरन प्रभु राखिहैं तव अपराध बिसारि ॥२२॥

राम चरन पंकज उर धरहू, लंका अचल राजु तुम्ह करहू ।
रिषि पुलस्ति जसु बिमल मयंका, तेहि ससि महुँ जनि होहु कलंका ।
राम नाम बिनु गिरा न सोहा, देखु बिचारि तयागि मद मोहा ।
बसन हीन नहिं सोह सुरारी, सब भूषन भूषित बर नारी ।
राम बिमुख संपति प्रभुताई, जाइ रही पाई बिनु पाई ।
सजल मूल जिन्ह सरितन्ह नाहीं, बरषि गयें पुनि तबहिं सुखाहीं ।

सुनु दसकंठ कहउँ पन रोपी, बिमुख राम त्राता नहिं कोपी ।
संकर सहस विष्नु अज तोही, सकहिं न राखि राम कर द्रोही ।

दोहा – मोहमूल बहु सूल प्रद त्यागहु तम अभिमान ।
भजहु राम रघुनायक कृपा सिंधु भगवान ।।२३।।

जदपि कही कपि अति हित बानी, भगति बिबेक बिरति नय सानी ।
बोला बिहसि महा अभिमानी, मिला हमहि कपि गुर बड़ ग्यानी ।
मृत्यु निकट आई खल तोही, लागेसि अधम सिखावन मोही ।
उलटा होइहि कह हनुमाना, मतिभ्रम तोर प्रगट मैं जाना ।
सुनि कपि बचन बहुत खिसिआना, बेगि न हरहुँ मूढ़ कर प्राना ।
सुनत निसाचर मारन धाए, सचिवन्ह सहित बिभीषनु आए ।
नाइ सीस करि बिनय बहूता, नीति बिरोध न मारिअ दूता ।
आन दंड कछु करिअ गोसाँई, सबही कहा मंत्र भल भाई ।
सुनत बिहसि बोला दसकंधर, अंग भंग करि पठइअ बंदर ।

दोहा – कपि के ममता पूँछ पर सबहि कहउँ समुझाइ ।
तेल बोरि पट बाँधि पुनि पावक देहु लगाइ ।।२४।।

पूँछहीन बानर तहँ जाइहि, तब सठ निज नाथहि लइ आइहि ।
जिन्ह कै कीन्हिसि बहुत बड़ाई, देखउँ मैं तिन्ह कै प्रभुताई ।
बचन सुनत कपि मन मुसुकाना, भई सहाय सारद मैं जाना ।
जातुधान सुनि रावन बचना, लागे रचैं मूढ़ सोइ रचना ।
रहा न नगर बसन घृत तेला, बाढ़ी पूँछ कीन्ह कपि खेला ।
कौतुक कहँ आए पुरबासी, मारहिं चरन करहिं बहु हाँसी ।
बाजहिं ढोल देहिं सब तारी, नगर फेरि पुनि पूँछ प्रजारी ।
पावक जरत देखि हनुमंता, भयउ परम लघु रूप तुरंता ।
निबुकि चढ़ेउ कपि कनक अटारी, भई सभीत निसाचर नारी ।

दोहा – हरि प्रेरित तेहि अवसर चले मरूत उनचास ।
अट्टहास करि गर्जा कपि बढ़ि लाग अकास ।।२५।।

देह बिसाल परम हरूआई, मंदिर तें मंदिर चढ़ धाई ।
जरइ नगर भा लोग बिहाला, झपट लपट बहु कोटि कराला ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

तात मातु हा सुनिअ पुकारा, एहिं अवसर को हमहि उबारा ।
हम जो कहा यह कपि नहिं होई, बानर रूप धरें सुर कोई ।
साधु अवग्या कर फलु ऐसा, जरइ नगर अनाथ कर जैसा ।
जारा नगरू निमिष एक माहीं, एक बिभीषन कर गृह नाहीं ।
ता कर दूत अनल जेहिं सिरिजा, जरा न सो तेहि कारन गिरिजा ।
उलटि पलटि लंका सब जारी, कूदि परा पुनि सिन्धु मझारी ।

दोहा – पूँछ बुझाइ खोइ श्रम धरि लघु रूप बहोरि ।
जनकसुता कें आगें ठाढ़ भयउ कर जोरि ।।२६।।

मातु मोहि दीजे कछु चीन्हा, जैसें रघुनायक मोहि दीन्हा ।
चूड़ामनि उतारि तब दयऊ, हरष समेत पवनसुत लयऊ ।
कहेहु तात अस मोर प्रनामा, सब प्रकार प्रभु पूरन कामा ।
दीन दयाल बिरिदु संभारि, हरहु नाथ मम संकट भारी ।
तात सक्रसुत कथा सुनाएहु, बान प्रताप प्रभुहि समुझाएहु ।
मास दिवस महुँ नाथु न आवा, तौ पुनि मोहि जिअत नहिं पावा ।
कहु कपि केहि बिधि राखौं प्राना, तुम्हहू तात कहत अब जाना ।
तोहि देखि सीतलि भइ छाती, पुनि मो कहुँ सोइ दिनु सो राती ।

दोहा – जनकसुतहि समुझाइ करि बहु बिधि धीरजु दीन्ह ।
चरन कमल सिरू नाइ कपि गवनु राम पहिं कीन्ह ।।२७।।

चलत महाधुनि गर्जेसि भारी, गर्भ स्रवहिं सुनि निसिचर नारी ।
नाघि सिंधु एहि पारहि आवा, सबद किलिकिला कपिन्ह सुनावा ।
हरषे सब बिलोकि हनुमाना, नूतन जन्म कपिन्ह तब जाना ।
मुख प्रसन्न तन तेज बिराजा, कीन्हेसि रामचन्द्र कर काजा ।
मिले सकल अति भए सुखारी, तलफत मीन पाव जिमि बारी ।
चले हरषि रघुनायक पासा, पूँछत कहत नवल इतिहासा ।
तब मधुबन भीतर सब आए, अंगद संमत मधु फल खाए ।
रखवारे जब बरजन लागे, मुष्टि प्रहार हनत सब भागे ।

दोहा – जाइ पुकारे ते सब बन उजार जुबराज ।
सुनि सुग्रीव हरष कपि करि आए प्रभु काज ।।२८।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

जौं न होति सीता सुधि पाई, मधुबन के फल सकहिं कि खाई ।
एहि बिधि मन बिचार कर राजा, आइ गए कपि सहित समाज ।
आइ सबन्हि नावा पद सीसा, मिलेउ सबन्हि अति प्रेम कपीसा ।
पूँछी कुसल कुसल पद देखी, राम कृपाँ भा काजु बिसेषी ।
नाथ काजु कीन्हेउ हनुमाना, राखे सकल कपिन्ह के प्राना ।
सुनि सुग्रीव बहुरि तेहि मिलेऊ, कपिन्ह सहित रघुपति पहिं चलेऊ।
राम कपिन्ह जब आवत देखा, किएँ काजु मन हरष बिसेषा ।
फटिक सिला बैठे द्वौ भाई, परे सकल कपि चरनन्हि जाई ।

दोहा – प्रीति सहित सब भेटे रघुपति करूना पुंज ।
पूँछी कुसल नाथ अब कुसल देखि पद कंज ॥२९॥

जामवंत कह सुनु रघुराया, जा पर नाथ करहु तुम्ह दाया ।
ताहि सदा सुभ कुसल निरंतर, सुर नर मुनि प्रसन्न ता ऊपर ।
सोइ बिजई बिनई गुन सागर, तासु सुजसु त्रैलोक उजागर ।
प्रभु कीं कृपा भयउ सबु काजू, जन्म हमार सुफल भा आजू ।
नाथ पवनसुत कीन्हि जो करनी, सहसहुँ मुख न जाइ सो बररनी ।
पवनतनय के चरित सुहाए, जामवंत रघुपतिहि सुनाए ।
सुनत कृपानिधि मन अति भाए, पुनि हनुमान हरषि हियँ लाए ।
कहहु तात केहि भाँति जानकी, रहति करति रच्छा स्वप्रान की ।

दोहा – नाम पाहरू दिवस निसि ध्यान तुम्हार कपाट ।
लोचन निज पद जंत्रित जाहिं प्रान केहिं बाट ॥३०॥

चलत मोहि चूड़ामनि दीन्ही, रघुपति हृदयँ लाइ सोइ लीन्ही ।
नाथ जुगल लोचन भरि बारी, बचन कहे कछु जनक कुमारी ।
अनुज समेत गहेहु प्रभु चरना, दीन बंधु प्रनतारति हरना ।
मन क्रम बचन चरन अनुरागी, केहिं अपराध नाथ हौं त्यागी ।
अवगुन एक मोर मैं माना, बिछुरत प्रान न कीन्ह पयाना ।
नाथ सो नयनन्हि को अपराधा, निसरत प्रान करहिं हठि बाधा ।
बिरह अगिनि तनु तूल समीरा, स्वास जरइ छन माहिं सरीरा ।
नयन स्रवहिं जलु निज हित लागी, जरैं न पाव देह बिरहागी ।
सीता कै अति बिपति बिसाला, बिनहिं कहें भलि दीनदयाला ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

दोहा – निमिष निमिष करूनानिधि जाहिं कलप सम बीति ।
बेगि चलिअ प्रभु आनिअ भुज बल खल दल जीति ।।३१।।

सुनि सीता दुख प्रभु सुख अयना, भरि आए जल राजीव नयना ।
बचन कायँ मन मम गति जाही, सपनेहुँ बूझिअ बिपति की ताही ।
कह हनुमंत बिपति प्रभु सोई, जब तव सुमिरन भजन न होई ।
केतिक बात प्रभु जातुधान की, रिपुहि जीति आनिबी जानकी ।
सुनु कपि तोहि समान उपकारी, नहिं कोउ सुर नर मुनि तनुधारी ।
प्रति उपकार करौं का तोरा, सनमुख होइ न सकत मन मोरा ।
सुनु सुत तोहि उरनि मैं नाहीं, देखेउँ करि बिचार मन माहीं ।
पुनि पुनि कपिहि चितव सुरत्राता, लोचन नीर पुलक अति गाता ।

दोहा – सुनि प्रभु बचन बिलोकि मुख गात हरषि हनुमंत ।
चरन परेउ प्रेमाकुल त्राहि त्राहि भगवंत ।।३२।।

बार बार प्रभु चहइ उठावा, प्रेम मगन तेहि उठब न भावा ।
प्रभु कर पंकज कपि कें सीसा, सुमिरि सो दसा मगन गौरीसा ।
सावधान मन करि पुनि संकट, लागे कहन कथा अति सुंदर ।
कपि उठाइ प्रभु हृदयँ लगावा, कर गहि परम निकट बैठावा ।
कहु कपि रावन पालित लंका, केहि बिधि दहेउ दुर्ग अति बंका ।
प्रभु प्रसन्न जाना हनुमाना, बोला बचन बिगत अभिमाना ।
साखामृग कै बड़ि मनुसाई, साखा तें साखा पर जाई ।
नाघि सिंधु हाटकपुर जारा, निसिचरगन बधि बिपिन उजारा ।
सो सब तव प्रताप रघुराई, राथ न कछू मोरि प्रभुताई ।

दोहा – ता कहुँ प्रभु कछु अगम नहिं जा पर तुम्ह अनुकूल ।
तव प्रभावँ बड़वानलहि जारि सकइ खलु तूल ।।३३।।

नाथ भगति अति सुखदायिनी, देहु कृपा करि अनपायनी ।
सुनि प्रभु परम सरल कपि बानी, एवमस्तु तब कहेउ भवानी ।
उमा राम सुभाउ जेहिं जाना, ताहि भजनु तजि भाव न आना ।
यह संबाद जासु उर आवा, रघुपति चरन भगति सोइ पावा ।
सुनि प्रभु बचन कहहिं कपि बृंदा, जय जय जय कृपाल सुखकंदा ।

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

तब रघुपति कपिपतिहिं बोलावा, कहा चलैं कर करहु बनावा ।
अब बिलंबु केहि कारन कीजे, तुरत कपिनह कहुँ आयसु दीजे ।
कौतुक देखि सुमन बहु बरषी, नभ तें भवन चले सुर हरषी ।

दोहा – कपिपति बेगि बोलाये आए जूथप जूथ ।
नाना बरन अतुल बन बानर भालु बरूथ ।।३४।।

प्रभु पद पंकज नावहिं सीसा, गर्जहिं भालु महाबल कीसा ।
देखी राम सकल कपि सेना, चितइ कृपा करि राजीव नैना ।
राम कृपा बल पाइ कपिंदा, भए पच्छजुत मनहुँ गिरिंदा ।
हरषि राम तब कीन्ह पयाना, सगुन भए सुन्दर सुभ नाना ।
जासु सकल मंगलमय कीती, तासु पयान सगुन यह नीती ।
प्रभु पयान जाना बैदेहीं, फरकि बाम अंग जनु कहि देहीं ।
जोइ जोइ सगुन जानिकिहि होइ, असगुन भयउ रावनहि सोइ ।
चला कटुक को बरनैं पारा, गर्जहिं बानर भालु अपारा ।
नख आयुध गिरि पादपधारी, चले गगन महि इच्छाचारी ।
केहरिनाद भालु कपि करहीं, डगमगाहिं दिग्गज चिक्करहीं ।

छन्द – चिक्करहिं दिग्गज डोल महि गिरि लोल सागर खरभरे ।
मन हरष सम गंधर्ब सुर मुनि नाग किंनर दुख टरे ।
कटकटहिं मर्कट बिकट भट बहु कोटि कोटिन्ह धावहीं ।
जय राम प्रबल प्रताप कोसलनाथ गुन गन गावहीं ।
सहि सक न भार उदार अहिपति बार बारहिं मोहई ।
गह दसन पुनि पुनि कमठ पृष्ठ कठोर सो किमि सोहई ।
रघुबीर रूचिर प्रयान प्रस्थिति जानि परम सुहावनी ।
जनु कमठ खर्पर सर्पराज सो लिखत अबिचल पावनी ।।२।।

दोहा – एहि बिधि जाइ कृपानिधि उतरे सागर तीर ।
जहँ तहँ लागे खान फल भालु बिपुल कपि बीर ।।३५।।

उहाँ निसाचर रहहिं ससंका, जब तें जारि गयउ कपि लंका ।
निज-निज गृहँ सब करहिं बिचारा, नहिं निसिचर कुल केर उबारा ।
जासु दूत बल बरनि न जाई, तेहि आएँ पुर कवन भलाई ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

दूतिन्ह सन सुनि पुरजन बानी, मंदोदरी अधिक अकुलानी ।
रहसि जोरि कर पति पग लागि, बोली बचन नीति रस पागी ।
कंत करष हरि सन परिहरहू, मोर कहा अति हित हियँ धरहू ।
समुझत जासू दूत कई करनी, स्त्रवहिं गर्भ रजनीचर धरनी ।
तासु नारि निज सचिव बोलाई, पठवहु कंत जो चहहु भलाई ।
तव कुल कमल बिपिन दुखदाई, सीता सीत निसा सम आई ।
सुनहु नाथ सीता बिनु दीन्हें, हित न तुम्हार संभु अज कीन्हें ।

दोहा – राम बान अहि गन सरिस निकट निसाचर भेक ।
जब लागि ग्रसत न तब लगि जतनु करहु तजि टेक ।।३६।।

श्रवन सुनि सठ ता करि बानी, बिहसा जगत बिदित अभिमानी ।
सभय सुभाउ नारि कर साचा, मंगल महुँ भय मन अति काचा ।
जौं आवइ मर्कट कटकटाई, जिअहिं बिचारे निसिचर खाई ।
कंपहिं लोकप जाकी त्रासा, तासु नारि सभीत बड़ि हासा ।
अब कहि बिहसि ताहि उर लाई, चलेउ सभाँ ममता अधिकाई ।
मंदोदरी हृदयँ कर चिंता, भयउ कंत पर बिधि बिपरीता ।
बैठेउ सभाँ खबरि असि पाई, सिंधु पार सेना सब आई ।
बूझेसि सचिव उचित मत कहहू, ते सब हँसे मष्ट करि रहहू ।
जितेहु सुरासुर तब श्रम नाहीं, नर बानर केहि लेखे माहीं ।

दोहा – सचिव बैद गुर तीनि जौं प्रिय बोलहिं भय आस ।
राज धर्म तन तीनि कर होइ बेगिही नास ।।३७।।

सोइ रावन कहुँ बनी सहाई, अस्तुति करहिं सुनाइ सुनाई ।
अवसर जानि बिभीषनु आवा, भ्राता चरन सीसु तेहिं नावा ।
पुनि सिरू नाइ बैठ निज आसन, बोला बचन पाइ अनुसासन ।
जौ कृपाल पूँछिहु मोहि बाता, मति अनुरूप कहउँ हित ताता ।
जौ आपन चाहे कल्याना, सुजसु सुमति सुभ गति सुख नाना ।
सो परनारि लिलार गोसाईं, तजउ चउथि के चंद कि नाईं ।
चौदह भुवन एक पति होई, भूतद्रोह तिष्टई नहिं सोई ।
गुन सागर नागर नर जोऊ, अलप लोभ भल कहइ न कोऊ ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

दोहा – **काम क्रोध मद लोभ सब नाथ नरक के पंथ ।**
सब परिहरि रघुबीरहि भजहु भजहिं जेहि संत ॥३८॥

तात राम नहिं नर भूपाला, भुवनेश्वर कालहु कर काला ।
ब्रह्म अनामय अज भगवंता, ब्यापक अजित अनादि अनंता ।
गो द्विज धेनु देव हितकारी, कृपा सिन्धु मानुष तनुधारी ।
जन रंजन भंजन खल ब्राता, बेद धर्म रच्छक सुनु भ्राता ।
ताहि बयरू तजि नाइअ माथा, प्रनतारति भंजन रघुनाथा ।
देहु नाथ प्रभु कहुँ बैदेही, भजहि राम बिनु हेतु सनेही ।
सरन गएँ प्रभु ताहु न त्यागा, बिस्व द्रोह कृत अघ जेहि लागा ।
जासु नाम त्रय ताप नसावन, सोइ प्रभु प्रगट समझु जियँ रावन ।

दोहा – **बार बार पद लागउँ बिनय करउँ दससीस ।**
परिहरि मान मोह मद भगहु कोसलाधीस ॥३९॥(क)
मुनि पुलस्ति निज सिष्य सन कहि पठई यह बात ।
तुरत सो मैं प्रभु सन कही पाई सुअवसरू तात ॥३९॥(ख)

माल्यवंत अति सचिव सयाना, तासु बचन सुनि अति सुख माना ।
तात अनुज तब नीति बिभूषन, सो उर धरहु जो कहत बिभीषन ।
रिपु उतकरष कहत सठ दोऊ, दूरि न करहु इहाँ हइ कोऊ ।
माल्यवंत गृह गयउ बहोरी, कहइ बिभीषनु पुनि कर जोरी ।
सुमति कुमति सब के उर रहहीं, नाथ पुरान निगम अस कहहीं।
जहाँ सुमति तहँ संपति नाना, जहाँ कुमति तहँ बिपत्ति निदाना।
तव उर कुमति बसी बिपरीता, हित अनहित मानहु रिपु प्रीता ।
कालराति निसिचर कुल केरी, तेहि सीता पर प्रीति घनेरी ।

दोहा – **तात चरन गहि मागउँ राखहु मोर दुलार ।**
सीता देहु राम कहुँ अहित न होइ तुम्हार ॥४०॥

बुध पुरान श्रुति संमत बानी, कही बिभीषन नीति बखानी ।
सुनत दसानन उठा रिसाई, खल तोहि निकट मृत्यु अब आई ।
जिअसि सदा सठ मोर जिआवा, रिपु कर पच्छ मूढ़ तोहि भावा ।
कहसि न खल अस को जग माहीं, भुज बल जाहि जिता मैं नाही ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

मम पुर बसि तपसिन्ह पर प्रीती, सठ मिलु जाइ तिन्हहि कहुनीती ।
अस कहि कीन्हेसी चरन प्रहारा, अनुज गहे पद बारहिं बारा ।
उमा संत कइ इहइ बड़ाई, मंद करत जो करइ भलाई ।
तुम्ह पितु सरिस भलेहिं मोहि मोरा, रामु भजें हित नाथ तुम्हारा ।
सचिव संग लै नभ पथ गयऊ, सबहि सुनाइ कहत अस भयऊ ।

दोहा – रामु सत्यसंकल्प प्रभु सभा कालबस तोरि ।
मैं रघुबीर सरन अब जाउँ देहु जनि खोरि ।।४१।।

अस कहि चला बिभीषनु जबहिं, आयूहीन भए सब तबहीं ।
साधु अवग्या तुरत भवानी, कर कल्यान अखिल कै हानी ।
रावन जबहिं बिभीषन त्यागी, भयउ बिभव बिनु तबहिं अभागा ।
चलेउ हरषि रघुनायक पाहीं, करत मनोरथ बहु मन माहीं ।
देखिहउँ जाइ चरन जलजाता, अरून मृदुल सेवक सुखदाता ।
जे पद परसि तरी रिषिनारी, दंडक कानन पावनकारी ।
जे पद जनकसुताँ उरलाए, कपट कुरंग संग धर धाए ।
हर उर सर सरोज पद जेई, अहोभाग्य मैं देखिहउँ तेई ।

दोहा – जिन्ह पायन्ह के पादुकन्हि भरतु रहे मन लाइ ।
ते पद आजु बिलोकिहउँ इन्ह नयनन्हि अब जाइ ।।४२।।

एहि बिधि करत सप्रेम विचारा, आयउ सपदि सिंधु एहिं पारा ।
कपिन्ह बिभीषनु आवत देखा, जाना कोउ रिपु दूत विसेषा ।
ताहि राखि कपीस पहिं आए, समाचार सब ताहि सुनाए ।
कह सुग्रीव सुनहु रघुराई, आवा मिलन दसानन भाई ।
कह प्रभु सखा बुझिए काहा, कहइ कपीस सुनहु नरनाहा ।
जानि न जाइ निसाचर माया, कामरूप केहि कारन आया ।
भेद हमार लेन सठ आवा, राखिअ बाँधि सोहि अस भावा ।
सखा नीति तुम्ह नीकि बिचारी, मम पन सरनागत भयहारी ।
सुनि प्रभु बचन हरष हनुमाना, सरनागत बच्छल भगवाना ।

दोहा – सरनागत कहुँ जे तजहिं निज अनहित अनुमानि ।
ते नर पाँवर पापमय तिम्हहि विलोकत हानि ।।४३।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

कोटि बिप्र बध लागहिं जाहू, आएँ सरन तजउँ नहिं ताहू ।
सनमुख होइ जीव मोहि जबहिं, जन्म कोटि अघ नासहिं तबहीं ।
पापवंत कर सहज सुभाऊ, भजनु मोर तेहि भाव न काऊ ।
जौं पै दुष्ट हृदय सोइ होइ, मोरें सनमुख आव कि सोई ।
निर्मल मन जन सो मोहि पावा, मोहि कपट छल छिद्र न भावा ।
भेद लेन पठवा दससीसा, तबहुँ न कछु भय हानि कपीसा ।
जग महुँ सखा निसाचर जेते, लछिमनु हनइ निमिष महुँ तेते ।
जौं सभीत आवा सरनाई, राखिहउँ ताहि प्रान की नाई ।

दोहा – उभय भाँति तेहि आनहु हँसि कह कृपानिकेत ।
जय कृपाल कहि कपि चले अंगद हनू समेत ।।४४।।

सादर तेहि आगें करि बानर, चले जहाँ रघुपति करूनाकर ।
दूरिहि ते देखे द्वौ भ्राता, नयनानंद दान के दाता ।
बहुरि राम छबिधाम बिलोकी, रहेउ ठटुकि एकटक पल रोकी ।
भुज प्रलंब कंजारून लोचन, स्यामल गात प्रनत भय मोचन ।
सिंध कंध आयत उर सोहा, आनन अमित मदन मन मोहा ।
नयन नीर पुलकित अति गाता, मन धरि धीर कही मृदु बाता ।
नाथ दसानन कर मैं भ्राता, निसिचर बंस जनम सुरत्राता ।
सहज पापप्रिय तामस देहा, जथा उलूकहि तम पर नेहा ।

दोहा – श्रवन सुजसु सुनि आयउँ प्रभु भंजन भव भीर ।
त्राहि त्राहि आरति हरन सरन सुखद रघुबीर ।।४५।।

अस कहि करत दंडवत देखा, तुरत उठे प्रभु हरष बिसेषा ।
दीन बचन सुनि प्रभु मन भावा, भुज बिसाल गहि हृदयँ लगावा ।
अनुज सहित मिलि ढिग बैठारी, बोले बचन भगत भयहारी ।
कहु लंकेस सहित परिवारा, कुसल कुठाहर बास तुम्हारा ।
खल मंडली बसहु दिन राती, सखा धरम निबहइ केहि भाँति ।
मैं जानउँ तुम्हारि सब रीती, अति नय निपुन न भाव अनीती ।
बरू भल बास नरक कर ताता, दुष्ट संग जनि देइ बिधाता ।
अब पद देखि कुसल रघुराया, जौं तुम्ह कीन्हि जानि जन दाया ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

दोहा – तब लगि कुसल न जीव कहुँ सपनेहुँ मन बिश्राम ।
जब लगि भजत न राम कहुँ सोक धाम तजि काम ।।४६।।

तब लगि हृदयँ बसत खल नाना, लोभ मोह मच्छर मद माना ।
जब लगि उर न बसत रघुनाथा, धरें चाप सायक कटि भाथा।
ममता तरून तमी अँधिआरी, राग द्वेष उलूक सुखकारी ।
तब लगि बसति जीव मन माहीं, जब लगि प्रभु प्रताप रबि नाहीं ।
अब मैं कुसल मिटे भय भारे, देखि राम पद कमल तुम्हारे ।
तुम्ह कृपा जा पर अनुकूला, ताहि न व्याप त्रिविध भव सूला ।
मैं निसिचिर अति अधम सुभाऊ, सुभ आचरनु कीन्ह नहिं काऊ ।
जासु रूप मुनि ध्यान न आवा, तेहिं प्रभु हरषि हृदयँ मोहि लावा ।

दोहा – अहोभाग्य मम अमित अति राम कृपा सुख पुंज ।
देखेउँ नयन बिरंचि सिव सेव्य जुगल पद कंज ।।४७।।

सुनहु सखा निज कहउँ सुभाऊ, जान भुसुंडी संभु गिरिजाऊ ।
जौ नर होई चराचर द्रोही, आवै सभय सरन तकि मोही ।
तजि मद मोह कपट छल नाना, करउँ सद्य तेहि साधु समाना ।
जननी जनक बंधु सुत दारा, तनु धनु भवन सुहृद परिवारा ।
सब कै ममता ताग बटोरी, मम पद मनहि बाँध बरि डोरी ।
समदरसी इच्छा कछु नाहीं, हरष सोक भय नहिं मन माहीं ।
अस सज्जन मम उर बस कैसें, लोभी हृदयँ बसइ धनु जैसें ।
तुम्ह सारिखे संत प्रिय मोरे, धरउँ देह नहिं आन निहोरें ।

दोहा – सगुन उपासक परहित निरत नीति दृढ़ नेम ।
ते नर प्रान समान मम जिन्ह कें द्विज पद प्रेम ।।४८।।

सुनु लंकेस सकल गुन तोरें, तातें तुम्ह अतिसय प्रिय मोरें ।
राम बचन सुनि बानर जूथा, सकल कहहिं जय कृपा बरूथा ।
सुनत बिभीषनु प्रभु कै बानी, नहिं अघात श्रवनामृत जानी ।
पद अंबुज गहि बारहिं बारा, हृदयँ समात न प्रेमु अपारा ।
सुनहु देव सचराचर स्वामी, प्रनतपाल उर अंतरजामी ।
उर कछु प्रथम बासना रही, प्रभु पद प्रीति - सरित सो बही ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

अब कृपाल निज भगति पावनी, देहु सदा सिव मन भावनी ।
एवमस्तु कहि प्रभु रनधीरा, मागा तुरत सिंधु कर नीरा ।
जदपि सखा तव इच्छा नाहीं, मोर दरसु अमोघ जग माहीं ।
अस कहि राम तिलक तेहि सारा, सुमन वृष्टि नभ भई अपारा ।

दोहा – रावन क्रोध अनल निज स्वास समीर प्रचंड ।
जरत बिभीषनु राखेउ दीन्हेउ राजु अखंड ।।४९।।(क)
जो संपति सिव रावनहि दीन्हि दिएँ दस माथ ।
सोइ संपदा बिभीषनहि सकुचि दीन्हि रघुनाथ ।।४९।।(ख)

अस प्रभु छाड़ि भजहिं जे आना, ते नर पसु बिनु पूँछ बिषाना ।
निज जन जानि ताहि अपनावा, प्रभु सुभाव कपि कुल मन भावा ।
पुनि सर्बग्य सर्ब उर बासी, सर्बरूप सब रहित उदासी ।
बोले बचन नीति प्रतिपालक, कारन मनुज दनुज कुल घालक ।
सुनु कपीस लंकापति बीरा, केहि बिधि तरिअ जलधि गंभीरा ।
संकुल मकर उरग झष जाती, अति अगाध दुस्तर सब भाँति ।
कह लंकेस सुनहु रघुनायक, कोटि सिंधु सोषक तव सायक ।
जद्यपि तदपि नीति असि गाई, बिनय करिअ सागर सन जाई ।

दोहा – प्रभु तुम्हार कुलगुर जलधि कहिहि उपाय बिचारि ।
बिनु प्रयास सागर तरिहि सकल भालु कपि धारि ।।५०।।

सखा कही तुम्ह नीकि उपाई, करिअ दैव जौ होइ सहाई ।
मंत्र न यह लछिमन मन भावा, राम बचन सुनि अति दुख पावा ।
नाथ दैव कर कवन भरोसा, सोषिअ सिंधु करिअ मन रोसा ।
कादर मन कहुँ एक अधारा, दैव दैव आलसी पुकारा ।
सुनत बिहसि बोले रघुबीरा, ऐसेहिं करब धरहु मन धीरा ।
अस कहि प्रभु अनुजहि समुझाई, सिंधु समीप गये रघुराई ।
प्रथम प्रनाम कीन्ह सिरू नाई, बैठे पुनि तट दर्भ डसाई ।
जबहिं विभीषन प्रभु पहिं आए, पाछें रावन दूत पठाए ।

दोहा – सकल चरित तिन्ह देखे धरें कपट कपि देह ।
प्रभु गुन हदयँ सराहहिं सरनागत पर नेह ।।५१।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

प्रगट बखानहि राम सुभाऊ, अति सप्रेम गा बिसरि दुराऊ ।
रिपु के दूत कपिन्ह तब जाने, सकल बाँधि कपीस पहिं आने ।
कह सुग्रीव सुनहु सब बानर, अंग भंग करि पठवहु निसिचर ।
सुनि सुग्रीव बचन कपि धाए, बाँधि कटक चहु पास फिराए ।
बहु प्रकार मारन कपि लागे, दीन पुकारत तदपि न त्यागे ।
जो हमार हर नासा काना, तेहि कोसलाधीस कै आना ।
सुनि लछिमन सब निकट बोलाए, दया लागि हँसि तुरत छोड़ाए ।
रावन कर दीजहु यह पाती, लछिमन बचन बाचु कुलघाती ।

दोहा – कहेहु मुखागर मूढ़ सन मम संदेसु उदार ।
सीता देइ मिलहु न त आवा काल तुम्हार ।।५२।।

तुरत नाई लछिमन पद माथा, चले दूत बरनत गुन गाथा ।
कहत राम जसु लंका आए, रावन चरन सीस तिन्ह नाए ।
बिहसि दसानन पूँछी बाता, कहसि न सुक आपनि कुसलाता ।
पुनि कहु खबरि बिभिसन केरी, जाहि मृत्यु आई अति नेरि ।
करत राज लंका सठ त्यागी, हाइहि जव कर कीट अभागी ।
पुनि कहु भालु कीस कटकाई, कठिन काल प्रेरित चलि आई ।
जिन्ह के जीवन कर रखवारा, भयउ मृदुल चित सिंधु बिचारा ।
कहु तपसिन्ह कै बात बहोरी, जिन्ह के हृदयँ त्रास अति मोरी ।

दोहा – की भइ भेंट कि फिरि गए श्रवन सुजसु सुनि मोर ।
कहसि न रिपु दल तेज बल बहुत चकित चित तोर ।।५३।।

नाथ कृपा करि पूँछेहु जैसें, मानहु कहा क्रोध तजि तैसें ।
मिला जाइ जब अनुज तुम्हारा, जातहिं राम तिलक तेहि सारा ।
रावन दूत हमहि सुनि काना, कपिन्ह बाँधि दीन्हें दुख नाना ।
श्रवन नासिका काटैं लागे, राम सपथ दीन्हे हम त्यागे ।
पूँछिहु नाथ राम कटकाई, बदन कोटि सत बरनि न जाई ।
नाना बरन भालु कपि धारी, बिकटानन बिसाल भयकारी ।
जेहिं पुर दहेउ हतेउ सुत तोरा, सकल कपिन्ह महँ तेहि बलु थोरा ।
अमित नाम भट कठिन कराला, अमित नाग बल बिपुल बिसाला ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

दोहा – **द्विविद मयंद नील नल अंगद गद बिकटासि ।**
दधिमुख केहरि निसठ सठ जामवंत बलरासि ।।५४।।

ए कपि सब सुग्रीव समाना, इन्ह सम कोटिन्ह गनइ को नाना ।
राम कृपाँ अतुलित बल तिन्हहीं, तृन समान त्रैलोकहि गनहीं ।
अस मैं सुना श्रवन दसकंधर, पदुम अठारह जूथप बंदर ।
नाथ कटक महँ सो कपि नाहीं, जो न तुम्हहि जीतै रन माहीं ।
परम क्रोध मीजहिं सब हाथा, आयसु पै न देहिं रघुनाथा ।
सोषहिं सिंधु सहित झष व्याला, पूरहिं न त भरि कुधर बिसाला ।
मर्दि गर्द मिलवहिं दससीसा, ऐसेइ बचन कहहिं सब कीसा ।
गर्जहिं तर्जहिं सहज असंका, मानहुँ ग्रसन चहत हहिं लंका ।

दोहा – **सहज सूर कपि भालू सब पुनि सिर पर प्रभु राम ।**
रावन काल कोटि कहुँ जीति सकहिं संग्राम ।।५५।।

राम तेज बल बुधि बिपुलाई, सेष सहस सत सकहिं न गाई ।
सक सर एक सोषि सत सागर, तव भ्रातहिं पूँछेउ नय नागर ।
तासु बचन सुनि सागर पाहीं, मागत पंथ कृपा मन माहीं ।
सुनत बचन बिहसा दससीसा, जौं असि मति सहाय कृत कीसा ।
सहज भीरू कर बचन दृढ़ाई, सागर सन ठानी मचलाई ।
मूढ़ मृषा का करसि बड़ाई, रिपु बल बुद्धि थाह मैं पाई ।
सचिव सभीत बिभीषन जाकें, बिजय बिभूति कहाँ जग ताकें ।
सुनि खल बचन दूत रिस बाढ़ी, समय बिचारि पत्रिका काढ़ी ।
रामानुज दीन्ही यह पाती, नाथ बचाई जुड़ावहु छाती ।
बिंहसि बाम कर लीन्ही रावन, सचिव बोलि सठ लाग बचावन ।

दोहा – **बातन्ह मनहि रिझाइ सठ जनि घालसि कुल खीस ।**
राम बिरोध न उबरसि सरन विष्णु अज ईस ।।५६ (क)।।
की तजि मान अनुज इव प्रभु पद पंकज भृंग ।
होहि कि राम सरानल खल कुल सहित पतंग ।।५६ (ख)।।

सुनत सभय मन मुख मुसुकाई, कहत दसानन सबहि सुनाई ।
भूमि परा कर गहत अकासा, लघु तापस कर बाग बिलासा ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

कह सुक नाथ सत्य सब बानी, समुझहु छाड़ि प्रकृति अभिमानी ।
सुनहु बचन मम परिहरि क्रोधा, नाथ राम सन तजहु बिरोधा ।
अति कोमल रघुबीर सुभाऊ, जद्यपि अखिल लोक कर राऊ ।
मिलत कृपा तुम्ह पर प्रभु करिही, उर अपराध न एकउ धरिही ।
जनकसुता रघुनाथहि दीजे, एतना कहा मोर प्रभु कीजे ।
जब तेहिं कहा देन बैदेही, चरन प्रहार कीन्ह सठ तेही ।
नाइ चरन सिरू चला सो तहाँ, कृपासिंधु रघुनायक जहाँ ।
करि प्रनामु निज कथा सुनाई, राम कृपाँ आपनि गति पाई ।
रिषि अगस्ति की साप भवानी, राछस भयउ रहा मुनि ग्यानी ।
बंदि राम पद बारहिं बारा, मुनि निज आश्रम कहुँ पगु धारा ।

दोहा – बिनय न मानत जलधि जड़ गए तीनि दिन बीति ।
बोले राम सकोप तब भय बिनु होई न प्रीति ।।५७।।

लछिमन बान सरासन आनू, सोषौं बारिधि बिसिख कृसानू ।
सठ सन बिनय कुटिल सन प्रीती, सहज कृपन सन सुंदर नीती ।
ममता रत सन ग्यान कहानी, अति लोभी सन बिरति बखानी ।
क्रोधिहि सम कामिहि हरि कथा, ऊसर बीज बएँ फल जथा ।
अस कहि रघुपति चाप चढ़ावा, यह मत लछिमन के मन भावा ।
संधानेउ प्रभु बिसिख कराला, उठी उदधि उर अंतर ज्वाला ।
मकर उरग झष गन अकुलाने, जरत जंतु जलनिधि जब जाने ।
कनक थार भरि मनि गन नाना, बिप्र रूप आयउ तजि माना ।

दोहा – काटेहिं पइ कदरी फरइ कोटि जतन कोउ सींच ।
बिनय न मान खगेस सुनु डाटेहिं पइ नव नीच ।।५८।।

सभय सिंधु गहि पद प्रभु केरे, छमहु नाथ सब अवगुन मेरे ।
गगन समीर अनल जल धरनी, इन्ह कइ नाथ सहज जड़ करनी ।
तव प्रेरित मायाँ उपजाए, सृष्टि हेतु सब ग्रंथनि गाए ।
प्रभु आयसु जेहि कहँ जस अहई, सो तेहि भाँति रहें सुख लहई ।
प्रभु भल कीन्ह मोहि सिख दीन्ही, मरजादा पुनि तुम्हरी कीन्ही ।
ढोल गवाँर सूद्र पसु नारी, सकल ताड़ना के अधिकारी ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

प्रभु प्रताप मैं जाब सखाई, उतरिहिं कटकु न मोरि बड़ाई ।
प्रभु अग्या अपेल श्रुति गाई, करौं सो बेगि जो तुम्हहि सोहाई ।

दोहा – सुनत बिनीत बचन अति कह कृपाल मुसुकाई ।
जेहि बिधि उतरै कपि कटकु तात सो कहहु उपाइ ।।५९।।

नाथ नील नल कपि द्वौ भाई, लरिकाई रिषि आसिष पाई ।
तिन्ह के परस किएँ गिरि भारे, तरिहहि जलधि प्रताप तुम्हारे ।
मैं पुनि उर धरि प्रभु प्रभुताई, करिहउँ बल अनुमान सहाई ।
एहि बिधि नाथ पयोधि बँधाइअ, जेहिं यह सुजसु लोक तिहुँ गाइअ ।
एहिं सर मम उत्तर तट बासी, हतहु नाथ खल नर अध रासी ।
सुनि कृपाल सागर मन पीरा, तुरतहिं हरी राम रनधीरा ।
देखि राम बल पौरूष भारी, हरषि पयोनिधि भयउ सुखारी ।
सकल चरित कहि प्रभुहि सुनावा, चरन बंदि पाथोधि सिधावा ।

छन्द– निज भवन गवनेउ सिंधु श्री रघुपतिहि यह मत भायऊ ।
यह चरित कलिमलहर जथामति दास तुलसी गायऊ ।।
सुख भवन संसय समन दवन बिषाद रघुपति गुन गना ।
तजि सकल आस भरोस गावहि सुनहि संतत सठ मना ।।

दोहा – सकल सुमंगल दायक रघुनायक गुन गान ।
सादर सुनहिं ते तरहिं भव सिंधु बिना जलजान ।।६०।।

(सुन्दरकाण्ड समाप्त)

जो मेरे भाग्य में नहीं है, वो दुनिया की कोई भी शक्ति, मुझे नहीं दे सकती और मेरे भाग्य में जो है, उसे दुनिया की कोई भी शक्ति छीन नहीं सकती। ईश्वरीय शक्ति असम्भव को सम्भव बना सकती है। अतः कर्म ही ''कामधेनु'' एवम् प्रार्थना ही ''पारसमणि'' है।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

॥ महामृत्युंजय मन्त्र - महिमा और अर्थ ॥

भगवान मृत्युंजय के जप से मार्कण्डेयजी, राजा श्वेत आदि के काल-भयनिवारण की कथा 'शिवपुराण' 'पद्मपुराण' व 'स्कन्द पुराण' में आती हैं। आयुर्वेद के ग्रन्थों में भी मृत्युंजय योग मिलते हैं। मृत्यु को जीत लेने के कारण ही इन्हें 'मृत्युंजय' मंत्र कहा जाता है।

साधक को चाहिए कि किसी पवित्र स्थान में स्नान, आचमन, प्राणायाम, गणेश स्मरण, पूजन-वन्दन के बाद तिथि व वार आदि का उच्चारण करते हुए इस प्रकार संकल्प करे :

अमुकोऽहं (अपना नाम) अमुकवासरादौ स्वस्य (यजमानस्य वा) निखिलारिष्ट निवृत्तये महामृत्युंजयमंत्रजपमहं करिष्ये।

तत्पश्चात् हाथ में जल लेकर इस प्रकार न्यासादि करना चाहिए :

ॐ अस्य श्रीमहामृत्युंजयमंत्रस्य वामदेवकहोलवसिष्ठा ऋषयः पंक्तिगायत्र्युष्णिगनुष्टुभश्छन्दांसि, सदाशिवमहामृत्युंजय- रूद्रो देवता, ह्रीं शक्तिः, श्रीं बीजम्, महामृत्युंजयप्रीतये ममाभीष्टसिद्धयर्थे जपे विनियोगः

उपरोक्त मंत्र कह कर हाथ का जल छोड़ दें।

'महामृत्युंजय' के जप में ध्यान परम आवश्यक है। 'शिव पुराण' में इस प्रकार का ध्यान करने के लिए कहा गया है :

हस्ताम्भोजयुगस्थकुम्भयुगलादुद्धृत्य तोयं शिरः
सिञ्चन्तं करयोर्युगेन दधतं स्वाङ्के सकुम्भौ करौ।
अक्षस्रङ्मृगहस्तमम्बुजगतं मूर्धस्थचन्द्रस्रवत्।
पीयूषार्द्रतनुं भजे सगिरिजं त्र्यक्षं च मृत्युंजयम्॥

अर्थात् 'भगवान मृत्युंजय के आठ हाथ हैं। वे अपने ऊपर के दोनों करकमलों से जल से भरे घड़े उठाकर नीचे के दोनों हाथों से जल को अपने सिर पर उड़ेल रहे हैं। सबसे नीचे के दो हाथों में भी दो घड़े लेकर उन्हें अपनी गोद में रखे हुए हैं। शेष दो हाथों में वे रूद्राक्ष की माला तथा मृगी-मुद्रा धारण किये हुए हैं। वे कमल के आसन पर बैठे हुए हैं और उनके शीश पर स्थित चन्द्रमा की अमृतवृष्टि से उनका शरीर भीगा हुआ है। उनके तीन नेत्र हैं तथा उन्होंने मृत्यु को सर्वथा जीत लिया है। उनके वामभाग में गिरिराजनन्दिनी

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

भगवती उमा विराजमान हैं।'

इस प्रकार ध्यान करके रूद्राक्ष की माला से निम्नलिखित मंत्र का जप करना चाहिए :

''ॐ हौं जूं सः, भूर्भूवः स्वः, ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम् पुष्ठिवर्धनम्। उर्वारूकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्। स्वः भुवः भूः ॐ। सः जूं हौं ॐ।'' – यह सम्पुटित महामृत्युंजय मन्त्र है। इस मंत्र का सवा लाख जप सर्वार्थसाधक माना गया है। इसका अर्थ इस प्रकार है :-

"मैं ब्रह्मा, विष्णु एवं रूद्र – इन तीनों के उत्पादक – पिता उन परमब्रह्म परमात्मा की वन्दना करता हूँ, जिनका यश तीनों लोकों में फैला हुआ है और जो विश्व के बीज एवं उपासकों के अणिमादि ऐश्वर्यों के वर्धक हैं। वे अपने मूल से पृथक हुए ककड़ी के फल की तरह मुझे मृत्यु या मर्त्यलोक से मुक्त कर अमृतत्व (सायुज्य मोक्ष) प्रदान करें।"

यही मन्त्र "संजीवनी" नाम से भी विख्यात है। आये दिन, जबकि जीवन बहुत जटिल हो गया है और दुर्घटनाएँ प्रतिदिन हुआ करती हैं, इस मन्त्र के द्वारा सर्पदंश, बिजली – मोटर दुर्घटना तथा अन्य सभी प्रकार की दुर्घटनाओं से जीवन की रक्षा हो सकती है। इसके अतिरिक्त यह मन्त्र रोगों का भी निवारण करता है। भाव, श्रद्धा तथा भक्ति के साथ इस मन्त्र के जप द्वारा ऐसी भयंकर व्याधियों का विनाश हो जाता है, जिन्हें डाक्टरों ने असाध्य बतला दिया है। इस मन्त्र से मृत्यु पर भी विजय प्राप्त हो सकती है। यह मोक्ष का भी साधक है और दीर्घायु, शान्ति, धन-सम्पत्ति, तुष्टि तथा सद्गति भी प्रदान करता है।

।। व्याधिनाश के लिए लघु मृत्युंजय जप ।।

ॐ जूँ सः (जिसके लिए जप किया जा रहा है उसका नाम) पालय पालय सः जूँ ॐ।

उपरोक्त मंत्र का ११ लाख जप तथा एक लाख दस हजार दशांश जप करने से सब प्रकार के रोगों का नाश होता है। यदि इतना जप न हो सके तो कम-से-कम सवा लाख जप और साढ़े बारह हजार दशांश जप अवश्य करना चाहिए।

।। ॐ नमः शिवाय ।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

॥ श्री कृष्ण वन्दना ॥

फुल्लेन्दीवनकान्तिमिन्दुवदनं बर्हावतंसप्रियं,
श्री वत्सांकमुदारकौस्तुभधरं पीताम्बरं सुन्दरम्।
गोपीनां नयनोत्पलार्चिततनुं गोगोपसंघावृतं
गोविन्दं कल वेणुवादनपरं दिव्यांगभूषं भजे ॥
वन्दे नवघनश्यामं पीतकौशेयवाससम्।
सानन्दं सुन्दरं शुद्धं श्रीकृष्णं प्रकृतेः परम् ॥
नमो ब्रह्मण्य देवाय गो ब्राह्मण हिताय च।
जगद्धिताय कृष्णाय गोविन्दाय नमो नमः ॥
वसुदेवसुतं देवं कंसचाणूरमर्दनम्।
देवकीपरमानन्दम् कृष्णं वन्दे जगद्गुरूम ॥

मौर मुकुट कटि काछनी, उर बैजन्ती माल ।
या छवि मेरे मन बसो, सदा बिहारीलाल ॥

मनमोहन मनमोहना, मनमोहना मन माँहिं ।
या मोहन सौं सोहना, तीन लोक में नाहिं ॥

नैणां में नन्दलाल है, हिवड़े में गोपाल ।
राम रोम बोले मेरो, माधव दीनदयाल ॥

देह धरे का फल यही, भज मन कृष्ण मुरार ।
मानुष जनम की मौज यह, मिले न बारम्बार ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

॥ महामन्त्रार्थ ॥

'श्री कृष्ण गोविन्द हरे मुरारे हे नाथ नारायण वासुदेव।' यह महामन्त्र है। अन्तर्निहित अर्थ (भावार्थ) के ज्ञानसहित इसका जाप करें। भावार्थ नीचे दिया जा रहा है-

श्रीकृष्ण - हे प्रभो ! आप सभी के मन को आकर्षित करने वाले हैं, अतः आप मेरा मन भी अपनी ओर आकर्षित कर अपनी भक्ति सेवा की दिशा में सुदृढ़ कीजिये।

गोविन्द - गौओं तथा इन्द्रियों की रक्षा करने वाले भगवन् ! आप मेरी इन्द्रियों की रक्षा करने वाले भगवन् ! आप मेरी इन्द्रियों को स्वयं में लीन करें।

हरे - हे दुःखहर्ता ! मेरे दुःखों का भी हरण करें।

मुरारे - हे मुर राक्षस के शत्रु ! मुझमें बसे हुए काम-क्रोधादि रूपी राक्षसों का नाश कीजिये।

हे नाथ - आप नाथ हैं और मैं अनाथ हूँ। (मुझ अनाथ का भाव आप नाथ के साथ जुड़ा रहे।)

नारायण - मैं नर हूँ और आप नारायण हैं (आपको प्राप्त करने के लिये आपके आदर्श पर मैं तपस्या में रत रहूँ।)

वासुदेव - वसु का अर्थ है प्राण। मेरे प्राणों की रक्षा करें। मैंने अपना मन आपके चरणों में अर्पित कर दिया है।

सीतापति की कोटड़ी, चन्दन जड़्या किवाड़।
ताला कुंजी प्रेम की, खोलो कृष्ण मुरारि॥

गजब की बाँसुरी बजती थी, बृन्दावन बसैया की।
करूँ तारीफ मुरली की या मुरलीधर कन्हैया की॥
जहाँ चलता था न कुछ काम तीर और कमानों से।
विजय नटवर की होती थी, वहाँ मुरली की तानों से॥

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

मौर मुकुट कटि काछनी, उर बैजन्ती माल ।
या छवि मेरे मन बसो, सदा बिहारीलाल ।।
राधे राधे रटत ही, सब व्याधा मिट जाय ।
कोटि जनम की आपदा, नाम लेत कटि जाय ।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

॥ श्री कृष्ण स्तुति ॥

श्री कृष्णचन्द्र कृपालु भजु मन, नन्द नन्दन यदुवरम्।
आनन्दमय सुखराशि ब्रजपति, भक्तजन संकटहरम्।
सिर मुकुट कुण्डल तिलक उर, बनमाल कौस्तुभ सुन्दरम्।
आजानु भुज पट पीत धर, कर लकुटि मुख मुरली धरम्।
बृष भानुजा सह राजहिं प्रिय, सुमन सुभव सिंहासनम्।
ललितादि सखिजन सेवहिं, लिए छत्र चामर व्यंजनम्।
पूतना - तृण - शंकट - अधबक, केशि - व्योम - विमर्दनम्।
रजक - गज - चाणूर मुष्टिक, दुष्ट कंस निकन्दनम्।
गो - गोप गोपीजन सुखद, कालीय विषधर गंजनम्।
भव - भय हरण अशरणशरण, ब्रह्मादि मुनि - मन रंजनम्।
श्याम - श्यामा करत केलि, कालिन्दी तट नट नागरम्।
सोइ रूप मम हिय बसहु नित, आनन्दघन सुख सागरम्।
इति वदति सन्त सुजान श्री सनकादि मुनिजन सेवितम्।
भव- मोतिहर मन दीनबन्धो, जयति जय सर्वेश्वरम्।

"मीरा की भक्ति"

प्रेमपंथ का पथिक मौत से, कभी डर नहीं सकता है।
मिटना सीख लिया है जिसने, प्रेम वही कर सकता है॥
मिट गया जो ईश्वर पर, फिर मौत उसको क्या मिटायेगी।
प्रेम राह चली मीरा को अब, कोई ताकत रोक न पायेगी॥

"कृष्ण : प्रेम के भूखे"

सेस गनेस महेस दिनेस सुरेसहु जाहि निरंतर गावैं।
जाहि अनादि अनंत अखंड अछेद अभेद सुवेद बतावैं॥
नारद से सुक व्यास रहै, पचि-हारे तऊ-पुनि पार न पावैं।
ताहि अहीर की छोहरियाँ छछिया भर छाछ पे नाच नचावैं॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

।। आरती श्री कृष्ण जन्म ।।

भये प्रगट कृपाला दीनदयाला, यशुमति के हितकारी।
हर्षित महतारी रूप निहारी, मोहन-मदन मुरारी।।१।।
कंसासुर जाना अति भय माना, पूतना बेगि पठाई।
सो मन मुसुकाई हर्षित धाई, गई जहाँ यदुराई।।२।।
तेहि जाई उठाई हृदय लगाई, पयोधर मुख में दीन्हें।
तब कृष्ण कन्हाई मन मुसुकाई, प्राण तासु हरि लीन्हे।।३।।
जब इन्द्र रिसाये मेघ बुलाये, वशीकरण ब्रज सारी।
गाँवन हितकारी मुनि मनहारी, नख पर गिरिवर धारी।।४।।
कंसासुर मारे अति हंकारे, वत्सासुर संहारे।
बक्कासुर आयो बहुत डरायो, ताकर बदन बिडारे।।५।।
अति दीन जानि प्रभु चक्रपाणी, ताहि दीन्ह निज लोका।
ब्रह्मासुर राई अति सुख पाई, मगन हुये गये शोका।।६।।
यह छन्द अनूपा है रस रूपा, जो नर याको गावै।
तेहि सम नहिं कोई त्रिभुवन माँही, मनवांछित फल पावै।।७।।

दोहा – नन्द यशोदा तप कियो, मोहन सो मन लाय।
तासो हरि तिन्ह सुख दियो, बाल-भाव दिखलाय।।

विशेष – उपरोक्त आरती जन्माष्टमी पर गानी चाहिये।

"गोवर्धनधारी से लगन"

लगन उनसे अपनी लगाये हुए हैं,
जो मुद्दत से मन को चुराये हुये हैं ।
उठायेंगे हाथों में मुझको न क्यों कर,
जो नख पर गोबर्धन उठाये हुये हैं ।
निकालें भी तो उनको कैसे निकालें,
जो रग रग के भीतर समाए हुये हैं ।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

॥ सिंगार की आरती ॥

प्रभु आओ सुन्दर श्याम हमारे हरिकीर्तन में। टेर॥
आप भी आओ संग ब्रह्मा जी को लाओ,
आकर सृष्टि रचाओ हमारे हरिकीर्तन में॥
प्रभु आओ सुन्दर श्याम हमारे हरिकीर्तन में,
प्रभु आकर दरश दिखाओ हमारे हरिकीर्तन में,
प्रभु चतुर्भुज रूप दिखाओ हमारे हरिकीर्तन में,
प्रभु राधा कृष्ण रूप दिखाओ हमारे हरिकीर्तन में,
प्रभु सीताराम रूप दिखाओ हमारे हरिकीर्तन में,
प्रभु आकर दरश दिखाओ हमारे हरिकीर्तन में,
प्रभु आओ सुन्दर श्याम हमारे हरिकीर्तन में,
आप भी आओ संग गोपियों को भी लाओ,
आकर छटा दिखाओ हमारे हरिकीर्तन में॥
आप भी आओ संग शंकर जी को लाओ,
भंग के रंग रचाओ हमारे हरिकीर्तन में॥
प्रभु आप भी आओ संग नारदजी को लाओ,
आकर बंशी बजाओ हमारे हरिकीर्तन में॥
आप भी आओ संग ग्वाल बाल को लाओ,
आकर खेल मचाओ हमारे हरिकीर्तन में॥
आप भी आओ संग भक्तों को लाओ,
आकर भक्ति बढ़ाओ हमारे हरिकीर्तन में॥
प्रभु आप भी आओ संग अर्जुन को लाओ,
प्रभु गीता ज्ञान सुनाओ हमारे हरिकीर्तन में॥
आप भी आओ संग द्रोपदी को लाओ,
आकर चीर बढ़ाओ हमारे हरिकीर्तन में॥
आप भी आओ संग राधा जी को लाओ,
आकर रास रचाओ हमारे हरिकीर्तन में॥
आप भी आओ संग लक्ष्मीजी को लाओ,

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

प्रभु आकर चरण दबवाओ हमारे हरिकीर्तन में।।
आप भी आओ संग नन्द बाबाजी को लाओ,
प्रभु आओ यशोदा जी की गोदी में।।
ताजा माखन ताजी मिश्री आकर भोग लगाओ,
हमारे हरिकीर्तन में।।
हरि आप ही आओ आरागो हमारे हरिकीर्तन में।
प्रभु छप्पन भोग आरोगो हमारे हरिकीर्तन में।
प्रभु आप भी आचमन करो हमारे हरिकीर्तन में।
प्रभु आप ही पान चबाओ हमारे हरिकीर्तन में।

"बंशीवाले से प्रार्थना"

पाप लाखों के जो तू हर गया बंशी वाले,
तो मेरे पाप से क्यों डर गया बंशी वाले ?
डूबने वाला हूँ भव-सिन्धु में, कुछ देर नहीं,
क्योंकि पापों का घड़ा भर गया बंशी वाले ।
नाम पर तेरे कैसे न हो भरोसा मुझको,
जब अजामिल सा अधम तर गया बंशी वाले ।
इसीलिये भेंट देता हूँ अश्रु 'बिन्दु' तुझे,
कद्र इनकी भी तू कर, जरा बंशी वाले ।।

शबरी, गीध, निषाद निशाचर, जो जो तेरे दरबार गये,
क्या वे छोटे पापी थे, जो पल भर में तुम तार दिये ।
मुझसा महापापी देखा तो, भूल सभी इकरार गये,
या तो हमको तारो भगवन, नहीं तो कह दो कि हम हार गये।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

॥ श्री कुंजबिहारी जी की आरती ॥

आरती कुञ्जबिहारी की, श्री गिरधर कृष्ण - मुरारी की।
गले में बैजन्ती माला, बजावै मुरली मधुर बाला
श्रवन में कुण्डल झलकाला, नन्द के आनन्द नन्दलाला की।
आरती कुञ्जबिहारी की, श्री गिरधर कृष्ण - मुरारी की।।
गगन सम अंग कान्ति काली, राधिका चमक रही आली,
लतन में ठाढ़े बनमाली, भ्रमरसी अलक, कस्तूरी तिलक,
चन्द्रसी झलक, ललित - छवि श्यामा प्यारी की।
आरती कुञ्जबिहारी की, श्री गिरधर कृष्ण - मुरारी की।।
कनकमय मोरमुकुट विलसै, देवता दरसन को तरसै,
गगन सों सुमन-राशि बरसैं, बजै मुरचंग, मधुर मृदंग,
ग्वालिनी संग, अतुल रति गोपकुमारी की।
आरती कुञ्जबिहारी की, श्री गिरधर कृष्ण-मुरारी की।।
जहाँ ते प्रगट भई गंगा, सकलमलहारिणी श्री गंगा,
स्मरण ते होत मोहभंगा, बसी शिव शीश, जटा के बीच,
हरै अघ - कीच, चरन छवि श्री बनवारी की।
आरती कुञ्जबिहारी की, श्री गिरधर कृष्ण - मुरारी की।।
चमकती उज्जवल तट रेनू, बज रही वृन्दावन बेनू,
चँहू दिसि गोपी - ग्वाल धेनू, हँसत मृदुमंद, चाँदनी चंद,
कटत भव फन्द, टेर सुनु दीन दुखारी की।
आरती कुञ्जबिहारी की, श्री गिरधर कृष्ण - मुरारी की।।

दया की रूई, संतोष के धागे, संयम की गांठ और सत्य की लपेट से रस्सी बना लें। यह न तो टूट सकती है, न सड़ सकती है और न खो सकती है। जिसके गले में यह रस्सी है, वह सौभाग्यशाली है। —स्वामी शिवानन्द

जब "मैं" था "हरि" नहीं थे, अब "हरि" हैं "मैं" नहीं रहा। प्रेम की गली बहुत संकड़ी है, इसमें दो नहीं समा सकते।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

॥ श्री युगलकिशोर जी की आरती ॥

आरती युगलकिशोरजी की कीजै,
(राधे) तन मन धन न्यौछावर कीजै॥
गौर श्याम मुख निरखन कीजै,
प्रेम स्वरूप नयन भर पीजै॥
रवि शशि कोटि बदन की शोभा,
ताहि देखि मेरो मन लोभा॥
कंचन थाल कपूर की बाती,
हरि आये निर्मल भइ छाती॥
फूलन की सेज फूलन गलमाला,
रतन सिंहासन बैठे नन्दलाला॥
मोर मुकुट कर मुरली सोहै,
नटवर वेष निरख मन मोहै॥
ओढ़े पीत नील पट सारी,
कुंजन ललना - लालबिहारी॥
श्री पुरूषोत्तम श्री गिरिवरधारी,
आरति करत सकल ब्रजनारी॥
नन्दनन्दन बृषभानु - किशोरी,
परमानन्द प्रभु अविचल जोरी॥

महाभारत समाज शास्त्र है। आज समाज में एक भी ऐसा घर नहीं, जहाँ महाभारत न होवे, दुःशासन और दुर्योधन न होवे। दुर्योधन अधर्म है और युधिष्ठिर धर्म का स्वरूप है।

नेकी से विमुख हो जाना और बदी करना निःसन्देह बुरा है, लेकिन सामने हंस कर बोलना और पीठ पीछे चुगली करना उससे भी बुरा है। चुगलखोर अन्त में घृणा का पात्र बनता है।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

॥ मधुर कीर्तन ॥

(१)

नटवर नागर नन्दा, भजो रे मन गोविन्दा।
श्यामसुन्दर मुख चन्दा, भजो रे मन गोविन्दा।। टेर ।।
तूँ ही नटवर, तूँ ही नागर, तूँ ही बाल मुकुन्दा ।।१।।
सब देवन में कृष्ण बड़े है, ज्यूँ तारा बिच चन्दा ।।२।।
सब सखियन में राधाजी बड़ी हैं, ज्यूँ नदियाँ बिच गंगा ।।३।।
ध्रुव तारे, प्रहलाद उबारे, नरसिंह रूप धरन्ता ।।४।।
कालीदह में नाग ज्यों नाथो, फण फण निरत करन्ता ।।५।।
वृन्दावन में रास रचायो, नाचत बाल मुकुन्दा ।।६।।
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, काटो यम का फन्दा ।।७।।

(१)

गोविन्द जय - जय, गोपाल जय - जय ।
राधा - रमण हरि गोविन्द जय - जय ।। १ ।।
ब्रह्मा की जय - जय, विष्णु की जय - जय ।
उमापति शिवशंकर की जय - जय ।। २ ।।
राधा की जय - जय, रूक्मिणी की जय - जय ।
मोर मुकुट बंशी वाले की जय - जय ।। ३ ।।
गंगा की जय - जय, यमुना की जय - जय ।
सरस्वती त्रिवेणी की जय - जय ।। ४ ।।
रामजी की जय - जय, श्यामजी की जय - जय।
दशरथ कुँवर चारों भैयों की जय - जय ।। ५ ।।
कृष्णा की जय - जय, लक्ष्मी की जय - जय ।
कृष्ण - बलदेव दोनों भाइयों की जय - जय ।। ६ ।।

गोविन्द बोलो, हरि गोपाल बोलो।
राधा रमण, हरि गोविन्द बोलो।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi
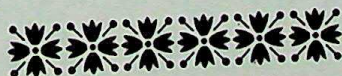
।। श्री श्याम वन्दना ।।

दोहा – उमा-पति, लक्ष्मी-पति, सीता-पति श्री राम।
लज्जा सबकी राखियो, खाटू के श्री श्याम।।

जय श्री श्याम जय श्री श्याम, खाटू वाले बाबा जय श्री श्याम। टेर।।
लीलो घोड़ो लाल लगाम, जा पर बैठ्यो बाबा श्याम।।१।।
सुबह नहीं तो बोलो शाम, श्याम सुधारे सबके काम।।२।।
जग में सुन्दर हैं दो नाम, जय श्री श्याम बाबा जय हनुमान।।३।।
श्याम नाम जग में सरनाम, सुमिरे से होवे कल्याण।।४।।
खाटू धाम है बड़ो महान, जठै बिराजै बाबा श्याम।।५।।
कौड़ी लगे न लगे छदाम, मुख से बोलो जय श्री श्याम।।६।।

अटपट छवि श्री श्याम की, झटपट लखे न कोय ।
मन की खटपट जो मिटे, चटपट दर्शन होय ।।

श्याम नाम मीठो घणों, तो रटियो नित्य हमेश ।
या ही में रम रहे - ब्रह्मा - विष्णु - महेश ।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

॥ ऊँ श्री श्याम देवाय नमः ॥

दोहा – सुमिरन दीप जलाय के, धरूँ हृदय में ध्यान।
शरण पड़े की लाज रख, खाटू के बाबा श्याम॥

ऊँ श्री श्याम देवाय नमः, ऊँ श्री श्याम देवाय नमः
महामन्त्र का जाप करो, अपने मन को साफ करो ।टेर।।
महामन्त्र की कर भक्ति, तुमको मिल जाये शक्ति,
आत्म बल बढ़ जायेगा, इससे सरल नहीं युक्ति,
सबको बताओ आप करो, महामन्त्र का जाप करो ।।१।।
आत्म बल जब बढ़ जाये; सुख दुख की चिन्ता छूटे,
मोह माया सब मिट जाये, सच्चा सुख फिर तू लूटे,
प्रभु से तभी मिलाप करो, महामन्त्र का जाप करो ।।२।।
जीवन नैया गर भटके, काम यदि तेरा अटके,
इसी मन्त्र की कर रटना, मिट जाये सारे खटके,
प्रभु सबके सन्ताप हरो, महामन्त्र का जाप करो ।।३।।
ऋषि मुनी भी गाते हैं, इससे सब कुछ पाते हैं,
जो गायेगा सो पायेगा, अनबोले रह जाते हैं,
मौका है जी धाप करो, महामन्त्र का जाप करो ।।४।।
महामन्त्र कल्याणी है, वर देता वरदानी है,
सर्व शक्ति का पुंज है ये, सबने बात ये मानी है,
स्वर में यही आलाप करो, "श्याम सुन्दर" संग जाप करो ।।५।।

"आरती का महत्व"

जिस घर में हो आरती, चरण कमल चित लाय ।
वहाँ हरि बासा करे, जोत अनन्त जगाय ।।

"कीर्तन का महत्व"

जहाँ भक्त कीर्तन करें, बहे प्रेम दरियाव ।
वहाँ हरि श्रवण करें, सत्य लोक से आय ।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

॥ श्री श्याम चालीसा ॥

श्री गुरू चरण ध्यान धर, सुमरि सच्चिदानन्द।
श्याम चालीसा भजत हूँ रच चौपाई छन्द॥

-: चौपाई :-

श्याम श्याम भजि बारम्बारा, सहजहिं हो भवसागर पारा ।
इस सम देव न दूजा कोई, दीन दयालु न दाता होई ।।
भीम सुपुत्र अहिलबति जाया, कही भीम का पौत्र कहाया ।
यह सब कथा सही कल्पान्तर, तनिक न मानो इसमें अन्तर ।।
बरबरीक विष्णु अवतारा, भक्तन हेतु मनुज तन धारा ।
बासुदेव देवकी प्यारे, जसुमति छैया नन्द दुलारे ।।
मधुसुदन गोपाल मुरारी, बृज किशोर गोवर्धन धारी ।
सियाराम श्री हरि गोविन्दा, दीनपाल श्री बाल मुकुन्दा ।।
दामोदर रण छोड़ बिहारी, नाथ द्वारकाधीश खरारी ।
नर हरि रूप प्रहलाद पियारा, खम्भ फाड़ि हिरणाकुश मारा ।।
राधा बल्लभ रूकमणी कन्ता, गोपी बल्लभ कंस हनन्ता ।
मनमोहन चित्तचोर क़हाये, माखन चोरि चोरि कर खाये ।
मुरलीधर यदुपति घनश्यामा, कृष्ण पतितपावन अभिरामा ।।
मायापति लक्ष्मीपति ईशा, पुरूषोत्तम केशव जगदीशा ।
विश्वपते त्रैभुवन पसारा, दीनबन्धु भक्तन रखवारा ।।
प्रभु का भेद न कोई पाया, शेष महेश थके मुनियारा ।
नारद शारद रिषि योगेन्दर, श्याम - श्याम सम रटत निरंतर ।।
कबि कोबिद करि सकै गिनन्ता, नाम अपार अथाह अनन्ता ।
हरि सृष्टि हर युग में भाई, ले अवतार भक्त सुखदाई ।।
हृदय माहिं करि देखि बिचारा, श्याम भजे ते हो निस्तारा ।
कीर पढ़ावत गणिका तारी, भीलनी की भक्ति बलिहारी ।।
सती अहिल्या गौतम तारी, भई श्राप वस शिला दुखारी ।
श्याम चरण रज में चितलाई, पहुँची पति लोक में जाई ।।
अजामिल अरू सदन कसाई, नाम प्रताप परम गति पाई ।
जाके श्याम नाम अधारा, सुख लहहि दुख दूर हो सारा ।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

श्याम सलोना है अति सुन्दर, मोर मुकुट शिर तनु पिताम्बर ।
गल बैजन्ती माल सुहाई, छवि अनुप भक्तन मन भाई ।।
श्याम - २ सुमिरहु दिन राती, शाम दुपहरी अरू परभाती ।
श्याम भगतन कही पर हारा, भीर परी तब श्याम पुकारा ।।
श्याम सारथी जिसके रथ के, रोड़े दूर होय उस पथ के ।
श्याम भगतन कही पर हारा, भीर परी तब श्याम पुकारा ।।
रसना श्याम नाम रस पीले, जोले श्याम नाम के हिले ।
संसारी सुख भोग मिलेगा, अन्तर श्याम सुखयोग मिलेगा ।।
श्याम प्रभु हैं तन के काले, मन के गोरे भोले भाले ।
श्याम संत भक्तन हितकारी, नाशे दोष अधनाशे भारी ।।
प्रेम सहित जे नाम पुकारा, महावीर लगत श्याम को प्यारा ।
जादू में है मथुरा वासी, पार ब्रह्म पूरन अविनासी ।।
सुधातान भरी मुरली बजाई, दिल्ली प्रान्त जहँ सुनि पाई ।
बृद्ध बाल जेते नारी नर, मुग्ध भये सुन वंशी के स्वर ।।
हड़बड़ कर पहुँचे सब जाई, खाटू में जहँ श्याम कन्हाई ।
जिसने श्याम सुरूप निहारा, भव भय से पावा छुटकारा ।।

श्याम सलोने सांवरे, बरबरीक तनु धार।
इच्छा पूरन भक्त की करो न लाओ वार।।

भव सागर चह पार जो पावा। राम कथा ता कहँ दृढ़ नावा।।
विषइन्ह कहँ पुनि हरि गुन ग्रामा। श्रवण सुखद अरू मन अभिरामा।।

जो संसार रूपी सागर को पार करना चाहता है उसके लिये तो श्री रामजी की कथा दृढ़ नौका के समान है। श्री हरि के गुण समूह तो विषयी लोगों को भी कानों को सुख देने वाले और मन को आनन्द देने वाले हैं।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

॥ श्री श्याम दुःख - भंजनाष्टक ॥

युद्ध समय दुई पक्ष जुरे जब, बाण प्रताप जो तुम दिखरायो।
ताहि सो त्रास भयो सबको, यह वीर अजेय कहाँ ते है आयो।।
मांगि लियो जब शीश हरि, करि मोड दियो नहीं नेकु संकारो।
को नहीं जानत है जग में, तव नाम महादुःखभंजन हारो।।१।।
संकट में जब भक्त परे कोई, श्यामहि श्याम रटे जो विचारो।
नील तुरंग सवार महाप्रभु, आई कै ताहि को संकट टारो।।
संकटग्रस्त बचाये किते जन, मोहिं भी आनिके बेगि उबारो।
को नहीं जानत है जग में........।।२।।
धाई के कोई मनोरथ ले कछु, श्यामजी आन गहे तेरे द्वारो।
आरत बैन कहे जो निरंतर, तेरो हूँ नाथ! न और सहारो।।
ऐसे दुःखी अरू तप्त सुभक्त को, हाथ पकरि प्रभु आप उबारो।
को नहीं जानत है जग में........।।३।।
चौरन त्रास दई जनको जब, "जात्री" जु आवत ले उपहारो।
लूटिकै माल ज्यों जान लगे, तब अंध भये नहीं राह सुझारो।।
त्राहि करि जब माल दियो सब, पायो महादुःख तै छुटकारो।
को नहीं जानत हे जग में........।।४।।
नौरंगशाह अनीति करि जब, मन्दिर तें सब देव उखारौ।
ताहि समय निज रूप अलौपि कै, लीन हुए प्रभु कूप मंझारौ।।
पाइ समय पुनि स्वप्न दरस दै, "श्याम कुण्ड" तें नव तनुधारौ।
को नहीं जानत है जग में........।।५।।
देवी पहाड़ चढ़ी भयतें जब ठौर नहीं बचने को जु पायो।
भैरव भागत भागत ही तब, ठौर न एक बसै भय खायो।।
श्याम तुम्ही सब की पत राखी, ओटि सबै खल-अस्त्र प्रहारो।
को नहीं जानत है जग में........।।६।।
जो रि के हाथ अरू शीश झुका करि, भेंट चढ़ा फल इष्ट विचारै।
पावन चित्त से ध्यान करै अरू, आरत् हवै तव नाम पुकारै।।
वेगि मनोरथ पूर्ण होहिं तब, ऐसो प्रताप है तव उजियारो।
को नहीं जानत है जग में......।।७।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

काज किये सब भक्तन के तुम, श्याम महाप्रभु देखि विचारो।।
कौन सो कष्ट है मोर गरीब को, जो तुमसे नहीं जात है टारो।।
बेगि हरो श्री श्याम महाप्रभु, जो कछु संकट होय हमारो।
को नहीं जानत है जग में......।।८।।

श्याम देह ज्योति लसै, कुण्डल शोभित रूप।
दिव्य देह, दरिद्र दलन, जै जै श्याम सुर भूप।।

।। आरती श्री श्याम बिहारी जी की ।।

श्याम बिहारी जी की, आरती गाओ रे ।
बाबा के चरणों में, शीश नवाओ रे ।। टेर।।
चन्दन, अगर, कपूर की बाती,
प्रेम से कंचन थाल सजाओ रे ।। श्याम...।।
शंख, मृदंग, घड़ावल बाजे,
झाँझन की झनकार सुनाओ रे ।। श्याम...।।
स्वर्ण कलश, सिर छत्र बिराजे,
आज उमंगों के दीप जलाओ रे ।। श्याम...।।
मोर मुकुट गल मोतियन माला,
रेशम डोरी के झूले झुलाओ रे ।। श्याम...।।
केसर तिलक, केसरिया बागा,
मोदक, श्रीफल भेंट चढ़ाओ रे ।। श्याम।।
ऊँची अटरिया पे श्याम विराजै,
श्याम सलोने के चँवर ढुवाओ रे ।। श्याम...।।
सेवकजन हैं शरण तिहारी,
डूबती नैया पार लगाओ रे।। श्याम...।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

॥ श्री श्याम चौरासी ॥

गुरू पंकज ध्यान धर, सुमिर सच्चिदानन्द।
श्याम चौरासी भणत हू, रच चौपाई छन्द॥

-: चौपाई :-

मेहर करो जन के सुखःरासी, साँवल शाः खाटू के बासी ।१।
प्रथम शीश चरणों में नाऊँ, किरपा दृष्टि रावरी चाऊँ ।२।
माफ सभी अपराध कराऊँ, आदि कथा सुछंद रच गाऊँ ।३।
भक्त सुजन सुनकर हरषासी, सांवल शाः खाटू के बासी ।४।
कुरू पांडव में बिरोध छाया, समर महाभारत रचवाया ।५।
बली एक बरबरीक आया, तीन सुबाण पास में लाया ।६।
यहि लखि हरि को आई हांसी, सांवल शाः खाटू के बासी ।७।
मधुर बचन तब कृष्ण सुनाये, समर भूमि केहि कारन आये ।८।
तीन बाण धनु कंध सुहाये, अजब अनोखा रूप बनाये ।९।
बाण अपार वीर सब ल्यासी, सांवल शाः खाटू के बासी ।१०।
बर्बरीक इतने दल माहिं, तीन बाण की गिनती नाहिं ।११।
योधा एक से एक निराले, वीर बहादुर अति मतवाले ।१२।
समर सभी मिल कठिन मचासी, सांवल शाः खाटू के बासी ।१३।
बर्बरीक मम कहना मानो, समर भूमि तुम खेल न जानो ।१४।
द्रोणगुरू कृपा आदि जुझारा, जिनसे पारथ का मन हारा ।१५।
तू क्या पेश इन्हों से पासी, सांवल शाः खाटू के बासी ।१६।
बर्बरीक हरि से यों कहता, समर देखना मैं हूँ चाहता ।१७।
कौन बलि रणशूर निहारूँ, वीर बहादुर कौन जुझारू ।१८।
तीन लोक त्रैवाण से मारूँ, हँसता रहूँ कभी ना हारूँ ।१९।
सत्य कहूँ हरि झूठ न जानो, दोनों दल इक तरफ हो मानो ।२०।
एक बाण दल दोऊ खपासी, सांवल शाः खाटू के बासी ।२१।
बर्बरीक से हरि फरमावे, तेरी बात समझ नहीं आवे ।२२।
प्राण बचाओ तुम घर जाओ, क्यों नादानपना दिखलाओ ।२३।
तेरी जान मुफत में जासी, सांवल शाः खाटू के बासी ।२४।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

गर विश्वास न तुम्हें मुरारी, तो कर लीजे जाँच हमारी ।२५।
यह सुन कृष्ण बहुत हरषाये, बर्बरीक से वचन सुनाये ।२६।
मैं अब लेऊँ परीक्षा खासी, सांवल शाः खाटू के बासी ।२७।
पात बिटप के सभी निहारो, बेध एक शर से सब डारो ।२८।
कह इतना इक पात मुरारी, दबा लिया पद तले करारी ।२९।
अजब रचि माया अविनाशी, सांवल शाः खाटू के बासी ।३०।
बर्बरीक धनुष बाण चढ़ाया, जानि जाय न हरि की माया ।३१।
बिटप निहार बली मुस्काया, अजित अमर अहिलबति जाया ।३२।
बली सुमिर शिव बाण चलासी, सांवल शाः खाटू के बासी ।३३।
बाण बली ने अजब चढ़ाया, पत्ते बेंध विटिप के आया ।३४।
गिरा कृष्ण के चरणों माहीं, विधा पात हरि चरण हटाई ।३५।
इन से कौन फते किमि पासी, सांवल शाः खाटू के बासी ।३६।
कृष्ण कहै बलि बताओ, किस दल की तुम जीत कराओ ।३७।
बली हार की दल बतलाया, यह सुन कृष्ण सनाटा छाया ।३८।
विजय किस तरह पारथ पासी, सांवल शाः खाटू के बासी ।३९।
छल करना कृष्ण ने बिचारा, बली से बोले नंद कुमारा ।४०।
न जाने क्या ज्ञान तुम्हारा, कहना मानो बली हमारा ।४१।
हो निज तरफ नाम पा जासी, सांवल शाः खाटू के बासी ।४२।
कहै बब्ररीक कृष्ण हमारा, टूट न सकता प्रण है करारा ।४३।
मांगे दान उसे मैं देता, हारा देख सहारा देता ।४४।
सत्य कहूँ न झूठ जरा सी, सावल शाः खाटू के बासी ।४५।
बेशक वीर बहादुर तुम हो, जचते दानी हमें न तुम हो ।४६।
कहैं बर्बरीक हरि बतलाओ, तुमको चाहिये क्या फरमाओ ।४७।
जो मांगे सो हमसे पासी, सांवल शाः खाटू के बासी ।४८।
बली अगर तुम सच्चे दानी, तो मैं तुम से कहूँ बखानी ।४९।
समर भूमि बलि देने खातिर, शीश चाहिए एक बहादुर ।५०।
शीश दान दे नाम कमासी, सांवल शाः खाटू के बासी ।५१।
हम तुम अर्जुन तीनों माहीं, शीश दान दे कोई बलदाई ।५२।
जिसको आप योग्य बताये, वही शीश बलिदान चढ़ाये ।५३।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

आवागमन मिटै चौरासी, सांवल शाः खाटू के बासी ।५४।
अर्जुन नाम समर में पावे, तुम बिन सारथी कौन कहावे ।५५।
मम शिर दान दिहों भगवाना, भारत देखन मन ललचाना ।५६।
शीश शिखर गिरि पर धरवासी, सांवल शाः खाटू के बासी ।५७।
शीश दान बर्बरीक दिया है, हरि ने गिरि पर धरा दिया है ।५८।
समर अठारह रोज हुआ है, कुरू दल सारा नाश हुआ है ।५६।
विजय पताका पाण्डव फैरासी, सांवल शाः खाटू के बासी ।६०।
भीम नुकल सहदेव और पारथ, करते निज तारीफ अकारथ ।६१।
यों सोचें मन में यदुराया, इनके दिल अभिमान है छाया ।६२।
हरि भक्तों का दुःख मिटासी, सांवल शाः खाटू के बासी ।६३।
पारथ भीम आदि बल धारी, से यों बोले गिरिवर धारी ।६४।
किसने विजय समर में पाई, पूछो शिर बर्बरीक से भाई ।६५।
सत्य बात सिर सभी से बतासी, सांवल शाः खाटू के बासी ।६६।
हरि सबको संग ले गिरिवर पर, शिर बैठा था मगन शिखर पर ।६७।
जा पहुँचे झटपट नन्द लाला, पुनि पूछा शिर से सब हाला ।६८।
शिरदानी है सुख अविनाशी, सांवल शाः खाटू के बासी ।६६।
हरि यों कहै सही फरमाओ, समर जीत है कौन बताओ ।७०।
बली कहै मैं सही बताऊँ, नहिं पितु चाचा बली न ताऊ ।७१।
भगवत ने पाई शाबासी, सांवल शाः खाटू के बासी ।७२।
चक्र सुदर्शन है बलदाई, काट रहा था दल जिमि काई ।७३।
रूप द्रोपदी काली का धर, हो विकराल ले कर में खप्पर ।७४।
भर - भर रूधिर पिये थी प्यासी, सांवल शाः खाटू के बासी ।७५।
मैंने जो कुछ समर निहारा, सत्य सुनाया हाल है सारा ।७६।
सत्य वचन सुन कर यदुराई, वर दीन्हा सिर को हर्षाई ।७७।
श्याम रूप मम धाम पुजवासी, सांवल शाः खाटू के बासी ।७८।
कलि में तुमको श्याम कन्हाई, पूजेंगे सब लोग लुगाई ।७६।
मन बचन कर्म से जो ध्यायेगे, मन इच्छा फल सब पायेंगे ।८०।
निम्बू सद्‌गति को पा जासी, सांवल शाः खाटू के बासी ।८१।
सागर से धनवान बनाना, पत्नि गोद में सुवन खिलाना ।८२।

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

भक्त जन हैं शरण तिहारी, श्रीपति यदुपति कुंज बिहारी ।८३।
सब सुखदायक आनन्द रासी, सांवल शाः खाटू के बासी ।८४।

श्याम चौरासी है रची, भक्त जनन के हेत।
जो यह निशि बासर पढ़ै, सकल सुमंगल देत।।
लख चौरासी छूटिये, श्याम चौरासी गाय।
अक्षय चार फल पाय कर, आवागमन मिटाय।।
सागर उपनाम है, कहै सब लादूराम।
सात्विक भक्त जग में जिते, उनको करूँ प्रणाम।।
शुक्ल पक्ष ग्रह ग्रहशशी, पित्र पक्ष शुभ जाण।
चन्द्रमा एकादशी, कियो पूर्ण गुण गान।।

।। आरती श्री श्याम जी की ।।

ऊँ जय श्री श्याम हरे, बाबा जय श्री श्याम हरे
खाटू धाम बिराजत, अनुपम रूप धरे ।।ऊँ जय।।
रत्न जड़ित सिंहासन, सिर पर चंवर ढुले
तन केशरिया बागो, कुण्डल श्रवण पड़े ।।ऊँ जय।।
गल पुष्पों की माला, सिर पर मुकुट धरे
खेवत धूप अग्नि पर, दीपक ज्योती जले ।।ऊँ जय।।
मोदक खीर चूरमा, सुवरण थाल भरे
सेवक भोग लगावत, सेवा नित्य करे ।।ऊँ जय।।
झांझ कटोरा और घड़ियावल, शंख मृदंग धुरे
भक्त आरती गावें, जय जय कार करें ।।ऊँ जय।।
जो ध्यावे फल पावे, सब दुख से उबरे
सेवक जन निज मुख से, श्री श्याम - २ उचरे ।।ऊँ जय।।
श्री श्याम बिहारी जी की आरती जो कोई नर गावे
कहत 'मनोहर स्वामी' मनवांछित फल पावे ।।ऊँ जय।।
ऊँ जय श्री श्याम हरे, बाबा जय श्री श्याम हरे
निज भक्तों के तुमने, पूरण काज करे ।।ऊँ जय।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

॥ श्री श्याम सखाचार ॥

हाथ जोड़ विनती करूँ, सुणज्यो चित्त लगाय ।
दास आ गयो शरण में, रखियो इसकी लाज ॥
धन्य ढुँढारो देश है, खाटू नगर सुजान ।
अनुपम छवि श्री श्याम की, दर्शन से कल्याण ॥
श्याम-श्याम मैं रटूँ, श्याम है जीवन प्राण ।
श्याम भक्त जग में बड़े, उनको करूँ प्रणाम ॥
खाटू नगर के बीच में, बण्यो आपको धाम ।
फागुन शुक्ला मेला भरे, जय-जय बाबा श्याम ॥
फागुन शुक्ला-द्वादशी, उत्सव भारी होय ।
बाबा के दरबार से, खाली जाय न कोय ॥
उमा पति, लक्ष्मी पति, सीता पति श्री राम ।
लज्जा सबकी राखियो, खाटू के श्री श्याम ॥
पान सुपारी इलायची, अत्तर सुगन्ध भरपूर ।
सब भक्तन की विनती, दर्शन देवो हुजूर ॥
"काशीराम" तो प्रेम से, धरे श्याम को ध्यान ।
"युवा संघ" पावे सदा, श्री श्याम कृपा से मान ॥

'कीजिये देश से प्यार'

लालच दुश्मन से मिले, उसको ठोकर मार,
जन्म लिया जिस देश में, उसे दीजिये प्यार।
उसे दीजिये प्यार घृणा की खाई पाटो।
जिस डाली पर बैठे हो, उसको मत काटो।
बन करके गद्दार, बीज हिंसा के बोते।
ऐसे मानव, पशुओं से भी बदत्तर होते।

– काका हाथरसी

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

॥ श्री काली स्तुति ॥

सृष्टि स्थिति विनाशानां शक्तिभूते सनातनि।
गुणाश्रये गुणमयी, नारायणी नमोऽस्तुते ॥
ॐ जयन्ती मंगला काली, भद्र काली कपालिनी।
दुर्गा क्षमा शिवाधात्री, स्वाहा स्वधा नमोऽस्तुते ॥

तुम सृष्टि, पालन और संहार की शक्तिभूता, सनातनी देवी, गुणों का आधार तथा सर्वगुणमयी हो। नारायणि! तुम्हें नमस्कार है।

सबसे उत्कृष्ट एवं विजयशालिनी **जयन्ती**, मोक्षदायिनी मंगलमयी देवी- **'मगंला'**, प्रलयकाल में समस्त सृष्टि को अपना ग्रास बनाने वाली- **'काली'**, अपने भक्तों को देने के लिये भद्र (सुख) स्वीकारने वाली- **'भद्रकाली'**, हाथ में कपाल तथा मुण्डमाला धारी - **'कपालिनी'**, दुःसाध्य साधन से प्राप्त होने वाली जगदम्बिका - **'दुर्गा'**, अपने भक्तों के अपराध क्षमा करने वाली करूणामयी - **'क्षमा'**, सबका शिव अर्थात् कल्याण करने वाली- **'शिवा'**, सम्पूर्ण प्रपंच को धारण करने वाली भगवती - **'धात्री'**, स्वाहारूप से यज्ञभाग ग्रहण करके देवताओं का पोषण करने वाली - **'स्वाहा'**, स्वधारूप से श्राद्ध और तर्पण स्वीकार करके पितरों का पोषण करने वाली- **'स्वधा'**, प्रसिद्ध जगदम्बिके इन नामों से तुम्हें मेरा नमस्कार है।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

॥ काली चालीसा ॥

जय-जय सीता-राम कै, मध्य वासनी अम्ब,
देहु दर्श जगदम्बा, अब करो न मातु विलंब ॥

जय तारा जय कालिके, जय दर्श विद्या वृन्द,
काली चालीसा रचत एक सिद्ध कवि हिन्द ॥

प्रातः काल उठ लो पढ़े, दुपहरिया शाम,
दुःख दरिद्रता दूर हो सिद्ध होय सब काम ॥

जय काली कंकाली मालिनी, जय मंगला महा कपालिनी ।
रक्तबीज वधकारिणी माता, सदा भक्त के जन सुख दाता ।
शिरोमालिका भूषित अंगे, जय काली मधु मध्य मतंगे ।
हर हृदयारविन्द सुबिलासिनी, जय जगदम्ब सकल दुखनाशिनी ।
ह्रीं काली श्री महाकराली, क्रीं कल्याणी दक्षिण काली ।
जय कलावती जय विद्यावती, जय तारा सुन्दरी महामती ।
देहु सुबुद्धि हरहु सब संकट, होहु भक्त के आगे परगट ।
जय ऊँकारे जय हूँकारे, महा शक्ति जय अपरम्पारे ।
कमला कलियुग दर्प विनाशिनी, सदा भक्तजन के भयनाशिनी ।
अब जगदम्ब न देर लगावहु, दुःख दरिद्रता मोह हटावहु ।
जयति कराल काल की माता, कालानल समान द्युतिगाता ।
जय शंकरी सुरेशि सनातनी, कोटि सिद्ध कवि मातु पुरातनी ।
कपर्दिनी कलिकलुष विमोचनी, जय विकसित नवनलिन विलोचनी ।
आनन्दा आनन्द निधाना, देहु मातु मोहि निर्मल ज्ञाना ।
करूणामृत सागर कृपामयी, होहु दुष्ट जन पर अब निर्दयी ।
सकल जीव तोहि परम प्यारे, सकल विश्व तोरे आधारे ।
प्रलय काल में नर्तन कारिणि, जगजननी सब जग की पालिनि ।
महोदरी माहेश्वरि माया, हिमगिरि सुता विश्व की छाया ।
स्वच्छन्दरद् मराद् धुनिमाहिं, गर्जत तूहिं और कोउ नाहीं ।
स्फुरति मणि गुणाकर प्रताने, तारागण तू ब्योम बिताने ।
श्रीधारे सन्तन हितकारिणि, अग्नि न पानी अति दुष्ट विदारिणी ।

धूम्र विलोचनि प्राण विमोचनि, शुम्भ निशुम्भ मथनि वर लोचनि ।
सहस्त्र भुजी सरोरूह मालिनि, चामुण्डे मरघट की वासिनि ।
खप्पर मध्य सुशोणित साजी, मारेउ माँ महिषासुर पाजी ।
अम्ब अम्बिका चण्ड चण्डिका, सब एके तुम आदि कालिका ।
अजा एक रूपा बहु रूपा, अकथ चरित्र शक्ति अनूपा ।
कलकत्ते के दक्षिण द्वारे, मूरति तोर महेशि अपारे ।
कादम्बरी पान रत श्यामा, जय मातांगि काम के धामा ।
कमलासन वासनि कमलायनि, जय श्यामा जय जय श्यामायनि ।
रासरते नव रसे प्रकृति हे, जयति भक्त उर कुमति सुमतिहे ।
कोटि ब्रह्म शिव विष्णु कर्मदा, जयति अहिंसा धर्म जन्मदा ।
जल थल नभ मंडल मे, व्यापिनि, सौदामिनी मध्य अलापिनि ।
झननन तच्छमरिन रिननादिनी, जय सरस्वती वीणावादिनी ।
कलत गले कोमल रूँडायै, ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै ।
हिंगलाज विन्ध्याचल बासिनि, अट्टहासिनी औ अधनाशिनि ।
कितनी स्तुति करो अखण्डे, तू ब्रह्माण्ड शक्ति नितचण्डे ।
यह चालीसा जो नर गावै, मातु भक्ति वांछित फल पावै ।
माला और फल फूल चढ़ावे, मांस खून से नहीं छुआवे ।
सब के तुम समान महतारी, काहे कोउ बकरा को मारी ।

दोहा – सब जीवों के जीव में, व्यापक तू ही अम्ब ।
कहत सिद्ध कवि सब जगत तोरे सुत जगदंब ।
विक्रम शब्द उन्नीस सौ बयासी में मम जन्म ।
चूहा-वाली पुत्र हूँ, स्थान गयापुर धाम ।।

।। श्री कालीजी की आरती ।।

'मंगल' की सेवा, सुन मेरी देवा ! हाथ जोड़ तेरे द्वार खड़े ।
पान – सुपारी, ध्वजा नारियल ले ज्वाला तेरी भेंट धरे ।।
सुन जगदम्बे कर न विलम्बे संतन के भंडार भरे ।
संतन प्रतिपाली सदा खुशाली मैया जय काली कल्याण करे ।।१।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

'बुद्ध' विधाता तू जगमाता मेरा कारज सिद्ध करे ।
चरण कमल का लिया आसरा शरण तुम्हारी आन परे ।।
जब-जब भीर पड़े भक्तन पर तब-तब आय सहाय करे ।
संतन प्रतिपाली....।।२।।

'गुरू' के बार सकल जग मोह्यो तरूणीरूप अनूप धरे ।
माता होकर पुत्र खिलावै, कहीं भार्या भोग करे ।।
'शुक्र' सुखदाई सदा सहाई संत खड़े जयकार करे ।
संतन प्रतिपाली....।।३।।

ब्रह्मा विष्णु महेश फल लिये भेंट देन तेरे द्वार खड़े ।
अटल सिंहासन बैठी माता सिर सोने का छत्र फिरे ।।
वार 'शनिश्चर' कुंकुम वरणी, जब लुंकड़ पर हुकुम करे ।
संतन प्रतिपाली....।।४।।

खंग खपर त्रिशूल हाथ लिये रक्तबीज कूँ भस्म करे ।
शुभ निशुंभ क्षणहि में मारे महिषासुर को पकड़ दले ।।
'आदित' वारी आदि भवानी जन अपने का कष्ट हरे ।
संतन प्रतिपाली....।।५।।

कुपित होय कर दानव मारे, चण्ड मुण्ड सब चूर करे ।
जब तुम देखो दयारूप हो, पल में संकट दूर टरे ।।
'सोम' स्वभाव धर्‌यो मेरी माता जन की अर्ज कबूल करे ।
संतन प्रतिपाली....।।६।।

सात बार की महिमा बरनी, सब गुण कौन बखान करे ।
सिंहपीठ पर चढ़ी भवानी अटल भवन में राज करे ।।
दर्शन पावे मंगल गावे सिद्ध साधक तेरी भेंट धरे ।
संतन प्रतिपाली....।।७।।

ब्रह्मा वेद पढ़ें तेरे द्वारे शिवशंकर हरि ध्यान करे ।
इन्द्र कृष्ण तेरी करे आरती चवर कुबेर डुलाय करे ।।
जय जननी जय मातु भवानी अचल भवन में राज्य करे ।
संतन प्रतिपाली सदा खुशाली मैया जय काली कल्याण करे ।।८।।

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

॥ अथ सप्तश्लोकी दुर्गा ॥

ॐ ज्ञानिनामपि चेतांसि देवी भगवती हि सा ।
बलादाकृष्य मोहाय महामाया प्रयच्छति ॥१॥
दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः
स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि ।
दारिद्र्यदुःखभयहारिणि का त्वदन्या
सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता ॥२॥
सर्वमंगलमंगल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके ।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तुते ॥३॥
शरणागतदीनार्तपरित्राणपरायणे ।
सर्वस्यार्तिहरे देवि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥४॥
सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते ।
भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तु ते ॥५॥
रोगानशेषानपहंसि तुष्टा
रूष्टा तु कामान् सकलानभीष्टान् ।
त्वामाश्रितानां न विपन्नाराणां
त्वामाश्रिता ह्याश्रयतां प्रयान्ति ॥६॥
सर्वाबाधाप्रशमनं त्रैलोक्यस्याखिलेश्वरि ।
एवमेव त्वया कार्यमस्मद्वैरिविनाशनम् ॥७॥

भावार्थ – जगदीश्वर भगवान विष्णु की योगनिद्रारूपा जो भगवती महामाया हैं, उन्हीं से यह जगत् मोहित हो रहा है। वे भगवती महामाया देवी ज्ञानियों के भी चित्त को बलपूर्वक खींच कर मोह में डाल देती हैं।१।

माँ दुर्गे! आप स्मरण करने पर सब प्राणियों का भय हर लेती हैं और स्वस्थ पुरूषों द्वारा चिन्तन करने पर उन्हें परम कल्याणमयी बुद्धि प्रदान करती हैं।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

दुःख, दरिद्रता और भय हरने वाली देवी ! आपके सिवा दूसरी कौन है, जिसका चित्त सबका उपकार करने के लिये सदा ही दयार्द्र रहता हो।२।

हे नारायणी ! तुम सब प्रकार का मंगल प्रदान करने वाली मंगलमयी हो। कल्याणदायिनी शिवा हो। सब पुरूषार्थों को सिद्ध करने वाली, शरणागतवत्सला, तीन नेत्रों वाली एवं गौरी हो। तुम्हे नमस्कार है।३।

शरण में आये हुए दीनों एवं पीड़ितों की रक्षा में संलग्न रहनेवाली तथा सबकी पीड़ा हरने वाली हे नारायणी देवी तुम्हे नमस्कार है।४।

सर्वस्वरूपा, सर्वेश्वरी तथा सब प्रकार की शक्तियों से सम्पन्न दिव्यरूपा दुर्गे देवि ! सब भयों से हमारी रक्षा करो, तुम्हे नमस्कार है।५।

देवि ! तुम प्रसन्न होने पर सब रोगों को नष्ट कर देती हो ओर कुपित होने पर मनोवांछित सभी कामनाओं का नाश कर देती हो। जो लोग तुम्हारी शरण में जा चुके हैं, उन पर विपत्ति तो आती ही नहीं बल्कि तुम्हारी शरण में गये हुए मनुष्य दूसरों को शरण देनेवाले हो जाते हैं।६।

सर्वेश्वरी ! तुम इसी प्रकार तीनों लोकों की समस्त बाधाओं को शान्त करो और हमारे शत्रुओं का नाश करती रहो, यही हमारी विनती है।७।

हरिहर निंदा सुनहि जे काना। होहि पाप गोघात समाना।।

निंदा सुननेवाला एवं करने वाला दोनो दोषी हैं। किसी की निंदा करना बेकार है। निंदा कुँभी नरक है। वह इन्सान को खा जाती है। सपने मे भी पर-दोष न देखो।

इस गुफा मे अखंड भण्डारा। तिस बिच बसे हरि अलख अपारा।।

अर्थात् शरीर रूपी गुफा में आनन्द का अखण्ड भंडार है। इसमें हड्डियां, रक्त, माँस तथा चमड़ा ही न समझ लेना, बल्कि इस शरीर रूपी घर में अलख अपार परमब्रह्म परमात्मा का निवास है।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

॥ दुर्गा चालीसा ॥

नमो नमो दुर्गे सुख करनी, नमो नमो अम्बे दुःखहरणी ।
निरंकार है ज्योति तुम्हारी, तिहूँ लोक फैली उजियारी ।
शशि लिलाट मुख महा विशाला, नेत्र लाल भृकुटी विकराला ।
रूप मातु को अधिक सुहावै, दरश करत जन अति सुख पावै ।
तुमही संसार शक्ति लय कीना, पालन हेतु अन्न धन दीना ।
अन्नपूर्णा हुई जग पाला, तुमही आदि सुन्दरी बाला ।
प्रलयकाल सब नाशनहारी, तुम गौरी शिवशंकर प्यारी ।
शिव योगी तुम्हरे गुण गावे, ब्रह्मा विष्णु तुम्हे नित ध्यावे ।
रूप सरस्वती का तुम धारा, दे सुबुद्धि ऋषि मुनिन उबारा ।
धरा रूप नरसिंह को अम्बा, प्रगट भई फाड़ कर खम्भा ।
रक्षा कर प्रहलाद बचायो, हिरण्याक्ष को स्वर्ग पठायो ।
लक्ष्मी रूप धरो जग माहीं, श्री नारायण अंग समाहीं ।
क्षीर-सिन्धु में करत विलासा, दया सिन्धु दीजे मन आशा ।
हिंगलाज में तुम्हीं भवानी, महिमा अमित न जात बखानी ।
मातंगी धूमावति माता, भुवनेश्वरि बगला सुखदाता ।
श्री भैरव तारा जगतारिणि, छिन्नभाल भव दुख निवारिणि ।
केहरि वाहन सोहे भवानी, लंगुर वीर चलत अगवानी ।
कर में खप्पर खड़ग बिराजे, जाको देखि काल डर भाजे ।
सोहे कर में अस्त्र - त्रिशूला, जाते उठत शत्रु हिय शूला ।
नाग कोटि में तुम्हीं विराजत, तिहूँ लोक में डंका बाजत ।
शुम्भ-निशुम्भ दानव तुम मारे, रक्तबीज शंखन संहारे ।
महिषासुर नृप अति अभिमानी, जेहि अघमार मही अकुलानी ।
रूप कराल कालिका धारा, सेन सहित तुम तेहि संहारा ।
परी गाढ़ सन्तन पर जब-जब, भई सहाय मातु तुम तब-तब ।
अमरपुरी और सब लोका, तब महिमा सब रहे अशोका ।
ज्वाला मय है ज्योति तुम्हारी, तुम्हे सदा पूजें नर नारी ।
प्रेम भक्ति से जो यश गावै, दुःख दारिद्र निकट नहिं आवै ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ध्यावै तुम्हे जो नर मन लाई, जनम मरण ताकर छूटि जाई ।
योगी सुर मुनि कहत पुकारी, योग नहीं बिन शक्ति तुम्हारी ।
शंकराचार्य जब तप अति कीना, काम क्रोध जीति सब लीना ।
निशिदिन ध्यान धरो शंकर को, काहु काल नहीं सुमिरो तुमको ।
शक्ति रूप को मरम न पायो, शक्ति गई तब मन पछितायो ।
शरणागत होई कीर्ति बखानी, जै जै जै जगदम्ब भवानी ।
भई प्रसन्न आदि जगदम्बा, दई शक्ति नाहिं कीन बिलम्बा ।
मोको मातु कष्ट अति घेरो, तुम बिन कौन हरे दुःख मेरो ।
आशा तृष्णा निपट सतावै, रिपु मूरख मोहि अति डरपावै ।
शत्रु नाश कीजे महारानी, सुमिरौ इकचित तुम्हें भवानी ।
करो कृपा हे मातु दयाला, ऋद्धि सिद्धि देइ करहुँ निहाला ।
जब लगि जियौं दया फल पाऊँ, तुम्हरो यश मैं सदा सुनाऊँ ।
दुर्गा चालीसा जो नर गावै, सब सुख भोग परम पद पावै ।
देवीदास शरण निज जानी, करहु कृपा जगदम्ब भवानी ।

जगतमात मातेश्वरी, जग की पालनहार ।
कृपा राखियो दास पर, करियो भव से पार ॥

संसार गोपियों के समान है, विषय दही के तुल्य हैं। दही में खटास अधिक है, मिठास कम है। किन्तु दही का मन्थन करने के बाद जो मक्खन निकलता है, वह मीठा होता है। यशोदा माँ दही का मन्थन करती हैं। इसी प्रकार संसार का मन्थन करो।

केवल श्राद्ध अथवा पिण्डदान से किसी को मुक्ति नहीं मिलती। शरीर ही पिण्ड है, इसे परमात्मा को समर्पित करो। यदि मनुष्य स्वयं अपना कल्याण नहीं कर सकता तो पुत्र किस प्रकार करेगा?

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

॥ श्री दुर्गाजी की आरती ॥

दोहा – दुर्गा दुर्गति दूर कर, मंगल कर सब काज ।
मन मन्दिर उज्ज्वल करो, मात भवानी आज ॥

जय अम्बे गौरी मैया जय श्यामागौरी ।
तुमको निशिदिन ध्यावत हरि ब्रह्मा शिवजी ।।जय अम्बे गौरी।।
मांग सिंदूर बिराजत, टीको मृग मदको । मैया टीको ....
उज्ज्वल से दोउ नैना, चन्द्र वदन नीको ।।जय अम्बे....।।
कनक समान कलेवर, रक्ताम्बर राजै । मैया रक्ताम्बर ....
रक्त - पुष्प गल माला, कण्ठन पर साजै ।।जय अम्बे....।।
केहरि वाहन राजत, खड़ग खपर धारी । मैया खड़ग....
सुर-नर-मुनि-जन सेवत, तिनके दुख हारी ।।जय अम्बे....।।
कानन कुण्डल शोभित, नासाग्रे मोती । मैया नासाग्रे....
कोटिक चन्द्र दिवाकर, सम राजत ज्योती ।।जय अम्बे....।।
शुम्भ निशुम्भ विदारे, महिषासुर घाती । मैया महिषा....
धूम्र विलोचंन नैना, निशिदिन मदमाती ।।जय अम्बे....।।
चण्ड मुण्ड संहारे, शोणतबीज हरे । मैया शोणित....
मधु कैटभ दोउ मारे, सुर भयहीन करे ।।जय अम्बे....।।
ब्रह्माणी, रूद्राणी, तुम कमला रानी । मैया तुम....
आगम-निगम बखानी, तुम शिव पटरानी ।।जय अम्बे....।।
चौसठ योगिनि गावत, नृत्य करत भैरूँ । मैया नृत्य....
बाजत ताल मृदंगा औ बाजत डमरू ।।जय अम्बे....।।
तुम ही जग की माता, तुम ही हो भरता । मैया तुमही....
भक्तन की दुख हरता सुख सम्पत्ति करता ।।जय अम्बे....।।
भुजा चार अति शोभित, वर-मुद्रा धारी । मैया वर....
मनवांछित फल पावत, सेवत नर-नारी ।।जय अम्बे....।।
कंचन थाल विराजत, अगर कपूर बाती । मैया अगर....
(श्री) मालकेतु में राजत कोटिरतन ज्योती ।।जय अम्बे....।।
(श्री) अम्बेजी की आरती जो कोई नर गावै । मैया जो....
कहत शिवानन्द स्वामी, सुख सम्पत्ति पावै ।।जय अम्बे....।।
जय अम्बे गौरी मैया जय मंगलमूर्ति मैया जय आनन्द करनी ।
तुमको निशिदिन ध्यावत हरि ब्रह्मा शिवजी ।।जय अम्बे गौरी।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

॥ श्री दुर्गा कवच ॥

राज वह सारा जहाँ में, जो जो करे सब काम ।
जो न बतलाया गया हो, वह पितामह दो बता।।१।।
हे मुनि, वह राज जो है, लोक उपकारक सुनो ।
शुद्ध और पवित्र देवी का, कवच कारक सुनो।।२।।
शैल पुत्री है प्रथम दूजी हुई ब्रह्मचारिणी ।
चित्रघंटा तीसरी हैं, कुष्माण्डा चतुर्थी।।३।।
पांचवीं है स्कन्द माता, हैं छठी कात्यायनी ।
सातवीं कालरात्रि, अष्टम महागौरी हुई।।४।।
सिद्धि रात्रि हैं नवीं, नवरूप दुर्गा के हुये ।
इस तरह ये नाम ब्रह्म ने मुनि से कहे।।५।।
आग से जलते हुये या शत्रुरण में घेर ले ।
या विषम दुर्गम शरण भय में, इन्हें जो नर कहे।।६।।
क्षेत्र संकट में उन्हें कुछ भी अशुभ होता नहीं ।
शोक दुख भय में उन्हें मैने कभी देखा नहीं।।७।।
जिसे न हे ! देवेश तुम्हारी याद नित भक्ति से की ।
उसकी निःसन्देह तुम रक्षक रही बृद्धि हुई।।८।।
प्रेत पर चामुन्ड वाराही, महिष पर है सवार ।
ऐन्द्री गज पर, गरूड़ पर, वैष्णवी जी है सवार।।६।।
बृषभ पर माहेश्वरी, मोर पर कौमारी जी ।
लक्ष्मी हरि की कमल पर, है कमल कर धारिणी।।१०।।
ईश्वरी का रूप उज्ज्वल और नन्दी पर सवार ।
ब्राह्मी है हंस पर, अंक पर भूषण हजार।।११।।
इस तरह सब देवियाँ, सब योग से हैं पूर्ण युक्त ।
रत्न भूषण हर तरह के भोग से हैं पूर्ण युक्त।।१२।।
रथों में बैठी हुई, यह देवियाँ आईं नजर ।
हैं भरी सब क्रोध में, जिसका प्रदर्शित है असर ।।
शंख चक्र गदा व शक्ति, हल व मूसल उनके पास ।
खेटको तोमर सँभाले हाथ में परशु व पाश।।१३।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

कुन्तायुध त्रिशूल और शारङ्ग है उत्तम बड़ा ।
दैत्य देह विनाश हो, भक्तों का भय भंजन सदा।।१४।।
देव हित में कर लिये हैं, शस्त्र धारण बेशुमार ।
महारौद्रे महाघोर पराक्रमे हो नमस्कार।।१५।।
हे महाबलबालि उत्साही महा भयनाशिका ।
दुर्लभे रिपुत्रासिके रक्षा करो मेरी सदा।।१६।।
ऐन्द्री पूरब में आग्नेय्यां में हो अग्नी सहाय ।
दकन वाराही, नैर्ऋत कोण खड्गधारी सहाय।।१७।।
वारूणी पश्चिम में ले लै, मेरी रक्षा का परण ।
और वायव्य में हों, मृगवाहिनी चिन्ताहरण।।
और उत्तर में हो रक्षा को जो कौमारी चरण ।
और ईशा कोण में हो, शूलधारिणी की शरण।।१८।।
ऊर्ध्व ब्रह्माणी करें रक्षा व नीचे वैष्णवी ।
दश दिशा पालक सदा, शववाहना चामुण्डिनी।।१६।।
हो जया आगे वो पीछे, विजया हों पुश्तेपनाह ।
बायें अजिता से व दायें, अपराजिता से हो निबाह।।२०।।
शिखा पर उद्योतिनी का राजसिंहासन रहै ।
श्री उमा का शीश पर मेरे सदा शासन रहै।।
नम्र मस्तक पर शिरोधारी रहें मालाधरी ।
अब्रुओं की आबरू, रख ले सदैव यशस्विनी।।२१।।
जगमगाती हो भवों के बीच त्रिनयना की जोत ।
और यमघण्टा से रक्षित, हो सदा नाकों से सोत।।
शंखिनी की आँखमन्दिर में रमी रहवे झलक ।
द्वारवासिन कान की, बन जाये रक्षापेक्षक।।२२।।
गाल की मेरे हमेशा कालिका रक्षा करैं ।
शांकरी की ध्वनि मेरे, कर्णमूलों में बसें।।
नाक नकवों में बसी रहवै सुगन्धा की महक ।
होंठ पर ऊपर हमारे, चर्चिका की हो चहक।।२३।।
होंठ पर नीचे के अमृत, की कला बढ़ती रहे ।
और सदा मेरी जवाँ पर, सरस्वती चढ़ती रहे।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

दाँत की लड़ियों में कौमारी की ज्योती की दमक ।
कण्ठ के हलके में मेरे, चण्डिका की हो चमक।।२४।।
चित्रघण्टा घण्ट तालु पर महामाया रहें ।
सर्वमङ्गला वाक, कामाक्षी जबाड़े में बसें।।२५।।
ग्रीव में हो भद्रकाली, पृष्ठवंश धनुर्धरी ।
नीलग्रीवा कण्ठ पर, नलिका बसें नलकूबरी।।२६।।
खड्गिनी कन्धों व वज्रा बाहुओं की रक्षिका ।
हाथ की दण्डिनी हों रक्षक अंगुलियों की अम्बिका।।२७।।
नखों में शूलेश्वरी हो, कोख में नलईश्वरी ।
हो स्तनों में महादेवी मनःशोकविनाशिनी।।२८।।
शूलधारिणी पेट में, ललिता हृदय में जो बसें ।
नाभि की कामिनी, गुह्य गुह्येश्वरी रक्षा करें।।२९।।
भूतनाथा लिङ्ग और, गुदा की माहिषवाहिनी ।
हो कमर में भगवती, घुटनों में हों विन्ध्यवासिनी।।३०।।
जंघ पर बलवती देवी, सर्वकामप्रदायिनी ।
नारसिंही गुल्फ पर, हों पैर पीछे तेजसी।।३१।।
पदांगुली पर श्रीधरी तलुओं पै हों स्थल वासिनी ।
नख में हों दंष्ट्राकराली केश में ऊर्धवकेशनी।।३२।।
जिस्म पर जितने हमारे, रोम रोमों में हैं कूप ।
उनमें बस झलका करे, हरदम ये कौबेरी का रूप।।
चर्म में वागेश्वरी की, शक्तियों की हो चमक ।
शिवरमा की माँस हड्डी, खून में होवे दमक।।३३।।
कालरात्रि आँत में, पित में सदा मुकुटेश्वरी ।
पद्म में पद्मावती, कफ में रहें चूड़ामणि।।३४।।
हो नखों के तेज पर, ज्वालामुखी की देखभाल ।
जोड़ जोड़ों में रहें, हरदम अभेदा की सम्हाल।।
वीर्य को बल के लिए, ब्रह्माणि की पाया रहे ।
मेरी परछाई पै छत्रेश्वरी का साया रहे।।३५।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

धर्मचारिणि रक्षिका हों, अक्ल वहम गुमान की ।
वज्रहस्ता प्राण, उदान, अपान, व्यान, समान की।।३६।।
प्राण में कल्याणशोभी, की हमेशा आस हो ।
शब्द, गन्ध, स्पर्श, रस, वा रूप प्रयोगिनि वास हो।।३७।।
सत व तम रज की, सदा रक्षा करें नारायणी ।
आयु की रक्षिका वाराही, धरम की वैष्णवी।।३८।।
कीर्ति यश व लक्ष्मी की चक्रिणी हों रक्षिका ।
गोत्र की इन्द्राणि पशु की रक्षिका हों चण्डिका।।३९।।
पुत्र की हों महालक्ष्मी, कामिनी की भैरवी ।
पन्थ की सुपथा सुरक्षक, मार्ग की क्षेमंकरी।।४०।।
महालक्ष्मी राज में, विजया उपस्थित हर जगह ।
या जहाँ कोई न हो या कवच वर्जित हर जगह।।४१।।
वाँ जयन्ती सर्वपापविनाशिनी का वास हो ।
हृदय में कल्याण की गर कोई इच्छा खास हो।।४२।।
जब कहीं जावे, कवच की ढाल ले जावे सदा ।
लाभ हो धन का, विजय हो, सिद्ध हो सब कामना।।४३।।
पूर्ण निःसन्देह उसका, काम हो सोचा हुआ ।
हो बड़ी महिमा उसे मिल जाये सुख की सम्पदा।।४४।।
भय न हो उसकी तबीयत में कभी पैदा कहीं ।
या कभी संघर्ष में, वह जीव हारेगा नहीं।।
तीन लोकों में वही हो जाये, बाइज्जत सदा ।
इस कवच को जिस किसी ने शीश धारण कर लिया।।४५।।
देवताओं को सदा, यह कवच प्यारा रहा ।
नित्य श्रद्धा से इसे, त्रैकाल जो पढ़ता रहा।।४६।।
देवताओं की कला उसमें नजर आ जायेगी ।
तीन लोकों में न उसकी, बात नीची आयेगी।।
सौ बरस पूरे न हों, पूरे न हों गर सौ बरस ।
मौत की है मौत जो बेवक्त आवे पेशो पस।।४७।।
दूर हों बीमारियाँ, लूता व चेचक दूर हों ।
जङ्गम स्थावर कृत्रिम के जहर काफूर हों।।४८।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

जादू टोने और हों तावीज गण्डे या रमल ।
मन्त्र यन्त्र व तन्त्र जिनका हो रहा हो या अमल।।
छूत की बीमारियाँ या, हो बला फैली हुई ।
हो हवा पानी बिगड़ने से हवा बिगड़ी हुई।।४९।।
आ गई हो दूर से कोई बला लोगों के साथ ।
अन्तरिक्ष चरा हो विजली गिर पड़े ओलों के साथ।।
आप पैदा हुई या हों खान्दानी शाकिनी ।
कोई घोरा या महाबलवान होवे डाकिनी।।५०।।
हो अशुभ गृह फल कि भूत पिशाच का हो कुछ असर ।
यक्ष या गंधर्व राक्षस के झपेटे का खतर।।
ब्रह्म राक्षस का कि अन्देशा किसी बेताल का ।
कूषमाण्डा का कि डर हो, भैरवों की चाल का।।५१।।
नाश सब हो जाय, उसके दर्शनों से ही सदा ।
हृदय के जिसके भवन में, हो कवच बैठा हुआ।।५२।।
मान हो सनमान राजा का रहे बढ़ता हुआ ।
तेज व यश में वृद्धि हो, बोल वाला हो सदा।।
जो पुरूष पहिले कवच पढ़ पाठ दुर्गा का करे ।
यश सदा उसका बढ़े, सब ठाटवाट बना रहे।।५३।।
हैं घ्रने जंगल व पर्वत जब तलक कायम यहाँ ।
तब तलक उसकी रहे, औलाद का नामो निशाँ।।५४।।
अन्तकाल ''प्रसाद'' से "दुर्गा" के पहुँचेगा वहाँ ।
देवताओं की पहुँच होती है मुश्किल से जहाँ।।५५।।
लौ मिले लौ में सदा शिव आँक में अंकित रहे ।
पाय परमारूप शिव के साथ आनन्दित रहे।।५६।।

यह दुर्गाकवच प्रायः संस्कृत में ही मिलता है, इसलिये पाठकों के लिए इसका पाठ करना बहुत मुश्किल होता है। यहाँ पर सरल हिन्दी में पद्य के रूप में दिया गया है, जिससे कि दुर्गा कवच का पाठ करने वाले पाठकों को सुविधा रहे। यह कवच बहुत ही कल्याणकारी एवं मंगलकारी है। इसका पूर्ण श्रद्धा से पाठ करने वाले को फल मिलना निश्चित है। यह शरीर की रक्षा करने वाला एवं विघ्न विनाशक कवच है। — सम्पादक

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

॥ श्री राणी सत्यै नमः ॥

सर्वस्य बुद्धिरूपेण जनसय हृदि संस्थिते।
स्वर्गापवर्गदे देवि नारायणि नमोऽस्तु ते॥

अर्थात् बुद्धि रूप से सब लोगों के हृदय में विराजमान रहने वाली तथा स्वर्ग एवं मोक्ष प्रदान करने वाली नारायणी देवी तुम्हे नमस्कार है।

चन्द्र तपै सूरज तपै, उद्गण तपै आकाश ।
इन सबसे बढ़कर तपै, सतियों का सुप्रकाश ॥
जय जय श्री राणीसती, सत्य पुंज आधार ।
चरण कमल धरि ध्यान में, प्रणवहुँ बारम्बार ॥

अभिलाषा

सुखी बसे संसार सब, दुखिया रहे न कोय ।
यह अभिलाषा भक्त की, दादी पूरी होय ॥
दूध पूत धन धान्य से, वंचित रहे न कोय ।
विद्या, बुद्धि तेज बल, सबके भीतर होय ॥
आपकी भक्ति प्रेम से, मन होवे भरपूर ।
राग द्वेष से चित मेरा, कोसों भागे दूर ॥
नारायणी तुम आप हो, पाप की मोचन हार ।
क्षमा करो अपराध सब, कर दो भव से पार ॥

संसार में जो कुछ दिखाई दे रहा है वह मोह का मूल है, परमारथ नहीं। यह सब सपना है। किसी को सपना आ जाये और रंक राजा बन जाये। सपने में राजा गली-गली भटकता भिखारी बन जाये। जागने के बाद राजा भिखारी नहीं रहता। सपने में घटनायें घटती हैं। जगत एक सपना है।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

॥ श्री राणीसती चालीसा ॥

दोहा – श्री गुरू पद पंकज नमन, दूषित भाव सुधार ।
राणीसती सुविमल यश, वरणौ मति अनुसार ॥
काम क्रोध मद लोभ में, भरम रह्यो संसार ।
शरण गहि करूणामयी, सुख सम्पत्ति संचार ॥

–:चौपाई :–

नमो नमो श्री सती भवानी, जग विख्यात सभी मनमानी ।
नमो नमो संकट को हरणी, मनवांछित पूरण सब करणी ।
नमो नमो जय जय जगदम्बा, भक्तन काज न होय विलम्बा ।
नमो नमो जय जय जग तारिणी, सेवक जन के काज सुधारिणी ।
दिव्य रूप सिर चूंदर सोहे, जगमगात कुण्डल मन मोहे ।
मांग सिन्दूर सुकाजर टीकी, गज मुक्ता नथ सुन्दर नीकी ।
गलबैजन्ति माल बिराजे, सोलहुँ साज बदन पर साजे ।
धन्य भाग्य गुरसामल जी को, महम डोकवा ग्राम सती को ।
तनधनदास पतिवर पाये, आनन्द मंगल होत सवाये ।
जालीराम पुत्र बधु होके, वंश पवित्र किया कुल दो के ।
पतिदेव रण मांय झुझारे, सती रूप हो शत्रु संहारे ।
पति संग ले सद्गति पाई, सुर मन हर्ष सुमन बरसाई ।
धन्य धन्य वंश राणाजी को, सफल हुआ कर दरश सती को ।
विक्रम तेरा सौ बावनकूं, मंगसिर बदी नौमी मंगलकूं ।
नगर झूंझनू प्रगटी माता, जग विख्यात सुमंगल दाता ।
दूर देश के यात्री आवे, धूप दीप नैवेद्य चढ़ावे ।
उछाड़–उछाड़ते हैं आनन्द से, पूजा तन मन धन श्रीफल से ।
जात जडूला रात जगावे, बांसल गोती सभी मनावे ।
पूजन पाठ पठन द्विज करते, वेद ध्वनि मुख से उच्चरते ।
नाना भाँति - भाँति पकवाना, विप्रजनों को न्यूत जिमाना ।
श्रद्धा भक्ति सहित हरषाते, सेवक मनवांछित फल पाते ।
जय जय कार करे नर नारी, श्री राणी सती की बलिहारी ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

द्वार कोट नित नौबत बाजे, होत श्रृंगार साज अति साजे ।
रत्न सिंहासन झलके नीको, पल पल छिन छिन ध्यान सती को ।
भाद्र कृष्ण मावस दिन लीला, भरता मेला रंग रंगीला ।
भक्त सज्जन की सकड़ भीड़ है, दर्शन के हित नहीं छीड़ है ।
अटल भुवन में ज्योति तिहारी, तेज पुंज जगमाय उजियारी ।
अटल शक्ति से मिली ज्योत है, देश देश में भवन भोत है ।
नाना विधि सों पूजा करते, निश दिन ध्यान तिहारा धरते ।
कष्ट निवारिणी दुःख नाशिनी, करूणामयी झूंझनू वासिनी ।
प्रथम सती नारायणी नामा, द्वादस और हुई इसि धामा ।
तिहूँ लोक में कीर्ति छाई, श्री राणी सती की फिरि दुहाई ।
सुबह शाम आरती उतारे, नौबत घण्टा ध्वनि टंकारे ।
राग छत्तीसा बाजा बाजै, तोहुँ मण्ड सुन्दर अति साजे ।
त्राहि त्राहि मैं शरण आपकी, पूरो मन की आश दास की ।
मुझको एक भरोसो तेरो, आन सुधारो कारज मेरो ।
पूजा जप तप नेम न जानूं, निर्मल महिमा नित्य बखानूं ।
भक्तन की आपत्ति हर लेनी, पुत्र पोत्र सम्पति वर देनी ।
पढ़े यह चालीसा जो शतबारा, होय सिद्धि मन माँहि विचारा ।
"गोपीराम" (मैं) शरण ली थारी, क्षमा करो सब चूक हमारी ।

दोहा – दुख आपद विपदा हरण, जग जीवन आधार ।
बिगड़ी बात सुधारिये, सब अपराध बिसार ॥

"नर कपड़न को डरत हैं, नरक पड़न को नाहिं"

मनुष्य कपड़ों का ख्याल रखता है, हृदय का ख्याल नहीं रखता। विषयों का चिन्तन करता है और हृदय काला हो जाता है। कपड़ा बिगड़े यह मनुष्य को सहन नहीं होता, परन्तु अगर वह अपने अन्तर्मन में झाँक कर देखे तो पता लगेगा कि उसके मन पर कितने मैले धब्बे पड़े हैं। आज का मानव जितना बाहर से सफेदपोश नजर आता है उतना ही भीतर से कलुषित है। मन का मैलापन नरक का रास्ता है।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

॥ आरती श्री राणीसती दादी की ॥

ॐ जय श्री राणीसती मैया, जय जगदम्बे सती ।
अपने भक्त जनन की दूर करो विपती ।।१।। जय...
अवनि अनन्तर ज्योति अखंडित, मंडित चहुँ कुम्भा ।
दुर्जन दलन खड़ग की, विद्युत सम प्रतिभा ।।२।। जय...
मरकत मणि मन्दिर अति मंजुल, शोभा लखि न परे ।
ललित ध्वजा चहुँ ओरे, कंचन कलश धरे ।।३।। जय...
घण्टा घनन घड़ावल बाजत, शंख मृदंग धुरे ।
किन्नर गायन करते, वेद ध्वनि उच्चरे ।।४।। जय...
सप्त मातृका करें आरती, सुरगण ध्यान धरें ।
विविध प्रकार के व्यंजन, श्री-फल भेंट करें ।।५।। जय...
संकट विकट विदारिणी, नाशनि हो कुमति ।
सेवक जन हृदि पटले, मृदुल करण सुमति ।।६।। जय...
अमल कमल दल लोचनि, मोचनि त्रय तापा ।
दास आयो शरण आपकी, लाज रखो माता ।।७।। जय...
श्री राणीसती मैयाजी की आरती, जो कोई नर गावे ।
सकल सिद्धि नव निधि, मनवांछित फल पावे ।।८।। जय...

संसार सुन्दर नहीं संसार की रचना जिस प्रभू ने की है वे परमात्मा सुन्दर हैं। संसार का सौन्दर्य क्षणिक है, मन की कल्पना मात्र है। इसी पर किसी कवि ने लिखा है–

सुन्दरता अभिशाप विश्व का, सुन्दरता वरदान प्रिये ।
इस क्षण भंगुर सुन्दरता पर, मत करना अभिमान प्रिये ।
जिस दिन आयेगा माझी, ले चलने उस पार प्रिये ।
उस दिन यह मोहक यौवन, देना होगा उपहार प्रिये ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

॥ श्री गंगा महात्म्य ॥

गंगे ! गंगे ! नमस्तुभ्यं मातमतिर्ननो नमः ।
कृपया देहि मे नित्यं त्वयिनिष्ठामखण्डिताम् ॥

जगत तारिणी, पतित पावनी, जय गंगे, हर हर गंगे ।
जटा जूट शिव शम्भू निवासिनी, जय गंगे हर हर गंगे ।।टेर।।
देवलोक में बसती गंगा, देवों के दुःख दूर करे ।
सच्चे मन से जो कोई पूजे, उसकी नैया पार करे ।
देवन में महादेव बड़े हैं, तीरथ में है श्री गंगे ।।१।।
हिम राजा की सुन्दर कन्या, पारवती गंगा माई ।
कैलासवासी भोले से, दोनों बहनें थी व्याही ।
पारवती चरनन की दासी, मस्तक पर रहती गंगे ।।२।।
भागीरथ की देख तपस्या, धरणी पर गंगा आई ।
गंगाजी के निर्मल जल से, सागर वंश मुक्ति पाई ।
अन्न धन्न का भण्डार है भरणी, जय भागीरथी जय गंगे ।।३।।
गोमुख से इठलाती गंगा, हरिद्वारआवास किया ।
पतितों को पावन करने, धरा पर अवतार लिया ।
गंगा सागर संगम पावन, कपिल मुनिश्वर संग गंगे ।।४।।
गंगाजल से मुक्ति मिलती, निर्मल होती है काया ।
गंगा तट पर प्राण तजे जो, कोटि यज्ञ फल वो पाया ।
"भक्त दयालू" हर दम बोलो - जय गंगे हर हर गंगे ।।५।।

''शरीर रथ है, आत्मा रथी है, बुद्धि सारथी है, मन लगाम है, इन्द्रियाँ घोड़े हैं, शब्द स्पर्शादि विषय मैदान और शरीर, इन्द्रिय तथा मनयुक्त आत्मा भोक्ता है।'' रथ घोड़ों के बिना नहीं चलता, परन्तु उसे ठीक रास्ते से ले जाना हाथ में लगाम पकड़े हुये बुद्धिमान और तत्पर सारथी का ही काम है।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

॥ श्री गंगा चालीसा ॥

दोहा – जय जय जय जग पावनी, जयति देवसरि गंग ।
जय शिव जटा निवासिनी, अनुपम तुंग तरंग ॥

जय जग जननि हरण अघ खानी, आनन्द करनी गंग महारानी ।
जय भागीरथी सुरसरि माता, कलिमल मूल दलनि विख्याता ।
जय जय जहमुसुता अघ हननी, भीष्म की माता जग जननी ।
धवल कमल दल सम तनु साजे, लखि शतसरद चन्द्रछवि लाजै ।
वाहन मकर विमल शुचि सोहै, अमिय कलशकर लखिमन मोहे ।
जड़ित रत्न कंचन आभूषण, हिय मणि हार, हरिणतम दूषण ।
जग पावनी त्रयताप नसावनि, तरल तरंग तुंग मन भावनि ।
जो गणपति अति पूज्य प्रधाना, तिहुँ ते प्रथम गंग अस्नाना ।
ब्रह्म कमण्डल वासिनी देवी, श्री प्रभु पद पंकज सुख सेवी ।
साठि सहस्त्र सगर सुत तार्‍यो, गंगा सागर तीरथ धार्‍यो ।
अगम तरंग उठ्‌यो मन भावन, लखि तीरथ हरिद्वार सुहावन ।
तीरथ राज प्रयाग अक्षैवट, धरयो मातु पुनि काशी करवट ।
धनि - धनि सुरसरि स्वर्ग की सीढ़ी, तारणि अमित पितृ पद पीढ़ी ।
भागीरथी तप कियो अपारा, दियो ब्रह्म तब सुरसरि धारा ।
जब जग जननी चल्यो हहराई, शम्भू जटा महं रह्यो समाई ।
वर्ष पर्यन्त गंग महारानी, रहीं शम्भू के जटा भुलानी ।
पुनि भागीरथ शम्भुहिं ध्यायो, तब इक बूंद जटा से पायो ।
ताते मातु भई त्रय धारा, मृत्यु लोक, नभ, अरू पातारा ।
गइ पाताल प्रभावति, नामा, मन्दाकिनी गई गगन ललामा ।
मृत्यु लोक जान्हवी सुहावनि, कलमल हरणि अगम गुन पावनि ।
धनि मइया तब महिमा भारी, धर्म धुरि कलिकलुष कुठारी ।
मातु प्रभावति धनिनि मंदाकिनी, धनि सुर सरिस सकल भयनासिनी ।
पान करत निर्मल गंगा जल, पावत मन इच्छित अनन्त फल ।
पूरब जन्म पुण्य जब जागत, तबहिं ध्यान गंगा महँ लागत ।
जइ पग सुरसरि हेतु उठावहिं, तइ जवि अश्वमेध फल पावहिं ।
महापतित जिनि काहु न तारे, तिन तारे इक नाम तिहारे ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

शत योजनहूँ से जो ध्यावहिं, निश्चय विष्णु लोक पद पावहिं ।
नाम भजत अगणित अघ नाशै, विमल ज्ञान बल बुद्धि प्रकाशै ।
जिमि धन धर्म अरू दाना, धर्म मूल गंगा जल पाना ।
तब गुण गुणन करत दुःखभाजत, गृह गृहसम्पति सुमति विराजत ।
गंगाहि नेम सहित नित ध्यावत, दुर्जनहुं सज्जन पद पावत ।
बुद्धिहीन विद्या बल पावै, रोगी रोगमुक्त ह्वै जावै ।
गंगा गंगा जो नर कहहीं, भूखा नंगा कबहूँ न रहहीं ।
निकसत ही मुख गंगा माई, श्रवण दाबि यम चलहिं पराई ।
महाँ अघिन अघमन कह तारे, भए नर्क के बन्द किवारे ।
जो जन जपत गंग शतनामा, सकलसिद्ध पूरण ह्वै कामा ।
सब सुख भोग परम पद पावहिं, आवागमन रहित ह्वै जावहिं ।
धनि मइया सुरसरि सुखदैनी, धनि धनि तीरथ राज त्रिवेणी ।
ककरा ग्राम ऋषि दुर्वासा, सुन्दरदास गंग कर दासा ।
जो यह पढ़े गंग चालीसा, मिलै भक्ति अविरल वागीसा ।

दोहा – नित नव सुख सम्पति लहै, धरै गंग का घ्यान ।
अन्त समय सुरपुर बसै, सादर बैठि विमान ॥

॥ आरती गंगा जी की ॥

जय गंगे माता, श्री जय गंगे माता ।
जो नर तुमको ध्याता, मनवांछित फल पाता ।।ऊँ जय...
चन्द्र सी जोत तुम्हारी, जल निर्मल आता ।
शरण पड़े जो तेरी, सो नर तर जाता ।।ऊँ जय...
पुत्र सगर के तारे, सब जग को ज्ञाता ।
कृपा दृष्टि तुम्हारी, त्रिभुवन सुख दाता ।।ऊँ जय...
एक ही बार जो तेरी शरणागति आता ।
यम की त्रास मिटाकर परमगति पाता ।।ऊँ जय...
आरती मात तुम्हारी जो जन नित्य गाता ।
दास वही सहज में मुक्ति को पाता ।।ऊँ जय...

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

॥ गायत्री-मन्त्र ॥
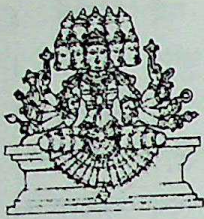
ओ३म् भूर्भुवः स्वः।
तत्सवितुवरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि
धियो यो नः प्रचोदयात्॥
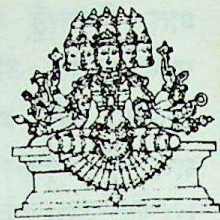
हे प्राणस्वरूप, दुःखहर्ता और सर्वव्यापक, आनन्द के देने वाले प्रभो! जो आप सर्वज्ञ और सकल जगत् के उत्पादक हैं, हम आपके उस पूजनीयतम, पापनाशक स्वरूप तेज का ध्यान करते हैं, जो हमारी बुद्धियों को प्रकाशित करता है। पिता! आपसे हमारी बुद्धि कदापि विमुख न हो। आप हमारी बुद्धियों में सदैव प्रकाशित रहें और हमारी बुद्धियों को सत्कर्मों में प्रेरित करें, ऐसी प्रार्थना है।

शान्ति पाठ

ओ३म् द्यौः शान्तिरन्तरिक्षँ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वं शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्ति रेधि। —यजुर्वेद ३६/१७

हे प्रभो ! यह सौर मण्डल और अन्तरिक्ष सुखशान्तिदायक हो, भूमण्डल सुख शान्ति दायक हो, जल, औषधियां और वनस्पतियां सुख शान्तिदायक हों, विश्व के दिव्य पदार्थ और ब्रह्म सुख शान्तिदायक हों, सब कुछ सुख शान्तिदायक हों और ऐसी शान्ति मुझको प्राप्त हो।

ओ३म् शान्तिः ! शान्तिः !! शान्तिः !!!

आशा नाम की एक नदी है। इसमें मनोरथ रूपी जल भरा है। इसमें तृष्णा रूपी लहरे हैं। राग ही इसमें मगर हैं। नाना प्रकार के तर्क वितर्क पक्षी हैं। यह नदी धैर्य रूपी पेड़ तोड़ देने वाली है। मोह ही इसके कठिन भंवर हैं और चिन्ता रूपी इसके किनारे हैं। इस भंवर जाल में ही मनुष्य फंस जाता है, लेकिन शुद्धि मननशील योगी ही इस नदी को पार कर परम आनंद का उपभोग करते हैं।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

।। गायत्री मन्त्र-सरल विश्लेषण ।।

ॐ ही रक्षक हमारे सब गुणों की खान है ।
भूः सदा सब प्राणियों के प्राण के भी प्राण हैं ।।
भुंवः सब दुःख दूर करते दूर कृपा निधान हो ।
स्वः सदा सुख रूप सुखमय सतत् सुख महान हो ।।
तत् वही विख्यात ब्राह्मण वेद वर्णित सार हो ।
देवसवितुर सर्व उत्पादन हो पालनहार हो ।।
शुभ **वरेण्यम्** वरण करने योग्य भगवान् आप हो ।
शुभ **भर्गो** मल रहित निर्लेप हो निष्पाप हो ।।
दिव्यगुण **देवस्य** दिव्य स्वरूप देव अनूप हो ।
धीमहि धारे हृदय में दिव्य गुण गुणरूप हो ।।
धियोयोनः वह हमारी बुद्धियों का हित करे ।
अमर **प्रचोदयात्** नित सन्मार्ग में प्रेरित करे ।।

–''गायत्री रहस्य'' पुस्तक से साभार

हरि अनंत हरि कथा अनंता। कहहिं सुनहिं बहुविधि सब संता।।
रामचन्द्र के चरित सुहाए। कलप कोटि लगि जाहिं न गाए।।

श्री हरि अनन्त हैं (उनका कोई पार नहीं पा सकता) उनकी कथा भी अनन्त है, सब संत लोग उसे बहुत प्रकार से कहते सुनते हैं। श्री रामचन्द्र का सुन्दर चरित्र करोड़ कल्पों में भी गाया नहीं जा सकता।

अनुज वधू भगिनी सुतनारी। सुनु सठ कन्या सम ऐचारी।
इन्हहिं कुदृष्टि बिलोकत जोई। ताहि बधे कछु पाप न होई।।

छोटे भाई की पत्नी, पुत्र की पत्नी, अपनी बहन और अपनी पुत्री इन चारों के साथ व्यक्ति को पिता और पुत्री जैसा सम्बन्ध रखना चाहिये, उस पर यदि कोई कुदृष्टि करे तो उसको मारने में पाप नहीं लगता।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

॥ श्री गायत्री चालीसा ॥

ह्रीं, श्रीं, क्लीं, मेधा प्रभा, जीवन ज्योति प्रचंड ।
शांति क्रांति, जागृति, प्रगति, रचना शक्ति अखण्ड ॥
जगत जननि, मंगल करनी, गायत्री सुखधाम ।
प्रणवो सावित्री, स्वधा, स्वाहा पूरन काम ॥

भूर्भुवः स्वः युत जननी, गायत्री नित कलिमल दहनी ।
अक्षर चौबीस परम पुनीता, इसमें बसे शास्त्र श्रुति, गीता ॥
शाश्वत सतोगुणी सतरूपा, सत्य सनातन सुधा अनूपा ।
हँसारूढ़ पीताम्बर धारी, स्वर्ण कान्ति शुचि गगन बिहारी ॥
पुस्तक पुष्प कमण्डल माला, शुभ्र वर्ण तनु नयन विशाला ।
ध्यान धरत पुलकित हिय होई, सुख उपजत दुख-दुरमति खोई ॥
कामधेनु तुम सुर-तरूछाया, निराकार की अद्भुत माया ।
तुम्हारी शरण गहै जो कोई, तरै सकल संकट सों सोई ॥
सरस्वती लक्ष्मी तुम काली, दिपै तुम्हारी ज्योति निराली ।
तुम्हारी महिमा पार न पावे, जो शारद शत मुख गुण गावै ॥
चार वेद की मातु पुनीता, तुम ब्रह्माणी गौरी सीता ।
महामन्त्र जितने जग मांही, कोउ गायत्री सम नाहीं ॥
सुमिरत हिय में ज्ञान प्रकाशै, आलस पाप अविद्या नासै ।
सृष्टि बीज जग जननी भवानी, कालरात्रि वरदा कल्याणी ॥
ब्रह्मा विष्णु रूद्र सुत जेते, तुम सों पावे सुरता ऐते ।
तुम भक्तन की, भक्त तुम्हारे, जननिहि पुत्र प्राण ते प्यारे ॥
महिमा अपरम्पार तुम्हारी, जय जय जय त्रिपदा भय हारी ।
पुरति सकल ज्ञान विज्ञाना, तुम सम अधिक न जग में आना ॥
तुमहि जानि कछु रहे न शेषा, तुमहिं पाय कछु रहै न क्लेशा ।
जानत तुमहि तुमहिं हो जाई, पारस परिस कुधातु सुहाई ॥
तुम्हारी शक्ति दिपै सब ठाई, माता तुम सब ठौर समाई ।
ग्रह नक्षत्र ब्रह्माण्ड घनेरे, सब गतिवान तुम्हारे प्रेरे ॥
सकल सृष्टि की प्राण विधाता, पालक पोषक नाशक त्राता ।
मातेश्वरी दया व्रत धारी, तुम सन तरे पातकी भारी ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

जापर कृपा तुम्हारी होई, तापर कृपा करें सब कोई ।
मन्द बुद्धि ते बुद्धि बल पावें, रोगी रोग रहित ह्वै जावें ।।
दारिद्र मिटै कटै सब पीरा, नाशै दुःख हरै भव भीरा ।
गृह कलेश चित चिन्ता भारी, नासै गायत्री भय हारी ।।
सन्तति हीन सुसन्तति पावें, सुख सम्पत्ति युत मोद मनावें ।
भूत पिशाच सबै भय खावें, यम के दूत निकट नहिं आवें ।।
जो सधवा सुमिरें चित लाई, अछत सुहाग सदा सुखदाई ।
घर वर सुखप्रद लहैं कुमारी, विधवा रहै सत्य व्रत धारी ।।
जयति जयति जगदम्ब भवानी, तुम सम और दयालु न दानी ।
जो सद्गुरू सों दीक्षा पावें, सो साधन को सफल बनावें ।।
सुमिरन करें सुरूचि बड़भागी, लहैं मनोरथ गृही विरागी ।
अष्ट सिद्धि नवनिधि की दाता, सब समर्थ गायत्री माता ।।
ऋषि मुनि यती, तपस्वी जोगी, आरत, अर्थी, चिन्तित भोगी ।
जो जो शरण तुम्हारी आवें, सो सो मनवांछित फल पावें ।।
बल बुद्धि विद्या शील स्वभाऊ, धन वैभव यश तेज बढ़ाऊ ।
सकल बढ़ें उपजे सुख नाना, जो यह पाठ करै धरि ध्याना ।।

दोहा – यह चालीसा भक्ति युत पाठ करे जो कोय ।
तापर कृपा प्रसन्नता, गायत्री की होय ।।

"बवाल ही बवाल है"

यारों मेरे वतन का बड़ा बुरा हाल है। गाँधी के देश में यहाँ जीना मुहाल है।।
कही आतंकवाद है, कहीं अतिवाद है। 'अहिंसा परमो धर्मः' फकत इक मिसाल है।।
वफा और ईमान की मिट्टी पलीद है। ऐ लूटमार, तेरा करम बेमिसाल है।।
पड़ोस की आग से गुलशन झुलस रहा। हर चौखट पर यारों पेचीदा सवाल है।।
गीत हम गाएँ क्या, क्या लिखें गजल। अन्दर से बाहर तक बवाल ही बवाल है।।

– सूरज कुमार सिंह

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

॥ श्री गायत्री माता की आरती ॥

जयति जय गायत्री माता, जयति जय गायत्री माता ।।टेर।।
आदि शक्ति तुम अलख निरंजनी जग पालन कर्त्री ।
दुःख शोक भय क्लेश कलह दारिद्र दैन्य हर्त्री ।।जयति...
ब्रह्म रूपिणी, प्रणत पालिनी, जगद्धात्री अम्बे ।
भव भय हारी जन हितकारी, सुखदा जगदम्बे ।।जयति...
अविकारी, अघहारी, अविचलित, अमले, अविनाशी ।
भय हारिणी, भव तारिणी, अनघे अज आनन्द राशी ।।जयति...
कामधेनु सत् चित आनन्दा जय गंगा गीता ।
सविता की शाश्वती शक्ति, तुम सावित्री सीता ।।जयति...
ऋग, यजु, साम, अथर्व प्रणायिनी प्रणव महामहिमे ।
कुण्डलिनी सहस्त्रार सुषम्ना शोभा गुण गरिमे ।।जयति...
स्पाहा, स्वधाः शिवी ब्रह्माणी, राधा रूद्राणी ।
जय सत्रूपा वाणी विद्या कमल कल्याणी ।।जयति...
जननी हम हैं दीन हीन दुःख दारिद्र के घेरे ।
यदपि कुटिल कपटी कपूत तऊ बालक हैं तेरे ।।जयति...
स्नेह सनी करूणामय माता चरण शरण दीजै ।
विलख रहे हम शिशु सुत तेरे दया दृष्टि कीजै ।।जयति...
काम, क्रोध, मद, लोभ, दम्भ, दुर्भाव, द्वेष हरिये ।
शुद्ध बुद्धि निष्पाप हृदय, मन को पवित्र करिये ।।जयति...
तुम समर्थ सब भाँति तारिणी तुष्टि पुष्टि त्राता ।
सत् मार्ग पर हमें चलाओ जो है सुख दाता ।।जयति...

ब्रह्मा से कुछ लिखा भाग्य में, मनुज नहीं लाया है।
अपना सुख उसने अपने, भुजबल से पाया है।।

ईश्वर उसी की मदद करता है, जो अपनी मदद आप करता है। सोये सिंह के मुँह में मृग स्वयं नहीं घुस जाया करते। उस जंगल के राजा पराक्रमी को भी उदर पूर्ति हेतु हाथ पाँच चलाने पड़ते हैं। अतः कर्म ही प्रधान है।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

॥ आरती-केवल लोकाचार नहीं-
हिन्दू संस्कृति की अनमोल धरोहर ॥

जिस घर में हो आरती, चरण कमल चित्त लाय ।
तहाँ हरि बासा करें, जोत अनन्त जगाय ॥

उपरोक्त दोहे में आरती की महिमा का स्पष्ट वर्णन है। जिस घर में प्रभु के चरण कमलों का ध्यान रखते हुये अर्थात् पूर्ण आस्था एवं श्रद्धा भाव के साथ आरती अथवा अर्चना होती है- वहाँ प्रभु का वास होता है। कहने का तात्पर्य यह कि ऐसे घर पर सदैव उस नीली छतरी वाले परम पिता जगदीश्वर की छत्र छाया बनी रहती है और जिस पर उनकी कृपा बनी रहे तो भला उसे किस बात का भय। इसी पर किसी उर्दू के शायर ने कहा है-

फानूस बनकर जिसकी हिफाजत हवा करे
वह शमा क्या बुझे जिसे रोशन खुदा करे ।

जिस आरती की इतनी महिमा हो, उससे अगर कोई वंचित रहे तो यह एक प्रकार की भाग्यहीनता ही है।

मैं कुछ घरों में गया हूँ जहाँ कभी भगवान की पूजा नहीं होती। लेकिन मेरी समझ में नहीं आता कि वह कैसा हिन्दू का घर है, जहाँ पर कभी पूजा-पाठ नहीं होता, कभी आरती नहीं होती ? सांसारिक भौतिक चकाचौंध के कारण आज का मानव खुदी में (अपने में) इतना खो गया है कि खुद को (अपने को) खुदा (ईश्वर) समझ बैठा। लेकिन जिन्दगी में एक समय ऐसा भी आता है जब पैसा, पद, मित्र, रिश्ते-नाते, यश या शस्त्र कोई काम नहीं आता, तब उसको अपनी भूल का एहसास होता है। उसका मन निराशा सागर में गोते खाने लगता है। अक्सर ऐसे क्षणों में मनुष्य को प्रभु की याद आती है। वह उनका आश्रय खोजने लगता है। इसे आत्मा के जागरण का क्षण कहते हैं। जिन साधनों के द्वारा ईश्वर से बिछुड़ा हुआ अनाथ जीव फिर प्रभू की ओर कदम बढ़ाता है उसे उपासना या भक्ति कहते हैं। उपासना, भक्ति, पूजा, आरती आदि एक दूसरे के पूरक हैं। भक्ति सनातन धर्म की रीढ़ है। यह भारतीय ऋषियों की वह अन्यतम् खोज है जिसमें मनुष्य आत्मतत्व को

पहचान कर प्रभु के गुणगान करने लगता है। चेतना की अधोगति का नाम अगर तृष्णा है तो चेतना की अन्तिम ऊँचाई का नाम है भक्ति। भक्ति वो ऊँचाई है जहाँ पहुँचने पर समस्त सांसारिक मायाजाल छिन्न-भिन्न हो जाते हैं एवं शेष रह जाता है- एक नशा, एक पागलपन एवं एक मस्ती का आलम।

आरती का महत्व :– शास्त्रों में नवधा भक्ति को श्रेष्ठ माना गया है, जिसमें श्रवण, कीर्तन, पाद सेवन, अर्चन, वन्दन आदि के बाद होती है-आरती। आरती को "आरात्रिक" अथवा "आरार्तिक" और निराजन भी कहते हैं। पूजा के अन्त में आरती की जाती है। पूजन में जो त्रुटि रह जाती है-उसकी पूर्ति करती है आरती। "स्कन्द पुराण" के अनुसार-

मन्त्रहीनं क्रियाहीनं यत् कृतं पूजनं हरेः ।
सर्व सम्पूर्ण तामेति कृते नीराजने शिवे ॥

अर्थात् पूजन मन्त्र हीन और क्रिया हीन होने पर भी निराजन (आरती) कर लेने से, उसमें पूर्णता आ जाती है।

शास्त्रों के मतानुसार आरती करना ही नहीं, देखना भी बड़े पुण्य का काम एवं सौभाग्यमय है। "विष्णु-धर्मोत्तर" में लिखा है-

धूपं चारात्रिकं पश्येत् कराभ्यां च प्रवन्दते ।
कुलकोटिं समुद्धृत्य पाति विष्णोः परम् पदम् ॥

अर्थात् जो धूप और आरती को देखता है और दोनों हाथों से आरती लेता है वह करोड़ पीढ़ियों का उद्धार करता है और भगवान विष्णु के परम पद को प्राप्त होता है।

आरती कैसे करें :– आरती में पहले मूल मन्त्र यानि जिस देवता की आरती की जा रही हो उसके मंत्र के द्वारा तीन बार पुष्पांजलि देनी चाहिये और ढोल, मृदंग, शंख, घंटा-घड़ियाल आदि महावाद्य बजाते हुये उस देव या देवी की जयजयकार करते हुये घृत या कर्पूर से विषम संख्या की बत्तियाँ जलाकर आरती करनी चाहिये। सामान्यतया पाँच बत्तियों से आरती की जाती है- इसे पंच प्रदीप भी कहते हैं। "पद्म पुराण" में आया है- कुंकुम, अगर, कपूर, घृत और चन्दन की सात या पाँच बत्तियाँ बनाकर शंख, घंटा आदि बजाते हुये आरती करना बहुत ही शुभ है।

आरती के पाँच अंग होते है - प्रथम दीपमाला के द्वारा, दूसरे जलयुक्त शंख

से, तीसरे चँवर या धुले वस्त्र से, चौथे पुष्प या आम पीपल आदि के पत्ते से और पाँचवे साष्टांग दण्डवत से आरती करें।

आरती उतारते समय सर्वप्रथम भगवान के चरणों में उसे चार बार, नाभि देश में दो बार एवं मुख मण्डल पर एक बार और सात बार समस्त अंगों पर घुमाना चाहिये।

आरती क्यों की जाती है :– आरती पूजन के अन्त में ईष्ट देवता की प्रसन्नता हेतु की जाती है। इसमें ईष्टदेव को दीपक दिखाने के साथ साथ उनका स्तवन तथा गुणगान किया जाता है। दीपबत्तियाँ जलाकर उनके चारों ओर घुमाने का प्रथम अभिप्राय यह है कि उनका एक एक अंग उजागर हो जाय, आलोक से आलोकित हो जाय जिससे कि भक्तगण उनका सौन्दर्य निहार सकें एवं अपने ईष्ट की नयनाभिराम झाँकी देख सकें। "आरती" शब्द का जो संस्कृत के "आर्ति" का प्राकृत रूप है और जिसका अर्थ है "अरिष्ट"। "आरती वारना" का अर्थ है "आर्ति निवारण" अनिष्ट से अपने प्रियतम प्रभू को बचाना। आरती का दूसरा अभिप्राय यह है कि अपने प्रिय के "आर्ति" (कष्ट) को अपने ऊपर लेना। बलैया लेना, बलिहारी जाना, बलि जाना, वारी जाना, न्योछावर होना आदि सभी प्रयोग इसी भाव के द्योतक हैं।

आदिकाल से ही आरती करना हमारी हिन्दू संस्कृति एवं सभ्यता की प्राचीन परम्परा रही है। पौराणिक काल में जब कोई योद्धा रणभूमि में जाता था तो उसकी माँ या पत्नी आरती उतार कर उसे विदा देती थी और विजयी होकर आने पर आरती उतार कर स्वागत करती थी। माताएँ एवं बहनें अपने बच्चों एवं भाईयों की इसी भावना से आरती उतार कर उनकी कुशलता की मंगल कामना करती हैं। विवाह के अवसर पर भी द्वार पर ही वर की आरती उतारी जाती है एवं पुत्र वधू जब घर पर आती है तो आरती उतार कर उसे गृह प्रवेश कराया जाता है। इस तरह हम देखते हैं कि हमारे साधारण दैनिक जीवन में भी आरती का कितना महत्व है।

आरती करने या देखने से उसके आलोक से न केवल आँखों का सुख मिलता है बल्कि पवित्र और शुभ भावनायें भी जन्म लेती हैं, जिससे जीवन सुखमय बनता है। आशा है अब आपको विश्वास हो गया होगा कि आरती केवल लोकाचार नहीं, हिन्दू संस्कृति की अनमोल धरोहर है।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

॥ आरती श्री लक्ष्मी जी की ॥

महालक्ष्मी नमस्तुभ्यं, नमस्तुभ्यं सुरेश्वरी ।
हरिप्रिये नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं दयानिधे ॥

ॐ जय लक्ष्मी माता (मैया) जय लक्ष्मी माता ।
तुमको निसिदिन सेवत, हर - विष्णू - धाता ।।ॐ।।
ब्रह्माणी, रूद्राणी, कमला तुम ही जग माता ।
सूर्य - चन्द्रमा ध्यावत, नारद ऋषि गाता ।।ॐ।।
दुर्गारूप निरंजनि, सुख - सम्पत्ति - दाता ।
जो कोई तुमको ध्यावत, ऋिध्दि-सिधि-धन पाता ।।ॐ।।
तुम पाताल - निवासिनी, तुम ही शुभदाता ।
कर्म-प्रभाव-प्रकाशिनि, भवनिधि की त्राता ।।ॐ।।
जिस घर थारो बासो, वाहि में गुण आता ।
कर न सकै सोई कर ले, मन नहीं धड़काता ।।ॐ।।
तुम बिन यज्ञ न होते, वस्त्र न हो पाता ।
खान - पान का वैभव, तुम बिन कुण दाता ।।ॐ।।
शुभ-गुण-मन्दिर - सुन्दर, क्षीरोदधि जाता ।
रत्न चतुर्दश तुम बिन, कोई नहीं पाता ।।ॐ।।
महालक्ष्मी जी की आरती, जो कोई नर गाता ।
उर आनन्द समाता, पाप उतर जाता ।।ॐ।।
स्थिर चर जगत बचावै, कर्म प्रेर ल्याता ।
रामप्रताप मैया की शुभ दृष्टि चाता ।।ॐ।।

श्रीकृष्ण ने गीता में बताया है -

कर्म किये जा, फल की इच्छा मत कर प्राणी।
कर्म से ही हर तरफ गूंज रही है नानक की वाणी॥
जन्म से नहीं कर्म से मनुष्य महान होता है।
कर्म ही मनुष्य की पहचान होता है॥

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

॥ श्री महालक्ष्म्याष्टकम् ॥

नमस्तेऽस्तु महामाये श्रीपीठे सुर पूजिते ।
शंख चक्र गदा हस्ते महालक्ष्मी नमोऽस्तु ते ॥
नमस्ते गरूड़ारूढ़े कोलासुरभयंकरि ।
सर्व पाप हरे देवि महालक्ष्मी नमोऽस्तु ते ॥
सर्वज्ञे सर्ववरदे सर्वदुष्ट भयंकरि ।
सर्वदुःख हरे देवी महालक्ष्मी नमोऽस्तु ते ॥
सिद्धि बुद्धि प्रदे देवि भुक्ति-मुक्ति प्रदायिनी ।
मन्त्रमूर्ते सदा देवि महालक्ष्मी नमोऽस्तु ते ॥
आद्यन्तरहिते देवि आद्यशक्ति महेश्वरि ।
योगजे योगसम्भूते महालक्ष्मी नमोऽस्तु ते ॥
स्थूल सूक्ष्म महारौद्रे महाशक्ति महोदरे ।
महापाप हरे देवि महालक्ष्मी नमोऽस्तु ते ॥
पद्मासनस्थिते देवि परब्रह्मस्वरूपिणि ।
परमेशि जगन्मातर्महालक्ष्मी नमोऽस्तु ते ॥
श्वेताम्बरधरे देवि नानालंकार भूषिते ।
जगत्स्थिते जगन्मातर्महालक्ष्मी नमोऽस्तु ते ॥
महालक्ष्म्यष्टकं स्तोत्रं यः पठेद्भक्तिमान्नरः ।
सर्वसिद्धमवाप्नोति राज्यं प्राप्नोति सर्वदा ॥
एककालं पठेन्नित्यं महापापविनाशनम् ।
द्विकालं यः पठेन्नित्यं धनधान्यसमन्वितः ।
त्रिकालं यः पठेन्नित्यं महाशत्रुविनाशनम् ।
महालक्ष्मीर्भवेन्नित्यं प्रसन्ना वरदा शुभा ॥
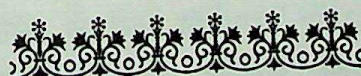
दूसरों को रूलाकर सुख भोगनेवाला कंस है ।
आज समाज में कंस बहुत बढ़ गये हैं ॥

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

।। पितरजी महाराज की स्तुति ।।

(१)

(तर्ज-कान्हा थारी बाँसुरी दुनिया में .....)

दोहा- हे पितरेश्वर आपको, देद्यो आशीर्वाद ।
चरणां शीश नवा दियो, रखद्यो सिर पर हाथ ।।

सबसे पहल्यां गणपत, पाछ घर का देव मनाया जी ।
हे पितरेश्वर दया राखियो, करियो मन का चाया जी ।।टेर।।
गल पुष्पन को हार पहरायो, चरणां फूल चढ़ाया जी ।
श्रद्धा पूर्वक हाथ जोड़कर, थारो ध्यान लगाया जी ।।१।।
सुख दुःख म्हारो जो भी होसी, म्हें तो थान कहस्याँ जी ।
हरदम थारी महिमा गास्याँ, थारी शरण में रहस्याँ जी ।।२।।
थे हो म्हार घर की ज्योती, सबका थे रखवाला जी ।
'बनवारी' चाहे जो हो जाये, थारो हुकुम नहीं टालां जी ।।३।।

(२)

जय जय पितरजी महाराज मैं शरण पड़्यो हूँ थारी ।।टेर।।
आप ही रक्षक, आप ही दाता, आप ही खेवन हारे ।
मैं मूरख हूँ कछु नहीं जानूँ, आप ही हो रखवारे ।।जय...
आप खड़े हैं, हरदम हर घड़ी, करने मेरी रखवारी ।
हम सब जन हैं शरण आपकी, रखियो लाज हमारी ।।जय...
देश और परदेश सब जगह, आप ही करो सहाई ।
काम पड़े पर नाम आपको, लगे बहुत सुखदाई ।।जय...
मैं भी आयो शरण आपकी, अपने सह परिवार ।
रक्षा करो आपही सबकी, रटूँ मैं बारम्बार ।।जय...

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

॥ ग्यारस स्तुति ॥

ग्यारस ज्ञानी, जय हो ग्यारस ज्ञानी
करे निर्जला ग्यारस भव से तर जाये सुर ज्ञानी ।टेर।।

ग्यारस करते है जो नर नारी,
उनकी कट जाये विपदा सारी ।
अन्न दान करे भूखे को,
और प्यासे को पानी ।।१।।
ग्यारस कर कुछ दान भी करना,
जैसी करना वैसा भरना ।
साथ चले ना अन्न धन तेरे,
चले प्रेम की वाणी ।।२।।
सुदी ग्यारस कर चाहे बारस,
बगुला जल का बनेगा सारस ।
ग्यारस कर फिर दान करेगा,
सबसे बड़ा वो दानी ।।३।।
ग्यारस तू है बड़ी ही भागन,
तेरा श्याम कुंज में है जागन ।
सब भक्तों संग बांकें गावे,
सुने सभी सुर ग्यानी ।।४।।
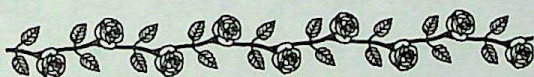
धर्म मेरा है वही जो आदमी को,
आदमी के वास्ते जीना सिखादे ।
और पंडित, पादरी और मौलवी को,
एक घाट में अमृत पीना सिखादे ।।
—रमानाथ अवस्थी

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

॥ आरती श्री सन्तोषी माता की ॥

जय सन्तोषी माता, मैया जय सन्तोषी माता ।
अपने सेवक जन की, सुख सम्पत्ति दाता ।।जय...।।
सुन्दर चीर सुनहरी, माँ धारण कीन्हों ।
हीरा पन्ना दमके, तन श्रृंगार लियो ।।जय...।।
गेरू लाल छटा छबि, बदन कमल सोहे ।
मंद हंसत करूणामयी, त्रिभुवन मन मोहे ।।जय...।।
स्वर्ण सिंहासन बैठी, चँवर ढुरे प्यारे ।
धूप दीप मधु मेवा, भोग धरे न्यारे ।।जय...।।
गुड़ अरू चना परमप्रिय, ता में सन्तोष कियो ।
संतोषी कहलाई, भक्तन विभव दियो ।।जय...।।
शुक्रवार प्रिय मानत, आज दिवस सोही ।
भक्त मण्डली छाई, कथा सुनत मोही ।।जय...।।
मंदिर जगमग ज्योति, मंगल ध्वनि छाई ।
विनय करें हम बालक, चरनन सिर नाई ।।जय...।।
भक्ति भावमय पूजा अंगीकृत कीजै ।
जो मन बसै हमारे, इच्छा फल दीजै ।।जय...।।
दुःखी, दरिद्री, रोगी, संकट मुक्त किए ।
बहु धन धान्य भरे घर, सुख सौभाग्य दिए ।।जय...।।
ध्यान धर्‌यो जिस नर ने, वांछित फल पायो ।
पूजा कथा श्रवण कर, घर आनन्द आयो ।।जय...।।
शरण गहे की लज्जा, राखियो जगदम्बे ।
संकट तू ही निवारे, दयामयी अम्बे ।।जय...।।
संतोषी माँ की आरती, जो कोई नर गावे ।
ऋद्धि-सिद्धि सुख-सम्पत्ति, जी भर के पावे ।।जय...।।

॥ श्री मद्भागवतजी की आरती ॥

श्री कृष्ण शरणं ममः

(श्री कृष्ण गोविन्द हरे मुरारे हे नाथ नारायण वासुदेव)

श्री भागवत मुक्ति की दाता जगत की माता ।
भवसागर की नौका है जी ।।
श्रीराम मिलन का मौका हे जी ।
श्री कृष्ण मिलन का मौका है जी ।।
ब्रह्मा जी बीज दियो नारद को ।
नारद वृक्ष लगायो है जी ।।
वेदव्यास जी करि रे पालना ।
सुखदेवजी प्रकट कीनी है जी ।।श्री भाग...

श्री भागवतजी के बारह डाला, तीन सौ पैतीसा है जी,
अठारह हजार बाकी शाखा कहिये,
जो रज पत्र विशेषा है जी ।।श्री भाग...

पान पुष्प की गिनती नाहीं, नारद सुखदेवजी लेखो लिनो है जी ।
पान पान में अमृत बरसे, मुनियन के मन भाई है जी ।।श्री भाग...
कहे सुखदेवजी सुनो राजा परिक्षित गंगा के घाट बँचाई है जी ।
गऊकरण धुंधकारी कारण श्री भागवत सुणाई है जी ।
गीता को ज्ञान सुनायो है जी ।।श्री भाग...
ज्ञान वैराग्य भक्तों के पुत्र जिनने प्रकट देखी है जी ।
सब मिल देवी देवता पधारे,
ऋषि मुनि ध्यान लगायो है जी ।।श्री भाग...
काम क्रोध मद लोभ छोड़ दो नहीं तो रहोगे रोता है जी ।
यही जनम में पार उतर जावो, भगवत ज्ञान अनोखा है जी ।।श्री...
बैठ विमान बैकुण्ठ पधारो फिर नहीं पावो मौका है जी ।
सुन राजा परीक्षित ध्यान लगायो, सुनी सप्ताह किया है जी ।।श्री...
अट्ठासी हजार मुनियन के माहीं सुखदेवजी बांच सुणाई है जी ।
सात दिनां बिच मुक्ति पाई, तुरत सिंहासन आयो है जी ।।श्री...

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

हाथ जोड़ करी रे विनती, चरणाँ में शीश नवायो है जी ।
बैठ विमान बैकुण्ठ पधारिया, पुष्पन मेह बरसायो है जी ।।श्री...
सुणी भागवत जो नर नारी वो ही बैकुण्ठ सिधावेगा जी ।
कृपा करो श्री कृष्ण मुरारी, हम भी पावाँ मुक्ति है जी ।।श्री...
श्री भागवत मुक्ति की दाता जगत की माता, भवसागर की नौका है जी

॥ आरती श्री मद्भागवतजी की ॥

आरती अति पावन पुरान की, धर्म-भक्ति-विज्ञान-खान की ।।
महापुराण भागवत निर्मल, शुक-मुख-विगलित निगम-कल्प-फल ।
परमानन्द सुधा-रसमय कल, लीला-रति-रस-रसनिधान की ।।
कलिमल-मथनि त्रिताप-निवारिणि, जन्ममृत्युमय भव-भयहारिणि ।
सेवत सतत सकल सुखकारिणि, सुमहौषधि हरि-चरित-जानकी ।।
विषय-विलास-विमोह-विनाशिनि, विमल विराग विवेक विकाशिनि ।।
भगवत्-तत्व-रहस्य प्रकाशिनि, परम ज्योति परमात्मज्ञान की ।।
परमहंस-मुनि-मन-उल्लासिनि, रसिक-हृदयरस-रासि-विलासिनि ।
भक्ति-मुक्ति-रति-प्रेम-सुदासिनि, कथा अकिञ्चन प्रिय सुजानकी ।।

तोड़ना टूटे हुए दिल का बुरा होता है,
जिसका कोई नहीं, उसका तो खुदा होता है ।
मांग कर तुमसे खुशी लूँ, मुझे मंजूर नहीं,
किसका माँगी हुई दौलत से भला होता है ?
लोग नाहक किसी मजबूर को कहते हैं बुरा,
आदमी अच्छे हैं, पर वक़्त बुरा होता है ।
क्यूँ 'मुनीर' अपनी तबाही का कैसा शिकवा,
जितना तकदीर में लिखा है, उतना होता है ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

॥ आरती तुलसीजी की ॥

तुलसी महारानी नमो नमः!
हरि की पटरानी नमो नमः!!

धन्य तपस्या तेरी हरि को पति पाया ।
धन्य हरि, तुलसी को तुमने अपनाया ।।
तुम बिन भोग न लगता, ऐसी हरि की प्यारी ।
तव दल देखकर हरषें, गोवर्धनधारी ।।तुलसी..
नव मणियों की कंठी जो करते धारण ।
हरि कर देते उनकी यमबाधा वारण ।।
तुलसी युत चरणामृत जो नर हैं पीते ।
पाप ओर रोगों से हो जाते हैं रीतें ।।तुलसी..
जय जय तुलसीजी तू हरि सा वर पाया ।
कृपया पूत बना दे, मेरी यह काया ।।तुलसी..

॥ शनिदेव की स्तुति ॥

शनिदेव सूरज के अवतारी, थाने सुमिरै दुनिया सारी ।।
करड़ो दान शनिदेव मांगे, लोहा कंचन भारी ।
भर्‌या तेल को पलियो मांगे, या छः भेंट हमारी ।।शनि...
राजा पर कोप, राम पर कोप्या, सीता पर अति भारी ।
राजा हरिश्चन्द्र पर ऐसो कोप्यो, भरत नीच घर झारी ।।शनि...
हाथी भी चढ़ता, घोड़ा भी चढ़ता, भैंसा की असवारी ।
कर असवारी शहर में निकस्यो, सिर नावै दुनिया सारी ।।शनि...
सुमिरत जांकी करत सहायता, बिन सुमिरै दुःख भारी ।
दोउ कर जोड़े दास "सुन्द्रिका" गावे, रखियो लाज हमारी ।।शनि...

॥ आरती श्री रामदेवजी की ॥

जय अजमल लाला प्रभु जय अजमल लाला ।
भक्त काज कलयुग में, लीन्यों अवतारा ।।जय...
अश्वन की असवारी सोहे, केशरिया जामा ।
शीश तुर्राहद सोभित, हाथ लिये भाला ।।जय...
डूबत जहाज तिराई, भैरू दैत्य मारा ।
कृष्णकला भय भंजन, राम रूणचे वाला ।।जय...
अन्धन को प्रभु नेत्र देत हैं, सुख सम्पत्ति माया ।
कानन कुण्डल झिल मिल, गल पुष्पन माला ।।जय...
कोढ़ी जब करूणा कर आवत, होय दुःखी काया ।
शरणागत प्रभु तोरी, भक्तन सुखदाया ।।जय...
आरती श्री रामदेवजी की, जो कोई नर गावे ।
कटे पाप तन मन का, सुख सम्पत्ति पावे ।।जय...

॥ आरती श्री रामायण जी की ॥

आरती श्री रामायणजी की, कीरति कलित ललित सिय पी की ।।
गावत ब्रह्मादिक मुनि नारद, बालमीक बिग्यान बिसारद ।
सुक सनकादि सेष अरू सारद, बरनि पवनसुत कीरति नीकी ।।
गावत बेद पुरान अष्टदस, छओ शास्त्र सब ग्रंथन को रस ।
मुनि जन धन संतन को सरबस, सार अंस संमत सबही की ।।
गावत संतत संभु भवानी, अरू घटसंभव मुनि बिग्यानी ।
ब्यास आदि कबिबर्ग बखानी, कागभुसुंडि गरूड के ही की ।।
कलिमल-हरनि बिषय रस फीकी, सुभग सिंगार मुकति जुबती की ।
दलन रोग भव मूरि अमी की, तात मात सब विधि तुलसी की ।।

लोभ महापाप की खान है। अधर्मी झूठ लोभ का मन्त्री है, तृष्णा स्त्री है जो उसे अन्धा कर देती है। लोभ से मनुष्य को न तो उन्नति-अवनति का पता रहता है और न काल का भय।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

॥ आरती श्री गीताजी की ॥

जय भगवद्गीते, माँ जय भगवद्गीते ।
हरि-हिय-कमल-विहारिणि सुन्दर सुपुनीते ॥टेक॥
कर्म-सुमर्म-प्रकाशिनि कामासक्तिहरा ।
तत्व-ज्ञान-विकाशिनि विद्या ब्रह्म-परा ॥जय॥
निश्चल-भक्ति-विधायिनि निर्मल मलहारी ।
शरण-रहस्य-प्रदायिनि सब विधि सुखकारी ॥जय॥
राग-द्वेष-विदारिणि कारिणि मोद सदा ।
भव-भय-हारिणि तारिणि परमानन्दप्रदा ॥जय॥
आसुर-भाव-विनाशिनि नाशिनि तम रजनी ।
दैवी-सद्गुण-दायिनि हरि-रसिका सजनी ॥जय॥
समता त्याग-सिखावनि, हरिमुख की बानी ।
सकल शास्त्रकी स्वामिनि, श्रुतियों की रानी ॥जय॥
दया-सुधा-बरसावनि मातु ! कृपा कीजै ।
हरि-पद-प्रेम दान कर अपनो कर लीजै ॥जय॥

॥ सूर्य वन्दना ॥

आदि देव नमस्तुभ्यं, प्रसीद मम भास्कर ।
दिवाकर नमस्तुभ्यं, प्रभाकर नमोऽस्तु ते ॥
सप्ताश्वरथमामारूढ़ं प्रचण्ड कश्यपात्मजम् ।
श्वेतपद्मधरं देवं त सूर्य प्रणमाम्यहम् ॥
लोहितं रथमारूढ़ं सर्वलोकपितामहम् ।
महापापहरं देवं तं सूर्य प्रणाम्यहम् ॥
त्रैगुण्यं च महाशूरं ब्रह्मा-विष्णु-महेश्वरम् ।
महापापहरं देवं त सूर्य प्रणमाम्यहम् ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

॥ श्री अम्बे जी की आरती ॥

अम्बे ! तू है जगदम्बे काली, जय दुर्गे खप्पर वाली ।
तेरे ही गुण गाये भारती, हम सब उतारें तेरी आरती ।टेर।
तेरे जगत के भक्त जनन पर, भीर पड़ी है भारी,
दानव दल पर टूट पड़ो माँ, करके सिंह सवारी,
सौ - सौ सिंहों सी तू बलशाली, हे अष्ट भुजाओं वाली,
दुष्टों को तू ही संहारती ! ओ मैया हम सब .... ॥
माँ बेटे का है इस जग में, बड़ा ही निर्मल नाता,
पूत कपूत सुने हैं जग में, माता न सुनी कुमाता,
सब पे अमृत बरसाने वाली, सबको हर्षाने वाली,
नैया भँवर से उबारती, ओ मैया हम सब .... ॥
नहीं माँगते धन और दौलत, ना चाँदी ना सोना,
हम तो माँगे माँ तेरे मन में, इक छोटा सा कोना,
सब पे करूणा बरसाने वाली, विपदा मिटाने वाली,
सतियों के सत को संवारती - ओ मैया हम सब .... ॥

॥ शीतलामाता की आरती ॥

जय बोलो रे शीतला माई की।
माई की जय बोलो माई की ॥ जय बोलो . . . .
हिन्दू मुस्लिम सब ही ध्यावें, ऐसे देव और नहीं पावें ।
बरतै बाण सहाई की ॥ जय बोलो . . . .
होली पाछे बास्योड़ो मनावे, सोमवार न ठण्डी खावे।
ठण्डी नजर रहे माई की ॥ जय बोलो . . . .
साँची ए म्हारी मात शीतला, मत करिये कोई का मुंडा चीतला
तेरी बात कराँ सकलाई की ॥ जय बोलो . . . .
भक्त माँ तेरी आरती गायी, जैसी आयी वैसी गायी।
ठण्डी नजर रहे माई की ॥ जय बोलो . . . .

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

॥ आरती श्री सरस्वती जी की ॥

कज्जल पूरित लोचन भारे, स्तन युग शोभित मुक्त हारे ।
वीणा पुस्तक रंजित हस्ते, भगवति भारति देवी नमस्ते ॥

जय सरस्वती माता, जय जय हे सरस्वती माता ।
सदगुण वैभव शालिनी, त्रिभुवन विख्याता ।।जय...
चन्द्रवदनि पद्‌मासिनी, द्युति मंगलकारी ।
सोहे शुभ हंस सवारी, अतुल तेजधारी ।।जय...
बाएं कर में वीणा, दाएं कर माला ।
शीश मुकुट मणि सोहे, गल मोतियन माला ।।जय...
देवि शरण जो आए, उनका उद्धार किया ।
पैठि मंथरा दासी, रावण संहार किया ।।जय...
विद्या ज्ञान प्रदायिनी, ज्ञान प्रकाश भरो ।
मोह और अज्ञान तिमिर का, जग से नाश करो ।।जय...
धूप दीप फल मेवा, माँ स्वीकार करो ।
ज्ञानचक्षु दे माता, भव से मेरा उद्धार करो ।।जय...
माँ सरस्वतीजी की आरती, जो कोई नर गावे ।
हितकारी, सुखकारी, ज्ञान भक्ति पावे ।।जय...

॥ आरती माँ विन्ध्याचल / वैष्णो देवी ॥

सुन मेरी देवी पर्वत वासिनी, कोई तेरा पार न पाया ।।टेर।।
पान सुपारी ध्वजा नारियल, ले तेरे भेंट चढ़ाया ।
सुवा चोली तेरे अंग विराजे केसर तिलक लगाया ।।
ब्रह्मा वेद पढ़े तेरे द्वारे शंकर ध्यान लगाया ।
नंगे पैरों अकबर आकर, सोने का छत्र चढ़ाया ।।
ऊँचे ऊँचे पर्वत बना देवालय नीचे शहर बसाया ।
सत्ययुग द्वापर त्रेता मध्ये कलियुग राज सवाया ।।
धूप दीप नैवेद्य आरती मोहन भोग लगाया ।
ध्यानुभगत मैया तेरा गुण गावे मनवांछित फल पाया ।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

।। आरती श्री मनसा माता की ।।

जय मनसा माता, श्री जय मनसा माता ।
जो नर तुमको ध्याता, जो नर मैया जी को ध्याता
मनवांछित फल पाता, जय मनसा माता ।।
जरत्कारू मुनि पत्नी, तुम वासुकी भगिनी, मैया...
कश्यपं की तुम कन्या, आस्तीक की माता ।।जय...
सुरनर मुनिगण ध्यावत, सेवत नर नारी, मैया...
गर्व धन्वन्तरी नाशिनी, जय नागेश्वरी माता ।।जय...
पर्वत वासिनी संकट नाशिनी, अक्षय धनदात्री, मैया...
पुत्र-पौत्र दायिनी माता, मन इच्छा फल दाता ।।जय...
मनसा जी की आरती, जो कोई नर गाता, मैया...
कहत शिवानन्द स्वामी, सुख सम्पत्ति पाता ।।जय...

।। आरती श्री जीणमाता की ।।

ऊँ जय श्री जीण मैया, बोलो जय श्री जीण मैया ।
सच्चे मन से सुमिरे, सब दुःख दूर भया ।। टेर ।।
ऊँचे पर्वत मन्दिर, शोभा अति भारी ।
दीखत रूप मनोहर, असुरन भयकारी ।।१।।
महा श्रृंगार सुहावन, उपर छत्र फिरे ।
सिंह की सवारी सोहे, कर में खड़ग धरे ।।२।।
बाजत नौबत द्वारे, और मृदंग डमरू ।
चौसठ योगिनी नाचत, नृत्य करत भैरूं ।।३।।
बड़े-बड़े बलशाली, तेरा ध्यान धरें ।
ऋषि-मुनि, नर देवा, चरणों आन परें ।।४।।
जीण माता की आरती, जो कोई नर गावै ।
कहत 'रूड़मल' सेवक, सुख सम्पत्ति पावै ।।५।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

॥ चरम प्रार्थना ॥

हे राम पुरूषोत्तम नरहरे नारायण केशव
गोविन्द गरूड़ध्वज गुणनिधे दामोदर माधव ।
हे कृष्णः कमलापते यदुपते सीतापते श्रीपते
वैकुण्ठाधिपते चराचरपते लक्ष्मीपते पाहिमाम् ।
आदौराम तपोवनादिगमनं हत्वा मृगं कांचनम्
वैदेहीहरणं जटायुमरणं सुग्रीवसंभाषणम् ।
बालीनिर्ग्रहणं समुद्रतरणं लंकापुरीदाहनम्
पश्चात् रावण कुम्भकर्णहननं एतद्धिरामायणम् ।
आदौ देवकी देवगर्भ जननम् गोपीगृहे वर्द्धनम्
मायापूतनजीवतापहरणं गोवर्धनोधारणम् ।
कंसोच्छेदन कौरवादिहननं कुन्तीसुता पालनम्
एतद् श्री मद्भागवतपुराणकथितं श्री कृष्णलीलाऽमृतम् ।
कस्तूरी तिलकं ललाटपटले वक्षस्थले कौस्तुभम्
नासाग्रेवर मौक्तिकं करतले वेणुः करे कंकणम् ।
सर्वाङ्गे हरिचन्दनम् सुललितं कंठे च मुक्तावलिः
गोपस्त्रीपरिवेष्टितो विजयते गोपालचूड़ामणिः ।
फुल्लेन्दीवरकान्तिमिन्दुवदनं वर्हावतंसप्रियम्
श्री वत्सांकमुदारकौस्तुभधरं पीताम्बरं सुन्दरम् ।
गोपीनांनयनोत्पलार्चिततनुं गोगोपसंधावृतम्
गोविन्दं कलवेणुवादनपरं दिव्यांगभूषं भजे ।
शान्ताकारं भुजंगशयनं पद्मनाभं सुरेशं
विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णंशुभांगम् ।
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं
वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकेकनाथम् ।
नीलाम्बुजश्यामलकोमलांगं, सीतासमारोपितवामभागम्
पाणौ महासायकचारूचापम्, नमामि रामं रघुवंशनाथम् ।
आपदामपहर्तारं दातारं सर्व सम्पदाम्
लोकाभिरामं श्री रामं भूयो - भूयो नमाम्यहम् ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

अतुलित वलधामं हेमशैलाभदेहं, दनुजवनकृशानुं ज्ञानिनामग्रगण्यम्
सकलगुणनिधानं वानराणामधीशं, रघुपतिप्रियभक्तं वातजातं नमामि ।
मनोजवं मारूततुल्यवेगं जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम्
वातात्मजं वानरयूथमुख्यं श्री रामदूतं शरण प्रपद्ये ।

ॐ सर्वमंगलमंगल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके ।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरी नारायणी नमोऽस्तुते ।।
शरणागतदीनार्त परित्राणपरायणे ।
सर्वस्यार्ति हरे देवि नारायणी नमोऽस्तुते ।।

क्षमा प्रार्थना

सैवन्तिकावकुलचम्पकपाटलाब्जैः ।
पुन्नागजातिकरवीररसाल पुष्पैः ।।
विल्वप्रवाल तुलसीदल मंजरीभिः ।
त्वां पूजयामि जगदीश्वर मे प्रसीद ।।
आवाहनं न जानामि नैव जानामि पूजनम् ।
विसर्जनं नैव जानामि क्षमस्व परमेश्वर ।।
मन्त्रहीनं क्रियाहीनं, भक्तिहीनं सुरेश्वर ।
यत्पूजितं मयादेव, परिपूर्णं तदस्तु मे ।।
पापोऽहं पापकर्माहं, पापात्मा पापसम्भवः ।
त्राहि मां पुण्डरीकाक्षः सर्वपापहरो भव ।।
त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धुश्चसखा त्वमेव ।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्वं मम देवदेव ।।

सियावर रामचन्द्र की जै । उमापति महादेव की जै ।
पवनसुत हनुमान की जै । वृन्दावन बिहारीलाल की जै ।
लक्ष्मीपति भगवान विष्णु की जै । जगत जननी माँ अम्बे की जै ।
बोलो भाई सब सन्तन की जै । आज के आनन्द की जै ।
धर्म की ! जय हो । अधर्म का ! नाश हो ।
प्राणियों में ! सद्भावना हो । विश्व का ! कल्याण हो !
गो माता की ! जय हो ! भारत माता की ! जय हो ।
ओ३म ! हर हर महादेव . . . .

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

(पुष्पांजलिः)

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन् ।
ते ह नाकम्महिमानः सचन्त यत्र पूर्व्वे साध्याः सन्ति देवाः ।
ॐ राजाधिराजाय प्रसह्य साहिने नमो वयं वैश्रवणाय कुर्महे ।
स मे कामान्कामकामाय मह्यम् कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु ।
कुवेराय वैश्रवणाय महाराजाधिराजाय नमः ।।

ॐ शान्ति! शान्ति! शान्ति!

विशेष नोट :– उपरोक्त मन्त्र वेद का मन्त्र है अतः यज्ञोपवीत धारण किये व्यक्ति को ही इसका पाठ करना चाहिये।

डूबने वाले के साथ सहानुभूति का अर्थ यह नहीं कि उसके साथ डूब जाओ बल्कि तैरकर उसे बचाने का प्रयत्न करो। –विनोबा

मनुष्य ही परमात्मा का सर्वोच्च साक्षात् मंदिर है, इसलिये साकार देवता की पूजा करो। नर सेवा ही नारायण सेवा है।

''दुनिया क्या कहेगी'' मुझ पर कोई हँसेगा क्या? ऐसे दुर्बल विचारों को न आने देकर अपने को योग्य लगे वैसा काम हमेशा करना चाहिये। यही सारे जीवन का रहस्य है।

कान की शोभा शास्त्र श्रवण से है, कुंडल से नहीं, हाथ की शोभा दान से है, कंगण से नहीं, मनुष्य के शरीर की शोभा परोपकार से है, चन्दन से नहीं।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

।। दैनिक दिनचर्या के कल्याणकारी मन्त्र ।।

प्रातः काल उठते ही – निम्न श्लोक के साथ कर दर्शन करना चाहिये।

कराग्रे वसते लक्ष्मीः कर मध्ये सरस्वती।
करमूले च गोविन्दः प्रभाते कर दर्शनम् ।।

प्रातःकाल उठकर जमीन पर पैर रखने के साथ – निम्न श्लोक पढ़ें।

समुद्र वसने देवी पर्वतस्तन मण्डले।
विष्णु पत्नि नमस्तुभ्यं पादस्पर्श क्षमस्व मे।।

स्नान करते समय – निम्न श्लोक का उच्चारण करें।

वक्रतुण्ड महाकाय कल्पान्तदहनोपम।
भैरवाय नमस्तुभ्यं ह्यनुज्ञां दातुमर्हसि।।
गंगे च यमुने चैव गोदावरी सरस्वती।
नर्मदे सिन्धु कावेरी जलेऽस्मिन सन्निधिं कुरू।।

भोजन करने से पहले –

अन्नपूर्णे सदापूर्णे शंकर प्राण बल्लभे।
ज्ञानवैराज्ञ सिद्ध्यर्थं भिक्षां देहि च पार्वति।।

रात्रि में शयन से पहले –

अच्युतं केशवं विष्णुं हरि सोमं जनार्दनम्।
हसं नारायणं कृष्णं जपते दुःस्वप्नशान्तये।।

सब समय के लिये महामन्त्र –

* श्री कृष्ण गोविन्द हरे मुरारे हे नाथ नारायण वासुदेव।

मुझे आशा ही नहीं दृढ़ विश्वास है कि उपरोक्त मन्त्रों का नित्य पाठ करने वाला जीवन में सदैव सुखी रहेगा। –सम्पादक

(महामंत्र का भावार्थ कृपया कृष्ण स्तुति में देखें)

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.
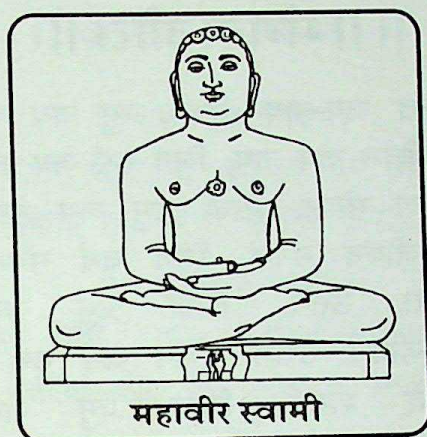
महावीर स्वामी

॥ णमोकार मंत्र ॥

नमो अरिहंताणं,
नमो सिद्धाणं,
नमो आयरियाणं,
नमो उवज्झायाणं,
नमो लोएसव्वसाहूणं।

ऐसो पंच नमोक्कारो, सव्वपावप्पणासणो ।
मगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं ॥

सूचना – यह मंत्र नवकार मंत्र है। इससे महान् जैन धर्म में कोई भी मंत्र नहीं है। पूर्व या उत्तर दिशा को मुख करके पवित्र भाव से एक माला प्रतिदिन फेरने से सब प्रकार का आनन्द-मंगल रहता है, सब संकट दूर हो जाते है।

जड़ चेतन गुण दोषमय बिस्व कीन्ह करतार।
संत हंस गुन गहहिं पय परिहरि बारी बिकार॥

विधाता ने इस जड़ चेतन विश्व को गुण-दोषमय रचा हैं, किन्तु संतरूपी हंस दोष रूपी जल को छोड़कर गुणरूपी दूध को ही ग्रहण करते हैं।

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

॥ मंगल गीत ॥

अरिहन्त जय-जय, सिद्ध प्रभु जय जय ।
साधु जीवन जय जय, जिन धर्म जय जय ।।
अरिहन्त मंगलं, सिद्ध प्रभु जय मंगलं ।
साधु जीवन मंगलं, जिन धर्म मंगलं ।।
अरिहन्त उत्तम, सिद्ध प्रभु उत्तम ।
साधु जीवन उत्तम, जिन धर्म उत्तम ।।
अरिहन्त शरणं, सिद्ध प्रभु शरणं ।
साधु जीवन शरणं, जिन धर्म शरणं ।।
चार शरण, दुःख हरण जगत में ।
और न शरणा कोई होगा ।।
जो भव्य प्राणी करें आराधन ।
उसका अजर - अमर पद होगा ।।

॥ महावीर स्तवन ॥

जय बोलो महावीर स्वामी की, घट-घट के अन्तर्यामी की ।।ध्रुव।।
जिस जगती का उद्धार किया, जो आया शरण वो पार किया ।
जिस पीड़ सुनी हर प्राणी की, जय बोलो महावीर स्वामी की ।।
जो पाप मिटाने आया था, जिस भारत आन जगाया था ।
उस त्रिशला-नन्दन ज्ञानी की, जय बोलो महावीर स्वामी की ।।
हो लाख बार प्रणाम तुम्हें, हे वीर प्रभु भगवान तुम्हें ।
मुनि दर्शन मुक्ति-गामी की, जय बोलो महावीर स्वामी की ।।

राम नाम मनिदीप धरू जीह देहरीं द्वार।
तुलसी भीतर बाहेरहुँ जौं चाहसि उजिआर।।

तुलसीदासजी कहते हैं, यदि तू भीतर और बाहर दोनों ओर उजाला चाहता है तो मुखरूपी द्वार की जीभरूपी देहली पर रामनामरूपी मणि-दीपक को रख।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

॥ बारह भावना ॥

१- अनित्य भावना

राजा राणा छत्रपति, हाथिन के असवार ।
मरना सबको इक दिन, अपनी अपनी बार ॥

२- अशरण भावना

दल-बल देवी देवता, मात-पिता परिवार ।
मरती बिरियां जीव को, कोई न राखनहार ॥

३- संसार भावना

दाम बिना निर्धन दुखी, तृष्णा-वश धनवान ।
कहूँ न सुख संसार में, सब जग देख्यो छान ॥

४- एकत्व भावना

आप अकेला अवतरे, मरे अकेला होय ।
यों कबहूँ या जीव को, साथी सगो न कोय ॥

५- अन्यत्व भावना

जहाँ देह अपनी नहीं, तहाँ न अपना कोय ।
घर-संपत्ति पर प्रकट ये, पर है परिजन लोय ॥

६- अशुचि भावना

दीपै चाम चादर मढ़ी, हाड़ पींजरा देह ।
भीतर या सम जगत में, ओर नहीं घिन-गेह ॥

७- आस्रव भावना

जग-वासी घूमें सदा, मोह-नींद के जोर ।
सब लूटे नहीं दीसता, कर्म-चोर चहूँ ओर ॥

८- संवर भावना

मोह नींद जब उपशमे, सतगुरू देय जगाय ।
कर्म-चोर आवत रूकें, तब कुछ बने उपाय ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

९- निर्जरा भावना

ज्ञान-दीप तप-तेल भर, घर शोधे भ्रम छोर ।
या विधिबिन निकसे नहीं, पैठे पूरब चोर ।।
पंच महाव्रत संवरण, समिति पंच प्रकार ।
प्रबल-पंच इन्द्रिय-विजय, धार निर्जरा सार ।।

१०- लोक भावना

चौदह राजु उतंग नभ, लोक - पुरूष संठान ।
ता में जीव अनादि तै, भरमत है बिन ज्ञान ।।

११- बोधि दुर्लभ भावना

धन-जन-कंचन-राजसुख, सबहिं सुलभ कर जान ।
दुर्लभ है संसार में, एक यथारथ ज्ञान ।।

१२- धर्म भावना

जाचे सुरतरू देय सुख, चिन्तित चिन्ता रैन ।
बिन याचे बिन चिन्तिये, धर्म सदा सुख दैन ।।
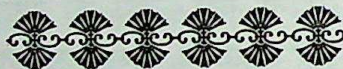
वेदों का अन्त नहीं है। पुराणों का पार नहीं है। इसी प्रकार रामायण में सौ करोड़ मंत्र थे। उन्हे तीन भागों में बाँटने पर एक श्लोक बढ़ गया। देव, मानव तथा दानव तीनों ने ही शंकरजी से कहा कि यह श्लोक हमें दो। श्लोक में बत्तीस अक्षर थे। शिवजी ने विभाजन किया। प्रत्येक को दस-दस अक्षर दिये। दो अक्षर बचे। इसके लिये विवाद न होवे इसलिये दो अक्षरों को उन्होने स्वयं रख लिया। ये दो अक्षर हैं- ''राम''। इसलिये शिवजी ''राम'' नाम का जप करते हैं।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

॥ संत वाणी ॥

(पढ़िये, समझिये, अपनाइये एवं जीवन को
सफल बनाइये-सम्पादक)

(१) यह जग सब ही हाट है, मोदी श्री भगवान ।
जाके जैसे कर्म हैं, तौलि देई समान ॥

(२) तरूवर फल नहीं खात है, सरवर पियहिं न पान ।
कहि रहीम पर काज हित, संपत्ति संचहिं सुजान ॥

(३) काम, क्रोध, मद, लोभ, सब नाथ नरक के पंथ ।
सब परिहरि रघुबीरहिं, भजहु भजहिं जे संत ॥

(४) आवत ही हरषे नहीं, नैनन नहीं सनेह ।
तुलसी तहाँ न जाइये, कंचन बरसे मेह ॥

(५) मान सहित विष खायके, शम्भू भये जगदीश ।
बिंना मान अमृत पिये, राहु कटायो शीश ॥

(६) टूटे सुजन मनाइये, जो टूटे सौ बार ।
रहिमन्न फिर फिर पोइये, जो टूटे मुक्ताहार ॥

(७) रहिमन वे नर मर चुके, जे कहुँ माँगन जाहिं ।
तिनके पहले वे मुए, जिन मुख निकसत नाहिं ॥

(८) क्षमा बड़न को चाहिये, छोटन को उत्पात ।
कहा हरि को घट गयो, जो भृगु मारी लात ॥

(९) साँच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप ।
जाके हिरदै साँच है, ताके हिरदै आप ॥

(१०) मन चाहे तो धर्म कर, रूप चाहे तो शील ।
मुक्ति चाहे तो भजन कर, तीनों बात सुशील ॥

(११) बसि कुसंग चाहत कुशल, यह रहीम अफसोस ।
महिमा घटी समुद्र की, रावण बसा परोस ॥

(१२) बिगरी बात बने नहीं, लाख करो किन कोय ।
रहिमन फाटै दूध को, मथे न माखन होय ॥

(१३) जात न पूछो साधू की, पूछ लीजिये ज्ञान ।
मोल करो तलवार का, पड़ा रहन दो म्यान ॥

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

(१४) ओछो काज बड़े करै, तो न बड़ाई होय ।
ज्यों रहीम हनुमंत को, गिरधर कहे न कोय ।।

(१५) रात गँवाई सोय कर, दिवस गँवायो खाय ।
हीरा जनम अनमोल सा, कोड़ी बदले जाय ।।

(१६) पाहन पूजै हरि मिले, मैं पूजूँ पहार ।
ता सैं तो चाकी भली, पीस खाय संसार ।।

(१७) माटी कहे कुम्हार से, तू क्या रौंदे मोंहि ।
एक दिन ऐसा आयगा, मैं रूँदूगी तोंहि ।।

(१८) दुःख में सुमिरन सब करें, सुख में करे न कोय ।
जो सुख में सुमिरन करे, तो दुःख काहे को होय ।।

(१६) कबिरा सोई पीर है, जो जाने पर पीर ।
जो पर पीर न जानई, सो काफिर बे पीर ।।

(२०) नहाये धोये क्या भया, जो मन का मैल न जाय ।
मीन सदा जल में रहै, धोये बास न जाय ।।

(२१) गो-धन, गज-धन, बाज-धन और रतन धन खान ।
जब आवे सन्तोष धन, सब धन धूरि समान ।।

(२२) माला तो कर में फिरै, जीभ फिरै मुख माँहि ।
मनुवाँ तो दस दिसि फिरै, यह तो सुमिरन नाहिं ।।

(२३) रहिमन धागा प्रेम का, मत तोड़ो चिटकाय ।
टूटे से फिर ना जुड़े, जुड़े गाँठ पड़ जाय ।।

(२४) ऐसी वाणी बोलिये, मन का आपा खोय ।
औरों को शीतल करे, आपहुँ शीतल होय ।

(२५) चलती चाकी देखिके, दिया कबीरा रोय ।
दो पाटन के बीच में, साबुत बचा न कोय ।।

(२६) कागा का को धन हरे, कोयल काको देत ।
मीठा वचन सुनाय के, जग अपनो कर लेत ।।

(२७) पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुआ, पंडित भया न कोय ।
ढ़ाई आखर प्रेम का, पढ़े सो पंडित होय ।।

(२८) रहिमन देखि बड़ेन को, लघु न दीजिये डारि ।
जहाँ काम आवे सुई, कहां करे तलवारि ।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

(२६) जो रहीम उत्तम प्रकृति, का करि सकत कुसंग ।
चन्दन विष व्यापत नहीं, लिपटे रहत भुजंग ।।

(३०) रहिमन पानी राखिये, बिन पानी सब सून ।
पानी गये न ऊबरै, मानुष, मोती, चून ।।

(३१) बारि मथे घृत होई बरू, सिकता तें बरू तेल ।
बिनु हरि भजन न भव तरिय, यह सिद्धान्त अपेल ।।

(३२) तुलसी इस संसार में, मिलिये सबसे धाय ।
ना जाने किस रूप में, नारायण मिल जाय ।।

(३३) दान करो दिल खोल कर, मत ना होउ अधीर ।
धर्म कर्याँ धन ना घटे, कहि गये दास कबीर ।।

(३४) आया है सो जायेगा, राजा रंक फकीर ।
एक सिंहासन चढ़ि चले, एक बंधे जंजीर ।।

(३५) कबिरा जब पैदा हुये, जग हंसे हम रोय ।
ऐसी करनी कर चलो, हम हँसे जग रोये ।।

(३६) परहित जो जीवन धरत, परहित जो मरिजात ।
रामायण दृग-जल बनत, गीता कर्म रचात ।।

(३७) बड़े बड़ाई ना करे, बड़े न बोलें बोल ।
रहिमन हीरा कब कहे, लाख टका है मोल ।।

(३८) साँई इतना दीजिये, जा में कुटुम समाय ।
मै भी भूखा ना रहूँ, सन्त ना भूखा जाय ।।

(३६) प्रभुता को सब मरत हैं, प्रभु ता मरे न कोय ।
जो कोइ प्रभु को मरे, तो प्रभुता चेरी होय ।।

(४०) जाको राखै साइयाँ, मारि सकै ना कोय ।
बाल न बाँका करि सकै, जो जग बैरी होय ।।

(४१) एक कनक औ कामिनी, विष भल किये उपाय ।
देखत ही ते विष चढ़े, चाखत ही मर जाय ।।

(४२) नारायण मैं साँची कहूँ, भुज उठाय के आज ।
जो जिये बन गरीब तू, मिलें गरीब - निवाज ।।

(४३) दो बातन को भूल मत, जो चाहे कल्याण ।
नारायण एक मौत को, दूजे श्री भगवान ।।

(४४) श्वास श्वास पै नाम भज, श्वास न बिरथा खोय ।
ना जाने इस श्वास का, आवन होय न होय ।।

(४५) माया सगी न मन सगा, सगा न यह संसार ।
परशुराम या जीव को, सगा सो सिरजनहार ।।

(४६) तुलसी या जग आयके, पाँच रतन हैं सार ।
संत मिलन अरू हरि भजन, दया दीन उपकार ।।

(४७) चन्दन की चुटकी भली, गाड़ी भलो न काठ ।
बुद्धिमान एक ही भलो, मूरख भलो न साठ ।।

(४८) कागा सब तन खाइयो, चुन चुन खाइयो माँस ।
दो नैना मत खाइयो, प्रभु मिलन की आस ।।

(४९) रहिमन चुप होय बैठिये, देखि दिनन को फेर ।
जब नीके दिन आइहैं, बनत न लगिहैं देर ।।

(५०) देख विरानी चोपड़ी, मत ललचावे जीव ।
रूखा सूखा खायके, ठण्डा पानी पीव ।।

(५१) चिड़ी चोंच भर ले गई, नदी घट्या ना नीर ।
दान दिये धन ना घटे, कह गये दास कबीर ।।

(५२) तुलसी हाय गरीब की, कबहुँ न खाली जाय ।
मरे ढ़ोर के चाम से, लोह भसम हो जाय ।।

(५३) जिह्वा तो तब ही भली, जपे हरी का नाम ।
नहीं तो काट निकालिये, मुख में भली न चाम ।।

(५४) काम, क्रोध अरू लोभ मद, मिथ्या छल अभिमान ।
इनसे मनको रोकिबों, साँचौं ब्रत पहिचान ।।

(५५) दया धर्म का मूल है, नरक मूल अभिमान ।
तुलसी दया न छोड़िये, जब लगि घट में प्रान ।।

(५६) दुर्बल को न सताइये, जाकी मोटी हाय ।
बिना जीव की श्वास से, लौह भस्म हो जाय ।।

(५७) होनी तो होके रहे, अनहोनी ना होय ।
जाको राखे साइयाँ, मार सकै नहिं कोय ।।

(५८) चार वेद षट शास्त्र में, बात मिली है दोय ।
दुख दीने दुख होत है, सुख दीने सुख होय ।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

॥ मधुर-संकीर्तन धुनें ॥

(१) श्री कृष्ण गोविन्द हरे मुरारे- हे नाथ नारायण वासुदेव ।
गोविन्द गरूड़ध्वज प्राणप्यारे, हे नाथ नारायण वासुदेव ॥

(२) श्री मन्नारायण नारायण नारायण,
भज मन नारायण नारायण नारायण ।

(३) हरी शरणम्, हरी शरणम्, हरी शरणम, हरी शरणम् ।

(४) अच्युतम् केशवम् रामनारायणम्, कृष्ण दामोदरम् वासुदेवम् हरे।
श्रीधरम् माधवम् गोपिकावल्लभम्, जानकी नायकम् रामचन्द्रम् हरे॥

(५) हरी बोल, हरी बोल, हरि हरि बोल, मुकुन्द माधव केशव बोल ।
मुकुन्द माधव केशव बोल, केशव माधव गोबिन्द बोल ॥

(६) राम राम राम राम राम नाम तारकम् ।
रामकृष्ण वासुदेव भक्ति मुक्ति दायकम् ॥
जानकी मनोहरं सर्व लोकनायकम् ॥
राम राम राम राम राम नाम तारकम् ॥

(७) जय राम श्री राम जय जय राम ।
श्री राम जय राम जय जय राम ॥

(८) राम लक्ष्मण जानकी जय बोलो हनुमान की ।
जय बोलो हनुमान की जय बोलो हनुमान की ॥

(६) रघुपति राघव राजा राम, पतित पावन सीताराम ।
सीताराम सीताराम, भज मन प्यारे सीता राम ॥
रामकृष्ण हैं तेरे नाम, सबको सन्मति दे भगवान ।
दीन दयालु राजाराम, पतित पावन सीताराम ॥
नारद की वीणा से निकला, रघुपति राघव राजाराम।
शंकर के डमरू से निकला, पतित पावन सीताराम॥

(१०) सीतापति राम हो, मीरा के घनश्याम हो ।
जय हो तेरी गोविन्दा, भक्तों के भगवान हो ॥

(११) भजो रे भइया, राम गोविन्द हरी ।
राम गोविन्द हरि, कृष्ण गोपाल हरी ॥

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

(१२) हरे रामा हरे रामा, रामा रामा हरे हरे ।
हरे कृष्णा हरे कृष्णा, कृष्णा कृष्णा हरे हरे ।।

(१३) हम तो तेरे सहारे ओ साँवरे, भज गोविन्द गोविन्द ओ बावरे।
हम तो तेरे दीवाने ओ साँवरे, भज गोपाल गोपाल ओ बावरे ।।

(१४) मन भूल मत जाईयो, राधे रानी की शरण ।
राधे रानी के चरण, महारानी की शरण ।।

(१५) राधे राधे राधे, श्याम से मिलादे ।
श्याम से मिलादे, घनश्याम से मिलादे ।।

(१६) गोविन्द जय जय, गोपाल जय जय ।
राधा रमण हरि गोविन्द जय जय ।।

(१७) गोविन्द बोलो हरि गोपाल बोलो ।
राधा रमण हरि गोविन्द बोलो ।।

(१८) जय राम हरे जय कृष्ण हरे, जय मुरलीधर घनश्याम हरे ।
घनश्याम हरे राधेश्याम हरे, मनमोहन सुन्दर श्याम हरे ।।

एक भक्त कवि की प्रभु से मांग

जो झुके तेरे आगे, वो सर मांगता हूं, तुझे देखने की नजर मांगता हूँ ।
मुझे चाहिये बस तेरी बन्दानवाजी, न घर मांगता हू न जर मांगता हूँ ।
न हो जाऊं बेसुध, मैं जलवों से तेरे, इलाही मैं ऐसी नजर मांगता हूँ ।
मरीजे मोहब्बत हूं ऐशाहे खूबां, मैं दवाए-दर्दे-जिगर मांगता हूँ ।
मुझे चाहिए कुछ नहीं और 'बिस्मिल', मैं आहों में अपनी असर मांगता हूँ ।

शब्दार्थ – १. **बन्दानवाजी** - भक्तों पर कृपा दृष्टि। २. **जर** - धन सम्पदा। ३. **इलाही** -मेरे प्रभु। ४. **मरीजे मोहब्बत** - प्रेम रोगी। ५. **खूबां** - सुन्दरियों की मलिका। ६. **दवाए-दर्दे-जिगर** - दिल के दर्द की दवा। ७. **'बिस्मिल'** - घायल, कवि का उपनाम 'बिस्मिल' है। ८. **असर** - प्रभाव।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

॥ भजन गुलदस्ता ॥

॥ प्रभु-विनय ॥

अजब हैरान हूँ भगवान, तुम्हें कैसे रिझाऊँ मैं ।
कोई वस्तु नहीं ऐसी, जिसे सेवा में लाऊँ मैं ॥टेर॥
करूँ किसका मैं आह्वान, कि तुम मौजूद हो स्वामी ।
निरादर है बुलाने का, अगर घंटा बजाऊँ मैं ॥१॥
तुम्ही मन्दिर ओ मूरति में, तुम्हीं व्यापक हो फूलों में ।
भला भगवान पे भगवान को, कैसे चढ़ाऊँ मैं ॥२॥
न भुजायें हैं न सीना है, न गरदन है न पेसानी ।
जो है निर्लेप नारायण, कहाँ चन्दन लगाऊँ मैं ॥३॥
लगाना भोग जो तुमको भी, एक अपमान करना है ।
खिलाते विश्व सारे को, तुम्हें कैसे खिलाऊँ मैं ॥४॥
तुम्हारा तेज है जग में, तुम्हीं सर्वत्र हो स्वामी ।
जहाँ देखूँ तहाँ तुम हो, कहाँ दृष्टि लगाऊँ मैं ॥५॥
करूँ पूजा मैं किस विधि से, यही अफसोस है भगवान ।
हृदय मन्दिर में शान्ति के, ज्ञान दीपक जलाऊँ मैं ॥६॥

॥ अल्ला तेरो नाम ॥

अल्ला तेरो नाम, ईश्वर तेरो नाम
सबको सम्मति दे भगवान, अल्लाह तेरो नाम...
इस धरती का रूप न उजड़े
प्यार की ठण्डी धूप न उजड़े
सबको मिले सुख का वरदान, अल्ला तेरो नाम...
मांगों का सिंदूर न छूटे माँ बहनों की आस न टूटे
देह बिना भटके न प्राण, अल्ला तेरो नाम...
जो सारे जग के रखवाले निर्बल को बल देने वाले
बलवानों को दे दे ज्ञान, अल्ला तेरो नाम...

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

॥ विनय : मैं नर-तुम नारायण ॥

दोहा – सब कुछ दीन्हा आपने, भेंट करूँ क्या नाथ ।
नमस्कार की भेंट लो, जोडूं मैं दोनो हाथ ॥

अब सौंप दिया इस जीवन का, सब भार तुम्हारे हाथों में ।
अब हार तुम्हारे हाथों में, अब जीत तुम्हारे हाथों में ॥
इस जीवन की एक तमन्ना है, भगवान तुम्हारे चरणों में ।
अरपन कर दूँ इस जीवन का, सब भार तुम्हारे हाथों में ॥
यदि मानुष जनम मिले तो मैं चरणों का पुजारी बन जाऊँ ।
तेरा प्रेम हो मेरी रग रग में, मेरा ध्यान तुम्हारे चरणों में ॥
यदि मैं संसार का बन्दी बनूं, दरबार में तेरे आऊँ मैं ।
हो मेरे पापों का निर्णय, भगवान तुम्हारे हाथों में ॥
या तो मैं इस जग से दूर रहूँ, या जग में रहूँ तो तेरा रहूँ ।
इस पार तुम्हारे हाथों में, उस पार तुम्हारे हाथों में ।
तुम में मुझ में है भेद यही, मैं नर हूँ तुम नारायण हो ।
मैं हूँ संसार के हाथों में, संसार तुम्हारे हाथों में ॥

॥ तोरा मन दर्पण कहलाये ॥

तोरा मन दर्पण कहलाये
भले बुरे सारे कर्मों को देखे और दिखलाए।। तोरा...
मन ही देवता, मन ही ईश्वर, मन से बड़ा न कोय,
मन उजियारा जब जब फैले जग उजियारा होय,
इस उजले दर्पण पर प्राणी धूल न जमने पाए।। तोरा...
तन की दौलत ढलती छाया, मन का धन अनमोल,
तन के कारण मन के धन को मत माटी में रोल,
मन की कदर भुलाने वाले हीरा जन्म गंवाए।। तोरा...

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

।। सेवा का निराला तरीका ।।

तरीका अब निराला अपनी सेवा का दिखायेंगे,
युगल सरकार की तस्वीर आँखों में खिंचायेंगे ।
जमाकर लालसा गद्दी, लगाकर भाव की तकिया,
जगाकर ज्योति जप की मन के अन्दर बिठायेंगे ।
मनोहर छन्द तागे में, सुमन शब्दों के गूँथेंगे,
बसाकर इत्र रस का काव्य भजन की माला पिन्हायेंगे।
जलाकर आरती अनुराग में, कर्पूर कर्मों का,
पुजारी प्रेम के द्वारा उचित पूजन करायेंगे
गिराकर "बिन्दु" आँखों से बहायेंगे नहीं गंगा,
तुम्हें नहला के इसमें, हम फिर गोते लगायेंगे ।

।। दर्शन दो घनश्याम.... ।।

दर्शन दो घनश्याम नाथ मोरी अँखियाँ प्यासी रे ।
मन मन्दिर की ज्योति जगा दो, घट घट वासी रे ।।१।।
मन्दिर-मन्दिर मूरत तेरी, फिर भी न दीखे सूरत तेरी ।
यह शुभ बेला आई मिलन की, पूर्णमासी रे ।।२।।
द्वार दया का जब तू खोले, पंचम स्वर में गूंगा बोले ।
अन्धा देखे, लंगड़ा चलकर पहुँचे काशी रे ।।३।।
पानी पीकर प्यास बुझाऊँ, नैनन को कैसे समझाऊँ ।
आँख-मिचौली छोड़ो अब तो, मन के वासी रे ।।४।।
लाज न लुट जाये प्रभु मेरी, नाथ करो ना दया में देरी ।
तीन लोक छोड़ के आवो, गगन विलासी रे ।।५।।
द्वार खड़ा कब से मतवाला, मांगे तुमसे हार तुम्हारा ।
"नरसी" की प्रभु विनती सुनलो, भक्त विलासी रे ।।६।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

॥ स्वीकारो मेरे प्रणाम प्रभु ॥

दोहा – विनय मेरी सुन लीजिये, हे हरि जगदाधार ।
आराधन निशदिन करूँ, कर लेना स्वीकार ॥

सुख वरण प्रभु नारायण हे, दुःख हरण प्रभु नारायण हे ।
त्रिलोकपति दाता सुखधाम, स्वीकारो मेरे प्रणाम ॥
त्रिलोकपति दाता सुखधाम, स्वीकारो मेरे प्रणाम ।
स्वीकारो मेरे प्रणाम प्रभु, स्वीकारो मेरे प्रणाम ।
मन वाणी में वो शक्ति कहाँ, जो महिमा तुम्हारी गान करे ।
अगम अगोचर अविकारी, निर्लेप हो हर शक्ति से परे ।
हम और तो कुछ भी जाने ना, केवल गाते हैं, पावन नाम ॥ स्वीकारो...
आदि, मध्य और अन्त तुम्हीं, और तुम ही आत्म अधारे हो ।
भगतों के तुम प्राण प्रभु, इस जीवन के रखवारे हो ।
तुममें जनमें, जीवें तुम में और अन्त करें तुम में विश्राम ॥ स्वीकारो...
चरण कमल का ध्यान धरूँ, और प्राण करें सुमिरन तेरा ।
दीन आश्रय दीनानाथ प्रभु, भव बन्धन काटो हरि मेरा ।
शरणागत के श्याम हरि, हे नाथ मुझे तुम लेना थाम ॥ स्वीकारो...

॥ मन तड़पत हरि दर्शन.... ॥

मन तड़पत हरि दर्शन को आज.....
हमारे तुम बिन बिगड़े सारे काज,
विनती करत हूँ रखियो लाज।
मन तड़पत हरि दर्शन को आज.....
तुम्हारे द्वार का मैं हूँ जोगी, हमारी ओर नजरिया कब होगी।
सुनो मेरे व्याकुल मन का राज,
मन तड़पत हरि दर्शन को आज.....
बिन गुरू ज्ञान कहाँ से लाऊँ, दीजो ज्ञान हरि गुण गाऊँ।
सर्व मुनिजन पे तुम्हारा राज,
मन तड़पत हरि दर्शन को आज.....

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

॥ प्रभुजी कैसे तारोगे ॥

दोहा – मैं अपराधी जनम का, नख - सिख भरा विकार ।
तुम दाता दुःख भंजना, मेरी करो सम्हार ॥

मेरा अवगुण भरा शरीर, प्रभुजी कैसे तारोगे ।
मैं हूँ इसीलिये दिलगीर, प्रभुजी कैसे तारोगे ॥
ना पूजा न पाठ समाधि, जनम-जनम का मैं अपराधी ।
बेगुन और बेपीर, प्रभुजी कैसे तारोगे ॥
ना मैं छील खिलाये छिलके, ना मैं फाड़े चिथरे दिल के ।
तेरी उँगली में बाँधा न चीर, प्रभुजी कैसे तारोगे ॥
शबरी बन कर टेर न कीनी, आँखें लाल बेर न कीनी ।
फिर तुम्हीं कहो रघुबीर, प्रभुजी कैसे तारोगे ।
भवसागर में कूद पड़ा हूँ, दूनियादारी में जकड़ा हूँ ।
पाँव पड़ी जंजीर, प्रभुजी कैसे तारोगे ।
"तुलसी" या "रविदास" नहीं हूँ, आदमी भी खास नहीं हूँ ।
मैं हूँ त्रुटियों की तस्वीर, प्रभुजी कैसे तारोगे ॥
बार बार आने जाने में, जन्मों के ताने बाने में।
मेरी उलझ गई तकदीर, प्रभुजी कैसे तारोगे ॥
जीवन-दूध बना न खोया, मोह निद्रा में ऐसा सोया ।
मेरी दलिया हो गई खीर, प्रभुजी कैसे तारोगे ॥

झूठइ लेना झूठइ देना। झूठइ भोजन झूठ चबेना।
बोलहिं मधुर बचन जिमि मोरा। खाइ महा अहि हृदय कठोरा॥

दुष्टों का झूठा ही लेना और झूठा ही देना होता है। झूठा ही भोजन होता है और झूठा ही चबेना होता है (अर्थात वे लेने-देनेके व्यवहार में झूठका आश्रय लेकर दूसरों का हक मार लेते हैं अथवा झूठी डींग हाँका करते हैं।) मतलब यह कि वे सभी बातों में झूठ ही बोला करते हैं। जैसे मोर (बहुत मीठा बोलता है, परन्तु उस) का हृदय ऐसा कटोर होता है कि वह महान् विषैले साँपों को भी खा जाता है। वैसे ही वे भी ऊपर से मीठे वचन बोलते हैं, परन्तु हृदय के बड़े ही निर्दयी होते हैं।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

।। ओ दुनिया के रखवाले... ।।

ओ दुनिया के रखवाले सुन दर्द भरे मेरे नाले
आश निराश के दो रंगों से दुनिया तूने सजाई
नैया संग तूफान बनाया मिलन के साथ जुदाई
जा देख लिया हरजाई....
ओ लुट गई मेरे प्यार की नगरी, अब तो नीर बहा ले, ओ दुनिया....
आग बनी सावन की बरखा; फूल बने अंगारे
नागन बन गई रात सुहानी पत्थर बन गये तारे,
सब टूट चुके हैं सहारे
ओ जीवन अपना वापस ले ले जीवन देने वाले, ओ दुनिया....
चाद को ढूँढे पागल सूरज; शाम को ढूंढे सबेरा
मैं भी ढूंढूं उस प्रीतम को, हो न सका जो मेरा
भगवान भला हो तेरा
ओ किस्मत फूटी, आस न टूटी, पांव में पड़ गये छाले ओ दुनिया ....
महल उदास और गलियाँ सूनी, चुप-चुप हैं दीवारें
दिल क्या उजड़ा, दुनिया उजड़ी, रूठ गई बहारें
हम जीवन कैसे गुजारें
ओ मन्दिर गिरता फिर बन जाता, दिल को कौन सम्भाले ओ दुनिया ....

।। तुम मेरी राखो लाज हरी ।।

तुम मेरी राखो लाज हरि ।।टेर।।
तुम जानत सब अन्तर्यामी, करनी कछु न करी ।।१।।
औगुन मोसे बिसरत नाहीं, पल छिन घरी घरी ।।२।।
सब परपंच की पोट बाँधकर, अपने सीस धरी ।।३।।
दारा सुत धन मोह लियो है, सुध बुध सब बिसरी ।।४।।
"सूर" पतित को बेगि उबारो, मेरी नाव भरी ।।५।।

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

॥ प्रभु प्रेम में बलिदान ॥

है आँख वो, जो प्रभु का दर्शन किया करे ।
है शीश वो, जो प्रभु चरण में वन्दन किया करे ॥
बेकार वो मुख है, जो रहे व्यर्थ बातों में ।
मुख है वो, जो हरि नाम का सुमिरन किया करे ॥
हीरे मोती से नहीं है शोभा हाथ की ।
है हाथ जो भगवान का पूजन किया करे ॥
मरकर भी अमर नाम है, उस जीव का जग में ।
प्रभु प्रेम में बलिदान, जो जीवन किया करे ॥
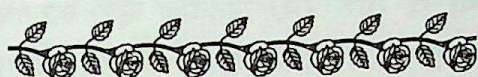
॥ हरे रामा हरे कृष्णा ॥

हरे रामा हरे रामा, रामा रामा हरे हरे ।
हरे कृष्णा हरे कृष्णा, कृष्णा कृष्णा हरे हरे ॥टेर॥
ओ सबकी सुनने वाले, मेरी भी सुनो दाता ।
जो आश मेरे मन की, पूरी तो करो दाता ॥१॥
जो कदम उठे मेरा, तेरी राह चले दाता ।
जो साँस चले मेरा, तेरा नाम जपे दाता ॥२॥
तेरे पास में सब कुछ है, तेरा नाम भी है दाता ।
तू सबका भला करता, मेरा भी करो दाता ॥३॥
बिन माँगे तू देता है, मैने भी सुना दाता ।
मैने हाथ पसारे हैं, मोहे दान दियो दाता ॥४॥
जो कुछ भी दिया तूने, तेरा लाख शुक्र दाता ।
बाकी जो तमन्ना है, पूरी तो करो दाता ॥५॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

॥ जगदीश हरे ! जगदीश हरे ! ॥

दोहा – सुमिरन दीप जलाय के, धरूँ हृदय में ध्यान ।
शरण पड़े की लाज रख, हे मेरे भगवान ॥

निर्बल के प्राण पुकार रहे, जगदीश हरे जगदीश हरे ।
स्वासों के स्वर झंकार रहे, जगदीश हरे जगदीश हरे ॥
आकाश हिमालय सागर से, पृथ्वी पाताल चराचर से ।
ये मधुर बोल झंकार रहे, जगदीश हरे जगदीश हरे ॥
जब दया दृष्टि हो जाती है, सूखी खेती हरियाती है ।
इस आस पे जन उच्चार रहे, जगदीश हरे जगदीश हरे ॥
सुख दुख की चिन्ता है ही नहीं, भय है विश्वास न जाय कभी ।
टूटे न लगा ये तार रहे, जगदीश हरे जगदीश हरे ॥
स्वामी है करूणाधाम सदा, सेवक है "राधेश्याम" सदा ।
बस इतना तेरा विचार रहे, जगदीश हरे जगदीश हरे ॥

॥ भगवान मोरी नैया... ॥

भगवान ! मोरी नैया, उस पार लगा देना ।
अब तक तो निभाया है, आगे भी निभा देना ॥
छल बल के साथ माया, घेरे जो मुझे आकर ।
तो देखते न रहना, झट आकर छुड़ा लेना ॥
संभव है झंझटों में, मैं तुमको भूल जाऊँ ।
पर नाथ दया करके, मुझको न भुला देना ॥

दोहा – कथनी मीठी खाँड सी, करनी विष की लोय ।
कथनी तज करनी करे, विष से अमृत होय ॥

Digitized by Madhuban Trust, Delhi
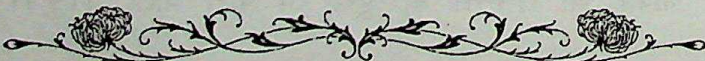
॥ नर में है नारायण बन्दे ॥

दोहा – तुलसी या संसार में, मिलिये सबसे धाय ।
ना जाने किस रूप में, नारायण मिल जाय ॥

काशी घूम ले मथुरा घूम ले, घूम ले चाहे वन वन ।
नर में है नारायण बन्दे, नर में है नारायण ॥
बोलो जय नारायण, बोलो जय नारायण !
ओ बोलो जय नारायण, बोलो जय नारायण !
पहन के भगवा, तिलक लगाके, बने तू संत ज्ञानी ।
हो गया मस्त मलंग न पीड़ा किसी की तूने जानी – २ ।
विभूति कमण्डल, गले में माला, व्यर्थ है माथे चन्दन ।
नर में है नारायण बन्दे, नर में है नारायण ॥
दया धर्म चाहे दान करो, ये किसी काम नहीं आते ।
दीन दुःखी निर्धन को जब तक, गले नहीं लगाते – २ ।
पर मेरा नारायण होता है, इसी बात में प्रसन्न ।
नर में है नारायण बन्दे, नर में है नारायण ॥
ईश्वर के हैं बन्दे सबको रूप उसी का मानो ।
ना कोई ऊँचा ना कोई नीचा, सबको एक ही जानो – २ ।
सबसे उत्तम पूजा यही है, सबसे बड़ा ये धन ।
नर में है नारायण बन्दे, नर में है नारायण ॥
बोलो जय नारायण ! बोलो जय नारायण !

नर सरीर धरि जे पर पीरा। करहिं ते सहहिं महा भव भीरा ॥
करहिं मोह बस नर अघ नाना। स्वारथ रत परलोक नसाना ॥

मनुष्य का शरीर धारण करके जो लोग दूसरों को दुःख पहुँचाते हैं, उनको जन्म-मृत्यु के महान् संकट सहने पड़ते हैं। मनुष्य मोहवश स्वार्थपरायण होकर अनेकों पाप करते हैं, इसी से उनका परलोक नष्ट हुआ रहता है।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

॥ क्या नहीं करना चाहिये ॥

हरि का नाम सुमर नर प्यारे, कभी भुलाना ना चाहिये ।
पाकर मानुष तन दुनिया में, मुफ्त गंवाना ना चाहिये ॥ टेर ॥
झूठ कपट और पाप कर्म से, धन को कमाना ना चाहिये ।
पुण्य पुर्बले से आता हो, तो ठुकराना ना चाहिये ॥ १ ॥
पर नारी से कभी भुलाकर, प्रीत लगाना ना चाहिये ।
दुर्जन नर को अपने पास में, कभी बैठाना ना चाहिये ॥ २ ॥
देकर के विश्वास किसी को, फिर हट जाना ना चाहिये ।
सच्चे मित्र से मन की कोई, बात छिपाना ना चाहिये ॥ ३ ॥
अपने घर का भेद कभी, दुश्मन को बताना ना चाहिये ।
आमद से पैसे का ज्यादा, खर्च बढ़ाना ना चाहिये ॥ ४ ॥
नये नये पंथों की बातों में, फँस जाना ना चाहिये ।
अपना पुरूषार्थ करने में, दिल शरमाना ना चाहिये ॥ ५ ॥
पुण्य कर्म करके पीछे, मन में पछताना ना चाहिये ।
पाप कर्म की तरफ कभी, मन को ललचाना ना चाहिये ॥ ६ ॥
जहाँ न आदर होय कभी, उस घर में जाना ना चाहिये ।
अपने घर में आवे उसके, दिल को दुखाना ना चाहिये ॥ ७ ॥
बिन मालिक के हुकुम, किसी वस्तु को उठाना ना चाहिये ।
घर के झगड़े के कारण, राज सभा में जाना ना चाहिये ॥ ८ ॥
कर सत्संग विचार सदा, दिल से बिसराना ना चाहिये ।
ब्रह्मानन्द को पाकर फिर, भव में भरमाना ना चाहिये ॥ ९ ॥

बड़े भाग मानुष तनु पावा। सुर दुर्लभ सब ग्रंथन्हि गावा।
साधन धाम मोच्छ कर द्वारा। पाइ न जेहिं परलोक सँवारा॥

बड़े भाग्य से यह मनुष्य शरीर मिला है। सब ग्रन्थों ने यही कहा है कि यह शरीर देवताओं को भी दुर्लभ है (कठिनतासे मिलता है)। यह साधन का धाम और मोक्ष का दरवाजा है। इसे पाकर भी जिसने परलोक न बना लिया, वह परलोक में दुःख पाता है।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

॥ मालिक के दरबार में सबका खाता ॥

दोहा – प्रभु बैठा आकाश पे, लेकर कलम दवात ।
खाते में वो हर घड़ी, लिखता सबकी बात ।

मेरे मालिक के दरबार में है सबका खाता ।
जितना जिसके भाग्य में होता उतना ही वो पाता ।।
क्या साधु क्या सन्त गृहस्थी क्या राजा क्या रानी ।
प्रभु की पुस्तक में लिखी है सबकी कर्म कहानी ।
सभी जनों के जमा खर्च का सही हिसाब लगाता ।।१।।
बड़ी कड़ी कानून प्रभु की बड़ी कड़ी मर्यादा ।
किसी को कोड़ी कम नहीं देता ओर न दमड़ी ज्यादा ।
इसीलिये तो दुनिया में वो जगत सेठ कहलाता ।।२।।
करता है फैसला सभी प्रभु आसन पे डट के ।
उसका फैसला कभी न बदले लाख कोई सर पटके ।
समझदार तो चुप रहता है, मूर्ख शोर मचाता ।।३।।
अच्छी करनी करो चतुरजन कर्म न करियो काला ।
हजार आँख से देख रहा है तुम्हें देखने वाला ।
धर्म कर्म मत भूलो रे भैया समय गुजरता जाता ।।४।।

॥ बड़ी देर भई नन्दलाला ॥

बड़ी देर भई नन्दलाला तेरी राह तके बृजबाला
ग्वाल बाल इक-इक से पूछे कहां है मुरली वाला
कोई न जाए कुंज गलिन में तुम बिन कलियां चुनने को
तरस रहे हैं यमुना के तट धुन मुरली की सुनने को
संकट में है आज वो धरती जिस पर तूने जन्म लिया
पूरा करदे आज वचन गीता में जो तूने दिया
कोई नहीं है तुझ बिन मोहन भारत का रखवाला
बड़ी देर भई....

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

॥ हरि ॐ तत्सत् हरि ॐ तत्सत् ॥

जपाकर, जपाकर, रटाकर, रटाकर, हरि ॐ तत्सत् हरि ॐ तत्संत् ।
दुष्टों ने लोहे का खम्भा रचा था, निर्दोष प्रहलाद क्यों कर बचा था ।
करी थी विनय एक स्वर से जो उसने, हरि ॐ तत्सत् हरि ॐ तत्सत् ।।
लगी आग लंका में हलचल मचा था, तो घर विभीषण का क्योंकर बचा था ।
लिखा था यही शब्द कुटिया में उसके, हरि ॐ तत्सत् हरि ॐ तस्तत् ।।
हलाहल का मीरा ने प्याला पिया था, उसे विष से अमृत फिर किसने किया था ।
मीरा भी दीवानी इसी नाम की थी, हरि ॐ तत्सत् हरि ॐ तत्सत् ।।
हरि ॐ में इतनी शक्ति भरी थी, गरूड़ छोड़ धाये न देरी करी थी ।
बढ़ा चीर उसमें यही रंग रंगा था, हरि ॐ तत्सत् हरि ॐ तत्सत् ।।

॥ रामकृष्ण हरि - रामकृष्ण हरि ॥

काल का पहिया घूमे भैया, लाख तरह इंसान चले ।
लेके चले बारात कभी तो, कभी बिना सामान चले ।।
रामकृष्ण हरि ! रामकृष्ण हरि ! ।।टेर।।
जनक की बेटी, अवध की रानी, सीता भटके वन - वन में ।
राह अकेली, रात अंधेरी, मगर रतन है दामन में ।
साथ न जिसके चलता कोई, उसके साथ भगवान चले ।। रामकृष्ण..
हाय री किस्मत, कुँवर कन्हैया स्वाद न जाने माखन का ।
हंसी चुराये फूलों की, वो कंस है माली उपवन का ।
भूल न पापी, मगर पाप की ज्यादा नहीं दुकान चले ।। रामकृष्ण..
अजब है कैसी प्रभु की माया माला से बिछुड़ा दाना ।
ढूंढे जिसे है मन, सामने है वो, जाने न लेकिन पहचाना ।
कैसे वो मालिक दिखे तुझे, जब तेरे साथ अभिमान चले ।। रामकृष्ण..
कर्म अगर अच्छा है तेरा, किस्मत तेरी दासी है ।
दिल है तेरा साफ तो प्यारे, घर में मथुरा काशी है ।
सच्चाई की राह चलो रे भैया, जब तक जीवन साँस चले ।। रामकृष्ण..

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

॥ जग में सुन्दर हैं दो नाम ॥

दोहा – दस मास को तेरो पिंजरो, ऊपर सुन्दर चाम ।
कंचन काया राख बनेगी, ले ले राम को नाम ॥

जग में सुन्दर है दो नाम, चाहे कृष्ण कहो या राम।। टेर।।
बोलो राम राम राम, बोलो श्याम श्याम श्याम ।।
एक हृदय में प्रेम बढ़ावे, एक पाप के ताप हटावे ।
दोनों सुख के सागर हैं औ दोनों पूरन काम ।। चाहे...
माखन ब्रज में एक चुराये, एक बेर भिलनी घर खाये ।
प्रेम भाव से भरे अनोखे, दोनों के हैं काम ।। चाहे...
एक कंस पापी संहारे, एक दुष्ट रावण को मारे ।
दोनों हैं दुःख के हर्ता और दोनों बल के धाम ।। चाहे...
एक राधिका के संग राजै, एक जानकी संग विराजै ।
चाहे राधेश्याम कहो या बोलो सीताराम ।। चाहे...
दोनों हैं घट-घट के बासी, दोनों हैं आनन्द प्रकाशी ।
राम श्याम के दिव्य भजन से मिलता है आराम ।। चाहे...

॥ हरि नाम सुमर सुखधाम ॥

हरि नाम सुमर सुखधाम, जगत में जीना दो दिन का ।। टेर।।
सुन्दर काया देख लुभाया, गरव करै तन का ।
गिर गई देह बिखर गई काया, ज्यूँ माला मनका ।।१।।
सुन्दर नारी लगै पियारी, मौज करै मन का ।
काल बली का लाग्या तमाचा, भूल जाय ठन का ।।२।।
झूठ कपट कर माया जोड़ी, गरब करै धन का ।
सब ही छोड़कर चल्या मुसाफिर वास हुआ वन का ।।३।।
यो संसार स्वप्न की माया, मेला पल छिन का ।
ब्रह्मानन्द भजन कर बन्दे, नाथ निरंजन का ।।४।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

।। धन के गुलाम मत बनो ।।

सन्त कहें हरि भजन करो रे, लोग मरे रूपियाँ ताई ।
हाय रूपैया, हाय रूपैया, आग लगी सब जग माहीं ।। टेर।।
खाऊँ- खाऊँ करे रात दिन, धरम करम सब छोड़ दिया ।
नाशवान का लिया सहारा, हरि से नाता तोड़ दिया ।
उपजा दोष यहीं सो सारा फल लागे अति दुखदाई ।। हाय..
घर त्यागी क्या गृहस्थी देखो, लोलुपता सबके लागी ।
अन्न वस्त्र जल दाता देवे, भीतर भूख नहीं भागी ।
सारा धन मुझको मिल जावे, मिटे नहीं यह मँगताई ।। हाय..
बड़ा आदमी कौन जगत में, धन से कांटे पर तोले ।
धन लेकर बेटा परणावे, लेण - देण पहले खोले ।
स्वारथ अन्धा हो गया जबसे, आगे की सूझत नाहीं ।। हाय..
मान बड़ाई धन कुटुम्ब के, सुख में इतना फूल गया ।
मैं हूं कौन ? कहाँ से आया ? क्या करना ? यह भूल गया ।
जैसे फिरे बैल घाणी का, आँखों पर पट्टी छाई ।। हाय..
अगणित पाप करे धन के हित, बुरा-बुरा व्यवहार करे ।
झूठ कपट छल धोखेबाजी, चोरी का व्यापार करे ।
मरते समय पाप संग जावे, मार पड़े जमपुर माहीं ।। हाय..
असत् वस्तु का छोड़ सहारा, सुख की आशा तजिये रे ।
नाशवान तो नाश करेगा, अविनाशी को भजिये रे ।
नर-तन जनम सुफल हो जावे, सतसंगत करिये भाई ।। हाय..

फूलइ फरइ न बेत जदपि सुधा बरषहिं जलद।
मूरूख हृदयँ न चेत जौं गुर मिलहिं बिरंचि सम ।।

यद्यपि बादल अमृत सा जल बरसाते हैं, तो भी बेत फूलता-फलता नहीं। इसी प्रकार चाहे ब्रह्मा के समान भी ज्ञानी गुरू मिलें, तो भी मूर्ख के हृदय में चेत (ज्ञान) नहीं होता।

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

॥ मानुष-जनम-हीरा ॥

दोहा – मानुष तन दुर्लभ है, होय न दूजी बार ।
पक्का फल जो गिर पड़े, बहुरी न लागे डार ॥

मैने मानुष जनम तुझको हीरा दिया,
जो तूँ वृथा गँवाये तो मैं क्या करूँ ॥
मूल वेदों का सब कुछ बता ही दिया,
जो समझ में न आये तो मैं क्या करूँ ॥
अन्न दूध आदि खाने को सब कुछ दिया,
मेवा मिष्टान्न भी मैने पैदा किया ॥
फिर भी निर्दयी हो जीव को सताने लगा,
जो तू हिंसा कमाये तो मैं क्या करूँ ॥
दीन दुखियों के दिल को दुःखाने लगा,
रात दिन पाप में मन लगाने लगा ॥
तू ने जैसा किया वैसा पाने लगा,
आज आँसू बहाये तो मै क्या करूँ ॥
नाम मेरा तेरा पाप भी काट दे,
जो तू पापों को करने से मन डाँट दे ॥
मैं चाहता हूँ आ जा तू मेरी शरण,
जो तू ही न आये तो मैं क्या करूँ ॥
छोड़ कर छल - कपट आजा मेरी शरण,
कट जाये सहज तेरा आवागमन ॥
जो कोई ना माने सद्गुरू वचन,
यूँ ही चक्कर लगाये तो मैं क्या करूँ ॥

काम क्रोध मद लोभ सब नाथ नरक के पंथ।
सब परिहरि रघुबीरहि भजहु भजहिं जेहि संत॥

हे नाथ ! काम, क्रोध, मद और लोभ - ये सब नरक के रास्ते हैं। इन सबको छोड़कर श्रीरामचन्द्रजी को भजिये, जिन्हें संत (सतपुरूष) भजते हैं।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

॥ सीताराम सीताराम कहिये ॥

सीताराम, सीताराम, सीताराम कहिये ।
जाहि विधि राखे राम ताहि विधि रहिये ।।टेर।।

मुख में हो राम नाम, राम सेवा हाथ में ।
तू अकेला नाहीं प्यारे, राम तेरे साथ में ।
विधि का विधान जान, हानी लाभ सहिये ।
जाहि विधि राखे राम ताहि विधि रहिये ।।१।।

किया अभिमान तो फिर मान नहीं पायेगा ।
होगा प्यारे वही जो श्री रामजी को भायेगा ।
फल आशा त्याग शुभ कर्म करते रहिये ।
जाहि विधि राखे राम, ताहि विधि रहिये ।।२।।

जिन्दगी की डोर सौंप, हाथ दीनानाथ के ।
महलों में राखे चाहे झोपड़ी में वास दे ।
धन्यवाद निर्विवाद, राम राम कहिये ।
जाहि विधि राखे राम, ताहि विधि रहिये ।।३।।

आशा एक रामजी से, दूजी आशा छोड़ दे ।
नाता एक रामजी से, दूजा नाता तोड़ दे ।
साधु-संग, राम-रंग, अंग अंग रंगिये ।
काम-रस त्याग प्यारे, राम रस पगिये ।।४।।

सीताराम, सीताराम, सीताराम कहिये ।
जाहि विधि राखे राम ताहि विधि रहिये ।।

जो आपन चाहै कल्याना। सुजसु सुमति सुभ गति सुख नाना।।
सो परनारि लिलार गोसाईं। तजउ चउथि के चंद कि नाईं।।

जो मनुष्य अपना कल्याण, सुन्दर यश, सुबुद्धि, शुभ गति और नाना प्रकार के सुख चाहता हो, वह हे स्वामी! पर स्त्री के ललाट को चौथ के चन्द्रमा की तरह त्याग दे अर्थात् जैसे लोग चौथ के चन्द्रमा को नहीं देखते, उसी प्रकार पर स्त्री का मुख ही न देखे।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

।। राम नाम रस पीजे मनवाँ ।।

राम नाम रस पीजे मनवाँ, रामनाम रस पीजे ।
राम नाम है बड़ा सुखदाई, लगे न पैसा कौड़ी पाई,
विष अमृत कर लीजे मनवाँ.....राम

जात पात ना पूछे कोई, हरि को भजे सो हरि का होई,
तज कुसंग को दीजे मनवाँ....राम

सतसंग में दौड़ के जाओ, संत जनों के दर्शन पाओ,
वश में उन्हें कर लीजे मनवाँ....राम

जीवन का आधार यही है, नैया की पतवार यही है,
नाम हरि का लीजे मनवाँ....राम

नाच दिखाओ मीरा जैसा प्रेम दिखाओ राधा जैसा,
तब हरि दर्शन कीजे मनवाँ....राम

।। प्राणी हरिनाम बिना ।।

दोहा – तन तम्बूरा तार मन, अद्भुत है ये साज ।
हरि के कर से बज रहा, हरि की है आवाज ।।१।।
अमृतमय प्रभु भजन से, मिले परम विश्राम ।
हम सब मिलि सुमिरन करें, कोटिश करें प्रणाम ।।२।।

सुमिरन करले मेरे मना, तेरी बीती जात उमर हरि नाम बिना।। टेर।।
पंछी पंख बिना, हस्ती दन्त बिना, नारी तो देखो भला पुरूष बिना।
वैश्या-पुत्र पिता बिन हीना, वैसे ही प्राणी हरि नाम बिना ।।
देही नैन बिना, रैन चन्द्र बिना, धरती तो देखो भला मेघ बिना ।
जैसे पण्डित वेद विहिना, तैसे ही प्राणी हरि नाम बिना ।।
कूप नीर बिना, धेनु क्षीर बिना, मन्दिर देखो भला दीप बिना ।
जैसे तरूवर फल बिन हीना, वैसे ही प्राणी हरि नाम बिना ।।
काम क्रोध मद लोभ निवारो, छोड़ो विरोध भाई सन्त जना ।
कह "नानक शाह" सुनो भगवन्ता, या जग में कोई नहीं अपना ।।

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

॥ राम से बड़ा राम का नाम ॥

राम से बड़ा राम का नाम,
अन्त में निकला यही परिणाम, राम से बड़ा राम का नाम ॥
सुमरिये नाम रूप बिन देखे, कौड़ी लगे न लगे छदाम ।
नाम के बाँधे बँध आयेंगे, आखिर एक दिन राम ॥
नामी को चिन्ता रहती है, नाम न हो बदनाम ।
द्रोपद्री ने जब नाम पुकारा, झट आ गये घनश्याम ॥
जिस सागर को बिना सेतु के, लाँघ सके ना राम ॥
लांघ गये हनुमान उसी को, लेकर राम का नाम ॥
वो अभिमानी डूब जायेंगे, जा मुख नहीं है राम ।
वो पत्थर भी तर जायेंगे, लिखा जहाँ श्री राम ॥

॥ मन में राम तन में राम ॥

तेरे मन में राम तन में राम, रोम रोम में राम रे
राम सुमिर ले ध्यान लगा ले छोड़ जगत के काम रे...
माया में तू उलझा उलझा दर-दर धूल उड़ाये
अब करता क्यों मन भारी जब माया साथ छुड़ाये
दिन तो बीता दौड़ धूप में ढल जाए ना शाम रे...
तन के भीतर पांच लुटेरे डाल रहे हैं डेरा
काम क्रोध मद लोभ मोह ने मुझको ऐसा घेरा
भूल गया तू राम रटन भूला पूजा का काम रे...
बचपन बीता खेल खेल में भरी जवानी सोया
देख बुढ़ापा सोचे अब तू क्या पाया क्या खोया
देर नहीं है अब भी बन्दे ले ले उसका नाम रे...

जिय बिनु देह नदी बिनु बारी। तैसिअ नाथ पुरूष बिनु नारी।
नाथ सकल सुख साथ तुम्हारें। सरद बिमल बिधु बदनु निहारें॥

जैसे बिना जीव के देह और बिना जल के नदी, वैसे ही हे नाथ ! बिना पुरूष के स्त्री है। हे नाथ ! आपके साथ रहकर आपका शरद-पूर्णिमा के निर्मल चन्द्रमा के समान मुख देखने से मुझे समस्त सुख प्राप्त होंगे।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

॥ रटे जा राधे राधे.... ॥

दोहा – राधे राधे रटत ही, सब व्याधा मिट जाय ।
कोटि जनम की आपदा, नाम लेत कटि जाय ॥

श्री वृन्दावन-धाम अपार रटे जा राधे-राधे ।
भजे जा राधे - राधे ! कहे जा राधे - राधे ॥१॥

वृन्दावन गलियाँ डोले, श्री राधे-राधे बोले ।
वाको जनम सफल हो जाय, रटे जा राधे-राधे ॥२॥

या ब्रज की रज सुन्दर है, देवन को भी दुर्लभ है।
मुक्ता रज शीश चढ़ाय; रटे जा राधे-राधे ॥३॥

ये वृन्दावन की लीला, नहीं जाने गुरू या चेला ।
ऋषि-मुनि गये सब हार, रटे जा राधे-राधे ॥४॥

वृन्दावन रास रचायो, शिव गोपी रूप बनायो ।
सब देवन करें विचार, रटे जा राधे-राधे ॥५॥

जो राधे-राधे रटतो, दुःख जनम-जनम को कटतो ।
तेरो बेड़ो होतो पार, रटे जा राधे-राधे ॥६॥

जो राधे-राधे गावे, सो प्रेम पदारथ पावे ।
भवसागर होवें पार, रटे जा राधे-राधे ॥७॥

जो राधा नाम न गायो, सो बिरथा जनम गँवायो ।
वाको जीवन है धिक्कार, रटे जा राधे-राधे ॥८॥

जो राधा-जनम न होतो, रसराज विचारो रोतो ।
होतो न कृष्ण अवतार, रटे जा राधे-राधे ॥९॥

दीप सिखा सम जुबति तन मन जनि होसि पतंग।
भजहि राम तजि काम मद करहि सदा सतसंग॥

युवती स्त्रियों का शरीर दीपक की लौ के समान है, हे मन ! तू उसका पतंगा न बन। काम और मद को छोड़कर श्रीरामचन्द्रजी का भजन कर और सदा सत्संग कर।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

।। गोपाला तेरा प्यारा नाम है ।।

श्री राधे गोविन्दा, गोपाला तेरा प्यारा नाम है।
गोपाला तेरा प्यारा नाम है, नन्दलाला तेरा प्यारा नाम है ।। टेर।।
मोर मुकुट माथे तिलक विराजे, गल वैजन्ती माला ।
कोई कहे वसुदेव के नन्दन, कोई कहे नन्दलाला।।१।।
जमुना किनारे कृष्ण कन्हैया, मुरली मधुर बजावे ।
ग्वाल बाल के संग में कान्हा, माखन मिश्री खावे ।।२।।
चुरा-चुरा नित माखन खाकर, माखन चोर कहाये ।
वृन्दावन में रास रचा कर, गोपियन के मन भाये ।।३।।
अर्जुन का रथ तुमने हाँका, भारत भई लड़ाई ।
नाम को लेकर विष को पी गई, देखो मीरा बाई ।।४।।
द्रोपदी ने जब तुम्हें पुकारा, साड़ी आन बढ़ाई ।
भक्तों के खातिर आप बने, प्रभु आकर नन्दा नाई ।।५।।
जल में गज को ग्राह ने घेरा, जल में चक्र चलाये ।
जब-जब भीड़ पड़ी भक्तों पर, नंगे पावों आये ।।६।।
दुर्योधन के मेवा त्यागे, साग बिधुर घर खाये ।
ऐसे प्रेम पुजारी प्रभुजी, भक्तों के मन भाये ।।७।।
इन्द्र कोप कियो ब्रज ऊपर, नख पर गिरवर धार्यो ।
माता पिता को बन्दी छुड़ाकर मामा कंस को मार्यो ।।८।।
नरसी के सब कारज सारे, मुझको मत विसरायो ।
जन्म-जन्म का तेरा सेवक, तेरा ही नाम पुकार्यो ।।९।।
श्री राधे गोविन्दा, गोपाला तेरा प्यारा नाम है ।
गोपाला तेरा प्यारा नाम है, नन्दलाला तेरा प्यारा नाम है ।।

हरि व्यापक सर्वत्र समाना। प्रेम तें प्रगट होहिं मैं जाना।।
देस काल दिसि बिदिसिद्ध माहीं। कहउ सो कहाँ जहाँ प्रभु नाहीं।।

मैं तो यह जानता हूँ कि भगवान सब जगह व्यापक हैं। प्रेम से वे प्रकट हो जाते हैं। देश, काल, दिशा, विदिशा में बताओ, ऐसी जगह कहाँ है, जहाँ प्रभु न हों।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

॥ श्याम खिवैया ॥

(तर्ज – ओ नन्हें से फरिश्ते....)

दोहा – टूटी की बूटी नहीं, तो भज श्री नन्दकुमार ।
कुण सँभाले मोहन बिन, नैया की पतवार ॥

आजा मेरे कन्हैया,
बिन माँझी के सहारे, डूबेगी मेरी नैया ॥टेर॥
बीच भँवर में नैया, बन जाओ श्याम खिवैया-२
॥ आजा मेरे कन्हैया....
बैठे हो आप ऐसे, सुनता नहीं हो जैसे,
नैया हमारी मोहन, उतरेगी पार कैसे,
तुझे क्या पता नहीं है, मझधार में पड़े हैं ॥१॥
मेहनत से हमने अपनी, नैया थी इक बनाई,
लेकिन भँवर में मोहन, कोशिश न काम आई,
हारे हैं हम तो जब भी, तूफानों से लड़े हैं ॥२॥
इन्सान क्या है मोहन, बेबस सा एक खिलौना ।
होता वही है हरदम, लिखा है जो भी होना ।
किस्मत के हाथ शायद, भगवान से बड़े हैं ॥३॥
पतवार खेते – खेते, आखिर मैं थक गया हूँ ।
शायद तू आता होगा, कुछ देर रूक गया हूँ ।
'बनवारी' बेवसी में, चुपचाप हम खड़े हैं ॥४॥

सुमति कुमति सब कें उर रहहीं । नाथ पुरान निगम अस कहहीं ।
जहाँ सुमति तहँ संपति नाना । जहाँ कुमति तहँ बिपति निदाना ॥

हे नाथ ! पुराण और वेद ऐसा कहते हैं कि सुबुद्धि (अच्छी बुद्धि) और कुबुद्धि (खोटी बुद्धि) सबके हृदय में रहती है, जहाँ सुबुद्धि है, वहाँ नाना प्रकार की सम्पदाएँ (सुख की स्थिति) रहती है और जहाँ कुबुद्धि है वहाँ परिणाम में विपत्ति (दुःख) रहती है।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

।। श्याम को कितना याद किया.... ।।

(तर्ज - फूल तुम्हे भेजा है खत में....)

शेर - ध्यान घनश्याम का दीवाना बना देता है।
बागे दुनिया को भी विराना बना देता है।।
बिहार साँवले सरकार का मेरे दिल को।
कभी गोकुल कभी बरसाना बना देता है।।

श्याम हमारे दिल से पूछो, कितना तुमको याद किया ।
याद में तेरी मुरली वाले, जीवन यूँ ही गुजार दिया ।।टेर।।

देखी तेरी भोली सूरत, हम भी धोखा खा ही गये ।
तेरी मोहन मीठी-मीठी, बातों में हम आ ही गये ।
हार गये जीवन में सब कुछ, फिर भी तेरा नाम लिया ।।१।।

करता हूँ मैं कोशिश मोहन, याद कभी भी ना आवो ।
हो सके तो तुम भी मोहन, मेरे दिल से निकल जावो ।
भूल हुई तुझे दिल में बैठाया, इस दिल से लाचार हुआ ।।२।।

बाहर से कुछ और हो मोहन, भीतर से कुछ और हो तुम ।
सीखा है बस दिल को चुराना, जाने कैसे चोर हो तुम ।
पछताता हूँ 'बनवारी' अब, क्यूँ तेरा एतबार किया ।।३।।

।। पनघट पे नन्दलाल ।।

मोहे पनघट पे नन्दलाल छेड़ गयो रे
मोरी नाजुक कलइयां मरोड़ गयो रे, मोहे.....
कंकरी मोहि मारी गगरिया फोड़ डारी
मोरी साड़ी अनाड़ी भिगोय गयो रे, मोहे.....
नैनों में जादू किया, जियरा मोह लिया
मोरा घुंघटा नजरियों से तोड़ गयो रे मोहे.....
मोरी नाजुक कलइयां मोड़ गयो रे

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

॥ भजन बिना बावरे ॥

दोहा – रात गँवायो सोय कर, दिवस गँवायो खाय ।
हीरा जनम अमोल सा, कौड़ी बदले जाय ॥

तू ने हीरो सो जनम गँवायो, भजन बिन बावरे ।।टेर।।
कदे न तू सतसंगत कीन्ही, कदे न हरि गुण गायो ।
मचि - पचि मरियो बैल की नाहीं, सोय रह्यो उठ खायो ।।१।।
यो संसार हाट बनिये की, जग सौदा ले आयो ।
चतुर माल तो दूनो कीन्हो, मूरख मूल गँवायो ।।२।।
यो संसार फूल सेमर को, सूवो देख लुभायो ।
मारी चोंच निकल गई रूई, सिर धुनि धुनि पछितायो ।।३।।
यो संसार माया को लोभी, ममता महल चिनायो ।
कहत "कबीर" सुनो भई साधो, हाथ कछु नहीं आयो ।।४।।

॥ श्याम नाम बोल तू... ॥

(तर्ज – धीरे धीरे बोल कोई सुन ना ले)

श्याम नाम बोल तू मेरे मना, मेरे मना, तू मेरे मना,
इस तन का नहीं ठिकाना है, तेरे साथ यही तो जाना है ।।टेर।।
लख चौरासी योनि में भरमाया है, बड़े भाग ये मानव तन पाया है ।
याद कर, तूने क्या कहा, भूल ना उस कौल को,
गर आवागमन मिटाना है, तेरे साथ .... ।।१।।
बचपन तो माँ की ममता में बीत गया, यौवन तो तिरिया ने छीन लिया ।
चेतकर, अभी समय है, मन लगा, हरि भजन में,
तुझे आज यही समझाना है, तेरे साथ .... ।।२।।
चार दिनों की ये जिन्दगानी तेरी, करता है तो करले अब ना कर देरी ।
नाम में बड़ी शक्ति है, सच्ची तेरी, यदि भक्ति है ।
ये अनमोल खजाना है, तेरे साथ .... ।।३।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

।। मुक्ति भजन (अंतिम इच्छा) ।।

दोहा – कागा सब तन खाइयो, चुन चुन खाइयो माँस ।
दो नैना मत खाइयो, प्रभु मिलन की आस ।।

इतना तो करना स्वामी, जब प्राण तन से निकले ।
गोविन्द नाम लेकर, फिर प्राण तन से निकले ।।१।।
श्रीगंगा जी का तट हो, यमुना का बंशी-बट हो ।
मेरा सांवरा निकट हो, जब प्राण तन से निकले ।।२।।
श्रीवृन्दावन का स्थल हो, मेरे मुख में तुलसी दल हो ।
विष्णु-चरण का जल हो, जब प्राण तन से निकले ।।३।।
सन्मुख सांवरा खड़ा हो, मुरली का स्वर भरा हो ।
तिरछा चरण धरा हो, जब प्राण तन से निकले ।।४।।
सिर सोहना मुकुट हो, मुखड़े पै काली लट हो ।
यही ध्यान मेरे घट हो, जब प्राण तन से निकले ।।५।।
केसर तिलक हो आला, मुख चन्द्र सा उजाला ।
डालूँ गले में माला, जब प्राण तन से निकले ।।६।।
कानों जड़ाऊँ बाली, लटकी लटें हैं काली ।
देखूँ छटा निराली, जब प्राण तन से निकले ।।७।।
पीताम्बरी कसी हो, होठों पै कुछ हँसी हो ।
छवि यह ही मन बसी हो, जब प्राण तन से निकले ।।८।।
पचरंगी काछनी हो, पट-पीत से तनी हो ।
मेरी बात सब बनी हो, जब प्राण तन से निकले ।।९।।
पग धो तृषा मिटाऊँ, तुलसी का पत्र पाऊँ ।
सिर चरण-रज लगाऊँ, जब प्राण तन से निकले ।।१०।।
आना अवश्य आना, राधे को साथ लाना ।
दर्शन मुझे दिखाना, जब प्राण तन से निकले ।।११।।
जब कण्ठ प्राण आवे, कोई रोग ना सतावे ।
यम दरश न दिखावे, जब प्राण तन से निकले ।।१२।।
मेरा प्राण निकले सुख से, तेरा नाम निकले मुख से ।
बच जाऊँ घोर दुःख से, जब प्राण तन से निकले ।।१३।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

उस वक्त जल्दी आना, नहीं श्याम भूल जाना ।
मुरली की धुन सुनाना, जब प्राण तन से निकले ।।१४।।
सुधि होवे नाहिं तन की, तैयारी हो गमन की ।
लकड़ी हो ब्रज-वन की, जब प्राण तन से निकले ।।१५।।
यह नेक सी अरज है, मानों तो क्या हरज है ।
कुछ आपका फरज है, जब प्राण तन से निकले ।।१६।।

।। बोलो नारायण हरि-बोलो नारायण हरि ।।

बोलो नारायण हरि ओ ! बोलो नारायण हरि ।
हंसो उड़ाज्या, काया रहज्या, धरी की धरी ।। टेर।।
भाई-बन्धु, कुटुम्ब-कबीलो, ना कोई संगी-साथी ।
निमड़्याँ तेल दिवो बुत जावै, काम ना आवे बाती ।
कइयाँ टलसी वा घड़ी ... ।। हंसो...
नीका नीका दिन जीवन का, ऐला मतना खोवै ।
मालिक बैठ्यो दूर तनै, निर्गुण चश्मे से जौवे ।
सुधि कैंया बिसरी ... ।। हंसो...
सोवण में कोई सार नहीं है, चेतो करले भाई ।
चाण-चुकी सी आय दबोचे, डोले काल बिलाई ।
बावरे बणाले बिगड़ी ... ।। हंसो...
नैणा रे धोरां से भाया, सींच प्रीत की क्यारी ।
जनम जनम को साथी करले, सांवरिया सूँ यारी ।
वो ही तेरो जिगरी ... ।। हंसो...
श्याम बहादुर शरण श्याम की, दाता का गुण गावे ।
हो ज्यासी भवपार कोई जो सुन्दर श्याम रिझावे ।
या ही जाण ले खरी ... ।। हंसो...

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

।। तेरो जनम सुधर जावैगो ।।

करले हरि चरण से प्यार, धर ले हरि शरण को द्वार ।
तेरो जनम सुधर जावैगो, मन मूरख तेरो जनम ... ।। टेर।।
मोह माया मँ डूब्योड़ो तू, झूठो थूक बिलोवै ।
माटी क ही मोल बावला, मिनखा जूणी खोवै ।
मिनखा जूणी है दिन चार, मतना खोवै सोच विचार ।। तेरो..
लख चौरासी भोग्याँ पाछै, मिनखा जूणी पाई ।
हरि भजन के बिना बावला, यूँ ही व्यर्थ गँवाई ।
करले सत्संगत से प्यार, भरले भक्ति को संचार ।। तेरो..
के लेकर तू आयो जग में, के लेकर तू जासी ।
मुट्ठी बांध्या आयो जग में, हाथ पसार्‌याँ जासी ।
अब तो मृग तृष्णा नै मार, या तो है खाँडै की धार ।। तेरो..
अरे बावला बड़े जतन से, तन को मैल छुड़ावै ।
हरिनाम है ऐसो निर्मल, मन को मैल छुड़ावै ।
बोले दास 'रवि' इकबार, समझो हरिनाम को सार ।। तेरो..

।। करता रहूँ गुणगान ।।

करता रहूँ गुणगान, मुझे दो ऐसा वरदान ।
तेरा नाम ही लेते-लेते, ओ ऽ ऽ इस तन से निकले प्राण ।।
तेरी दया से ऐ मनमोहन, मैंने ये नर-तन पाया ।
तेरी सेवा में बाधायें, डाले जग की मोह माया ।
फिर भी अरज करता हूँ - २, हो सके तो देना ध्यान ।।
राधा मीरा नरसी जैसी, दुःख सहने की शक्ति दो ।
विचलित न हूँ पथ से, ऐसी मुझको भक्ति दो ।
तेरी ही सेवा में हो - २, इस जीवन की शाम ।।
क्या मालूम कब कौन किस घड़ी तेरा बुलावा आ जाये ।
मेरे मन की इच्छा, मेरे मन में ही रह जाये ।
मेरी इच्छा पूरी करना - २, मेरे मनमोहन घनश्याम ।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

॥ अरदास हमारी है ॥

अरदास हमारी है, आधार तुम्हारा है ।
स्वीकार करो बाबा, प्रणाम हमारा है ।।
नैनों में रमे हो तुम, मेरे दिल में बसे हो तुम ।
तुझे पल भी ना बिसराऊँ, इस तन में रमे हो तुम ।
मत मुझसे बिछुड़ जाना, ये दास तुम्हारा है ।।
बिन सेवा किये तेरी, मुझे चैन न आता है ।
बिन ज्योति लिये तेरी, मेरा मन धड़काता है ।
होठों पे रहे तेरा, इक नाम तुम्हारा है ।।
मेरी जीवन नैया को, तेरा ही सहारा है ।
तुम मात पिता मेरा और सतगुरू प्यारा है ।
नैया का खिवैया तू, तू कृष्ण हमारा है ।।
अरजी स्वीकार करो, भवसागर पार करो ।
सिर हाथ फिरा करके, मेरा उद्धार करो ।
गिरते को उठाना तो, प्रभु काम तुम्हारा है ।।

॥ भगवान तुम्हारे मन्दिर में ॥

भगवान तुम्हारे मन्दिर में, मैं तुझे रिझाने आया हूँ ।
वाणी में तनिक मिठास नहीं, पर विनय सुनाने आया हूँ ।।
प्रभु का चरणामृत लेने को, है पास मेरे कोई पात्र नहीं ।
आँखों के दोनों प्यालों में, कुछ भीख माँगने आया हूँ ।।
तुमसे लेकर क्या भेंट धरूँ, भगवान आपके चरणों में ।
मैं भिक्षुक हूँ, तुम दाता हो, सम्बन्ध बताने आया हूँ ।।
सेवा की वस्तु नहीं कोई, फिर मेरा हृदय देख लेना ।
हाँ रोकर आज आँसुओं का, मैं हार चढ़ाने आया हूँ ।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

॥ प्रभु भजले रे प्राणी ॥

प्रभु भजले रे प्राणी, जगत में कोई नहीं है तेरा ।।
भाई, बन्धु, कुटुम्ब-कबीला, कोई नहीं है तेरा ।
मतलब की है दुनिया सारी, चिड़िया रैन बसेरा ।
न जाने रे पंछी कल तेरा होगा कहाँ सबेरा ।। प्रभु.....
पल-पल बीती जाय उमर तेरी, बैठा है तू निश्चिंता ।
वेद पुराण कबहूँ नहीं गायो, रामायण और गीता ।
चार दिनों की रात चाँदनी, आखिर वही अंधेरा ।। प्रभु.....
रैन दिवस पच पच कर तूने, महल अटारी बनाया ।
सब कुछ छोड़ चला तू पंछी, काम ना तेरे आया ।
धन दौलत तेरा यहीं रहेगा, हो जंगल में डेरा ।। प्रभु.....
कंचन सी ये काया तेरी, निरख निरख सुख पाया ।
ना कोई तेरा ना कोई मेरा, झूठी जग की माया ।
बावलिया तुझे ज्ञान हुआ जद, काल ने आकर घेरा ।। प्रभु.....

॥ दीनों के नाथ ॥

देखा है हमने ऐसा समाँ वर्षों बाद में ।
दीनों के नाथ बैठे हैं, दीनों के सामने ।।टेर।।
दर्शन मिला है आपका, इसका शुक्रिया ।
हम हैं तुम्हारे सामने, तुम हो हमारे सामने ।।१।।
आया ना कुछ भी माँगने, इक मौका दीजिये ।
कुछ कहना चाहता हूँ, प्रभु सबके सामने ।।२।।
कैसा किया मजाक, यहाँ देखो नसीब ने ।
डूबी हमारी नैया प्रभु, तेरे ही सामने ।।३।।
दीनों के नाथ तुम भी, अगर कुछ ना कर सके ।
'बनवारी' फिर मैं जाऊँ, प्रभु किसके सामने ।।४।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

॥ मौत की शहजादी ॥

दोहा – आगाह है अपनी मौत से, कोई बसर नहीं ।
सामान सौ वर्ष का है, पल की खबर नहीं ॥

सज धज के जिस दिन मौत की शहजादी आयेगी,
ना सोना काम आयेगा, ना चाँदी काम आयेगी ।।टेर।।
छोटा सा तू, कितने बड़े, अरमान हैं तेरे,
मिट्टी का तू, सोने के समान हैं तेरे,
मिट्टी की काया मिट्टी में जिस दिन समायेगी ।।१।।
पंछी है तू, पर तोड़ पिंजड़ा, छोड़ के उड़ जा,
माया महल के सारे बन्धन, तोड़ के उड़ जा,
दिल की धड़कन में मौत जिस दिन गुनगुनायेगी ।।२।।
कर्मो का था प्रताप, तू ने पाया मानव तन,
अब पाप में, डूबा है क्यों, मूरख तेरा ये मन,
ये पाप की नैया तुझे, एक दिन डुबायेगी ।।३।।

॥ इस योग्य हम कहाँ हैं ॥

इस योग्य हम कहाँ हैं, भगवन तुम्हें मनायें ।
फि भी मना रहे हैं, शायद तू मान जाये ।।टेर।।
जब से जनम लिया है, विषयों ने हमको घेरा ।
ईर्ष्या और वासना ने, किया शरीर में डेरा ।
सद्बुद्धि को अहम ने हरदम रखा दबाये ।।१।।
जग में जहाँ भी देखा, बस एक ही चलन है ।
एस दूसरे के सुख से, खुद को बड़ी जलन है ।
कर्मों का लेखा जोखा, कोई समझ न पाये ।।२।।
जब कुछ न कर सके, तो तेरी शरण में आये ।
अपराध मानते हैं, झेलेंगे सब सजायें ।
बस दरश तू दिखा दे, कुछ और हम न चाहें ।।३।।
निश्चय ही हम पतित हैं, लोभी हैं स्वार्थी हैं ।
तेरा नाम जब पुकारे, माया पुकारती है ।
सुख भोगने की इच्छा, कभी तृप्त हो न पाये ।।४।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

॥ जोत से जोत जगाते चलो ॥

जोत से जोत जगाते चलो, प्रेम की गंगा बहाते चलो।
राह में आये जो दीन दुःखी, सबको गलेसे लगाते चलो।।
जिसका न कोई संगी साथी, ईश्वर है रखवाला,
जो निर्धन है जो निर्बल है, है वो प्रभु का प्यारा,
प्यार के मोती लुटाते चलो, प्रेम की गंगा बहाते चलो।।१।।
आशा टुटी ममता रूठी, छूट गया है किनारा,
बन्द करो मत द्वार दया का, दे दे कुछ तो सहारा,
दीप दया का जलाते चलो प्रेम की गंगा बहाते चलो।।२।।
छाया है चारों ओर अँधेरा, भटक गई हैं दिशायें
मानव बन बैठा है दानव, किसको व्यथा सुनावें
धरती को स्वर्ग बनाते चलो, प्रेम की गंगा बहाते चलो।।३।।

॥ कुसंगत म जाये मत ना... ॥

सुण सुण ऐ म्हारी काया री लाडली,
आतमा के दाग लगाये मत ना, कुसंगत में जाये मत ना।।
या काया म्हारी सोने बरणी २
सोने म खोट मिलाये मत ना, कुसंगत में जाये मत ना।।
या काया म्हारी हीरे बरणी २
हीरे म कंकर मिलाये मत ना, कुसंगत में जाये मत ना।।
या काया म्हारी मोती बरणी २
मोती को पाणी गँवाये मत ना, कुसंगत में जाये मत ना।।
या काया म्हारी हंसे बरणी २
हंसे नै बगुलो बणाये मत ना, कुसंगत में जाये मत ना।।
या काया म्हारी अमृत बरणी २
अमृत म जहर मिलाये मत ना, कुसंगत में जाये मत ना।।
कहत कबीर सुणो भाई साधो २
सत्संग सूँ मोह हटाये मत ना, कुसंगत में जाये मत ना।।

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

॥ लकड़ी : जीवन मरण का साथ ॥

ए लकड़ी ! तू बन लकड़ी अब देख तमाशा लकड़ी का ।
अब देख तमाशा लकड़ी का, अब देख तमाशा लकड़ी का ॥
गर्भवास से बाहर निकला झूले पालना लकड़ी का ।
पाँच वर्ष की उमर हुई तब हाथ खिलौना लकड़ी का ॥
बीस बरस की उमर भई तैयारी हुयी ब्याह करने की ।
बाँध सेवरा घोड़ी चढ़ गया तोरण मार्‍या लकड़ी का ॥
चालीस बरस की उमर हुई फिकर लगी है बुढ़ापे की ।
साठ बरस की हुई उमर तब हाथ सहारा लकड़ी का ॥
अस्सी बरस की उमर हुई तैयारी हुई अब चलने की ।
चार जना मिल तुझे उठाया विमान बनाया लकड़ी का ॥
गंगा तट पर जाकर रखा स्नान कराया गंगा का ।
नीचे लकड़ी उपर लकड़ी चिता बनाया लकड़ी का ॥
आधम आध शरीर जला तब ठोकर मारा लकड़ी का ।
होरी जैसे फूँक दियो फिर टुकड़ा डाला लकड़ी का ॥
कहत 'कबीर' सुनो भाई साधो खेल बना सब लकड़ी का ।
ढ़ोलक लकड़ी बाजा लकड़ी सितार बना है लकड़ी का ॥
ऐ लकड़ी तू बन लकड़ी.......

हरि अनंत हरि कथा अनंता। कहहिं सुनहिं बहुबिधि सब संता॥
रामचन्द्र के चरित सुहाए। कलप कोटि लगि जाहिं न गाए॥

श्री हरि अनन्त हैं (उनका कोई पार नहीं पा सकता) और उनकी कथा भी अनन्त है, सब सन्त लोग उसे बहुत प्रकार से कहते-सुनते है। श्रीरामचन्द्र जी के सुन्दर चरित्र करोड़ कल्पों में भी गाये नहीं जा सकते।

॥ सूरदास पद ॥

मैया मोरी मैं नहीं माखन खायो।
भोर भयो गैयन के पाछे, मधुवन मोहि पठायो।
चार पहर वंशीबट भटक्यो, साँझ परे घर आयो।।
मैं बालक बहिंयन को छोटो, छींको केहि विधि पायो।
ग्वाल बाल सब बैर परे हैं, बरबस मुख लपटायो।।
तू जननी अति भोरी, इनके कहे पतियायो।
जिय तेरे कछु भेद उपजाहै, जानि परायो जायो।।
यह लो अपनी लकुटि कमरिया, बहुत ही नाच नचायो
"सूरदास" तब बिहँसि जसोदा, लै उर कंठ लगायो।।

प्रभु मेरे अवगुण चित न धरो।
समदरसी है नाम तिहारो, चाहे तो पार करो।।१।।
इक लोहा पूजामें में राखत, इक घर बधिक परो।
पारस गुण अवगुण नहिं चितवे, कंचन करत खरो।।२।।
एक नदिया एक नार कहावत, मैलो हि नीर भरो।
जब मिलिकै दोउ एक बरन भए, सुरसरि नाम परो।।३।।
एक जीव एक ब्रह्म कहावत, 'सूर' श्याम झगरो।
अबकी बेर मोहि पार उतारो, नहिं पत जात टरो।।४।।

अब मैं नाच्यो बहुत गोपाल।
काम क्रोध को परिहरि चोलना, कंठ विषय की माल।।१।।
महा मोह के नुपुर वाजत, निन्दा शब्द रिशाल।
भरम भर्‌यो मम भयो पखावज चलत कुसंगत चाल।।२।।
तृसना नाद करत घट भीतर, नाना विधि दै ताल।
माया को फेंटा बाँध्यो, लोभ तिलक दै भाल।।३।।
कोटिक कला काँछि देखराई जल थल सुधि नहीं काल।
'सूरदास' सबै अविधा, दूरि करौ नंदलाल।।४।।

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

॥ मीरा-पद ॥

करम गत टारे नाहिं टरे।। टेक।।
सतवादी हरिचंद से राजा, (सो तो) नीचघर नीर भरे,
पाँच पाँडु अरू कुन्ती द्रोपदी, हाड हिमालै गरे ।
जग्य कियो बलि लेण इन्द्रासन, सो पाताल धरे,
"मीरा" के प्रभु गिरधर नागर, बिख से अमृत करे।।

हे री मैं तो दरस दीवानी मेरो दरद न जाणै कोय,
घायल की गति घायल जाणै जो कोई घायल होय।
जौहरि की गति जौहरि जाणै कि जिन जौहर होय,
सूली उपर सेज हमारी सोवण किस विध हौय।
गगन मंडल पर सेज पिया की किस विध मिलणा होय,
दरद की मारी वन-वन डोलूँ बैद मिला नहीं कोय।
मीरा की प्रभु पीर मिटेगी, जद बैद साँवलिया होय।।

माई री मैं तो लियो गोविन्दो मोल।। टेर।।
कोई कहै छाने कोई कहै छुपकै, लियो री बजंता ढ़ोल।। १।।
कोई कहै मुहँघो कोई कहै सुहँघो, लियो री तराजू तोल।
कोई कहै कालो कोई कहै गोरो, लियो री अमोलक मोल।। २।।
कोई कहै घर में कोई कहै वन में, राधा के संग किलोल।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, आवत प्रेम के मोल ।। ३।।

पायो जी म्हे तो राम रतन धन पायो।
वस्तु अमोलक दी म्हारे सतगुरू, किरपा कर अपनायो।।
जनम जनम की पूँजी पाई, जग में सभी खोवायो।
खरचै नहिं कोई चोर न लेवै, दिन दिन बढ़त सवायो।।
सत की नाव खेवटिया सतगुरू, भवसागर तर आयो।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, हरख-हरख जस गायो।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

॥ मात पिता गुरू प्रभु वन्दना ॥

(तर्ज - देख तेरे संसार की हालत...)

माता, पिता, गुरू, प्रभु चरणों में, प्रणवत बारम्बार ।
हम पर किया बड़ा उपकार, हम पर किया बड़ा उपकार ।।
माता ने जो कष्ट उठाया, वह ऋण कभी न जाय चुकाया ।
अंगुली पकड़कर चलना सिखाया, ममता की दी शीतल छाया ।
जिसकी गोद में पलकर हम, कहलाते होशियार ।।१।। हम...
पिता ने हमको योग्य बनाया, कमा-कमा कर अन्न खिलाया ।
पढ़ा लिखा गुणवान बनाया, जीवन पथ पर चलना सिखाया ।
जोड़-जोड़ अपनी सम्पत्ति का, बना दिया हकदार ।।२।। हम...
सत्य ज्ञान गुरू ने दर्शाया, अन्धकार सब दूर हटाया ।
हृदय में भक्ति दीप जलाकर, हरि दर्शन का मार्ग बताया ।
बिना स्वार्थ ही कृपा करें वे, कितने बड़े उदार ।।३।। हम...
प्रभु-कृपा से नर तन पाया, संत मिलन का साज सजाया ।
बल, बुद्धि और विद्या देकर, सब जीवों में श्रेष्ठ बनाया ।
जो भी इनकी शरण में आता, कर देता उद्धार ।।४।। हम...

॥ उठ जाग मुसाफिर भोर भई ॥

उठ जाग मुसाफिर भोर भई, अब रैन कहाँ जो सोवत है ।
जो सोवत है सो खोवत है, जो जागत है सो पावत है ।।टेर।।
टुक नींद से अंखियाँ खोल जरा, और अपने प्रभु में ध्यान लगा ।
यह प्रीति करन की रीति नहीं, प्रभु जागत है, तू सोवत है ।।१।।
जो कल करना है वो आज करले, जो आज करना वो अब करले ।
जब चिड़िया ने चुग खेत लिया, फिर पछताये क्या होवत है ।।२।।
नादान युगल कर अपनी करनी, ऐ पापी ! पाप में चैन कहाँ ।
जब पाप की गठरी शीश धरी, अब शीश पकड़ क्यूँ रोवत है ।।३।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

॥ छोटी छोटी गैया ॥

छोटी छोटी गैया, छोटे छोटे ग्वाल। छोटो सो मेरो मदन गोपाल ।।
कारी कारी गैया, पिछे पिछे ग्वाल। श्याम वरण मेरो मदन गोपाल ।।
घास खावे गैया, दूध पिवे ग्वाल। माखन खावे मेरो मदन गोपाल ।।
छोटे छोटी लुकुटी, छोटे छोटे हाथ। बंशी बजाये मेरो मदन गोपाल ।।
छोटी छोटी सखियाँ, मधुबन बाग। रास रचाये मेरो मदन गोपाल ।।
छोटी सी काया, छोटे से हाथ। कंस को मार गिराये मदन गोपाल ।।
छोटी छोटी गैया, छोटे छोटे ग्वाल। छोटो सो मेरो, मदन गोपाल ।।

॥ ऐ मालिक तेरे.... ॥

ऐ मालिक तेरे बन्दे हम ऐसे हों हमारे करम
नेकी पर चलें और बदी से टलें
ताकि हंसते हुये निकले दम, ऐ मालिक....
बड़ा कमजोर है आदमी, अभी लाखों है इसमें कमी
पर तु जो खड़ा है दयालू बड़ा तेरी कृपा से धरती थमी
दिया तूने हमें जब जनम तू ही झेलेगा हम सबके गम
नेकी पर चलें और बदी से टलें
ताकि हंसते हुये निकले दम, ऐ मालिक....
ये अंधेरा घना छा रहा, तेरा इन्सान घबरा रहा
हो रहा बेखबर कुछ न आता नजर
जोर जुल्मों से टकरा रहा, सुख का सूरज छुपा जा रहा
है तेरी रोशनी में जो दम, तो अमावस को कर दे पूनम
जब जुल्मों का हो सामना, तब तुम्हीं थामना
वो बुराई करें हम भलाई करें, नहीं बदले की हो कामना
बढ़ उठे प्यार का हर कदम, और मिटे बैर का ये भरम
नेकी पर चलें और बदी से टलें,
ताकि हंसते हुए निकले दम, ऐ मालिक....

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

॥ धर्म क्या है? धर्म और सम्प्रदाय ॥

धर्म क्या है ?

धर्म का अर्थ मन्दिर या मस्जिद से नहीं है। धर्म का अर्थ कर्तव्य से है। यदि हर व्यक्ति अपने धर्म का पालन नहीं करेगा तो पूरे समाज का अस्तित्व संकट में फँस जायेगा।

कहते हैं कि नेताओं को धर्म से अलग रहना चाहिये। तो क्या बिना धर्म (कर्तव्य पालन) के ही राज्य चलेगा ?

अगर नेताओं ने, मन्त्रियों ने, आफिसरों ने धर्म पालन नहीं किया, तो पाप बढ़ जायेगा और पाप बढ़ने से उन लोगों का कुटुम्ब सहित नाश हो जायेगा। तब भगवान क्या करेगा ? उन लोगों को नीची योनियों में डाल देगा। क्योंकि उन लोगों ने दूसरों को नुकसान पहुँचाया है, धर्म के अनुसार उन लोगों ने आचरण नहीं किया है।

धर्म का अर्थ कर्तव्य : कतिमय नमूने देखिये–

बाप का बेटे के साथ क्या धर्म है, बेटे का बाप के साथ क्या धर्म है, माँ का बेटे के साथ क्या धर्म है, बेटे का माँ के साथ क्या धर्म है, पति का पत्नी के साथ क्या धर्म है, पत्नी का पति के साथ क्या धर्म है, भाई का भाई के साथ क्या धर्म है, भाई का बहन के साथ क्या धर्म है, बहन का भाई के साथ क्या धर्म है, सास का बहू के साथ क्या धर्म है, बहू का सास के साथ क्या धर्म है? नौकर का मालिक के साथ क्या धर्म है, मालिक का नौकर के साथ क्या धर्म है, शिक्षक का शिष्यों के साथ क्या धर्म है, शिष्यों का शिक्षक के साथ क्या धर्म है, पुलिस का जनता के साथ क्या धर्म है, जनता का पुलिस के साथ क्या धर्म है ? अपने देश के साथ क्या धर्म है, अपने समाज के साथ क्या धर्म है ?

ब्राह्मण का धर्म है अज्ञान का नाश करना, क्षत्रिय का धर्म है अन्याय का नाश करना, वैश्य का धर्म है अभाव का नाश करना, शूद्र का धर्म है सेवा करना। अगर हम अपने धर्म को जानकर काम करेंगे, तो हम अच्छे लोकान्तरों में जन्म लेकर सुख भोगेंगे, और अगर हम धर्म के विपरीत काम करेंगे तो कुत्ते, गधे आदि नीच योनियों में डाल दिये जायेंगे। वहाँ अपने दायरे में पड़े रहेंगे।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

उससे आगे नहीं निकल पायेंगे।

धर्म और सम्प्रदाय अलग-अलग चीज हैं

धर्म की बुनियाद प्रेम है, करूणा है, मैत्री है, अहिंसा है। धर्म मुक्त करता है, सम्प्रदाय बन्धन में डालता है। धर्म दीवारें हटाता है, सम्प्रदाय दीवारें खड़ा करता है। यही कारण है कि आज मुसलमान तो हैं लेकिन मोहम्मद साहब का भाईचारा कहाँ है? क्रिश्चन तो हैं लेकिन ईसा मसीह का प्रेम कहाँ ? जैन तो हैं, किन्तु भगवान महावीर की अहिंसा और मैत्री कहाँ है ? बौद्ध तो हैं, पर भगवान बुद्ध की करूणा कहाँ है ? सनातनी तो हैं, पर भगवान राम की मर्यादा कहाँ है ? सम्प्रदाय के लेबल लगे हैं, जीवन में धर्म कहाँ है ?

हर भक्त को डर है भगवान मुझसे रूठ न जाये।
भगवान को डर है भक्त की आस्था टूट न जाये।
पूजा-उपासना खूब चल रही है।
दान - पुण्य भी खूब धड़ल्ले से चल रहा है,
नाम सुमिरन भी जोरों से हो रहा है,
पर सवाल यह नहीं,
मैं नहीं पूछता राम का नाम कितनी बार लिया है ?
यह भी नहीं पूछता दान - पुण्य कितनी बार किया है।
मुझे तो आप यह बताएँ
धर्म और भगवान के नाम पर आज तक
इन्सान को धोखा कितनी बार दिया है ?
आज बहारों ने गुलिस्ताँ को लूटने की कोशिश की है,
और सितारों ने आसमां को लूटने की कोशिश की है।
धर्म अब सम्प्रदाय की दीवारें तोड़ इन्कलाब चाहता है,
क्योंकि ठेकेदारों ने भगवान को लूटने की कोशिश की है।
यदि सितारों ने बगावत कर दी तो अम्बर का क्या होगा?
लहरों ने बगावत कर दी तो समन्दर का क्या होगा?
धर्म का नाम लेकर औरों को दिन दहाड़े ठगने वालों,
यदि इन्सान ने बगावत कर दी तो पैगम्बर का क्या होगा?

-मुनि रूपचन्दजी

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

॥ सत्य परमात्मा है ॥

धर्म के चार पद हैं- सत्य, तप, दया और पवित्रता। इन चार चरणों में सत्य सर्वोपरि है। महाभारत में सत्यदेव राजा की कथा आती है। चंचला होने के कारण लक्ष्मी अमुक समय में आवेगी।

एक दिन सुबह जब सत्यदेव उठे तो उन्होंने घर में से एक सुन्दर स्त्री को निकलते देखा। राजा ने आश्चर्य में उस स्त्री से पूछा कि आप कौन हैं? जवाब मिला - "मेरा नाम लक्ष्मी है। अब मैं इस घर से जा रही हूँ।" तब राजा ने कहा कि आप जा सकती हैं।

लक्ष्मीजी चली गईं। उनके पीछे एक सुन्दर पुरूष को बाहर जाते देखकर राजा ने उनसे पूछा कि आप कौन हैं? उत्तर मिला - "मेरा नाम दान है। लक्ष्मी के जाने के बाद आप दान नहीं कर सकेंगे, इसलिये मैं आपका घर छोड़ रहा हूँ।" राजा ने कहा कि आप भी जा सकते हैं।

इसके बाद तीसरा सदाचार और चौथा यश पुरूष के रूप में बाहर आये। राजा के पूछने पर लक्ष्मी तथा दान के साथ जाने की कहने पर राजा ने दोनों को जाने दिया। पर पांचवाँ सत्य जब पुरूष रूप में इसी प्रकार जाने लगा, तो राजा ने हाथ जोड़ विनयपूर्वक कहा - मैंने तो आपका कभी त्याग नहीं किया। आप मेरे को किसलिये छोड़ रहे हैं ? आपके लिये लक्ष्मी, दान आदि सबका त्याग किया है। मैं आपको नहीं जाने दूँगा- आपके जाने पर मेरा सब कुछ चला जायेगा। इसलिये सत्य रह गया। सत्य घर में से बाहर नहीं आया, इसलिये बाहर गई हुई लक्ष्मी, दान, सदाचार और यश भी वापस आ गये। सत्य ही सर्वस्व है। सत्य बिना सदाचार, दान, कीर्ति, लक्ष्मी किस काम के? इसलिये घबराओ मत- जहाँ सत्य होगा, वहाँ इन सबको रहना ही पड़ेगा। सत्य परमात्मा है। सत्य प्रभु से भिन्न नहीं है। सत्य के द्वारा मनुष्य नारायण के समीप जा सकता है। सत्यमेव जयते।

सत्य एक विशाल वृक्ष है, उसकी ज्यों-ज्यों सेवा की जाती है, त्यों-त्यों उसमें अनेक फल आते हुए नजर आते हैं, उसका अन्त ही नहीं होता।

– महात्मा गाँधी

सत्य में ही नारायण हैं – सत्यनारायण

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

।। मुरलीधर गोपाल ।।

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

गोविन्द जय जय, गोपाल जय जय।
मोर मुकुट बंशीवाले की जय जय।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.
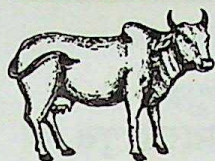
॥ गाय: हमारी माँ ॥
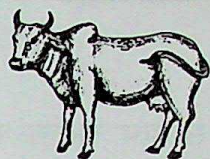
हम सबको मालूम है कि पहले भारत में , हर घर में जब भोजन बनता था, तो सबसे पहले प्रथम रोटी गौ माता के नाम से निकाल कर "गौ ग्रास" के रूप में गौ माता को खिलाई जाती थी। इसी कारण हम सभी भारतवासी खुशहाल सुख सम्पति से भरपूर और सुखी रहते थे। आज भी बहुत से हिन्दुओं के घर में ऐसा होता है। जब से घरों में, हमारे में गउओं के प्रति श्रद्धा-आस्था कम हुई है, तब से हमारे जीवन में अशान्ति रहने लग गई है। **डोंगरे जी महाराज के शब्दों में गाय बल देती है। ब्राह्मण बुद्धि देता है। गाय नहीं माँ है। माँ तो थोड़े ही दिन दूध पिलाती है, पर गाय हमेशा दूध देती है। गाय के गोबर में लक्ष्मीजी मूत्र में गंगाजी हैं। गाय सभी प्रकारेण पूजनीय है।** गाय के गोबर एवं मूत्र पर वैज्ञानिकों एवं चिकित्सकों ने भी अनुसन्धान करके स्वास्थ्य हेतु उपयोगिता पर अपनी प्रमाणिकता की मुहर लगाई है। यहाँ तक कि कैंसर के रोगी को भी गोमूत्र दिया जाता है एवं बहुत से रोगी लाभान्वित हुये हैं। गाय के दूध के बारे में तो कहना ही क्या है। "गौधन राष्ट्रीय पशु धन है। इनकी रक्षा करना हमारा परम कर्त्तव्य है।" "गौ हमारी माता है, देश धर्म का नाता है" खाली नारों से काम नहीं चलेगा, इनकी रक्षा हेतु हमें दृढ़ संकल्प लेना होगा एवं नारों को वास्तविकता में परिणित करना होगा। तभी हम भारत वासी गौभक्त कहलाने के वास्तविक अधिकारी होंगे।

बूढ़ी बेसहारा बीमार अपाहिज, गौ माता करे पुकार ।
दानी गौ प्रेमियों, पलना करो हमारी, संभव हो जिस प्रकार ॥

कैलाश चन्द्र अग्रवाल

विषय-सेवन विष है, त्याग और संयम अमृत है। क्रोध विष है, क्षमा अमृत है। कुटिलता विष है, सरलता अमृत है। क्रूरता विष है, करूणा अमृत है। देहाभिमान विष है, आत्मज्ञान अमृत है।

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

॥ गौएं करें पुकार ॥

साहित्य चेतना की दिशा में स्वयं स्वर्गीय राष्ट्रकवि मैथीलीशरण गुप्त जी ने गौ की पुकार लिखी :-

दांतो तले तृण दबाकर, गाय सभी को कह रही,
हम पशु क्या तुम हो मनुज, पर योग्य क्या तुमको यही ?
हमने माँ की तरह, है दूध पीने को दिया,
देकर कसाई को हमें, तुमने हमारा वध किया।

क्या वश हमारा है भला, हम दीन हैं, बलहीन हैं।
मारो कि पालो कुछ करो तुम, हम सदा अधीन हैं।
प्रभू के यहां से भी कदाचित् आज हम असहाय हैं,
इससे अधिक अब क्या कहें, हाँ ! हम तुम्हारी गाय हैं।

जारी रहा क्रम यदि यहां, यों ही हमारे विनाश का,
तो अस्त समझो सूर्य, भारत भाग्य के आकाश का।
जो तनिक हरियाली रही, वह भी न रहने पायेगी,
यह स्वर्ण मातृभूमि, बस मरघट मही बन जायेगी।

इस्लाम धर्मावलम्बी बन्धु कवि अब्दुल गफ्फार एडवोकेट फातिमा चेम्बर केवड़ी (राजस्थान) की रचना के कुछ अंश इस प्रकार हैं –

किसी जाति का नहीं, धर्म का नहीं यह हर घर का है।
गोहत्या का प्रश्न समूची मानवता भर का है।
गोहत्या करने वाला सभ्यता उचाट रहा है।
गाय काटने वाला अपनी माँ को काट रहा है।
माँ के हत्यारों को खुलकर दण्ड दिलाना होगा।
इसकी रक्षा का घर घर में अलख जगाना होगा।
हिन्दु मुस्लिम सिक्ख सभी आगे बढ़कर आओ।
भाल भारती से कलंक का यह टीका हटवाओ।
जनता रहे जागृत और सत्ता दायित्व निभाये।
गोहत्या प्रतिबन्ध का कानून अविलम्ब बनाये।
वरना गौतम और गाँधी की शान खो जायेगी।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

सकल विश्व में भारत की पहचान खो जायेगी।
वसुधा के वैभव का दर्शन नहीं चटकने देंगे।
शीश भले कट जाये लेकिन गाय नहीं कटने देंगे।
गौ संवर्धन महायज्ञ है आओ सफल बनाएँ।
इसकी उचित सुरक्षा का हम अब संकल्प उठाएँ।
सन्त बिनोवा का सपना हम नही उचटने देंगे।
शीश भले कट जाय लेकिन गाय नहीं कटने देंगे।

परम पिता से अनुनय है वे हमें उक्त भावना की पूर्ति में सक्षम बनाएँ।
(साभार शिवलाल शास्त्री द्वारा प्रकाशित "गौ कुर्बानी जगनाश निशानी" से)

॥ गऊ पर होता है सितम हमसे सहा जाता नहीं ॥

गऊ पर होता है सितम हमसे सहा जाता नहीं ।
तुमको कुछ भी जालिमो इन पर तरस आता नहीं।।१।।
दूध घी मक्खन तुम्हें दें आप जंगल में चुगें ।
इस पर उन्हें मारते सैय्याद शर्माता नहीं।।२।।
बैल इसके सपूत हल गाड़ी में जिन्हें जोड़ते ।
इस तरह वफादार दुनिया में सुत भ्राता नहीं।।३।।
बाद मरने के तुम्हें आराम दें निज चाम से ।
तिन की गर्दन पर छुरी धरते रहम आता नहीं।।४।।
यवन और क्रिश्चियन आर्य सबको जानत एकसा ।
दूध से पाले सभी, क्या सब की यह माता नहीं।।५।।
खैरख्वाह रफीकों पर करो रहम सितमगरी ।
जुल्म ऐसा खुदा से भी बक्शा तो जाता नहीं।।६।।
करता है बलदेव जो कानून कुदरत के खिलाफ ।
कौन है आखिर में जो रो रो के पछताता नहीं।।७।।
गऊ पर होता है सितम हमसे सहा जाता नहीं ।
तुमको कुछ भी जालिमों इन पर तरस आता नहीं ।

(चि० प्रणवकुमार की पसन्द)

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

॥ पारदर्शी-कवित्त ॥

कट रही लाखों गायें, विदेशी पूँजी कमाएँ,
माता को ये बेचे खाएँ, शर्म नहीं आती है।
लोभी यह सरकार, सुनती नहीं पुकार,
माता की हत्यारी यार, जरा न लजाती है।
क्रूरता की सीमा लाँघ, बछड़ों की टँगे बाँध,
गर्म-गर्म पानी डाल, उन्हें तड़फाती है।
देश की संसद से ये पूछता है "पारदर्शी",
गौ-हत्या बंदी का क्यों न, विधेयक लाती है ?

॥ गौमूत्र के औषधीय गुण ॥

लेखक- कामता प्रसाद तिवारी

हिन्दू गाय को अति प्राचीन समय से पवित्र मानते हुए 'गौ पूजन' करते चले आ रहे हैं। धार्मिक पूजनों से लेकर हिन्दू परम्परागत विधियों पर आधारित विवाह, पूजा-पाठ इत्यादि के समय गाय के गोबर का बहुत बड़ा महत्व रहता है। वेद और धार्मिक पुराणों में भी 'गौ' का जिक्र माता के रूप में हुआ है। गाय के पंचगव्य-गौदुग्ध, गौदधि, गौघृत, गौमय (गोबर) एवं गौमूत्र की उपयोगिता का वर्णन आयुर्वेद में बखूबी मिलता है इसके अलावा भारतीयों के प्रत्येक धार्मिक व शुभ कार्य के लिए शरीर शुद्धि में गाय के इन्हीं पंचगव्यों के प्राशन का विधान है। प्राचीन वैद्य-विशारद एवं मनीषियों ने भी इसे केवल धार्मिक ही नहीं बल्कि अतिगुणकारी तथा असाध्य रोगों के लिए रामबाण बताया है।

गाय के पंचगव्यों में अति विशिष्ट व महत्वपूर्ण गौमूत्र का उपयोग अनेक आयुर्वेदिक जड़ी-बूटियों के साथ औषधि के रूप में होता है। यदि पेट में कृमि पड़ जायें तो कृमियों की मात्रा गुणात्मक रूप से बढ़ने के कारण

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

अल्सर अथवा अन्य बीमारियों के होने पर गोमूत्र से बढ़कर कोई दूसरी औषधि नहीं है। बच्चों में शरीर का फूलना, पेट का बढ़ना और नाभि का ऊपर आ जाना हब्बा-डब्बा रोग के लक्षण हैं। ऐसी स्थिति में गौमूत्र के साथ कुलथी के काढ़े को मिलाकर पिलाने से तीन-चार दिनों मे ही यह रोग अच्छा हो जाता है। दवा की मात्रा के तौर पर मुट्ठी भर कर कुलथी को अच्छी तरह कूटकर उसके बराबर आक का पत्ता आधा लीटर पानी में डालकर पकाना चाहिए। उसके बाद देखना चाहिए कि जब पानी बिल्कुल थोड़ी मात्रा में रह जाये तो उसे छानकर बराबर मात्रा में गौमूत्र मिलाने से पूरी तरह दवा तैयार हो जाती है। यह दवा कृमियों के मामले में अचूक मानी जाती है।

पेट की तमाम बीमारियों के लिए गौमूत्र रामबाण है। पेट की पुरानी से पुरानी बीमारी उसके नियमित और संयमपूर्वक सेवन से ठीक हो जाती है और शरीर स्वस्थ होने लगता है। पेट में प्लीहा या यकृत के फूलने पर गौमूत्र से सेंक करने से आराम मिलता है। सेंक करने के लिए एक अच्छी ईंट को आग में हल्का गर्म कर उस पर गौमूत्र भिगोयें। ईंट को कपड़े में लपेटकर आहिस्ता-आहिस्ता सेंकना बहुत लाभदायक रहता है। इससे यकृत या प्लीहा घटकर सामान्य स्थिति में आ जाता है। प्राचीन समय से ही हकीम व वैद्यों द्वारा इसका उपयोग इसी रूप में होता चला आ रहा है। पेट की कब्जियत, डकारें आना, मुंह मिचलाना, पेट का फूलना इत्यादि को दूर करने में भी गौमूत्र पूरी तरह सक्षम है। इसके लिए लगभग तीन तोला ताजा व स्वच्छ गौमूत्र छानकर थोड़ा सा नमक छाने हुए गौमूत्र में मिलाकर पीने से कुछ ही क्षणों में आराम महसूस होने लगता है।

ऐसे ही अगर शरीर में खुजलाहट हो तो कडुवा जीरा गौमूत्र में पीसने के बाद लेई जैसा तैयार कर दो तीन बार लेप करने से और उबलते हुए पानी में नीम के पत्ते व गौमूत्र डालकर इसके जल से स्नान करने से शरीर की खुजलाहट समाप्त हो जाती है। इसी तरह यह असाध्य रोग कोढ़ के सफेद दागों को भी मिटाने में काफी गुणकारी सिद्ध हुआ है। उसके लिए गौमूत्र में बावची अच्छी तरह पीसकर रात्रि में सोने के समय सफेद दागों के स्थान पर लगाने एवं सुबह में गौमूत्र से धोने से यह दाग पूरा मिट जाता है।

वैसे आयुर्वेदिक औषधियों के निर्माण में गौमूत्र के बहुत अधिक उपयोग

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

हैं। यह अनेक असाध्य शारीरिक बीमारियों से लेकर छोटे-मोटे रोगों के निदान में काफी अधिक गुणकारी है। गौमूत्र में रोग निवारण की अद्भुत शक्ति विद्यमान है जिसकी उपयोगिता अतिप्राचीन काल से ही होते चली आ रही है।

गौमूत्र यकृत या प्लीहा के बढ़ने से होने वाले उदर संबंधी रोगों के लिए तो रामबाण है ही, जिसमें इसके साथ उपरोक्त बताये नुस्खों के अलावा पुनर्वा के काढ़े की आधी मात्रा में गौमूत्र मिलाकर पिलाने से एक-दो दिनों में ही उदर रोग ठीक हो जाता है। उसी प्रकार पेट के रोगों व शारीरिक रोगों के अतिरिक्त गौमूत्र किसी विषैले सर्प के काटने की आरंभिक चरणों में दस-दस मिनटों के अंतर पर लगातार चार-पांच बार पिलाते रहने से (जिसमें संजीवनी बूटी भी मिलायी जाती है) सर्पदंश का प्रभाव नष्ट हो जाता है और मनुष्य को नव जीवन का संचार होता है इसके साथ ही अगर प्रतिदिन नियमपूर्वक गौमूत्र का सेवन किया जाए तो कभी अस्वस्थ होने की कल्पना बिल्कुल ही नहीं की जा सकती। यह रक्तचाप को नियंत्रित करता है और शरीर में स्फूर्ति व ताजगी प्रदान करता है।

शरीर में रक्तदोष अशुद्धि एवं तीव्रतम विकार को दूर करने में गौमूत्र काफी लाभदायक है। गौमूत्र को नियमित पीने से न केवल उक्त दोष दूर होते है बल्कि विभिन्न कीटाणु व जीवाणु जनित रोगों में भी आशातीत सफलता मिलती है। शरीर में तेजी से बढ़ रहे हानिकारक जीवाणु इसके प्रभाव से नष्ट हो जाते हैं।

मधुमेह से पीड़ित रोगियों के लिए बछिया का मूत्र काफी लाभदायक होता है। इसके नियमित सेवन करने से मधुमेह के कीटाणु कुछ ही दिनों में बिल्कुल ही समाप्त हो जाते हैं और इससे पीड़ित व्यक्ति रोगमुक्त हो जाता है।

इस प्रकार पूरी तरह निरोग व स्वास्थ्य को बनाये रखने में गौमूत्र बहुत लाभकारी है। इसलिए इसका उपयोग आयुर्वेदिक औषधियों को तैयार करने में होता है।

(साभार – अग्रोहाधाम पत्रिका से)

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

HINDU & 'HINDUISM' ?

हिन्दू एवं हिन्दुत्व क्या है ?

H - Honest, I - Intelligent, N - Nobleman, D - Diversed yet, U - United. ईमानदार, प्रबुद्ध, उदात्त, अनेक पर एक का नाम ही हिन्दु है।

H	-	**Honest**	-	मानवता
I	-	**Integrity**	-	सत्यनिष्ठा
N	-	**Nobility**	-	उदारता
D	-	**Divinity**	-	ईश्वरत्व
U	-	**Universalism**	-	विश्वबन्धुत्व
I	-	**Intelligence**	-	ज्ञान
S	-	**Service**	-	सेवा
M	-	**Meditation**	-	ध्यान

Hinduism is to cultivate Humanity, Integrity and Nobility to get devine power for universal brotherhood by Intelligence, Service & Meditation.

मानवता, सत्यनिष्ठा और उदारता की प्रतिष्ठापना के साथ ही ज्ञान, सेवा और ध्यान के माध्यम से विश्वबन्धुत्व और ईश्वरत्व की प्राप्ति का दूसरा नाम हिन्दुत्व है।

–साभार सीताराम जी मोदी, राँची

सब मिट गये जहां से, हमको मिटाने वाले ।
कुछ राज है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी ॥

हजारों साल नरगिस अपनी बेनूरी पै रोती है ।
बड़ी मुश्किल से होता है चमन में दीदावर पैदा ॥

सुर्खरू होता है इंसाँ, ठोकरें खाने के बाद ।
रंग लाती है हिना, पत्थर पे घिस जाने के बाद ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

॥ गर्व से कहो – हम हिन्दू हैं ॥

(निर्भय हाथरसी)

सब धर्मों के द्वारा अपनी संस्कृति का गुणगान है ।
तन मन धन जीवन सबमें अपनी सर्वोच्च उड़ान है ।
मूल रूप से सारे ही जग में हिन्दुत्व प्रधान है ।
वह सच्चा हिन्दू है जिसको हिन्दूपन का भान है ।
राष्ट्र की भाषा हिन्दी, राष्ट्र हमारा हिन्दुस्तान है ।
हम हिन्दू हैं, हमको हिन्दू होने का अभिमान है ।

आन-बान से सदा सर्वदा आन रखी है आन की ।
मान शान से फहराई सर्वोच्च ध्वजा सम्मान की ।
जागृत होती है जब भावुक भक्ति यहाँ भगवान की ।
उससे भी आगे बढ़ जाती है क्षमता इन्सान की ।
शंकर के विषपान से बढ़कर मीरा का विषपान है ।
हम हिन्दू हैं, हमको हिन्दू होने का अभिमान है ।

सब धर्मों का स्वागत करने में यह देश उदार है ।
किन्तु राष्ट्र पर संकट आये तो सबसे इन्कार हैं ।
शहंशाह अकबर के दीनइलाही से नफरत नहीं ।
किन्तु महाराणा प्रताप के राष्ट्र धर्म से प्यार है ।
हर स्थिति में अपनी संस्कृति अपना देश महान है ।
हम हिन्दू हैं, हमको हिन्दू होने का अभिमान है ।

कहीं खुदा का सन्देशा खुद पीर – पैगम्बर पा गये ।
कहीं 'गाड' के बेटे आ अपने उपदेश सुना गये ।
अपने अपने 'मजहब' और 'रिलीजन' लेकर छा गये ।
किसी के दूत किसी के बेटे समय समय पर आ गये ।
हिन्दू के घर जन्म स्वयं लेने आता भगवान है ।
हम हिन्दू हैं, हमको हिन्दू होने का अभिमान है ।

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

तोड़-फोड़ करना चाहे कोई मेहमान मकान में ।
तो उसको पहुँचा देंगे हम उस दूसरे जहान में ।
सबका है सम्मान यहाँ, बस इतना रखिये ध्यान में ।
हिन्दू बनकर ही रहना होगा इस हिन्दुस्तान में ।
इस घर का नन्हा सा दीपक भी पूरा तूफान है ।
हम हिन्दू हैं, हमको हिन्दू होने का अभिमान है ।

पण्डित-मुल्ला-पोप पादरी बनकर सम्मुख आ गये ।
मन्दिर, मस्जिद, गिरजाघर के अन्दर तक पहुँचा गये ।
मार्ग भले हो भिन्न एक ही मंजिल हमें दिखा गये ।
हम भी सबकी श्रद्धाओं को सादर शीश झुका गये ।
हमको गीता जैसी पावन बाइबिल और कुरान है ।
हम हिन्दू हैं, हमको हिन्दू होने का अभिमान है ।

हिन्दू वह संस्कृति जो गंगाजल लाती है यहाँ ।
गन्दी से गन्दी नाली भी प्रवेश पाती है यहाँ ।
'सांस्कृतिक' 'मजहब' और 'रिलीजन' से मिल जाती है-
मुक्ति प्रदाता पावन पुण्य प्रयाग बनाती है यहाँ ।
भारत माँ के हर सच्चे बेटे को इसका ध्यान है ।
हम हिन्दू हैं, हमको हिन्दू होने का अभिमान है ।

बूढ़े और कमजोर बहादुरशाह को देखकर अंग्रजों ने कहा-
''दुमदुमा में दम नहीं, खैर माँगो जान की ।
अय जफर ठण्डी हुई, शमशीर हिन्दुस्तान की ।।''

शायर बादशाह ने जबाब में लिखा –
''गाजियों में बू रहेगी, जब तलक ईमान की ।
तख्ते तो लंदन तक चलेगी तेग हिन्दुस्तान की ।।''

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

॥ जय - हिन्दी ॥

युग बीता अंग्रेज गये, क्यों अंग्रेजी अब भी रानी ?
दासी बनकर हिन्दी बोलो, भरेगी कब तक उसका पानी ?
गैरों के न हम कपड़े पहनें, न औरों का भोजन खाते ।
क्यों चोट न लगे स्वाभिमान को, गैरों की भाषा अपनाते ।
नाम लंच है खाते मगर, हिन्दुस्तानी खाना यारों ।
"हाय-हलो" है आना उनका, "सी-यू" है जाना यारों ।
मातृभूमि की मिट्टी की अब, सोंधी महक तुम पहचानो ।
*"रश्मिरथी" पर बैठ जरा, *"भारत भारती" को जानो ।
*"कामायनी" से *"उर्वशी" तक, काव्यरस का पीले प्याला ।
जो हो तेरा *"आकुल अंतर", *"मधुशाला" में *"मधुबाला" ।
रहीम, मीरा, कबीर जायसी, सूर, केशव, तुलसीदास ।
हैं *"सतसईया" के दोहे, पढ़ो जितना बढ़ेगी प्यास ।
देश अपना भाषा अपनी, चिर स्वतंत्र जल-थल अपने ।
याद करो बापू की हसरत, आज के भारत के सब सपने ।
हाँ, बुरा नहीं है कोई ज्ञान, इंगलिश जानो अरबी जानो ।
पर अपनी मिट्टी अपनी होती है, हिन्दी को ही अपना मानो ।
बंगाली, मराठी समझें, और मद्रासी, सिंधी भी ।
हिन्द देश की हिन्दी भाषा, जय हिन्द ही नहीं, जयहिन्दी भी ।

*** हिन्दी काव्यों के नाम** रचयिता– **योगेन्द्र सिंह**

जिस हिन्दू को है नहीं, हिन्दी का अनुराग ।
निश्चय उसके जानलो, फूट गये हैं भाग ॥
जिसको प्यारी है नहीं, निज भाषा निज देश ।
वह सूकर सा डोलता, धरे मनुज का भेष ॥

जिसको न निज गौरव तथा देश का अभिमान है ।
वह नर नहीं, नर पशु निरा और मृतक समान है ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

॥ कुछ देशभक्ति गीत ॥

॥ हिन्दोस्ताँ हमारा ॥

(शायर - 'इकबाल' सन् १९३०)

सारे जहाँ से अच्छा, हिन्दोस्ताँ हमारा,
हम बुलबुले हैं इसके, ये गुल्सितां हमारा ।
गुरबत में हों अगर हम, रहता है दिल वतन में,
समझो वहीं हमें भी, दिल हो जहां हमारा ।
परबत वो सबसे ऊँचा, हमसाया आसमां का,
वो संतरी हमारा, वो पासबां हमारा ।
गोदी में खेलती हैं, उसकी हजारों नदियां,
गुलशन हैं जिनके दम से रश्के-जिनां हमारा ।
ऐ आबे-रोदे-गंगा, वो दिन हैं याद तुझको,
उतरा तेरे किनारे जब कारवां हमारा ।
मजहब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना,
हिन्दी हैं हम, वतन है हिन्दोस्तां हमारा ।
यूनानो-मिस्त्रो-रोमा, सब मिट गये जहां से,
अब तक मगर हैं बाकी नामो निशां हमारा ।
कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी,
सदियों रहा है दुश्मन दौरे जमां हमारा ।
"इकबाल" कोई मरहम अपना नहीं जहां में,
मालूम क्या किसी को दर्दे निहां हमारा ।

भरा नहीं जो भावों से, बहती जिसमें रसधार नहीं ।
वह हृदय नहीं है पत्थर है, जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं ॥

वतन को कहीं फिर गिरवी न रख देना वतन वालों,
शहीदों ने बड़ी मुश्किल से ये कर्जे चुकाये हैं ।
– नन्दा राही देहलवी

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

।। ऐ मेरे वतन के लोगों ।।

(गीत - प्रदीप)

ऐ मेरे वतन के लोगों ! तुम खूब लगा लो नारा
ये शुभ दिन है हम सबका ! लहरा लो तिरंगा प्यारा
पर मत भूलो सीमा पर ! वीरों ने प्राण गवाये
कुछ याद उन्हें भी कर लो जो लौट के घर न आये
ऐ मेरे वतन के लोगों ! जरा आँख में भर लो पानी
जो शहीद हुए हैं उनकी जरा याद करो कुरबानी ....
जब घायल हुआ हिमालय खतरे में पड़ी आजादी
जब तक थी साँस लड़े वो फिर अपनी लाश बिछा दी
संगीन पे धर के माथा सो गए अमर बलिदानी ।। जो.।।
जब देश में थी दिवाली वो खेल रहे थे होली
जब हम बैठे थे घरों में वो झेल रहे थे गोली
थे धन्य जवाँ वो अपने थी धन्य वो उनकी जवानी ।। जो.।।
कोई सिख कोई जाट मराठा, कोई गुरखा कोई मद्रासी
सरहद पर मरने वाला हर वीर था भारतवासी
जो खून गिरा पर्वत पर वो खून था हिन्दुस्तानी ।। जो.।।
थी खून से लथपथ काया फिर भी बन्दूक उठा के
दस दस को इक ने मारा फिर गिर गये होश गंवा के
क्या लोग थे वो दीवाने क्या लोग थे वो अभिमानी ।। जो.।।
जब अन्त समय आया तो कह गये कि अब हम मरते हैं
खुश रहना देश के प्यारो अब हम तो सफर करते हैं
तुम भूल न जाओ उनको इसलिये सुनो यह कहानी
जो शहीद हुए हैं उनकी जरा याद करो कुरबानी ।।

जय हिन्द.........

यूनान, मिस्र, रोमाँ, सब मिट गये जहाँ से,
बात है कुछ ऐसी, हस्ती मिटती नहीं हमारी।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

॥ हमारी ख्वाहिश ॥

(राम प्रसाद 'बिस्मिल' सन् १९२८)

सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है,
देखना है जोर कितना बाजू-ए-कातिल में है ।
रहबरे राहे मुहब्बत, रह न जाना राह में,
लज्जते सहरा नवर्दी दूरि-ए-मंजिल में है ।
वक्त आने दे, बता देंगे तुझे, ऐ आसमाँ !
हम अभी से क्या बताएं, क्या हमारे दिल में है ।
अब न अगले वलवले हैं और न अरमानों की भीड़,
एक मिट जाने की हसरत अब दिले "बिस्मिल" में है ।
आज मकतल में ये कातिल कह रहा है बार-बार,
क्या तमन्ना-ए-शहादत भी किसी के दिल में है ।
ऐ शहीदे-मुल्को-मिल्लत, तेरे जज्बों के निसार,
तेरी कुर्बानी की चर्चा गैर की महफिल में है

साँस का हर सुमन है वतन के लिए ।
जिन्दगी ही हवन है वतन के लिए ॥
कह गईं फाँसियों में फँसी गर्दनें ।
यह हमारा नमन है वतन के लिए ॥

शहीदों की चिताओं पर लगेंगे हर बरस मेले ।
वतन पर मिटने वालों का यही बाकी निशां होगा ॥

जलते भी गये कहते भी गयें आजादी के परवाने ।
जीना तो उसी का जीना है जो मरना वतन पर जाने ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

॥ भारतः सोने की चिड़िया ॥

(गीत – राजेन्द्र कृष्ण)

जहाँ डाल डाल पर सोने की चिड़ियां करती हैं बसेरा
वो भारत देश है मेरा, वो भारत देश है मेरा
जहाँ सत्य अहिंसा और धर्म का पग-२ लगता डेरा
वो भारत देश है मेरा - २ । जहाँ डाल ......
यह धरती जहाँ ऋषि-मुनि जपते प्रभु नाम की माला
जहां हर बालक एक मोहन है और हर राधा एक बाला
जहां सूरज सबसे पहले आकर डाले अपना डेरा । वो भारत....
अलबेलों की इस धरती के त्यौंहार भी हैं अलबेले
कहीं दिवाली की जगमग है कहीं होली के मेले
जहाँ राग रंग और खुशी का, चहूँ ओर है घेरा । वो भारत....
जहां आसमान से बातें करते, मंदिर और शिवाले
किसी नगर में किसी द्वार पर, कोई न ताला डाले
प्रेम की बंशी जहां बजाता, आए शाम सबेरा । वो भारत....

॥ चन्दन है इस देश की माटी ॥

चन्दन है इस देश की माटी, तपो भूमि हर ग्राम है,
हर बाला देवी की प्रतिमा, बच्चा-बच्चा राम है।
हर शरीर मन्दिर सा पावन, हर मानव उपकारी है,
जहाँ सिंह बन गये खिलौने, गाय जहाँ माँ प्यारी है।
जहाँ सवेरा शंख बजाता, लोरी गाती शाम है।। हर बाला....
जहाँ कर्म से भाग्य बदलते, श्रम निष्ठा कल्याणी है,
त्याग और तप की गाथायें, गाती कवि की वाणी है।
ज्ञान यहाँ का गंगा जल सा, निर्मल है अविराम है।। हर बाला....
इसके सैनिक समर-भूमि में, गाया करते गीता हैं
जहाँ खेत में हल के नीचे, खेला करती सीता हैं।
जीवन का आदर्श यहाँ पर, परमेश्वर का धाम है।। हर बाला....

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

॥ मेरे देश की धरती ॥

मेरे देश की धरती....मेरे देश की धरती सोना उगले
उगले हीरे मोती। मेरे देश....
बैलों के गले में जब घुंघरू जीवन का राग सुनाते हैं
गम कोसों दूर हो जाता है खुशियों के कमल मुस्काते हैं
सुनके रहट की आवाजें यूं लगे कहीं सहनाई बजे
आते ही मस्त बहारों के दुल्हन की तरह हर खेत सजे
मेरे देश की धरती....
हल चलते हैं जब इस धरती पे ममता अंगड़ाइयाँ लेती हैं।
क्यों न पूजे इस माटी को जो जीवन का सुख जो देती है
इस धरती पर जिसने जन्म लिया उसने ही पाया प्यार तेरा
यहाँ अपना पराया कोई नहीं है सब पे माँ उपकार तेरा
मेरे देश की धरती....
ये बाग हैं गौतम नानक के खिलते हैं अमन के फूल यहाँ
गाँधी, सुभाष, टैगोर, तिलक ऐसे हैं चमन के फूल यहाँ
रंग हरा हरी सिंह नलवे से रंग लाल है लालबहादुर से
रंग बना बसन्ती भगत सिंह, रंगाअमन का वीर जवाहर से
मेरे देश की धरती....

जननी जन्मभूमिश्च, स्वर्गादपि गरियसी

इस देश को हे दीनबन्धु आप फिर अपनाइये।
भगवान भारतवर्ष को फिर पुण्य भूमि बनाइये।।
– मैथिली शरण गुप्त

सूरज बदले चन्दा बदले, बदल जाय ध्रुवतारा।
पर भारत की आन न बदले, यह संकल्प हमारा।।

बढ़ जाता है मान वीर का, रण में बलि होने से।
मूल्यवती होती सोने की, भस्म यथा सोने से।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

॥ घायल सैनिक की पाती परिवार के नाम ॥

माँ से –

माँ तुम्हारा लाड़ला रण में अभी घायल हुआ है।
पर देख उसकी शूरता खुद शत्रु भी कायल हुआ है।।
रक्त की होली रचाकर मैं प्रलयंकर दिख रहा हूँ।
माँ उसी शोणित से तुमको पत्र अन्तिम लिख रहा हूँ।।
युद्ध भीषण था मगर ना इंच भी पीछे हटा हूँ।
माँ तुम्हारी थी शपथ मैं आज इंचों में कटा हूँ।।
एक गोली वक्ष पर कुछ देर पहले ही लगी है।
माँ कसम दी थी जो तुमने, आज मैने पूर्ण की है।।
छा रहा है सामने लो आँख के आगे अंधेरा।
पर उसी में दिख रहा है, वो मुझे नूतन सवेरा।।
कह रहे हैं शत्रु भी मैं जिस तरह शैदा हुआ।
लग रहा है सिंहनी की कोख से पैदा हुआ
यह न सोचो माँ कि मैं चिर नींद लेने जा रहा हूँ।
मैं तुम्हारी कोख से फिर जन्म लेने आ रहा हूँ।।

पिता से –

मैं तुम्हें बचपन में, पहले ही बहुत दुःख दे चुका हूँ।
और कंधों पर खड़ा हो आसमा सर ले चुका हूँ।।
तुम सदा कहते न थे ये ऋण तुझे भरना पड़ेगा।
एक दिन कंधो पे अपने ले मुझे चलना पड़ेगा।।
पर पिता मैं भार अपना तनिक हल्का कर न पाया।
तुम मुझे करना क्षमा मैं पितृ ऋण को भर न पाया।।
हूँ बहुत मजबूर, यह ऋण ले मुझे मरना पड़ेगा।
अन्त में भी आपके कांधे मुझे चढ़ना पड़ेगा।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

भाई से –

सुन अनुज रणवीर ! गोली बांह में जब आ समाई।
ओ मेरी बांई भुजा ! उस वक्त तेरी याद आई।।
मैं तुम्हें बांहों से अब आकाश दे सकता नहीं हूँ।
लौटकर भी आऊँगा, विश्वास दे सकता नहीं हूँ।।
पर अनुज विश्वास रखना मैं नहीं थक कर पडूँगा।
तुम भरोसा पूर्ण रखना श्वांस अन्तिम तक लडूँगा।।
अब तुम्हीं को सौपता हूँ बस बहन का ध्यान रखना।
जब पड़े उसको जरूरत वक्त पर सम्मान करना।।
तुम उसे कहना कि रक्षा पर्व जब भी आएगा।
भाई अम्बर में नजर आशीष देता आएगा।।

पत्नी से –

अन्त में तुमसे प्रिये मैं आज भी कुछ माँगता हूँ।
है कठिन देना मगर निष्ठुर हृदय हो माँगता हूँ।।
तुम अमर सौभाग्य की बिंदिया सदा माथे सजाना।
हाथ में चूड़ी पहन कर पाँव में मेंहदी रचाना।।
तुम नहीं वैधव्य की प्रतिमूर्ति या कि साधिका हो।
तुम अमर बलिदान की पुस्तक की पावन भूमिका हो।।
बर्फ की ये चोटियां यूँ तो बहुत शीतल लगी थी।
पर उष्णता से प्यार की वे हिम-शिला गलने लगी थीं।।
तुम अकेली हो नहीं इस धैर्य को खोने न देना।
भर उठे दुःख से हृदय पर आँख को रोने न देना।।
सप्त पद की यात्रा से तुम मेरी अर्धांगिनी हो।
सात जन्मों तक बजे जो तुम अमर वह रागिनी हो।।
इसलिये अधिकार तुमसे बिन बताए ले रहा हूँ।
माँग का सिंदूर तेरा मातृभूमि को दे रहा हूँ।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

॥ कुछ चुने हुये शेर ॥

❖ कुछ करके भला लेके गरीबों की दुआएँ,
तुम बिगड़ी हुई अपनी बना क्यों नहीं लेते।

❖ जिसके दिल में खौफ है भगवान का,
खौफ कोई उसके पास आता नहीं ।

❖ यूँ तो मुँह देखे की बात करते हैं सब कोई,
बात तब है, जब मेरे बाद भी मेरी बात करे कोई ।

❖ बन्दे न होंगे जितने खुदा हैं खुदाई में,
किस किस खुदा के सामने सिजदा करे कोई ?

❖ हाँ एक खुदा हो तो इबादत भी है मुमकिन,
इस दौर में हर बन्दाऐ नाचीज खुदा है।

❖ ये गलत कहा किसी ने तेरा पता नहीं है,
तुझे ढूँढ़ने की हद तक कोई ढूँढ़ता नहीं है।

❖ खुदी को कर बुलन्द इतना कि हर तहरीर से पहले,
खुदा बन्दे से खुद पूछे बता तेरी रजा क्या है ?

❖ इंसाँ की अज्म से जब दूर किनारा होता है,
तूफाँ में टूटी किश्ती का भगवान सहारा होता है।

❖ आदमी होने का दावा कर नहीं पाया खुदा,
आदमी ने तो खुदा होने का दावा कर दिया।

❖ उन चिरागों को बुझाने की है किसमें हिम्मत,
जिन चिरागों की जमानत हवाओं ने ली है।

❖ जिन्दगी जिन्दादिली का नाम है,
मुर्दादिल क्या खाक जिया करते हैं ।

❖ मुद्दई लाख बुरा चाहे तो क्या होता है,
होता है वही जो मंजूरे खुदा होता है ।

❖ जिन्दगी है एक तीर, जाने न पाय रायगाँ,
पहले निशाना देख लो, बादं में खींचो कमाँ।
रायगाँ – व्यर्थ। कमाँ – कमान।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

❖ जर्रे को आफताब तूँ बनता हुआ तो देख,
सूरज की रोशनी को बिखरता हुआ तो देख।
हम साख के पुजारी है संकल्प के धनी,
कुन्दन की तरह हमको निखरता हुआ तो देख।

❖ गर हथेली पर न हों, मकसूम की सतरें तो क्या,
खोद किस्मत की लकीरें, नाखून-ऐ-तकदीर से।

❖ राह दुश्वार, दूर है मंजिल, हर कदम को संभालना होगा,
पांव से हर चुभा हुआ कांटा, चलते-चलते निकालना होगा।

❖ जलाओ महलों की इतनी बुलन्दियों पै चिराग,
किसी गरीब के घर में भी रौशनी पहुँचे ।

❖ कौन होता है बुरे वक्त की हालत में शरीक,
मरते दम आँख को देखा है कि फिर जाती है।

❖ उम्र तो सारी कटी इश्के-बुतां में 'मोमिन',
आखिरी उम्र में क्या खाक मुसलमां होंगे।

❖ रफीकों से रकीब अच्छे जो जलकर नाम लेते हैं,
गुलों से खार बेहतर हैं जो दामन थाम लेते हैं।

❖ दिल के फफोले जल उठे सीने के दाग से,
इस घर को आग लग गई घर के चिराग से।

❖ वो आएं घर में हमारे, खुदा की कुदरत है,
कभी हम उनको कभी अपने घर को देखते हैं।

❖ रहते थे कभी जिनके दिल में हम जान से भी प्यारों की तरह,
बैठे हैं उन्हीं के कूचे में हम आज गुनहगारों की तरह।

❖ अब इत्र भी मलो तो मोहब्बत की बू नहीं,
वो दिन हवा हुए कि पसीना गुलाब था।

❖ उम्र-दराज मांग के लाए थे चार दिन,
दो आर्जू में कट गए, दो इंतजार में ।

❖ खुदा तो मिलता है, इन्सां नहीं मिलता,
ये चीज वो है कि देखी कहीं - कहीं मैंने।

❖ बस कि दुश्वार है हर काम का आशां होना,
आदमी को भी मयस्सर नहीं इन्सां होना।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

- जिन्दगी वो है जो काम आए किसी के वर्ना –
  इसको तो जैसे गुजारोगे वैसे गुजर जाएगी ।
- एक आँसू कह गया हाल दिल का,
  मैं समझा था ये जालिम बेजुबाँ है।
- गरीबी और अमीरी की फकत इतनी कहानी है,
  गरीबी एक बुढ़ापा है अमीरी इक जवानी है ।
- हमको खबर कब इस बात की थी, ऐसे जमाने आएँगे,
  लोग करेंगे कत्ल हमारा, हम कातिल कहलाएँगे।
- ताहजीब के मोती भी आँचल पै सजा रखना,
  पहलू में दिले मुखलिस, आँखों में हया रखना।
- जहां की आँख में यूँ धूल झोकने वालों,
  आगे खुदा का दरबार है – ख्याल रहे ।
- हजारों साल नर्गिस अपनी बे-नूरी पे रोती है,
  बड़ी मुश्किल से होता है चमन में दीदावर पैदा
- फूल रखिये ना रखिये राहों में,
  लब पै सब के लिये दुआ रखिये ।
- कोई दुश्मन भी मिल जाये करो बढ़ कर सलाम,
  पहले खुद झुकता है औरों को झुकाने वाला।
- दुश्मनी एक पल में होती है –
  दोस्ती को जमाने लगते हैं ।
- दोस्ती अब नाम है उस चीज का –
  पहले कहते थे जिसे सौदागरी ।
- जमाना बड़े शौक से सुन रहा था,
  हमीं सो गए दास्तां कहते-कहते।
- अब ये भी नहीं ठीक कि हर दर्द मिटा दें,
  कुछ दर्द कलेजे से लगाने के लिये हैं।
- उसे तो शायद हक नहीं दुनिया में रहने का,
  पराये दर्द को जो दिल में बेशो कम नहीं रखता।
- आज भी बुरी क्या है, कल भी ये बुरी क्या थी,
  इसका नाम दुनिया है, ये बदलती रहती है।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

॥ सामयिक व्यंग्य ॥

"गुस्ताखी माफ"

अगर इन सामयिक व्यंग्यों से किसी पाठक की भावनाओं को ठेस पहुँचती है तो उनसे मैं माफी चाहता हूँ। लेकिन आप चाहे मानें या न मानें, व्यंग्यकारों ने समाज का बड़ा ही सजीव चित्रण किया है।

– सम्पादक

॥ बन्द ही बन्द ॥

एक दिन करते हैं भारत बन्द, एक दिन करते हैं राज्य बन्द।
एक दिन करते हैं शहर बन्द, इस तरह करते हैं कस्बे और गाँव बन्द।
......हर तरफ है बंद ही बंद।

आदमी ने कर दिया खुद को, स्वार्थ के कमरे में बंद।
अक्ल को कर दिया, कुण्ठाओं के ताले में बंद।
उस पर दिलों के दरवाजे भी बंद, इन्सानी जज्बात बेबसी की परतों में बंद।
मोहब्बत हो गई नफरत की आग में बंद, मानवता और संस्कृति ग्रंथों में बंद।
धर्म अज्ञानता के अंधकार में बंद, ईमानदारी भ्रष्टाचार के पिंजरे में बंद।
......कानून के उसूल फाइलों में बंद।

देश की एकता तड़प रही है, साम्प्रदायिकता की लपटों में हो के बन्द।
आँसू बहाती देश की प्रगति, देखकर हर तरफ बंद ही बंद।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

॥ चमचा महात्म्य ॥

बॉस और चमचा खड़े, काको लागें पाँय,
चमचा की बलि जाइये, अफसर दिये मिलाय।
मिले नौकरी पलक में, हो कितना मनहूस,
चमचे के जरिये मिले, जब अफसर को घूस।
रोकर हँसकर रूठकर, जैसा अवसर पाय,
चमचा वो है श्रेष्ठतम्, जो अफसर को बहकाय।
चमचा ऐसा चाहिए, जैसा सूप सुभाय,
आधा पैसा बॉस घर, आधा स्वयं पचाय।
पुरस्कार दिलवाएँ, अब हम करके यत्न,
चमचाश्री, चमचागुरू, या फिर चमचारत्न।
जैसे ही मौका मिले, मक्खन खूब लगाय,
चमचा वो ही सफल है, नित अफसर के घर जाय।
मस्केबाजी में निपुण, रहता पूंछ हिलाय,
जूते खाकर भी हँसे, वो चमचा कहलाय।
चमचे की गद्दी कभी, होय न डावांडोल,
साब अगर उल्लू कहे, तो भी यस सर बोल।

॥ नेताजी का हिसाब ॥

एक स्वर्गीय नेता नरक में गया,
यमराज ने कहा कि चुपचाप बैठ जाइये।
अपने मंत्री चित्रगुप्त को बुला के बोले,
इनका हिसाब अति शीघ्र बतलाइये।
चित्रगुप्त ने कहा कि यमराज महाराज,
इनके हिसाब में ना शीघ्रता दिखाइये,
पाँच साल में जो इन्होंने हैं कारनामे किए,
उन्हें बतलाने में पचास साल चाहिए।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

॥ वोट के शिकारी ॥

साफ हो चुकी सारी लाज-शर्म आँखों की,
जेब में अठन्नी है और बात लाखों की।
प्यास क्या बुझाएंगे, जिनके टैंक सूखे हैं
वे आप को क्या देंगे, जो जनम से भूखे हैं।
कुरसियों की इच्छाएँ, तिकड़मी इरादे हैं,
भाषणों के खरे हैं और चंद वादे हैं।
है चुनाव इक डमरू और वे मदारी हैं,
रहनुमा नहीं ये तो वोट के शिकारी हैं।

॥ इक्कीसवी सदी ॥

शहरो में
कम्पूटर, ई-मेल, इंटरनेट।
गांवों में
बंजर-धरती, टूटी झोंपड़ी, खाली-पेट।।
गांव और शहर के बीच,
इस सदी में
जो दरार आई है,
आने वाली सदी की वो
एक खौफनाक खाई है।।
हमने अब तक
अपने सामाजिक, आर्थिक और
राजनैतिक धरातल पे,
विषमता के, कंटक लगाये हैं।
आने वाले 'कल' को
उसकी ही चुभन बांटेंगे,
यानी बीसवीं सदी में
जो भी बोया है-
इक्कीसवीं सदी में वही तो काटेंगे।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

॥ सीखें सिखावें ॥

स्वावलंबन - अपने पैरों पर खड़े होना - शब्द अच्छा है, प्रेरक हैं, पर है अधूरा। परावलंबन - शब्द उदासी भरा, गौरव को गिराने वाला। ये दोनों शब्द लूले-लंगड़े हैं।

शब्द तो सही है - परस्परावलंबन। एक दूसरे से मिलकर, एक दूसरे को सहयोग दें। यही जीवन का परम धर्म ही नहीं, चरम सत्य है।

बच्चा प्रसूति गृह से प्यार, सहयोग और प्रेरणा का भूखा है और फिर जीवन के अंतिम सांस तक सहयोग का प्यासा है।

दुनिया के बड़े-से-बड़े आदमी भी अपने आप में सब कुछ नहीं जानते। हमें एक दूसरे से सीखना है, आदमी को आदमी से, राष्ट्र को राष्ट्र से, जाति को ज़ाति से।

आज पश्चिम सिखा रहा है-पूर्व को भौतिक विज्ञान, यांत्रिकी, अर्थशास्त्र जैसी अपरा विद्याएं। पर पूर्व ने, खासतौर पर भारत ने वेदों का ज्ञान दिया, बुद्धि, वाणी दी औऱ बापू के रूप में युद्धाग्नि में जलते विश्व को अहिंसा के अमृत का दान दिया।

एक बच्चा भी दूसरे बच्चे को ज्ञान दे सकता है - और नहीं तो क, ख, ग सिखा सकता है। आओ हम मिलकर सीखें, सिखावें और दुनिया को बेहतर बनाएं।

कम से कम इतना तो कह सकते हैं-

'माना कि इस जमीं को गुलशन न कर सके हम ।
कुछ खार कम कर दिए हैं, गुजरे जिधर से हम ॥'

इस जमीन को चाहे हम फूलों की खुशबू से भरे एक बगीचे के मानिंद न बना सके हों, पर थोड़े से कांटे जरूर कम किए हैं। यह भी एक सहयोग है- जिससे आने वाली पीढ़ी का सफर खुशनुमा हो।

हम लेवें, पर देवें नहीं, क्योंकि दाता का जीवन धन्य है।

- चिन्तन मनन : साभार ''जनसत्ता''

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

॥ भीतर का चिराग ॥

जीवन का अर्थ जल भी है। जल कोमल है और कठोर भी। उसकी गति सीधी, बर्फ के रूप में जड़ और भाप के रूप में उर्ध्व (ऊँची) भी है। यह हमारे पर निर्भर है कि हम उसे किस रूप में बितावें।

पर, हम करें भी क्या! जीवन सरल सीधा है, पर स्थितियां इसे जटा की तरह जटिल बना देती है। तब लगता है कि जीवन उलझा हुआ, समस्याओं से भरा है। इधर समाज के कर्णधार अपने-अपने स्वार्थों में इतने भरे है कि ये सुलझाने के नाम पर उलझनें बढ़ा देते हैं।

कभी-कभी नामधारी नेताओं की गलतियां पूरे समाज को फंसा देती है।

बड़ी मुश्किल है कि हालात की गुत्थी सुलझे ।
अहले दानिश ने बड़ी सोचकर उलझाया है ।

फिर जीवन बन जाता है, एक पहेली, एक़ गोरखधंधा! जिन पर भरोसा किया था, वे ही धोखे की टट्टी साबित होते हैं। हम साहस बटोर नहीं पाते और सच्चाई जुबान तक आकर बुदबुदाती सी है। हां - हिम्मत करके कोई शायर कभी-कभी इस विवशता को जुबान देता है-

कहने की बात, मगर कहेगा कौन ?
नाखुदा ने कितने सफीने डुबो दिए।

थे नाखुदा? यानि ये केवट कब तक अपना खेल खेलेंगे। अच्छा हो कि हम सभी अपने भीतर के चिरागों को संभालें और उनकी रोशनी में अपना रास्ता तय करें।

बुझ रहे हैं चरागे दैरो-हरम*
दिल जलाओ कि रोशनी कम है।

*मन्दिर, मस्जिद

-चिन्तन मनन : साभार 'जनसत्ता'

सत्य का एक वाक्य, झूठ के हजारों वाक्यों से बड़ा है।
- दयानन्द सरस्वती

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

॥ जीवन में चार का महत्व ॥

संकलनकर्ता : **कैलाशचन्द्र अग्रवाल**

१. **चार बातों को याद रखें** – बड़े बूढ़ों का आदर करना, छोटों की रक्षा करना एवं उनपर स्नेह करना, बुद्धिमानों से सलाह लेना ओर मूर्खों के साथ कभी न उलझना।

२. **चार चीजें पहले दुर्बल दिखती हैं परन्तु परवाह न करने पर बढ़कर दु:ख का कारण बनती हैं** – अग्नि, रोग, ऋण और पाप।

३. **चार चीजों का सदा सेवन करना चाहिये** – सत्संग, संतोष, दान और दया।

४. **चार अवस्थाओं में आदमी बिगड़ता है** – जवानी, धन, अधिकार और अविवेक।

५. **चार चीजें मनुष्य को बड़े भाग्य से मिलती हैं** – भगवान को याद रखने की लगन, संतों की संगति, चरित्र की निर्मलता और उदारता।

६. **चार गुण बहुत दुर्लभ हैं** – धन में पवित्रता, दान में विनय, वीरता में दया और अधिकार में निराभिमानता।

७. **चार चीजों पर भरोसा मत करो** – बिना जीता हुआ मन, शत्रु की प्रीति, स्वार्थी की खुशामद और बाजारू ज्योतिषियों की भविष्यवाणी।

८. **चार चीजों पर भरोसा रखो** – सत्य, पुरूषार्थ, स्वार्थहीन और मित्र।

९. **चार चीजें जाकर फिर नहीं लौटती** – मुँह से निकली बात, कमान से निकला तीर, बीती हुई उम्र और मिटा हुआ अज्ञान।

१०. **चार बातों को हमेशा याद रखें** – दूसरे के द्वारा अपने ऊपर किया गया उपकार, अपने द्वारा दूसरे पर किया अपकार, मृत्यु और भगवान।

११. **चार के संग से बचने की चेष्टा रखें** – नास्तिक, अन्याय का धन, परनारी और परनिन्दा।

१२. **चार चीजों पर मनुष्य का वश नहीं चलता** – जीवन, मरण, यश और अपयश।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

१३. **चार का परिचय चार अवस्थाओं में मिलता है –** दरिद्रता में मित्र का, निर्धनता में स्त्री का, रण में शूरवीर का और बदनामी से बन्धु-बान्धवों का।

१४. **चार बातों में मनुष्य का कल्याण है –** वाणी के संयम में, अल्प निद्रा में, अल्प आहार में और एकान्त के भगवत्समरण में।

१५. **शुद्ध साधना के लिये चार बातों का पालन आवश्यक है –** भूख से कम खाना, लोक प्रतिष्ठा का त्याग, निर्धनता का स्वीकार और ईश्वर की इच्छा में संतोष।

१६. **चार प्रकार के मनुष्य होते हैं –** (क) मक्खीचूस- न आप खाय और न दूसरे को दे। (ख) कंजूस- आप तो खाय पर दूसरे को न दे। (ग) उदार- आप भी खाय और दूसरे को भी दे। (घ) दाता- आप न खाय और दूसरे को दे। यदि सब लोग दाता नहीं बन सकते तो कम से कम उदार तो बनना ही चाहिये।

१७. **मन के चार प्रकार हैं –** धर्म से विमुख जीव का मन मुर्दा है, पापी का मन रोगी है, लोभी तथा स्वार्थी का मन आलसी है और भजन साधना में तत्पर भक्त का मन स्वस्थ है।

मारना है गर किसी को, मार दो अहसान से।
मर नहीं सकता है दुश्मन, पर किसी नुकसान से।।
क्या मिलेगा आपको गर, मार दोगे जान से।
बख्श दोगे जान तो, मर जायेगा अहसान से।।
मर नहीं सकता कभी, नुकसान का मारा हुआ।
सर उठा सकता नहीं, अहसान का मारा हुआ।।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

॥ जीवन क्रिकेट है ॥

साभार - ब्रह्मदत्त वात्स्यायन द्वारा रचित एवं पुस्तक महल, दिल्ली द्वारा प्रकाशित "गीता-सार" से।

जीवन का दूसरा नाम है 'अनिश्चितता'। जन्म से लेकर मृत्यु के पड़ाव तक, हम सभी अक्सर ऐसी परिस्थितियों से जूझते रहते हैं जिनके बारे में हमने कभी स्वप्न में भी सोचा नहीं होता। परीक्षा होती है, तो बुद्धिमान और उद्यमी विद्यार्थी पीछे रह जाता है, जबकि मंदबुद्धि व निखट्टू अधिक अंक ले जाता है। दौड़ में फर्राटेदार दौड़ने वाले का पैर मुड़ जाता है अथवा ठोकर खाकर वह गिर पड़ता है, और फिसड्डी आगे निकल जाता है। उच्चाकांक्षी राजनीतिज्ञ वा उद्योगपति, धन-जन के बल पर, अपनी सुविचारित योजना को मूर्तरूप देने का स्वप्न देख रहा होता है कि यकायक किसी घोटाले के कारण उसका सुंदर स्वप्न चूर-चूर हो जाता है। नास्तिक लोग इन विफलताओं को 'चान्स' (संयोग) वा 'ऐक्सिडैण्ट' (इत्तफाक) कहकर टालना चाहेंगे और आस्तिकजन इन्हें 'कर्मफल' की संज्ञा देंगे। किंतु, एक बात पर, दोनों ही वर्ग सहमत हैं कि मनुष्य सर्वेसर्वा नहीं है। उससे भी कहीं-बड़ी कोई पराशक्ति है, जिसके सामने वह सर्वथा बेबस है और जिसे वह 'ईश्वर', 'अल्लाह', 'गॉड', 'संयोग', 'चान्स' आदि नामों से पुकारता है। मानव-जीवन की भांति, क्रीड़ाक्षेत्र भी अनिश्चितताओं व संयोगों से व्याप्त है। विशेषतः क्रिकेट का खेल तो इनसे इतना ओत-प्रोत है कि उसे 'गेम ऑफ अनसर्टेण्टी' (अनिश्चितता का खेल) ही कहा जाता है। आइए, चलते-चलते, इन दोनों क्षेत्रों में समानताओं के रोचक प्रसंग पर एक दृष्टिपात कर लें।

क्रिकेट	जीवन
१. मंचपात्र क्रिकेटर है।	१. मंचपात्र जीव है।
२. विकेट तीन स्टम्पों (डंडों) का बना होता है, जिन पर दो बेल (गुल्लियां) टिकी होती हैं।	२. शरीर तीन गुणों (सत्त्व, रजस् व तमस्) से निर्मित होता है, जिन पर प्राण व अपान वायु आधारित होते हैं।
३. क्रिकेटर बल्ले से बैटिंग करता है।	३. जीव विवेक से आचरण करता है।
४. यह बॉलर का सामना करता है।	४. यह काल (मृत्यु वा समय) से जूझता है।

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

५. गेंदबाज के हर ओवर में ६ बॉल होती हैं।

६. बल्लेबाज को अपने खेल में, बॉलर के अतिरिक्त, दस क्षेत्र रक्षकों को भी ध्यान में रखना पड़ता है।

७. बल्लेबाज का लक्ष्य, बल्ले से गेंद को उचित दिशा में मारकर अपने विकेट को सुरक्षित रखना होता है।

८. बल्लेबाज दोनों विकेटों के बीच भाग-भाग कर, रन बटोरता है।

९. जब गेंद स्टम्पों को लगती है, तो गुल्लियां गिर पड़ती हैं और बल्लेबाज का खेल समाप्त होता है।

१०. अच्छे से अच्छा बल्लेबाज भी, विकेटों के बीच भागतेहुए कभी-कभी 'रन-आउट' हो जाता है और विकेट से हाथ धो बैठता है।

११. बल्लेबाज का बल्ला जब अपने ही विकेट को गिरा देता है, तो वह 'हिट-आउट' हो जाता है।

५. जीव के हर वर्ष में छह ऋतुएं होती हैं।

६. जीव को अपनी यात्रा में, काल के अतिरिक्त, अपनी पांच कर्मेन्द्रियों तथा पांच ज्ञानेन्द्रियों को भी ध्यान (वश) में रखना पड़ता है।

७. जीव का लक्ष्य, मन तथा इन्द्रियों पर विवेक का उचित अंकुश लगाकर, निष्काम कर्मों द्वारा अनासक्त जीवन बिताते रहना होता है।

८. जीव, संसार के हर्ष-शोक रूपी दो पाटों के बीच बार-बार आ-जाकर, कर्मफल बटोरता है।

९. मृत्यु का शीत हस्त जब जीवन को झटका देता है, तो प्राण-अपान वायु बाहर निकल पड़ते हैं और जीव की ऐहिक लीला समाप्त हो जाती है।

१०. अत्यंत व्यवहार-कुशल तथा सूझ-बूझ वाला जीव भी, संसार में भागदौड़ करता-करता, कभी-कभी दुर्घटनाग्रस्त हो जाता है और जीवन से हाथ धो बैठता है।

११. जीवधारी का अविवेक जब अपने ही प्राणों का अंत कर बैठता है, तो वह जीव 'आत्महत' हो जाता है।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

१२. विकेट के सामने आई बल्लेबाज की टांग को गेंद लग जाने पर, वह 'ऐंल-बी-डब्ल्यू आउट' हो जाता है।	१२. निष्कामकर्म-विवेक के सामने आयी विषयवासना के पूरी तरह छा जाने पर, जीव मोक्षप्राप्ति क्षमता से बाहर (वंचित) हो जाता है।
१३. प्रत्येक खिलाड़ी एक शतक (सौ रन) बनाने का इच्छुक होता है।	१३. प्रत्येक जीव सौ वर्ष जीने का इच्छुक होता है-'जीवेम शरदः शतम्'।
१४. एक निपुण और अनुभवी बल्लेबाज, एकाग्रता तथा कुशलता से खेलता हुआ, 'चौका' लगाकर चार रन प्राप्त कर लेता है।	१४. एक जितेन्द्रिय और आत्मनिष्ठ साधक, निस्संगता तथा तन्मयता से जीवन व्यतीत करता हुआ, चारों पुरूषार्थ-धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष प्राप्त कर लेता है।
१५. एक उत्कृष्ट व सिद्धहस्त बल्लेबाज, अनुपम शैली एवं चतुराई से खेलता हुआ गेंद को, क्षेत्र से संपर्क कराये बिना, सीमारेखा के बाहर पहुंचा देता है। इस 'छक्के' के फलस्वरूप उसे छह रनों की उपलब्धि होती है।	१५. एक स्थितप्रज्ञ व आप्तकाम जिज्ञासु, अंतर्मुख तथा ब्रह्मनिष्ठ होने के कारण, अपनी ज्ञानदृष्टि को भौतिक लोक से ऊपर उठाकर, दैविक लोक में केंद्रित कर देता है। इस 'देवत्व' के फलस्वरूप, उसे छहों दैवी ऐश्वर्यों की उपलब्धि होती है।
१६. एक सधा-मंजा बल्लेबाज भी गुगली गेंदबाज से प्रायः मात खा जाता है। गेंद के गिरने का अनुमान कहीं का होता है, मगर वह जा गिरती है कहीं और। इस हड़बड़ाहट में वह विकेट भी गवां बैठता है। गुगली गेंद को खेलता हुआ, वह धोखे	१६. एक जीव तो सारी उमर ही धोखे में फंसा रहता है। यह संसार, जिसे वह सच्चा व स्थायी समझे बैठा है, वास्तव में प्रपंच और छलावा है। वह जिसे सत् मानता है, वस्तुतः वह असत् है तथा जिसे वह असत् समझता है, वही सत् है। इसी धोखे में

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ही में फंसा रहता है।

१७. क्रिकेट के खेल में, सूक्ष्मतया अवलोकन कर, निर्णय करने वाला एक अम्पायर होता है। वह खेल का एक अभिन्न अंग अवश्य होता है, किंतु उसके उतार-चढ़ाव में किसी प्रकार से लिप्त नहीं होता। वह मात्र साक्षी होता है, साझी नहीं।

फंसे-फंसे, उसके असंख्य जन्म बीत जाते हैं।

१७. जीवनलीला में भी, जीव के कर्मों का गहन अवलोकन कर, उनके विषय में निर्णय करने वाली आत्मा होती है। वह कर्मों को होते हुए अवश्य देखती है, परंतु उनमें किसी तरह से भाग नहीं लेती। दूसरे शब्दों में, वह जीव के कर्मों की केवल साक्षी है, साझी नहीं।

॥ जीवन - मृत्यु ॥

१. धर्म जीवन है और अधर्म ही मृत्यु है।
२. प्रेम जीवन है और मोह ही मृत्यु है।
३. परोपकार जीवन है और स्वार्थ ही मृत्यु है।
४. संतोष जीवन है और लोभ (तृष्णा) ही मृत्यु है।
५. विद्या जीवन है और अविद्या ही मृत्यु है।
६. पुरूषार्थ जीवन है और आलस्य ही मृत्यु है।
७. उदारता जीवन है और कृपणता ही मृत्यु है।
८. ब्रह्मचर्य जीवन है और व्यभिचार ही मृत्यु है।
९. वीरता जीवन है और कायरता ही मृत्यु है।
१०. पवित्रता जीवन है और अपवित्रता ही मृत्यु है।
११. मैत्रीभावना जीवन है और घृणा ही मृत्यु है।
१२. अहिंसा जीवन है और हिंसा ही मृत्यु है।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

॥ शंका समाधान ॥

चिन्तन प्रस्तुति : **कैलाशचन्द्र अग्रवाल**

आजकल की पीढ़ी हमारी पुरानी परम्पराओं को एक रूढ़िवादिता एवं लकीर का फकीर मानती है। विगत सदी के शुरूआत में हमारे यहाँ शिक्षित जनता बहुत कम थी। केवल एक ब्राह्मण जाति ही वेद-शास्त्रों आदि की ज्ञाता थी। इसलिये वे प्रत्येक कार्यकलाप धर्म के नाम पर भय से ही करवाते थे। वैसे हमारे कई कार्यकलापों का वैज्ञानिक विवेचन भी किया गया है जिनके पीछे हमारे स्वास्थ्य की रक्षा का ही उद्देश्य निहित था। मैं आपके समक्ष नीचे कुछ उदाहरण प्रस्तुत कर रहा हूँ, जो आपका भ्रम निवारण करेंगे।

✻ मन्दिरों में घंटा, शंख, नगाड़े आदि क्यों बजाये जाते हैं ?

यह विज्ञान द्वारा प्रमाणित है कि आरती के समय मन्दिरों में जो उपरोक्त वाद्ययन्त्र बजाये जाते हैं, उनसे काफी तेज ध्वनि होती है एवं इस तेज ध्वनि से मीलों तक वायु के कम्पन से विषाक्त कीटाणु नष्ट हो जाते हैं। वातावरण शुद्ध हो जाता है। आपने देखा होगा कि महाभारत में युद्ध के पहले सब महारथी अपना अपना शंख बजाकर वातावरण को शुद्ध करते थे। पहले वे वातावरण शुद्ध करते थे, फिर युद्ध करते थे।

✻ लड्डू गोपाल की पूजा क्यों ?

एक दिन मैने अपनी पुत्री से जो कि अंग्रेजी स्कूल से ग्रेजुएट है, पूछा कि तुम लड्डू गोपाल की इतनी सेवा करती हो- जैसे सुबह उठाना, नहलाना, कपड़े पहनाना, माखन मिश्री का भोग लगाना, दोपहर में भोजन कराना, फिर फल का भोग लगाना, रात्रि में फिर भोजन, फिर शयन आरती के समय दिन की पोशाक उतार कर शयन-पोशाक पहनाकर सुलाना, शीत काल में उनको ऊनी वस्त्र पहनाना आदि, यह सब क्यों करती हो ? इसके पीछे क्या रहस्य है ? वह बोली मुझे पता नहीं। मम्मी जैसे समझाई हैं, वैसे ही करती हूँ। वह मुझसे बतलाने का आग्रह करने लगी। मैने उसे समझाया तुम्हारी शादी नहीं हुई है (शादी के पहले की बात है)। अभी तुम इस निर्जीव मूर्ति की अपना कर्त्तव्य जानकर इतनी सेवा करती हो। इससे तुम्हें लगाव हो गया है। जब

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

शादी के बाद बच्चा होगा, वह तो तुम्हारा अपना खून होगा। अतः स्वाभाविक है कि मूर्ति से भी ज्यादा लगाव तुम्हें अपने बच्चे से होगा। इस तरह बाल्यकाल से ही बच्चों में संस्कार पनपते हैं। बच्चा तो बालपन में भगवान का स्वरूप होता है। उसको हम जिस साँचे में ढ़ालेंगे वैसा ही वह बन जायेगा।

✻ चन्दन क्यों लगाया जाता है ?

चन्दन के वृक्ष के चारों तरफ साँप-अजगर लिपटे रहते हैं, लेकिन चन्दन के आचरण पर उनकी कुसंगति का लेशमात्र भी प्रभाव नहीं पड़ता। चन्दन शीतलता प्रदान करने वाला है। कहा भी गया है - "तुलसीदास चन्दन घिसें, तिलक करें रघुवीर"। हमारे सामने का ललाट, जहाँ पर हम टीका लगाते हैं, पूरे शरीर का नियन्त्रण कक्ष (Control Room) है। अतः वहाँ चन्दन लगाने से मस्तिष्क शीतल रहता है। मस्तिष्क शीतल रहने से हमारे सब काम हम शान्तिपूर्वक सोच-समझकर कर सकते हैं। मन में उत्तेजना पैदा नहीं होती।

✻ पूजा-पाठ का विधान ब्रह्म मूहर्त में ही करने का क्यों है ?

अगर हम नित्य प्रति भगवान की सेवा, पूजा-पाठ करते हैं तो सुबह उठना पड़ता है, जो स्वास्थ्य के लिए अमृत है। पूजा के नाम पर ही आपको घर की सफाई एवं स्वच्छता करनी होगी, जिससे आपका घर प्रातः काल ही पूर्णतया स्वच्छ हो जायेगा। अतः आलस्य कोसों दूर चला जायेगा एवं आप में एक नई ऊर्जा का आगमन होगा। विशद् विवेचन हेतु कृपया प्रातः जागरण क्यों ? इसी पुस्तक में पढ़ें।

✻ श्रावण में कावड़ क्यों चढ़ाई जाती है ?

इसका वैज्ञानिक महत्व स्वास्थ्य सम्बन्धी बहुत है। शायद धर्म के प्रकाण्ड विद्वानों ने भी इसी महत्व को ध्यान में रखकर इसको धर्म का जामा पहना दिया है, ताकि इसी बहाने भक्तगण श्रद्धा पूर्वक बाबा भोलेनाथ को कावड़ चढ़ाने के लिये पद यात्रा करें। वर्ष में ग्यारह महिना हम दैनन्दिन कार्यों एवं माया में ही उलझे रहते हैं। श्रावण मास में जब वर्षा ऋतु आरम्भ होती है तो प्रकृति में रिमझिम बरसात के साथ सर्वत्र हरियाली छा जाती है। ऐसे सुहाने मौसम में नंगे पैरों कावड़ उठाये

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

चतुर्दिक छाई हरियाली को निहारते हुये चिन्तामुक्त होकर अपने लक्ष्य की ओर बढ़ते हैं। इस दौरान उन्हें नंगे पावों में काँटों का चुभना, धूप, बरसात-गरमी आदि को भी सहन करना पड़ता है। इससे हरियाली से आँख की रोशनी बढ़ती है, जमीन पर की ओस की बूँदें पावों को ठंडक प्रदान करती हैं। सूर्य की किरणें नंगे बदन के माध्यम से शरीर में प्रवेश कर शरीर को निरोग बनाती हैं। पाँव के छाले और काँटों की चुभन दर्द-कष्ट सहने की क्षमता बढ़ाते हैं। आज के विलासी जीवन जीने वाले मानव को आत्म निरीक्षण करने का मौका मिलता है, उसको अपनी सहन शक्ति (Tolerance Power of Body) एवं शरीर की प्रतिरोधक शक्ति (Resistance Power of Body) का पता चलता है। उसका लक्ष्य भगवान पर जल चढ़ाना होता है, उससे इच्छाशक्ति (will power) दृढ़ होती है। इसी प्रकार मनुष्य को अपने लक्ष्य का निर्धारण कर उसे दृढ़ इच्छा शक्ति के साथ पूरा करना चाहिये। लक्ष्यहीन पुरूष दिशाहीन हो जाता है। अंग्रेजी में कहावत है - 'A man without purpose, just like a ship without rudder'.

✲ विवाह में बारात आने पर द्वार पूजा पर वर की आरती क्यों उतारी जाती है ?

पुराने जमाने में विवाह सम्बन्ध, सगाई आदि कराना नाई और ब्राह्मणों के ही जिम्मे था। वे जैसी रिपोर्ट आकर घर के मुखिया को देते थे, उसी पर सब कुछ निर्भर करता था। ये मध्यस्थ काफी विश्वासी भी होते थे। लेकिन इसके बावजूद माँ की ममता नहीं मानती थी। लड़की की माँ एवं स्त्रियों के मन में एक शंका बनी रहती थी कि पुरूष वर्ग ने जो वर चुना है वह ठीक है या नहीं। इसीलिए गृह प्रवेश करने के पहले द्वार पूजा एवं वर की आरती का विधान बनाया गया। उस जमाने में हेलोजिन और मर्करी तो थी नहीं। जब बारात आती तो २१ दीपकों की रोशनी में सास या कोई अनुभवी बड़ी औरत वर की आरती उतारती और उस रोशनी में वर का अंग प्रत्यंग निरीक्षण करती कि यह लंगड़ा-लूला, काना आदि कोई दोषमय तो नहीं है। इस प्रक्रिया के बाद संतुष्ट होने पर ही वर को घर में आने की अनुमति मिलती थी। कई बार सुना गया कि वर ठीक न होने के कारण बारात को वापस लौट जाना पड़ता था।

✲ सूर्य भगवान को जल क्यों चढ़ाया जाता है ?

सूर्य भगवान को जल चढ़ाने का विधान केवल लज्जा वस्त्र पहन कर

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

नंगे बदन जल चढ़ाना है। सूर्य के सामने खड़े होकर दोनों हाथों से जब जल चढ़ाया जाता है, तो वह पानी जमीन पर गिरकर हमारे बदन पर छीटों के रूप में लगता है। यह पानी जो सूर्य की किरणों से प्रभावित होकर हमारे शरीर पर लगता है, उसमें कई शारीरिक व्याधियों को हरने की क्षमता होती है। यह वैज्ञानिकों द्वारा प्रमाणित कर दिया गया है। आपने देखा होगा कि बहुत से लोग समुद्र के किनारे पड़े रहकर सूर्य स्नान करते हैं। वास्तव में यह प्रकृति का हम लोगों को बहुत बड़ा वरदान है। सूर्य किरणों से चिकित्सा भी होती है, जिसे "सूर्य किरण चिकित्सा" कहा जाता है। "प्राकृतिक चिकित्सा" का तो मूल आधार ही यही है कि जिन पाँच तत्वों से यह शरीर बना है, उन्ही से इसको निरोग किया जा सकता है।

मेरे विचार से अब आप इस बात से सहमत हो गये होंगे कि हमारी पुरानी परम्पराओं एवं धार्मिक कार्य कलापों में स्वास्थ्य का यही गूढ़ रहस्य छिपा हुआ है – जीवेम शरदः शतम् अर्थात् मनुष्य निरोग रहकर किस तरह सौ वर्ष की आयु पूरी करे।

॥ अविस्मरणीय संस्मरण ॥

- कैलाशचन्द्र अग्रवाल

जीवन में कुछ घटनायें ऐसी होती हैं, जो भुलाये नहीं भूलती।

तुम और आप में अद्भुत अन्तर :– मैं छठवीं कक्षा में पढ़ता था, उस कक्षा में कक्षा–अध्यापक (Class-Teacher) ने मुझे मोनीटर नियुक्त कर रखा था। एक दिन भूगोल के अध्यापक ने कुछ पढ़ाया एवं विद्यार्थियों को दूसरे दिन ठीक से याद करके आने को कहा। जब दूसरे दिन सबसे पूछा गया तो एक लड़के ने गलत जबाब दिया। मास्टर जी ने उसे डाँटते हुए कहा – "हमने तुम्हे कल यही बतलाया था ? इस पर उस लड़के के मुँह से अचानक निकल गया तुमने ही तो कल यह बतलाया था। उस लड़के को 'आप' शब्द का व्यवहार करना चाहिये था, लेकिन उसने भूल से 'तुम' शब्द का व्यवहार कर दिया। इतना कहते ही अध्यापक जी ने उसको जोर से एक थप्पड़ मार दिया, जिससे लड़के के गाल पर पाँचों अँगुलियों की छाप स्पष्ट नजर आने लगी। पूरी कक्षा में हो हल्ला मच गया। सभी विद्यार्थी पढ़ाई छोड़कर खड़े हो गये और मुझ पर

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

दबाव देने लगे कि हम लोगों को प्रधानाध्यापक के पास ले चलो, हम लोग इन मास्टर जी से नहीं पढ़ेंगे। अध्यापक भी क्रोधित होकर अध्यापक कक्ष (Teachers Room) में जाकर बैठ गये। हम लोग झुण्ड बनाकर प्रधानाध्यापक कार्यालय चले गये। प्रधानाध्यापक जी ने बाहर आकर सबको शान्त रहने को कहा एवं मुझसे कहा कि तुम उस लड़के को साथ लेकर भीतर आओ। भीतर जाने पर उन्होने दण्डित लड़के का पहले मुआयना किया एवं देखा कि गाल तब भी मार की वजह से लाल था। फिर उन्होंने मुझसे कहा कि तुम सच्ची बात बताओ। मैने डरते डरते सारी सच्ची घटना उनको बता दी एवं कहा कि सर्वप्रथम गलती लड़के से हुई, क्योंकि इसने उनको "तुम" बोलकर सम्बोधित किया था। फिर उन्होने दुबारा पूछा कि केवल इतनी सी बात थी और कुछ तो नहीं। मैने कहा यही वास्तविकता है। तब उन्होने चपरासी भेज कर भूगोल के अध्यापक को बुलाया। वे आते ही प्रधानाध्यापक से बोले "मैं इस कक्षा में नहीं पढ़ाऊँगा, क्योंकि इसके बच्चे बहुत बदतमीज हैं। इनको बात करने का सउर नहीं है। तुम-ताम करते हैं।" उनके इतना कहने पर प्रधानाध्यापक जी ने कहा इस बच्चे ने केवल तुम ही कहा था या और भी कोई बात थी। इस पर अध्यापक ने स्वीकार किया कि बस यही बात थी। तब प्रधानाध्यापक जी ने कहा इस लड़के ने अज्ञानवश आपको "तुम" कह दिया, लेकिन वास्तव में आप तुम कहलाने के अधिकारी नहीं है। दुनिया में तुम केवल दो ही जन को सम्बोधित किया जाता है - एक जन्म देने वाली माता एवं दूसरे श्री भगवान को। कोई भी अपनी माँ को जिसकी कोख से जन्म लेता है - तू ही कहता है, भले ही पिता को आप कहे। भूगोल के अध्यापक से उन्होंने पूछा आप अपनी माँ को आप कहते हैं या तुम ? अध्यापक महोदय से जवाब देते नहीं बना। उनके ऊपर तो जैसे घड़ों पानी पड़ गया था। भगवान को भी साधारणतः तुम से ही सम्बोधित किया जाता है, त्वमेव माता च पिता त्वमेव। प्रधानाध्यापक जी द्वारा किया गया "तुम" और "आप" का विश्लेषण आज भी मेरी स्मृति में ताजा है, साथ ही उनका प्रभावशाली व्यक्तित्व भी।

जय श्री राम ! जय श्री कृष्ण !

जय हिन्द !

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

Grihastha Gita - Contact Centres

WEST BENGAL

1. Balrmpur Chini Mills Ltd., 234/3A, A. J. C. Bose Road, **Kolkata** - 20; Phone : 247-8806/4749
2. Mamraj Jayatri Trust, P-10, New Howrah Approach Road, (Amar Bhawan), 1st Floor, **Kolkata** - 700 001; Phone : 215-9696/1233
3. Priya Biscuit Co., 224, A. J. C. Bose Road, **Kolkata** - 700 017;Phone : 240-8640/7227 & 280-3145
4. Kayan Foundation, 7, Lyons Range, **Kolkata** - 1; Phone : 220-8239/ 5471/3438
5. Babulal Nandlal Bohra Charitable Trust, 60, Dr. Sundari Mohan Avenue, **Kolkata** - 700 014; Phone : 246-0947, 244-8895
6. Padam Sugar Co., 4, Ramkumar Rakhit Lane, 1st Floor, **Kolkata**-7; Phone : 238-3102/5658 & 231-2696
7. Sri Chhedilal Agarwala, 54/55, Strand Road, **Kolkata** - 6; Phone : (O) 238-3109/230-1236 (R) 337-3163/3085
8. Sri Ramesh Kr. Bhotika, 2, Digamber Jain Temple Road, **Kolkata** - 7; Phone : 238-8816, 230-0819
9. A.T.O. (I) Ltd., 60/C, Colootola Street, **Kolkata** - 73; Phone : 235-0739 & 235-6904
10. Ratanlal Rabindra Kumar, 204, M.D.Road, 1st Floor, **Kolkata** -6; Phone : 238-7198, 239-6141
11. Nandlal & Co., 157, Netaji Subhas Road, 3rd Floor, **Kolkata**-1; Phone : 232-0431/0432, 238-7115/[illegible]
12. Shree Sudarshan Castings (P) Ltd., P/12, Lalbazar Street, (Block-E, 2nd Floor), **Kolkata** - 7[illegible] 001; Phone : 248-4790/0160
13. Seth Keshardee Shah Trust, 125/2, Bidhan Sarani, 1st Floor, **Kolkata** -4; Phone : 555-6581/3620
14. Chhaparia Charitable Trust, 6/2, Sarat Bose Road, **Kolkata** -700 020; Phone : 475-5592, 474-7420
15. Emami Group of Companies, 18, R. N. Mukherjee Road, **Kolkata** -1; Phone : 2482679/4416
16. Rupa & Co. Ltd., 71, Park Street, (Park Plaza, North Block 3E), **Kolkata**-700 016; Phone : 249-5126 & 229-9919
17. Sushil Kumar Gattani, Jaihind Trading Co., 15, Mahabirsthan, **Siliguri**-734404 (W.B.); Phone : (O) 420625 (R) 433741

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

18. Sri Dinesh Todi, C/o New Jaipur Marvel House, 160, G. T. Road (West) **Asansol** - 713304 (W.B.); Phone : (O) 255689 (R) 250676
19. Gourishankar Kejriwal, Zenith Forgings Private Limited, 13, Brabourne Road, 3rd Floor, **Kolkata** -1; Phone : 242-8083/6557
20. Mahalaxmi Trading Co., 2, Digambar Jain Tample Road, Kolkata-700 007, Phone : 239 8900/238 6985
21. Rampratap Goyal, 26, Hindustan Park, Street No.– 2, Asansol-701004, Phone : (O) 252542 (R) 255113

Contact Centres for Grihastha Gita Out of West Bengal :

1. Motilal Ramesh Kumar Sureka, 509, Ashiyana Plaza, Budh Marg, **Patna** - 800 001 **(Bihar)**; Phone : 220922 & 230198
2. Basukinath Flour Mill, Jugsalai, Tatanagar, **Jamshedpur**-831006 **(Jharkhand)**; Phone : 427677, 424872
3. Sri Ramprasad Katesaria, Grewal Colony, Bekar Bandh, Dhanbad-826001 **(Jharkhand)**, Phone : 203600 & 305021
4. Goel Flour Mills Ltd., Raj Hospital Road, P.O.: **Jharia**, Dhanbad- 828111 **Jharkhand**; Phone : (R) 464391 (O) 360221
5. Sri Gopal Oil Industries, Barpeta Road 781315 **(Assam)**
6. Kishanlal Ramprasad & Sons, N. C. Road, Tejpur, Sonitpur **(Assam)**; Phone : 03712-20060
7. Nav Bharat Trading Co., Gadodia Market, Khari Baoli, **Delhi** -110 006; Phone : (O) 395-8180, 394-2799 (R) 743-2775, 721-4153
8. S. C. Sarada, K-47, Model Town II (2nd Floor), **New Delhi** - 110 009; Phone : 713-1528 & 713-8433
9. Surajmal Shiwdayal, 5192, Naya Bazar, (1st Floor), Lahori gate, **Delhi**-110 006; Phone : 294-3861, 392-1931 (O), 749-6661/62/63/64 (R)
10. Saluja Distributors, Betulganj, Betul - 460 001 **(M.P.)** Phone : 31125, 33160
11. Balchand Udayram, **Gangtok, Sikkim**- 737101; Phone : 22901 & 22071
12. M/s Indra Kumar & Co., 174, Govindappa Naik Street, **Chennai**-600 001 **(Tamilnadu)**; Phone : 536-9622 & 538-1512
13. Hari Om Knitwear, 5, Muthu Nagar, 3rd Street Extension, **Tirupur** - 641007 **(Tamilnadu)**; Phone : (0421) 721140, 724895
14. Jairaj Enterprises, Station Road, **Vizianagaram** - 535 003 **(A.P.)**; Phone : 25157, 26157
15. Agarwal Pawan & Associates, 74, Sahebganj, **Gonda**-271002 **(U.P.)**; Phone : 22617

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

16. Agarwal Transport Agency, A
2730001 **(U.P.)**; Phone : 33411
17. Jai Ganesh Agencies, 4-1-54
Bazar, **Hyderabad** - 500 001; F
18. PMC Investments (P) Ltd., 21
302001 **(Rajasthan)**; Phone : 3
19. Suresh Goel & Brothers, New T
(C.G.) Phone : 525337, 32362
20. Ratan Lal Daruka, Sumit Textu
Market, Ring Road, **Surat** - 39
21. Kadamawaia Textile Mills, 112
(Gujrat); Phone : 214-4822
22. S. R. Khandelwal & Sons, 501,
400 034; Phone : 282-3565, 2
23. Sri Ram & Shakuntla Poddar,
Floor, Flat No. 2, **Mumbai** - 40
24. Brijmohan Badrinarayan Mani
Phone : (O) 22-5321/9816, (R
25. Hanuman Enterprises, 4-1-5
Hyderabad - 500195 **(A.P.)**
26. Omprakash Dwarka Pd. Aga
(Maharastra), Phone : 45023
27. Sri Ashok Kr. Mundhra, C/o G
Centre, Jalgaon-425001 **(Ma**

We appeal to all the above pers
are really in need of this book t

Note : Persons willing to co-o
of this book may please contac

Sri K. C
Phone : (O) (033) 5
(R) 334-34

कृप

हमें विश्वस्त सूत्रों से पता चला है कि
हू-ब-हू नकल करके विभिन्न नामों से पु
कि ये भी नटराज युवा संघ से ही सम्बन्धि
तक का भी सम्बन्ध नहीं है। लाभ कम
सावधान रहें। किसी भी शंका समाधा

सम्पादक

-: संक्षिप्त परिचय :-

नाम : कैलाश चन्द्र अग्रवाल
पुत्र : स्व० केशर देव शाह
जन्म : ३१ जनवरी १९४७
जन्मभूमि : ग्राम पोस्ट - छापौली
: जिला - झुन्झुनू (राजस्थान)
शिक्षा : उच्चतर माध्यमिक
सम्पादन : श्री श्याम माधुरी (भाग-१,२एवं३)
: गृहस्थ गीता (१०संस्करण)
रूचि : स्वाध्याय, बचपन से ही साहित्य
एवं भजन आदि से विशेष लगाव
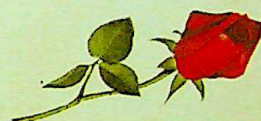
पारदर्शी - परख

'गृहस्थ-गीता' बनाई, 'कैलाशचन्द्र' सजाई,
'पारदर्शी' मन भाई, ज्ञान का भण्डार है।
सर्व-धर्म समभाव, आदर्श बनें स्वभाव,
मिटें आपसी तनाव, चाहती सुधार है।
भरा शास्त्र-नवनीत, प्रभु भक्ति का संगीत,
सन्त-वाणी प्रेम-प्रीत, आध्यात्मिक सार है।
'नटराज युवा संघ', कलकत्ता बिना मूल्य,
धर्म-ज्ञान-संस्कृति का, करता प्रचार है।

प्रणेता -
ह. पारदर्शी

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

18. Sri Dinesh Todi, C/o New Jaipur Marvel House, 160, G. T. Road (West) **Asansol** - 713304 (W.B.); Phone : (O) 255689 (R) 250676
19. Gourishankar Kejriwal, Zenith Forgings Private Limited, 13, Brabourne Road, 3rd Floor, **Kolkata** -1; Phone : 242-8083/6557
20. Mahalaxmi Trading Co., 2, Digambar Jain Tample Road, Kolkata-700 007, Phone : 239 8900/238 6985
21. Rampratap Goyal, 26, Hindustan Park, Street No.– 2, Asansol-701004, Phone : (O) 252542 (R) 255113

Contact Centres for Grihastha Gita Out of West Bengal :

1. Motilal Ramesh Kumar Sureka, 509, Ashiyana Plaza, Budh Marg, **Patna** - 800 001 **(Bihar)**; Phone : 220922 & 230198
2. Basukinath Flour Mill, Jugsalai, Tatanagar, **Jamshedpur**-831006 **(Jharkhand)**; Phone : 427677, 424872
3. Sri Ramprasad Katesaria, Grewal Colony, Bekar Bandh, Dhanbad-826001 **(Jharkhand)**, Phone : 203600 & 305021
4. Goel Flour Mills Ltd., Raj Hospital Road, P.O.: **Jharia**, Dhanbad- 828111 **Jharkhand**; Phone : (R) 464391 (O) 360221
5. Sri Gopal Oil Industries, Barpeta Road 781315 **(Assam)**
6. Kishanlal Ramprasad & Sons, N. C. Road, Tejpur, Sonitpur **(Assam)**; Phone : 03712-20060
7. Nav Bharat Trading Co., Gadodia Market, Khari Baoli, **Delhi** -110 006; Phone : (O) 395-8180, 394-2799 (R) 743-2775, 721-4153
8. S. C. Sarada, K-47, Model Town II (2nd Floor), **New Delhi** - 110 009; Phone : 713-1528 & 713-8433
9. Surajmal Shiwdayal, 5192, Naya Bazar, (1st Floor), Lahori gate, **Delhi**-110 006; Phone : 294-3861, 392-1931 (O), 749-6661/62/63/64 (R)
10. Saluja Distributors, Betulganj, Betul - 460 001 **(M.P.)** Phone : 31125, 33160
11. Balchand Udayram, **Gangtok, Sikkim**- 737101; Phone : 22901 & 22071
12. M/s Indra Kumar & Co., 174, Govindappa Naik Street, **Chennai**-600 001 **(Tamilnadu)**; Phone : 536-9622 & 538-1512
13. Hari Om Knitwear, 5, Muthu Nagar, 3rd Street Extension, **Tirupur** - 641007 **(Tamilnadu)**; Phone : (0421) 721140, 724895
14. Jairaj Enterprises, Station Road, **Vizianagaram** - 535 003 **(A.P.)**; Phone : 25157, 26157
15. Agarwal Pawan & Associates, 74, Sahebganj, **Gonda**-271002 **(U.P.)**; Phone : 22617

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

16. Agarwal Transport Agency, A-66, Transport Nagar, **Gorakhpur** - 2730001 **(U.P.)**; Phone : 334118, 337327
17. Jai Ganesh Agencies, 4-1-540, Beside Ramkrishna 35MM, Troop Bazar, **Hyderabad** - 500 001; Phone : (O) 460-8044 (R) 474-5319
18. PMC Investments (P) Ltd., 215/A, City Centre, S. C. Road, **Jaipur** - 302001 **(Rajasthan)**; Phone : 363721, 365121
19. Suresh Goel & Brothers, New Timber Market, Fafadih, **Raipur**- 492009 (C.G.) Phone : 525337, 323629, 656290
20. Ratan Lal Daruka, Sumit Texturisers Pvt. Ltd., G-33-34, Sagar Textile Market, Ring Road, **Surat** - 395002 **(Gujrat)**; Phone : 628315, 629519
21. Kadamawaia Textile Mills, 112, New Cloth Market, **Ahmedabad** - 2, **(Gujrat)**; Phone : 214-4822
22. S. R. Khandelwal & Sons, 501, Arun Chambers, Tardeo Road, **Mumbai**- 400 034; Phone : 282-3565, 288-0156
23. Sri Ram & Shakuntla Poddar, Jalkiran Complex, Cuffee Parade, 8th Floor, Flat No. 2, **Mumbai** - 400 005 **(Maharastra)**
24. Brijmohan Badrinarayan Maniyar, Dana Bazr, **Jalgaon (Maharastra)**; Phone : (O) 22-5321/9816, (R) 22-3485
25. Hanuman Enterprises, 4-1-569/4, Reliance Complex, Troop Bazar, **Hyderabad** - 500195 **(A.P.)**
26. Omprakash Dwarka Pd. Agarwal, Ravalgaon- 423108, Dist- Nasik **(Maharastra)**, Phone : 450232, 450264
27. Sri Ashok Kr. Mundhra, C/o Godavari Traders, 6, Ramakant Shopping Centre, Jalgaon-425001 **(Maharastra)**, Phone : 25214, 27214

We appeal to all the above persons to co-operate the persons, who are really in need of this book till the stock in hand.

Note : Persons willing to co-operate in publishing the next edition of this book may please contact to :

Sri K. C. Agrawall

Phone : (O) (033) 554-8009 / 554-9356
(R) 334-3437, 337-2382, Cellular : 98300 49868

कृपया ध्यान दें

हमें विश्वस्त सूत्रों से पता चला है कि कुछ सज्जन 'गृहस्थ-गीता' की पाठ्य सामग्री की हू-ब-हू नकल करके विभिन्न नामों से पुस्तक प्रकाशित कर जनता में यह दुष्प्रचार कर रहे हैं कि ये भी नटराज युवा संघ से ही सम्बन्धित हैं। तथ्य यह है कि संघ से उन पुस्तकों का कोई दूर तक का भी सम्बन्ध नहीं है। लाभ कमाने के उद्देश्य से कर रहे ऐसे स्वार्थी तत्वों से कृपया सावधान रहें। किसी भी शंका समाधान हेतु कृपया संघ से या सम्पादक से सम्पर्क करें।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

॥ मेरा भारत महान ॥

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

वन्दे मातरम्!
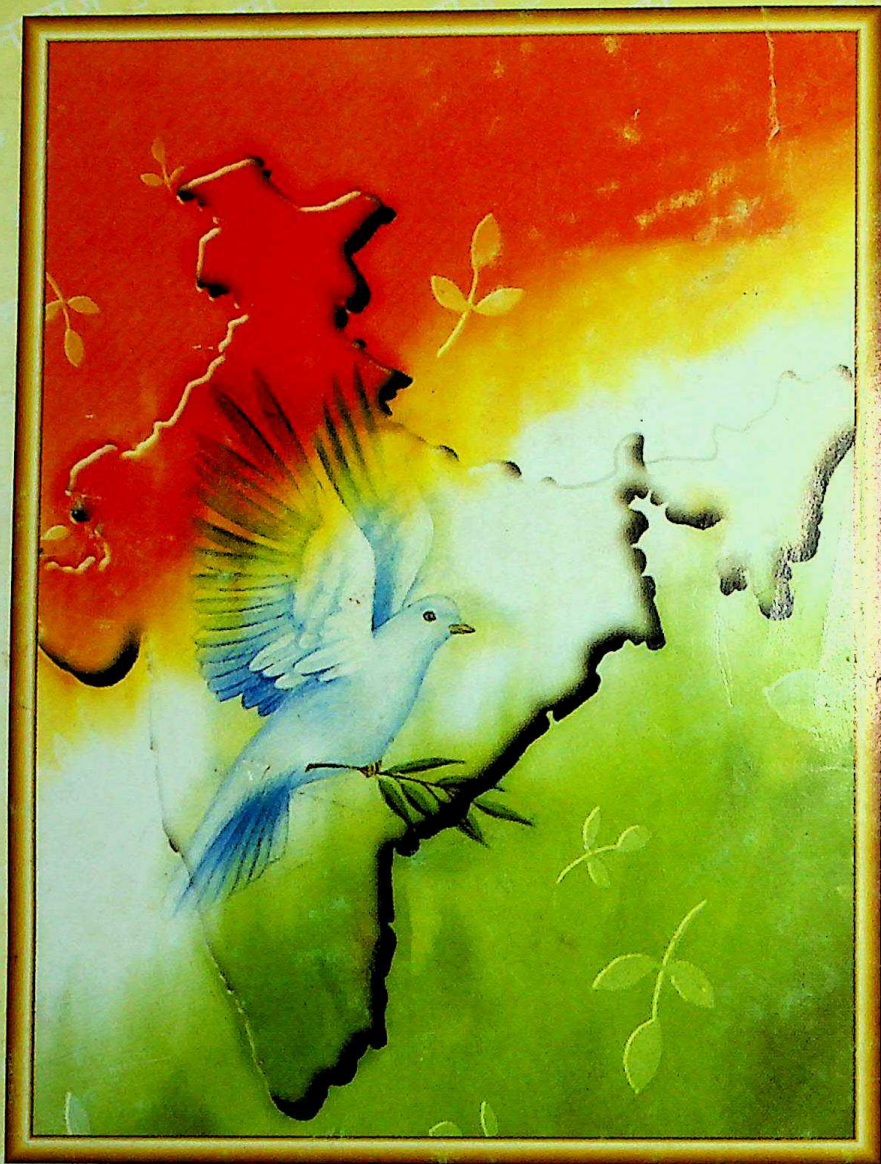
सारे जहाँ से अच्छा, हिन्दोस्ताँ हमारा,
हम बुलबुले हैं इसके, ये गुल्सितां हमारा।

मजहब नहीं सिखाता आपस में वैर रखना,
हिन्दी हैं हम, वतन है हिन्दोस्ताँ हमारा।